

विदेह VIDEHA

विदेह विशेषांक

Videha Special Issues

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १ / ४ · Volume 1 of 4

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह विशेषांक ०१ — मैथिली हैकू प्रश्नोत्तरी	४० प्रश्न
२. विदेह विशेषांक ०२ — मैथिली गजल प्रश्नोत्तरी	४१ प्रश्न
३. विदेह विशेषांक ०३ — विहनि कथा / लघुकथा प्रश्नोत्तरी	४६ प्रश्न
४. विदेह विशेषांक ०४ — मैथिली बाल साहित्य प्रश्नोत्तरी	५५ प्रश्न
५. विदेह विशेषांक ०५ — मैथिली नाटक प्रश्नोत्तरी	५१ प्रश्न
६. विदेह विशेषांक ०६ — समीक्षा / समीक्षाशास्त्र प्रश्नोत्तरी	६० प्रश्न
७. विदेह विशेषांक ०७ — नारी विशेषांक	४९ प्रश्न
८. विदेह विशेषांक ०८ — अनुवाद विशेषांक / गद्य-पद्य भारती	४७ प्रश्न
९. मैथिली बाल गजल विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	५१ प्रश्न
१०. भक्ति गजल विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	४९ प्रश्न
११. गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	५५ प्रश्न
१२. काशीकान्त मिश्र 'मधुप' विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	७१ प्रश्न
१३. अरविन्द ठाकुर विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	६० प्रश्न
१४. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी	६५ प्रश्न
१५. विदेह सम्मान विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	४८ प्रश्न
१६. मैथिली सी.डी. अल्बम गीत-संगीत विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	५० प्रश्न
१७. मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	४० प्रश्न
१८. मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२ — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	५७ प्रश्न
१९. रामलोचन ठाकुर विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७१ प्रश्न
२०. रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	५२ प्रश्न
२१. राजनन्दन लाल दास विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	५० प्रश्न
२२. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	४५ प्रश्न
२३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक — मैथिली प्रश्नोत्तरी	६० प्रश्न
२४. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक — मैथिली प्रश्नोत्तरी	४९ प्रश्न
२५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६७ प्रश्न
२६. कला विमर्श विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६६ प्रश्न
२७. रचनाकार अशोक विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६३ प्रश्न
२८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७० प्रश्न
२९. मिथिला स्टूडेंट यूनियन विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६३ प्रश्न

३०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७२ प्रश्न
३१. नरेन्द्र झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६८ प्रश्न
३२. रामावतार यादव विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७५ प्रश्न
३३. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७२ प्रश्न
३४. हितनाथ झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	६१ प्रश्न
३५. मिथिला विकास परिषद् विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	५६ प्रश्न
३६. नारायणजी चौधरी विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७० प्रश्न
३७. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७० प्रश्न
३८. भवनाथ झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	७८ प्रश्न
३९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	८५ प्रश्न
४०. सुशील चन्द्र झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी	८० प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह विशेषांक ०१ — मैथिली हैकू प्रश्नोत्तरी

१. हैकूकें केवल छोट कविता नहि, बल्कि जापानी काव्य-विधा मानबाक मूल कारण की अछि?
- (A) ओहिमे सौंदर्य आ भावक संक्षिप्त, तीव्र अनुभूति रूप ग्रहण करैत अछि
(B) ओ तीन पाँतिमे लिखल जाइत अछि, तें स्वतः महान होइत अछि
(C) ओ केवल जापानी शब्दक प्रयोग करैत अछि
(D) ओ कथाक सम्पूर्ण सार विस्तारसँ कहैत अछि
२. मात्सुओ बाशोकें हैकू-परम्परामे निर्णायक किएक मानल गेल अछि?
- (A) ओ हास्य-कविता हटाकऽ केवल दरबारी कविता लिखलन्हि
(B) ओ जापानमे हैकूक स्वतंत्र काव्य-विधा रूपक निर्धारण कएलन्हि
(C) ओ देवनागरीमे पहिल हैकू लिखलन्हि
(D) ओ रवीन्द्रनाथक अनुवादक सम्पादन कएलन्हि
३. 'परम अनुभूति' हैकू रचनाक लेल आवश्यक कहल गेल अछि। एकर व्यावहारिक अर्थ की बुझबाक चाही?
- (A) कवि दीर्घ व्याख्या आ उपदेश देथि
(B) कवि प्रत्यक्ष अनुभूतिक एक क्षणकें सघन रूपमे पकड़थि
(C) कवि इतिहासक क्रमवार विवरण देथि
(D) कवि छन्द छोड़ि मुक्त गद्य लिखथि
४. बाशोक '३-५ हैकू लिखनिहार हैकू कवि, १० लिखनिहार महाकवि' कथनसँ कोन निष्कर्ष निकलैत अछि?
- (A) हैकू संख्यात्मक उत्पादनक खेल अछि
(B) हैकू लिखब अत्यन्त कठिन, चयनशील आ साधनापरक विधा अछि
(C) कवि लेल हजार हैकू लिखब अनिवार्य अछि
(D) हैकू केवल वरिष्ठ कविक लेल आरक्षित अछि
५. भारतमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक हैकू-संबन्धी योगदानक सार की अछि?
- (A) ओ हैकूकें केवल बंगला लोकगीतमे बदलि देलन्हि
(B) ओ जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दू हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएलन्हि
(C) ओ मैथिलीमे १०० हैकू लिखलन्हि
(D) ओ हैबुनक पहिल भारतीय यात्रा-वृत्तान्त लिखलन्हि
६. लेखमे मैथिलीकें हैकू लेल विशेष उपयुक्त कहबाक ध्वन्यात्मक आधार की अछि?
- (A) मैथिलीमे दीर्घ कविता मात्र लिखल जाइत अछि
(B) मैथिली आ देवनागरी/भारतीय लिपि व्यवस्थामे लिखल आ बाजल ध्वनिक निकटता अछि
(C) मैथिलीमे ऋतुसूचक शब्द नहि अछि
(D) मैथिलीमे व्यञ्जन ध्वनि अनुपस्थित अछि
७. देवनागरीमे ह्रस्व 'इ' केर चर्चा हैकू लेखनमे किएक महत्वपूर्ण अछि?
- (A) एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ध्वनि-गणना आ उच्चारणक संबंध सावधानीसँ देखबाक चाही
(B) ई बतबैत अछि जे देवनागरी हैकू लेल अनुपयुक्त अछि
(C) ई केवल व्याकरणक असम्बद्ध उदाहरण अछि
(D) ई हैकूकें गद्य बना दैत अछि
८. लेखमे संधि-संबन्धी उदाहरणक उद्देश्य की अछि?
- (A) अंग्रेजीमे ध्वनि-प्रवाह नहि होइत अछि, ई सिद्ध करब
(B) पाणिनि आ ध्वनि-विज्ञानक आधारपर लिखन-बोलनक संबंध बुझाएब
(C) सन्धिक कारण हैकू असम्भव अछि, ई कहब
(D) मैथिलीमे विभक्ति अलग लिखबाक आग्रह करब

९. टनका/वाका, रेंगा, होक्कु आ हैकाइ केर क्रम बुझबाक मुख्य उपयोग की अछि?

- (A) हैकूक ऐतिहासिक विकास आ रूपान्तरण बुझबाक लेल
- (B) हैकूकें गीतसँ अलग करबाक लेल मात्र
- (C) मैथिली छन्दक गणना हटेबाक लेल
- (D) हैबुनकें कथा सिद्ध करबाक लेल

१०. रेंगामे ५-७-५ आ ७-७ केर दू लेखकद्वारा लेखनसँ कोन बात स्पष्ट होइत अछि?

- (A) हैकूक मूलमे सह-रचना आ खण्ड-रचना परम्परा रहल अछि
- (B) रेंगा सदैव एकल कविक आत्मकथा छल
- (C) रेंगा मैथिलीमे उत्पन्न भेल
- (D) रेंगा बिना ऋतु-सूचक शब्दक हास्य-विधा छल

११. मसाओका शिकी केर भूमिका लेखमे कोना व्याख्यायित अछि?

- (A) ओ रेन्गाक अन्त घोषित कऽ होक्कु आ हैकाइक बदलामे 'हैकू' केर समन्वित रूप देलन्हि
- (B) ओ सेन्यूकें ऋतु-कविता बना देलन्हि
- (C) ओ मैथिली लिपि सुधारलन्हि
- (D) ओ बाशोक हैबुन हटेलन्हि

१२. हैकू निअम १ केर अनुसार संरचना कोन अछि?

- (A) चारि पाँति ७-७-७-७
- (B) तीन पाँति ५-७-५, कुल १७ अक्षर/ध्वनि
- (C) दू पाँति समान तुकान्त
- (D) गद्य अनुच्छेदक अन्तमे एक लम्बा वाक्य

१३. संयुक्ताक्षर, हलन्त, बिकारी, इकार-आकार आदिक गणनाक नियमसँ कोन सावधानी निकलैत अछि?

- (A) प्रत्येक मात्रा स्वतंत्र अक्षर मानू
- (B) संयुक्ताक्षरकें एक गानू, हलन्त/बिकारी/इकार-आकारकें अलग गणना नहि करू
- (C) गणना पूर्णतः छोड़ि दिअ
- (D) केवल शब्दसंख्या गानू

१४. 'व्यंग्य हैकूक विषय नहि, ऋतु विषय अछि'—एहि वाक्यक सही अर्थ की अछि?

- (A) हैकूमे मानव-दुर्बलता आ व्यंग्य प्रमुख होए तँ ओ सेन्यूक क्षेत्रमे जाएत
- (B) हैकूमे प्रकृति पूर्णतः निषिद्ध अछि
- (C) हैकू सदैव राजनीतिक व्यंग्य होएब चाही
- (D) ऋतु-संकेत केवल सजावट अछि

१५. सेन्यू आ हैकू बीच लेखानुसार मुख्य भेद कोन अछि?

- (A) सेन्यूमे ऋतु-केंद्रित अनुभूति आ किरैजी-किगो अनुशासन नहि, मानव-दुर्बलता/व्यंग्य मुख्य होइत अछि
- (B) सेन्यू ५-७-५ सँ लम्बा महाकाव्य अछि
- (C) सेन्यू केवल संस्कृत छन्द अछि
- (D) सेन्यू यात्रा-वृत्तान्त अछि

१६. किरैजीक कार्य हैकूमे की मानल गेल अछि?

- (A) पहिल ५ वा दोसर ७ ध्वनिक बाद व्याकरणिक/भावात्मक विराम देब
- (B) हैकूकें पाँच अनुच्छेदमे बाँटब
- (C) कवि-नाम जोड़ब
- (D) गजल-जकाँ रदीफ दोहराएब

१७. जापानीमे लिंग-वचन भिन्नता नहि होएबाक चर्चा मैथिली हैकूमे कोन निर्देश दैत अछि?

- (A) मैथिलीमे सेहो वचनक समानता/संगति राखब उचित अछि
- (B) मैथिलीमे लिंग-वचन पूर्णतः हटाएब अनिवार्य अछि
- (C) हैकूमे संज्ञा प्रयोग नहि करब
- (D) जापानी शब्द ज्यो-का-त्यो राखब

१८. जापानी हैकू एक पंक्तिमे लिखल जाइत अछि, मुदा मैथिली लेल तीन पंक्ति किएक कहल गेल?

- (A) मैथिलीमे तीन ध्वनिखण्ड ५-७-५ स्पष्ट करबाक लेल
- (B) मैथिलीमे एक पंक्ति लिखब निषिद्ध अछि
- (C) देवनागरीमे पंक्ति बदललासँ अर्थ बदलि जाइत अछि
- (D) हैकूकेँ गीत बनएबाक लेल

१९. हैकू-पाठ 'एकहि श्वासमे' करबाक आग्रहसँ कोन सौंदर्यबोध प्रकट होइत अछि?

- (A) हैकू एक अखण्ड क्षणानुभूति अछि, केवल किरिजी-स्थल पर सूक्ष्म विराम चाही
- (B) हैकू बहुत जोर-जोरसँ पढ़बाक विधा अछि
- (C) हैकू पंक्ति-पंक्ति अलग कथा कहैत अछि
- (D) हैकूमे विराम चिह्न निषिद्ध अछि

२०. हैबुनक मूल स्वरूप लेखमे की कहल गेल अछि?

- (A) संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ हैकू मिलल यात्रा-वृत्तान्त
- (B) दोहा आ चौपाइक संग्रह
- (C) गजल आ गीतक संयुक्त रूप
- (D) केवल पाँच पंक्तिक प्रार्थना

२१. हैबुनमे बाशोक भूमिका की अछि?

- (A) ओ जापानक बौद्ध भिक्षु आ हैकू कवि छलाह आ हैबुनक प्रणेता मानल गेल छथि
- (B) ओ मैथिली गजलक पहिल रचनाकार छलाह
- (C) ओ केवल अनुवादक छलाह
- (D) ओ सेन्युक विरोधी सम्पादक छलाह

२२. हैबुन लेल 'पाँच अनुच्छेद आ पाँच हैकू' केर ऊपरका सीमा किएक देल गेल?

- (A) संक्षिप्तता आ गद्य-पद्यक सघन आत्मा बचएबाक लेल
- (B) पोथीक पृष्ठ संख्या घटेबाक लेल
- (C) कवि-सूची बनेबाक लेल
- (D) हैबुनकेँ उपन्यास बना देबाक लेल

२३. हैबुनमे '१ अनुच्छेद १ हैकू' केर नीचाँक सीमा की संकेत करैत अछि?

- (A) गद्य आ हैकू दुनूक उपस्थिति न्यूनतम शर्त अछि
- (B) हैबुनमे गद्यक आवश्यकता नहि
- (C) हैबुनमे पाँच हैकू अनिवार्य अछि
- (D) हैबुन केवल कवि-जीवनी अछि

२४. 'हैकू गद्य अनुच्छेदक अन्तमे ओकर चरमक रूपमे रहैत अछि'—एहि कथनक अर्थ की?

- (A) हैकू गद्यक अनुभूतिक संक्षिप्त, तीव्र निष्कर्ष/उद्भास बनैत अछि
- (B) हैकू गद्यक शीर्षक मात्र होइत अछि
- (C) हैकू आर गद्य असम्बद्ध रहैत अछि
- (D) हैकू गद्यक फुटनोट होइत अछि

२५. ज्योतिक 'तारा दूरसँ / बुझाइत कतेक शीतल / वास्तवमे जड़ैत' हैकूमे मुख्य काव्य-चाल की अछि?

- (A) दूरक दृश्य-भ्रम आ वस्तुक वास्तविक ताप बीच विरोध
- (B) शब्दक मात्र गणना मात्र
- (C) कथाक क्रमिक विकास
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

२६. 'नागफनीक काँटक बीच / कुसुम खिलायल' सन बिम्ब हैकूक दृष्टिसँ किएक प्रभावी अछि?

- (A) ओ कठोरता आ सौंदर्यक अचानक सह-अस्तित्व देखबैत अछि
- (B) ओ विस्तृत कथा सुनबैत अछि
- (C) ओ केवल नाम-सूची अछि
- (D) ओ ऋतु आ प्रकृति दुनू हटबैत अछि

२७. 'ओसक बूँद... हीरा सन चमकैत' पंक्ति-समूह हैकू-सौंदर्यक कोन गुण देखबैत अछि?

- (A) लघु प्राकृतिक दृश्यक दृश्यात्मक रूपान्तरण
- (B) दीर्घ धार्मिक व्याख्यान
- (C) कवि-जीवनीक विवरण
- (D) व्याकरणिक सूची

२८. 'पतझड़क पात / पसारलक अप्पन सतरंजी' मे किगो-संकेत कोना काम करैत अछि?

- (A) पतझड़ ऋतु-संकेत देइत अछि आ दृश्यक मौसमी वातावरणमे स्थिर करैत अछि
- (B) ओ केवल हास्य उत्पन्न करैत अछि
- (C) ओ हैबुनक यात्रा आरम्भ करैत अछि
- (D) ओ गजल-रदीफ बनैत अछि

२९. 'पक्षीक चहक / आऽ आकाशक लाली संग / प्रकृति जागल' हैकूमे अनुभवक केन्द्र की अछि?

- (A) भोरक ध्वनि आ दृश्यसँ प्रकृतिक जागरण
- (B) नायकक आत्मकथा
- (C) सभ्यता-इतिहासक विवरण
- (D) व्यंग्यात्मक कटाक्ष

३०. हैकू निअमक दृष्टिसँ कोन विकल्प सर्वाधिक शुद्ध आलोचनात्मक कसौटी अछि?

- (A) केवल ५-७-५ पर्याप्त नहि; ऋतु, अनुभूति, विराम आ संक्षिप्तता सेहो जरूरी
- (B) तीन पंक्ति भेला मात्र हैकू सिद्ध
- (C) कवि-नाम रहिते हैकू असफल
- (D) हैकूमे प्रकृति आए तें गणना अनावश्यक

३१. 'विदेह' द्वारा मैथिलीमे हैकू प्रस्तुत करबाक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) जापानी विधाकें मैथिली ध्वनि, लिपि आ संवेदनासँ अनुकूलित करब
- (B) मैथिली गीतक परम्परा नकारि देब
- (C) केवल जापानी भाषामे कविता छापब
- (D) हैकूकें पृष्ठ-सूची बनएब

३२. हैकूमे 'किगो' केर निहित अर्थ कोन विकल्प नीकसँ पकड़ैत अछि?

- (A) ऋतु-सूचक शब्द/छवि जे हैकूकें प्रकृतिक समयसँ जोड़ैत अछि
- (B) कवि-नामक संक्षेप
- (C) गद्यक पहिल वाक्य
- (D) व्यंग्यक चिह्न

३३. अर्द्धविरामक प्रयोग किरिजी लेल करबाक सलाहक मुख्य कारण की अछि?

- (A) ओ पाठमे सूक्ष्म विराम देइत अछि मुदा हैकूक एक-श्वास प्रवाह नहि तोड़ैत
- (B) ओ प्रत्येक पंक्ति समाप्त करैत अछि
- (C) ओ गणना १७ सँ बढ़ा दैत अछि
- (D) ओ हैबुनकें संवाद बनबैत अछि

३४. दरबारी रेन्गा आ वणिक-वर्गीय रेन्गाक भेदसँ बाशोक काव्य-स्थिति कोना स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाशो गम्भीर दरबारी आग्रहसँ अलग, वणिक-वर्गीय रेन्गाक धरातल पर स्वतंत्रता खोजैत छथि
- (B) बाशो दरबारक राजकवि मात्र छलाह
- (C) बाशो सेन्यू छोड़ि नाटक लिखलन्हि
- (D) बाशो मैथिलीमे रेन्गा लिखलन्हि

३५. हैकूक संक्षिप्तता केहन संक्षिप्तता थिक?

- (A) अर्थ-समृद्ध आ अनुभूति-प्रधान संक्षिप्तता
- (B) सूचना काटि अधूरा छोड़बाक संक्षिप्तता
- (C) केवल शब्द कम करबाक यांत्रिक पद्धति
- (D) विषयहीन मौन

३६. हैकू आ हैबुनक सम्बन्धक सही व्याख्या कोन अछि?

- (A) हैबुनमे हैकू गद्यक चरम-बिन्दु बनि अबैत अछि
- (B) हैकू हैबुनमे निषिद्ध अछि
- (C) हैबुन हैकूक केवल अनुवाद अछि
- (D) हैकू आ हैबुन पूर्णतः असम्बद्ध विधा अछि

३७. कुनो रचना ५-७-५ मे अछि मुदा व्यंग्य आ मानव-दुर्बलता ओकर मुख्य विषय अछि। लेखानुसार ओकर निकटतम वर्गीकरण की होएत?

- (A) सेन्यू
- (B) हैबुन
- (C) टनका
- (D) रेन्गा

३८. मैथिली हैकू लेल 'लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि' सिद्धान्त किएक उपयोगी अछि?

- (A) ध्वनि-गणना, लय आ उच्चारणक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि
- (B) कवि भाषा बदले बिना जापानी लिखि सकैत छथि
- (C) ई हैकूक विषय बदलि दैत अछि
- (D) ई हैबुनमे गद्य हटबैत अछि

३९. हैकू रचनामे ऋतु-संकेतक अनुपस्थिति कखन समस्याजनक मानल जाएत?

- (A) जखन रचना केवल चतुर व्यंग्य वा सामान्य कथन बनि रहि जाए
- (B) जखन रचना तीन पंक्तिमे लिखल जाए
- (C) जखन कवि प्रकृति देखथि
- (D) जखन शब्द कम होथि

४०. हैकूक 'एक क्षण' आ हैबुनक 'यात्रा' बीच संतुलन कोना बनैत अछि?

- (A) यात्रा-गद्य अनुभवक पृष्ठभूमि दैत अछि, हैकू अन्तमे क्षणक चरम उजागर करैत अछि
- (B) हैबुनमे यात्रा-विवरण हैकूकें हटबैत अछि
- (C) हैकू पूरा यात्रा-वृत्तान्त विस्तारसँ कहैत अछि
- (D) दूनों केवल छन्द-गणना अछि

१. (A) ओहिमे सौंदर्य आ भावक संक्षिप्त, तीव्र अनुभूति रूप ग्रहण करैत अछि — लेखमे हैकूकेँ सौंदर्य आ भावक जापानी विधा कहल गेल अछि; ओकर सार छोट आकार नहि, संक्षिप्त रूपमे परम अनुभूति अछि।
२. (B) ओ जापानमे हैकूक स्वतंत्र काव्य-विधा रूपक निर्धारण कएलन्हि — लेख बाशोकें ओहि कवि रूपमे राखैत अछि जिनका द्वारा हैकू स्वतंत्र काव्य-विधाक रूपमे प्रतिष्ठित भेल।
३. (B) कवि प्रत्यक्ष अनुभूतिक एक क्षणकेँ सघन रूपमे पकड़थि — हैकू क्षण-विशेषक तीव्र अनुभूति पर टिकैत अछि; व्याख्यान, उपदेश वा विवरण ओकर स्वभाव नहि।
४. (B) हैकू लिखब अत्यन्त कठिन, चयनशील आ साधनापरक विधा अछि — एहि कथनक अर्थ ई जे हैकूक गुणात्मक साधना कठिन अछि; कम संख्याओमे श्रेष्ठ रचना असाधारण मानल जाइत अछि।
५. (B) ओ जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दू हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएलन्हि — लेखक अनुसार १९१९ ई. मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दूटा हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएने रहथि।
६. (B) मैथिली आ देवनागरी/भारतीय लिपि व्यवस्थामे लिखल आ बाजल ध्वनिक निकटता अछि — लेख लिखल-बाजल ध्वनिक साम्यकेँ हैकू लेल उपयोगी मानैत अछि, कारण हैकू अक्षर/ध्वनि-संयम पर निर्भर अछि।
७. (A) एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ध्वनि-गणना आ उच्चारणक संबंध सावधानीसँ देखबाक चाही — ह्रस्व 'इ' लिखन-उच्चारणक सूक्ष्म भिन्नता देखबैत अछि; हैकूमे ध्वनि-गणना लेल ई सजगता जरूरी अछि।
८. (B) पाणिनि आ ध्वनि-विज्ञानक आधारपर लिखन-बोलनक संबंध बुझाएब — संधिक उदाहरणसँ लेख ध्वनि-विज्ञान, लिखन-बोलन आ उच्चारण-प्रवाहक संबंध पर बल दैत अछि।
९. (A) हैकूक ऐतिहासिक विकास आ रूपान्तरण बुझबाक लेल — लेख जापानी प्रार्थना-रूप ५-७-५-७-७ सँ रेंगा, होक्कु/हैकाइ आ अंततः हैकू धरि विकास-क्रम देखबैत अछि।
१०. (A) हैकूक मूलमे सह-रचना आ खण्ड-रचना परम्परा रहल अछि — लेख कहैत अछि जे ५-७-५ आ ७-७ दू लेखकद्वारा लिखल जाए लागल; एहिसँ सह-रचनात्मक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट अछि।
११. (A) ओ रेन्गाक अन्त घोषित कऽ होक्कु आ हैकाइक बदलामे 'हैकू' केर समन्वित रूप देलन्हि — लेख शिकीकेँ ओ व्यक्ति मानैत अछि जे रेन्गाक अन्तक घोषणा कऽ होक्कु/हैकाइक स्थान पर हैकूक समन्वित रूप देलन्हि।
१२. (B) तीन पाँति ५-७-५, कुल १७ अक्षर/ध्वनि — लेखमे स्पष्ट अछि जे हैकू १७ अक्षरक होइत अछि आ ५-७-५ क्रममे तीन पाँतिमे लिखल जाइत अछि।
१३. (B) संयुक्ताक्षरकेँ एक गानू, हलन्त/बिकारी/इकार-आकारकेँ अलग गणना नहि करू — लेखक ध्वनि-गणना सरल रखैत छथि—संयुक्ताक्षर एक, आ हलन्त/बिकारी/स्वर-चिह्न अलग गणना नहि।
१४. (A) हैकूमे मानव-दुर्बलता आ व्यंग्य प्रमुख होए तँ ओ सेन्यूक क्षेत्रमे जाएत — लेख हैकूक मूल विषय ऋतु मानैत अछि आ व्यंग्य/मानव दुर्बलताक विधाकेँ सेन्यू कहैत अछि।
१५. (A) सेन्यूमे ऋतु-केंद्रित अनुभूति आ किरैजी-किगो अनुशासन नहि, मानव-दुर्बलता/व्यंग्य मुख्य होइत अछि — लेख सेन्यूकेँ व्यंग्य आ मानव दुर्बलताक विधा कहैत अछि, जकर अनुशासन हैकूक किगो-किरेजीसँ अलग अछि।
१६. (A) पहिल ५ वा दोसर ७ ध्वनिक बाद व्याकरणिक/भावात्मक विराम देब — लेखमे जापानी हैकूमे प्रथम ५ वा दोसर ७ ध्वनिक बाद किरैजी अर्थात व्याकरण विराम देबाक बात अछि।
१७. (A) मैथिलीमे सेहो वचनक समानता/संगति राखब उचित अछि — लेखक जापानीक एहि प्रकृतिक आधारपर मैथिलीमे वचन-समानता राखबाक सलाह दैत छथि।
१८. (A) मैथिलीमे तीन ध्वनिखण्ड ५-७-५ स्पष्ट करबाक लेल — लेख मैथिलीमे ५-७-५ केर तीन ध्वनिखण्ड स्पष्ट रखबाक लेल तीन पंक्ति-प्रयोगक सलाह दैत अछि।
१९. (A) हैकू एक अखण्ड क्षणानुभूति अछि, केवल किरैजी-स्थल पर सूक्ष्म विराम चाही — एक श्वासमे पाठ हैकूक क्षणात्मक अखण्डता रक्षैत अछि; अर्द्धविराम किरैजीक मर्यादित विरामक संकेत अछि।

२०. (A) संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ हैकू मिलल यात्रा-वृत्तान्त — लेख हैबुनकें यात्रा-वृत्तान्त कहैत अछि जाहिमे संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ हैकू पद्य रहैत अछि।
२१. (A) ओ जापानक बौद्ध भिक्षु आ हैकू कवि छलाह आ हैबुनक प्रणेता मानल गेल छथि — लेख बाशोकें बौद्ध भिक्षु, हैकू कवि आ हैबुनक प्रणेता मानैत अछि।
२२. (A) संक्षिप्तता आ गद्य-पद्यक सघन आत्मा बचएबाक लेल — लेखक मानैत छथि जे अत्यधिक विस्तार हैबुनक आत्मा बिगाड़ि दैत अछि; तें संक्षिप्त सीमा आवश्यक अछि।
२३. (A) गद्य आ हैकू दुनूक उपस्थिति न्यूनतम शर्त अछि — हैबुन मिश्र-विधा अछि; एक अनुच्छेद आ एक हैकू ओकर न्यूनतम गद्य-पद्य संतुलन बनबैत अछि।
२४. (A) हैकू गद्यक अनुभूतिक संक्षिप्त, तीव्र निष्कर्ष/उद्भास बनैत अछि — हैबुनमे गद्य अनुभव रचैत अछि आ अन्तक हैकू ओहि अनुभवक चरम क्षणकें पकड़ैत अछि।
२५. (A) दूरक दृश्य-भ्रम आ वस्तुक वास्तविक ताप बीच विरोध — एहि हैकूमे दूरसँ शीतल बुझाइट ताराक वास्तविक दाहकता—दृश्य आ सत्यक विपरीतता —क्षणमे उद्घाटित अछि।
२६. (A) ओ कठोरता आ सौंदर्यक अचानक सह-अस्तित्व देखबैत अछि — हैकू क्षणिक बिम्बसँ गूढ़ अनुभूति देइत अछि; काँट आ फूलक संग-साथे सौंदर्यक चमत्कार रचैत अछि।
२७. (A) लघु प्राकृतिक दृश्यक दृशात्मक रूपान्तरण — ओसक सूक्ष्म बूँदकें हीरा-चमकमे देखब हैकूक लघु दृश्य-बोध आ अप्रत्याशित रूपान्तरणक उदाहरण अछि।
२८. (A) पतझड़ ऋतु-संकेत देइत अछि आ दृश्यकें मौसमी वातावरणमे स्थिर करैत अछि — पतझड़क पात ऋतु-सूचक शब्द/छवि रूपमे पूरा हैकूकें मौसमी अनुभूति दैत अछि।
२९. (A) भोरक ध्वनि आ दृश्यसँ प्रकृतिक जागरण — पक्षीक स्वर आ आकाशक लाली मिलि भोरक क्षणानुभूति बनबैत अछि—ई हैकूक प्रकृति-केंद्रितता अछि।
३०. (A) केवल ५-७-५ पर्याप्त नहि; ऋतु, अनुभूति, विराम आ संक्षिप्तता सेहो जरूरी — लेख संरचना, विषय, किरिजी, वचन-संगति, पाठ-प्रवाह आ अनुभूति—सबकें संग रखैत अछि।
३१. (A) जापानी विधाकें मैथिली ध्वनि, लिपि आ संवेदनासँ अनुकूलित करब — अंक हैकूकें मैथिलीमे पहिल बेर जापानी विधाक आधार पर प्रस्तुत करैत अछि—ई अनुकरण नहि, अनुकूलनक संकेत अछि।
३२. (A) ऋतु-सूचक शब्द/छवि जे हैकूकें प्रकृतिक समयसँ जोड़ैत अछि — लेख हैकूक विषय ऋतु मानैत अछि; किगो ओहि ऋतु-बोधक संकेतक रूपमे बुझल जाएत।
३३. (A) ओ पाठमे सूक्ष्म विराम देइत अछि मुदा हैकूक एक-श्वास प्रवाह नहि तोड़ैत — अर्द्धविराम किरिजीक हलुक व्याकरणिक विरामक चिन्ह अछि; पाठक अखण्ड प्रवाह बनल रहैत अछि।
३४. (A) बाशो गम्भीर दरबारी आग्रहसँ अलग, वणिक्-वर्गीय रेन्गाक धरातल पर स्वतंत्रता खोजैत छथि — लेख दरबारी रेन्गाक गांभीर्य आ वणिक्-वर्गीय रूपक भेद बतबैत बाशोकें वणिक्-वर्गीय रेन्गा रचनासँ जोड़ैत अछि।
३५. (A) अर्थ-समृद्ध आ अनुभूति-प्रधान संक्षिप्तता — हैकू छोट अछि, मुदा ओकर छोटपन अनुभूति, बिम्ब आ ऋतु-बोधसँ अर्थवान् होइत अछि।
३६. (A) हैबुनमे हैकू गद्यक चरम-बिन्दु बनि अबैत अछि — हैबुन वर्णनात्मक गद्य आ हैकूक संयोजन अछि; अन्तक हैकू अनुभवक उच्चतम संक्षेप बनैत अछि।
३७. (A) सेन्यू — लेख स्पष्ट करैत अछि जे व्यंग्य आ मानव दुर्बलताक क्षेत्र सेन्यूक अछि, हैकूक मुख्य विषय ऋतु अछि।
३८. (A) ध्वनि-गणना, लय आ उच्चारणक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि — हैकू ध्वनि-संयम पर आधारित अछि; ध्वन्यात्मक लिपि लेखन आ पाठक बीच दूरी घटबैत अछि।
३९. (A) जखन रचना केवल चतुर व्यंग्य वा सामान्य कथन बनि रहि जाए — लेख हैकूक विषय ऋतु मानैत अछि; ऋतु-संकेत नहिं होए आ व्यंग्य प्रधान होए तँ रचना हैकूसँ हटि सेन्यूक दिश जा सकैत अछि।
४०. (A) यात्रा-गद्य अनुभवक पृष्ठभूमि दैत अछि, हैकू अन्तमे क्षणक चरम उजागर करैत अछि — हैबुनमे गद्य यात्रा-परिप्रेक्ष्य बनबैत अछि, मुदा हैकू ओकर सबसे सघन अनुभूतिक क्षण समेटैत अछि।

अध्याय २ : विदेह विशेषांक ०२ — मैथिली गजल प्रश्नोत्तरी

१. धीरेन्द्र प्रेमर्षि गीत आ गजलकेँ 'सहोदर' किएक कहैत छथि?

- (A) दूनूक भाव-संगीतात्मक निकटता अछि, मुदा जीवन-यात्रा अलग-अलग रहल अछि
- (B) दूनू एकहि छन्दक नाम अछि
- (C) गीत गजलसँ उत्पन्न भेल अछि
- (D) गजल केवल मैथिली गीतक अनुवाद अछि

२. मैथिली साहित्यक सन्दर्भमे गीत आ गजल बीच ऐतिहासिक भेद कोन अछि?

- (A) गीत प्राचीन शैली अछि, गजल अपेक्षाकृत नवीन रूपमे आयल
- (B) गजल प्राचीन आ गीत बिल्कुल नवीन
- (C) दूनू एकहि समय अरबमे आरम्भ भेल
- (D) गीतक मैथिलीसँ कोनो सम्बन्ध नहि

३. गजलक 'अरबदिस पहुँचि पलल-बढ़ल' रूपकसँ लेखक की बुझबैत छथि?

- (A) गजल मिथिला-संस्कृति सँ बाहर विकसित भऽ पुनः मिथिला धरि पहुँचल
- (B) गजल अरबमे समाप्त भऽ गेल
- (C) गीत अरबमे जन्मल
- (D) मैथिलीमे गजल असम्भव अछि

४. मिथिलाक गीत गजलकेँ पहिने 'प्रतिद्वन्दी' किएक बुझलक?

- (A) नव आयल विधा पुरान गीत-क्षेत्रमे अपन जगह बनबैत देखाइत छल
- (B) गजलमे तुकबन्दी नहि छल
- (C) गजल केवल गद्य छल
- (D) गीतमे भावना नहि रहैत अछि

५. गीत आ गजल दुनूक स्वभावमे स्थानीयताक असरि मानबाक अर्थ की?

- (A) काव्य-विधा अपन पोसुआ सांस्कृतिक भूमि अनुसार भाव-तेवर ग्रहण करैत अछि
- (B) विधा स्थानसँ स्वतंत्र निर्जीव नियम मात्र अछि
- (C) केवल भाषा बदललासँ भाव पूर्णतः हटि जाइत अछि
- (D) गीत आ गजलमे कोनो सामाजिक संदर्भ नहि

६. लेखक मिथिलाक गीतकेँ 'फूलक सेजौट' सन किएक देखैत छथि?

- (A) मिथिलाक गीत कटु बातोंकेँ मोलायम, मधुर भावमे कहैत अछि
- (B) गीत केवल पुष्प-वर्णन करैत अछि
- (C) गीतमे सामाजिक प्रश्न निषिद्ध अछि
- (D) गीत तीक्ष्ण तलवार-जकाँ प्रहार करैत अछि

७. गजलमे 'तरुआरिजकाँ सीधे बेध दैत' कथनक आलोचनात्मक अर्थ की अछि?

- (A) गजल भाव वा विचारकेँ तीव्र, सीधा आ धारदार ढंगसँ व्यक्त करैत अछि
- (B) गजल हिंसाक प्रचार करैत अछि
- (C) गजलमे प्रेमक स्थान नहि
- (D) गजल लम्बा आख्यान अछि

८. 'गीत तरुआरि सेहो फूलजकाँ भँजैत अछि'—ई गजलसँ गीतक कोन भेद देखबैत अछि?

- (A) गीत कठोर भावकेँ मधुर, सांस्कृतिक मृदुता मे रूपान्तरित करैत अछि
- (B) गीतमे कोनो विचार नहि
- (C) गीत केवल लोरी अछि
- (D) गीत गजलक अनुकरण अछि

९. लेखक मैथिली गजलकेँ हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कमतर नहि किएक मानैत छथि?

- (A) गुणवत्ताक दृष्टिसँ मैथिली गजल कतहु झूस नहि देखाइत अछि
- (B) मैथिली गजल संख्यामे सबसे बेसी अछि
- (C) हिन्दी-नेपालीमे गजल लिखल नहि गेल
- (D) मैथिली गजलमे नियम नहि अछि

१०. भारतेन्दु, मोतीराम भट्ट आ पं. जीवन झाक उल्लेखक प्रयोजन की अछि?

- (A) हिन्दी, नेपाली आ मैथिलीमे गजलक प्रवेश लगभग एकहि कालखण्डमे भेल, ई देखाएब
- (B) तीनू केवल गीतकार छलाह
- (C) मैथिली गजल बहुत बादमे आयल, ई सिद्ध करब
- (D) गजल केवल नेपालमे जन्मल

११. दू-दू पाँतिक तुकबन्दी समूहकेँ गजल मानबामे लेखकक आपत्ति किएक अछि?

- (A) गजलमे विशिष्ट अन्त्यानुप्रास, स्थायी अनुप्रास, कथ्य आ प्रवाहक अनुशासन चाही
- (B) गजलमे दू पाँति होएब निषिद्ध अछि
- (C) तुकबन्दी गजलमे अबैत नहि अछि
- (D) गजल केवल गद्यक नाम अछि

१२. गजलक पहिल दू पाँतिक संरचनात्मक विशेषता की कहल गेल अछि?

- (A) दूनु पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत अछि
- (B) दूनु पाँति पूर्णतः अतुकान्त रहैत अछि
- (C) पहिल पाँति गद्य, दोसर पद्य रहैत अछि
- (D) दूनु पाँति अलग-अलग भाषा मे होइत अछि

१३. 'अन्तिम साझी शब्द' रहितो ओकरा पहिनुक शब्दमे तुकबन्दी किएक जरूरी अछि?

- (A) केवल दोहराओल शब्द पर्याप्त नहि; तुकक कलात्मक संबंध पहिने बनैत अछि
- (B) साझी शब्द हटेबाक लेल
- (C) गजलकेँ गीत बनएबाक लेल
- (D) पहिल पाँति स्वच्छन्द करबाक लेल

१४. गजलक बादक दू-दू पाँति युग्ममे अनुप्रासक क्रम की अछि?

- (A) पहिल पाँति स्वच्छन्द, दोसर पाँति स्थायी अनुप्रासकेँ पछुअबैत
- (B) पहिल पाँति स्थायी, दोसर स्वच्छन्द
- (C) दूनु पाँति बिना तुक
- (D) प्रत्येक पाँति अलग छन्द

१५. लेखमे 'गजलक मुह-कानक संरचना' कहबाक अर्थ की?

- (A) केवल बाह्य आकार—तुक, अनुप्रास, पाँति-विन्यास
- (B) गजलक सम्पूर्ण सौंदर्य
- (C) कविक जीवनी
- (D) गीतक स्वर-लिपि

१६. केवल बाह्य तुक-रचना पर ध्यान दऽ कथ्य कमजोर रहि जाए तँ लेखक ओकरा की कहैत छथि?

- (A) गजल नहि, 'गीजल' बनि जाइत अछि
- (B) पूर्ण महाकाव्य बनैत अछि
- (C) गीतक सर्वोच्च रूप बनैत अछि
- (D) कथा बनि जाइत अछि

१७. गजल प्रस्तुतीकरणमे 'रहस्य, रोमाञ्च आ समधानल चोट' केर मांग किएक अछि?

- (A) गजलकेँ प्रभावी, तीव्र आ अर्थवान् बनएबाक लेल
- (B) तुकबन्दी हटाएबाक लेल
- (C) गीतसँ पूरा दूरी बनएबाक लेल
- (D) कथा-विस्तार करबाक लेल

१८. गजलक शब्दसभ 'ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे' बैसबाक चाही—एहि कथनक अर्थ की?

- (A) गजलमे लय, मात्रिक संतुलन आ शब्द-संयोजन सघन होएब चाही
- (B) गजलमे लयक कोनो भूमिका नहि
- (C) गजल केवल बोलचालक वाक्य होएब चाही
- (D) शब्दक अर्थ अनावश्यक अछि

१९. 'हसरक सिराउर' रूपकमे गजलक पहिल पाँतिक भूमिका की अछि?

- (A) कल्पना वा विषयवस्तुक उठान करब
- (B) अन्त्यानुप्रास समाप्त करब
- (C) गजलकेँ निष्कर्ष देब
- (D) कवि-नाम लिखब

२०. ओही रूपकमे दोसर पाँतिक भूमिका की अछि?

- (A) पहिल पाँतिमे खसाओल बीजकेँ तोपन दऽ आगू बढ़बाक मार्ग बनेब
- (B) पहिल पाँतिसँ असम्बद्ध रहब
- (C) केवल छन्द पूरा करब
- (D) कथ्यकेँ हटेब

२१. गजलक प्रत्येक दू-पाँतिक स्वतंत्रता आ समग्रता बीच संबंध कोन अछि?

- (A) प्रत्येक युग्म अपनहुमे स्वतंत्र, मुदा समग्र गजलमे विशिष्ट अर्थ सेहो दैत अछि
- (B) प्रत्येक पाँति केवल पछिला पाँतिपर निर्भर
- (C) गजलमे समग्रता होएब निषिद्ध
- (D) प्रत्येक युग्म अलग कविता मानि बाकी हटाएब चाही

२२. लालोलाल लोह आ धनक चोटक रूपक गजलक कोन गुण बतबैत अछि?

- (A) पहिल पाँति कच्चा ऊर्जा/कल्पना, दोसर ओकरा आकार देबएबला निर्णायक प्रहार
- (B) दूनू पाँति निष्क्रिय सजावट
- (C) कवि आ पाठकक जीवनी
- (D) गजलमे आगि-वर्णन अनिवार्य

२३. गीतमे सिद्धहस्त मैथिलसभ गजल सृजन सहज किएक करि सकैत छथि?

- (A) मधुर भाषा, लय-बोध आ भाव-संस्कार गजल अपनबामे आधार दैत अछि
- (B) गीतकारसभ तुक नहि बुझैत छथि
- (C) गजलमे लयक आवश्यकता नहि
- (D) गीत आ गजल पूर्णतः एकहि अछि

२४. आरसीप्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ. महेन्द्र आदि नामक उल्लेखक आशय की अछि?

- (A) गीत-क्षेत्रक व्यक्तित्वसभ सेहो गजलमे सफलतासँ कलम चलौलनि
- (B) ई सभ गजल-विरोधी छलाह
- (C) ई सभ केवल सम्पादक छलाह
- (D) ई सभ सेन्यु लिखैत छलाह

२५. जनकवि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क 'भगवान हमर ई मिथिला' उल्लेखक उद्देश्य की अछि?

- (A) देखाएब जे मैथिली कवितामे गजल-संरचना अपनाओल गेल
- (B) यात्री केवल अरबीमे लिखैत छलाह
- (C) ओ कविता गीत-संरचना तोड़ैत नहि
- (D) गजलमे मिथिला विषय निषिद्ध अछि

२६. सियाराम झा 'सरस', स्व. कलानन्द भट्ट आ डॉ. राजेन्द्र विमल केर सामूहिक उल्लेख कोन बात लेल अछि?

- (A) खाँटी मैथिली गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि
- (B) ई सभ केवल नाटककार छलाह
- (C) ई सभ महिला हस्ताक्षर छलाह
- (D) ई सभ गजल-विधाक विरोधी छलाह

२७. मैथिली गजल-संसारक विस्तृति सम्बन्धी लेखकक दृष्टि कोन अछि?

- (A) अनेक स्रष्टा गजल लिखि मैथिली गजल-संसारकें निरन्तर विस्तृत कएलन्हि
- (B) मैथिलीमे केवल एक गजलकार अछि
- (C) गजल-विस्तारक कोनो प्रमाण नहि
- (D) गजल केवल पत्रिकामे निषिद्ध रहल

२८. गजलमे महिला हस्ताक्षरक स्थिति लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) बहुत कम देखल जाइत अछि
- (B) महिला गजलकारसभ सर्वाधिक छथि
- (C) महिला गजल पूर्णतः अनुपस्थित अछि
- (D) केवल महिला गजलकार मान्य छथि

२९. 'पल्लव'क पूर्णाङ्क १५, २०५१ चैतक गजल अङ्कक महत्त्व की अछि?

- (A) लगभग ३४ गजलकारक एकठाम समायोजनक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण
- (B) केवल गीत-संग्रह
- (C) सेन्यु विशेष्ठांक
- (D) गद्य-पत्रकारिता अङ्क

३०. ओहि पल्लव अङ्कमे डॉ. शेफालिका वर्माक उल्लेख किएक विशेष अछि?

- (A) ओ एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक संग उपस्थित भेलीह
- (B) ओ सम्पादक नहि छलथिन
- (C) ओ गजल-विरोधी लेख लिखलन्हि
- (D) ओ अरबी गजल अनुवाद कएलन्हि

३१. पल्लव गजल अङ्कपर नेपालीमे लिखल दू आलोचनात्मक आलेखक उल्लेख की देखबैत अछि?

- (A) मैथिली गजल विमर्श नेपालक साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो प्रतिध्वनित भेल
- (B) मैथिली गजल केवल भारतमे सीमित रहल
- (C) गजल आलोचना असम्भव छल
- (D) पल्लव अङ्क अप्रभावी रहल

३२. 'लोकवेद आ लालकिला'क महत्त्व लेखमे कोना राखल गेल अछि?

- (A) मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप फरिछाकऽ कहबएबला महत्त्वपूर्ण संकलन/विमर्श
- (B) बाल-कविताक संग्रह
- (C) हैकू नियमावली
- (D) नाटक-समीक्षा मात्र

३३. 'मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटि' रूपकक अर्थ की अछि?

- (A) गीत-परम्पराक उर्वर भूमि पर मैथिली गजल गुणवत्तासँ विकसित भऽ रहल अछि
- (B) गजल गीतक शत्रु अछि
- (C) गजल लेल मैथिली भूमि बाँझ अछि
- (D) गीतक कारण गजल समाप्त भऽ गेल

३४. जँ कोनो रचना केवल अन्तमे एकहि शब्द दोहरबैत अछि, मुदा साझा शब्दसँ पहिने तुक नहि मिलैत, तँ प्रेमर्षिक कसौटी पर समस्या की अछि?

- (A) स्थायी अनुप्रास/तुकक मुख्य शर्त अधूरी अछि
- (B) रचना अवश्य श्रेष्ठ गजल अछि
- (C) पहिल दू पाँति हटाएब चाही
- (D) ओ गीत बनि जाएत

३५. गजलक शेर/दू-पाँति युग्मकेँ स्वतंत्र होएबाक मांगसँ पाठकपर की प्रभाव पड़ैत अछि?

- (A) प्रत्येक युग्म अलग चोट आ अर्थ देइत अछि, तखनो पूरा गजल एक अनुभूति बनबैत अछि
- (B) पाठक केवल शीर्षक पढ़ैत अछि
- (C) समग्र अर्थ असम्भव होइत अछि
- (D) दू पाँति बाद गजल समाप्त होइत अछि

३६. लेखकक अनुसार गजल केवल प्रेमक कोमल अभिव्यक्ति नहि, किएक?

- (A) प्रेमो एहिमे धरगर, धारदार आ लक्ष्यभेदी अन्दाजमे कहल जाइत अछि
- (B) गजलमे प्रेम बिल्कुल नहि रहैत अछि
- (C) गजल केवल धार्मिक विधा अछि
- (D) गजल गीतक नकल अछि

३७. गजलमे 'लाइलपटमे बेसी नहि रहैत' कथनक अर्थ की अछि?

- (A) गजल अनावश्यक लम्बाई वा घुमा-फिरा कऽ कहबाक बदला सीधा असर करैत अछि
- (B) गजल सदैव लम्बा उपन्यास होइत अछि
- (C) गजलमे अर्थ अस्पष्ट राखब आवश्यक अछि
- (D) गजल केवल हास्य-विनोद अछि

३८. नवसिखुआ गजलकार लेल लेखसँ निकलबला सर्वोत्तम सलाह कोन अछि?

- (A) ढङ्गसँ किछु गजल पढ़ि संरचना, कथ्य आ लय आत्मसात करू
- (B) केवल दू-दू पाँति तुक मिला दिअ
- (C) गजलमे कथ्यक चिंता नहि करू
- (D) गीत लिखब छोड़ि दिअ

३९. गजल आ गीतक अन्तिम मेल-मिलापक रूपकसँ मैथिली साहित्य लेल कोन संकेत भेटैत अछि?

- (A) नव विधा पुरान परम्परासँ संवाद कऽ अपन स्थान बना सकैत अछि
- (B) नव विधा सदैव पुरान विधाकेँ नष्ट करैत अछि
- (C) परम्परा संवाद स्वीकार नहि करैत
- (D) गजल आ गीतक सह-अस्तित्व असम्भव अछि

४०. गजलक संरचना पर 'विना पारिभाषिक शब्द' विचार राखबाक लेखकक रणनीति की सूचित करैत अछि?

- (A) ओ नव जिज्ञासुक लेल व्यवहारिक, सहज मार्गदर्शन देब चाहैत छथि
- (B) ओ गजल-शास्त्र अस्वीकार करैत छथि
- (C) ओ नियमक आवश्यकता नहि मानैत छथि
- (D) ओ केवल जीवनी लिखि रहल छथि

४१. मैथिली गजलमे गुणात्मक विकासक लेल लेखमे अप्रत्यक्ष रूपेँ कोन दू आधार महत्वपूर्ण बुझाईत अछि?

- (A) गीत-परम्पराक लय-संस्कार आ गजलक अनुशासित संरचना
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या आ नाम-सूची
- (C) केवल अरबी शब्दावली
- (D) केवल राजनीतिक नारा

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) दूनूक भाव-संगीतात्मक निकटता अछि, मुदा जीवन-यात्रा अलग-अलग रहल अछि — लेख गीत-गजलकेँ रूप-रङ्ग आ चालि-प्रकृतिमे निकट मानैत अछि, मुदा इतिहास आ स्वभावमे फरक देखबैत अछि।
२. (A) गीत प्राचीन शैली अछि, गजल अपेक्षाकृत नवीन रूपमे आयल — लेख स्पष्ट कहैत अछि जे मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैली अछि, जखन कि गजल अत्यन्त नवीन रूपमे पहुँचल।
३. (A) गजल मिथिला-संस्कृति सँ बाहर विकसित भऽ पुनः मिथिला धरि पहुँचल — रूपक गजलक बाहरी ऐतिहासिक यात्रा आ बादमे मिथिलामे आगमनक बात कहैत अछि।
४. (A) नव आयल विधा पुरान गीत-क्षेत्रमे अपन जगह बनबैत देखाइत छल — लेखमे कहल गेल जे अपरिचयक समय मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत गजलकेँ जगह कब्जा करऽ आयल प्रतिद्वन्द्वी जकाँ देखलक।
५. (A) काव्य-विधा अपन पोसुआ सांस्कृतिक भूमि अनुसार भाव-तेवर ग्रहण करैत अछि — लेख कहैत अछि जे गीत आ गजलक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीय असर स्पष्ट देखाइत अछि।
६. (A) मिथिलाक गीत कटु बातोंकेँ मोलायम, मधुर भावमे कहैत अछि — गीतमे गारियोमे रिदम आ मधुरता अछि; कठोर बात सेहो फूल-जकाँ नरम भावमे कहल जाइत अछि।
७. (A) गजल भाव वा विचारकेँ तीव्र, सीधा आ धारदार ढंगसँ व्यक्त करैत अछि — लेख गजलक तेवरकेँ तेज आ प्रत्यक्ष मानैत अछि; प्रेमो धरगर अन्दाजमे कहल जाइत अछि।
८. (A) गीत कठोर भावकेँ मधुर, सांस्कृतिक मृदुता मे रूपान्तरित करैत अछि — गीत तीक्ष्ण कथ्यकेँ सेहो फूल-जकाँ कोमल बना दैत अछि; गजल ओही कथ्यकेँ सीधा चोटक रूपमे देइत अछि।
९. (A) गुणवत्ताक दृष्टिसँ मैथिली गजल कतहु झूँस नहि देखाइत अछि — लेख गुणात्मक स्तर पर मैथिली गजलकेँ हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कनेको कम नहि मानैत अछि।
१०. (A) हिन्दी, नेपाली आ मैथिलीमे गजलक प्रवेश लगभग एकहि कालखण्डमे भेल, ई देखाएब — लेख तीनू भाषाक आरम्भिक गजल-संबद्ध स्रष्टाकेँ एक कालखण्डमे राखि तुलनात्मक विकास देखबैत अछि।
११. (A) गजलमे विशिष्ट अन्त्यानुप्रास, स्थायी अनुप्रास, कथ्य आ प्रवाहक अनुशासन चाही — लेखक कहैत छथि जे केवल दू पाँतिक तुकबन्दी समूह गजल नहि; संरचना आ कथ्य दूनूक साधना आवश्यक अछि।
१२. (A) दूनू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत अछि — लेख स्पष्ट करैत अछि जे गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत अछि।
१३. (A) केवल दोहराओल शब्द पर्याप्त नहि; तुकक कलात्मक संबंध पहिने बनैत अछि — लेख कहैत अछि जे अन्तिम साझी शब्दक पहिने अनुप्रास/तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही।
१४. (A) पहिल पाँति स्वच्छन्द, दोसर पाँति स्थायी अनुप्रासकेँ पछुअबैत — लेखानुसार अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति अनुप्रास दृष्टिँ स्वच्छन्द रहैत अछि, मुदा दोसर स्थायी अनुप्रासक अनुसरण करैत अछि।
१५. (A) केवल बाह्य आकार—तुक, अनुप्रास, पाँति-विन्यास — ‘मुह-कान’ रूपक बाह्य संरचना लेल अछि; लेखक तुरन्त कहैत छथि जे केवल एहिपर ध्यान देलासँ कथ्य छूटि सकैत अछि।
१६. (A) गजल नहि, ‘गीजल’ बनि जाइत अछि — लेखक चेतावनी दैत छथि जे कथ्य गोडिआइत/बौआइत रहि गेल तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ‘गीजल’ भऽ जाइत अछि।
१७. (A) गजलकेँ प्रभावी, तीव्र आ अर्थवान् बनएबाक लेल — गजलमे शब्दसभ ताल-मात्राक साँचमे बैसि चोट करैत अछि; रहस्य-रोमाञ्च ओकर प्रभाव बढ़बैत अछि।

१८. (A) गजलमे लय, मात्रिक संतुलन आ शब्द-संयोजन सघन होएब चाही — लेख गजलक ध्वनि-प्रवाह आ ताल-मात्रा पर बल दैत अछि; शब्द अर्थक संग लयमे खचित होथि।
१९. (A) कल्पना वा विषयवस्तु उठान करब — लेख पहिल सिराउर जकाँ पहिल पाँतिसँ धरती फाटैत अछि—अर्थात विषय/कल्पनाक आधार खुलैत अछि।
२०. (A) पहिल पाँतिमे खसाओल बीजकेँ तोपन दऽ आगू बढ़बाक मार्ग बनेब — दोसर पाँति पहिल उठानकेँ समर्थ, आवृत्त आ अर्थपूर्ण बनबैत अछि—जेना हऽरक दोसर सिराउर बीज ढाँपैत अछि।
२१. (A) प्रत्येक युग्म अपनहुमे स्वतंत्र, मुदा समग्र गजलमे विशिष्ट अर्थ सेहो दैत अछि — लेख गजलक शेर/दू-पाँति युग्मकेँ स्वतंत्र अर्थवान् मानैत अछि, तखनो सभ मिलि विशिष्ट समग्र अर्थ बनबैत अछि।
२२. (A) पहिल पाँति कच्चा ऊर्जा/कल्पना, दोसर ओकरा आकार देबएबला निर्णायक प्रहार — लेख पहिल पाँतिसँ सामग्री गरम होइत देखैत अछि, आ दोसर पाँतिसँ ओकरा कलात्मक आकार भेटैत अछि।
२३. (A) मधुर भाषा, लय-बोध आ भाव-संस्कार गजल अपनबामे आधार दैत अछि — लेख कहैत अछि जे थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ गीत-सिद्ध मैथिलसभ गजल लिखऽ लगैत छथि।
२४. (A) गीत-क्षेत्रक व्यक्तित्वसभ सेहो गजलमे सफलतासँ कलम चलौलनि — लेख एहन उदाहरण दैत अछि जे मूलतः गीत-क्षेत्रसँ सम्बद्ध स्रष्टासभ गजलोमे सक्रिय भेलाह।
२५. (A) देखाएब जे मैथिली कवितामे गजल-संरचना अपनाओल गेल — लेख कहैत अछि जे ‘भगवान हमर ई मिथिला’ पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखल गेल अछि।
२६. (A) खाँटी मैथिली गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि — लेख ई नामसभकेँ खाँटी गजलकारक रूपमे रेखांकित करैत अछि।
२७. (A) अनेक स्रष्टा गजल लिखि मैथिली गजल-संसारकेँ निरन्तर विस्तृत कएलन्हि — लेख सोमदेवसँ अशोक दत्त धरि अनेक नाम देइत मैथिली गजल-संसारक विस्तृति बतबैत अछि।
२८. (A) बहुत कम देखल जाइत अछि — लेख स्पष्ट कहैत अछि जे गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि।
२९. (A) लगभग ३४ गजलकारक एकठाम समायोजनक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण — लेख एकरा ३४ अलग-अलग गजलकारक एकठाम समायोजनक सम्भवतः पहिल वानगी कहैत अछि।
३०. (A) ओ एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक संग उपस्थित भेलीह — लेख ओहि अङ्कमे डॉ. शेफालिका वर्माकेँ एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे चिन्हैत अछि।
३१. (A) मैथिली गजल विमर्श नेपालक साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो प्रतिध्वनित भेल — मनु ब्राजाकी आ डॉ. रामदयाल राकेशक नेपाली आलेखक उल्लेख मैथिली गजल-विमर्शक व्यापकता देखबैत अछि।
३२. (A) मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप फरिछाकऽ कहबएबला महत्त्वपूर्ण संकलन/विमर्श — लेख सियाराम झा ‘सरस’ सम्पादित ‘लोकवेद आ लालकिला’केँ मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप स्पष्ट करबामे उपयोगी मानैत अछि।
३३. (A) गीत-परम्पराक उर्वर भूमि पर मैथिली गजल गुणवत्तासँ विकसित भऽ रहल अछि — लेख समग्र निष्कर्षमे कहैत अछि जे गीतक उर्वर धरातल पर मैथिली गजल निरन्तर गुणवत्तासँ बढ़ि रहल अछि।
३४. (A) स्थायी अनुप्रास/तुकक मुख्य शर्त अधूरी अछि — लेख साझा अन्तिम शब्दक पहिने अनुप्रास/तुकबन्दी मिलबाक बात करैत अछि; केवल दोहराव पर्याप्त नहि।
३५. (A) प्रत्येक युग्म अलग चोट आ अर्थ देइत अछि, तखनो पूरा गजल एक अनुभूति बनबैत अछि — लेख प्रत्येक दू-पाँतिक स्वतंत्रता आ समग्र तादात्म्य दूनूक बात करैत अछि।
३६. (A) प्रेमो एहिमे धरगर, धारदार आ लक्ष्यभेदी अन्दाजमे कहल जाइत अछि — लेख प्रेम-स्वीकार करैतहुँ कहैत अछि जे गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे व्यक्त होइत अछि।
३७. (A) गजल अनावश्यक लम्बाई वा घुमा-फिरा कऽ कहबाक बदला सीधा असर करैत अछि — लेख गजलक संक्षिप्त, तीक्ष्ण आ प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति-शैली पर बल दैत अछि।
३८. (A) ढङ्गसँ किछु गजल पढ़ि संरचना, कथ्य आ लय आत्मसात करू — लेख कहैत अछि जे मैथिली साहित्यक गुणधर्म आत्मसात कऽ किछु गजल नीकसँ देखलासँ संरचनाप्रति द्विविधा नहि रहत।

३९. (A) नव विधा पुरान परम्परासँ संवाद कऽ अपन स्थान बना सकैत अछि — लेख पहिल अपरिचयक बाद गीत-गजलकें भ्रातृत्व भावें आगाँ बढ़ैत देखैत अछि।
४०. (A) ओ नव जिज्ञासुक लेल व्यवहारिक, सहज मार्गदर्शन देब चाहैत छथि — प्रेमर्षि नव जिज्ञासुक लेल सरल भाषामे संरचना बुझबैत छथि, जटिल पारिभाषिकता बिना।
४१. (A) गीत-परम्पराक लय-संस्कार आ गजलक अनुशासित संरचना — लेख मैथिली गीतक हलगर माटि आ गजलकें उचित संरचनात्मक-सांगीतिक अनुशासन—दूनूकें विकासक आधार बनबैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह विशेषांक ०३ — विहनि कथा / लघुकथा प्रश्नोत्तरी

१. 'विहनि कथा' नामकरणक मूल साहित्यिक संकेत की अछि?

- (A) ई बीआ-जकाँ छोट आकारमे सम्पूर्ण कथा-संभावना रखैत अछि
- (B) ई केवल पुरान लघुकथा शब्दक संस्कृत रूप अछि
- (C) ई गद्यक बदला पद्य-विधा अछि
- (D) ई बाल-कथाक संक्षिप्त रूप अछि

२. विहनि कथाकेँ अंग्रेजी 'शॉर्ट-स्टोरी'क अनुवाद मात्र मानब किएक अपूर्ण अछि?

- (A) कारण ई आकार मात्र नहि, उत्स, स्वभाव आ प्रभावमे अलग विधा अछि
- (B) कारण ई केवल विदेशी विधा अछि
- (C) कारण ई सदैव हास्य-प्रधान होइत अछि
- (D) कारण ई कथ्य-विहीन भाषा-क्रीड़ा अछि

३. डॉ. तारानन्द वियोगीक अनुसार आरम्भिक मैथिली लघुकथा-परिस्थिति केहन छल?

- (A) रचनाक स्पेस सीमित छल आ छोट कथा प्रायः 'फीलर' रूपमे देखल जाइत छल
- (B) लघुकथा अकादमिक रूपेँ पूर्ण स्थापित छल
- (C) सभ पत्रिका लघुकथाकेँ मुख्य विधा मानैत छल
- (D) लघुकथा केवल मौखिक लोकगीत छल

४. लघुकथाक 'प्रो-एक्टिव' स्वभावसँ कोन अर्थ निकलैत अछि?

- (A) ओ पाठकक चेतना पर तुरन्त सक्रिय प्रभाव छोड़ैत अछि
- (B) ओ निष्क्रिय वर्णन मात्र रहैत अछि
- (C) ओ केवल स्मरण-कथा बनि रहैत अछि
- (D) ओ हमेशा लम्बा भूमिका चाहैत अछि

५. लघुकथामे सरलता आ संप्रेषणीयता लेखकसँ बेसी परिश्रम किएक मांगैत अछि?

- (A) किएकि कम शब्दमे स्पष्ट, तीक्ष्ण आ पूर्ण प्रभाव रचब कठिन अछि
- (B) किएकि लेखककेँ कथानक छोड़ि देबाक पड़ैत अछि
- (C) किएकि सरल भाषा साहित्य नहि बनि सकैत
- (D) किएकि लघुकथा केवल संवाद-संग्रह अछि

६. 'छोट गातमे सम्पूर्णता' विहनि कथाक लेल कोन सौंदर्य-मानदंड ठहरैत अछि?

- (A) आकार लघु हो, मुदा कथ्य-अनुभूति अपूर्ण नहि रहए
- (B) कथा आधा छोड़ि देल जाए
- (C) केवल शीर्षकसँ कथा बनि जाए
- (D) घटना नहि, केवल नारा रहए

७. विहनि कथा आन्दोलनमे 'संरचना, स्वरूप आ स्वभाव' स्पष्ट करबाक आग्रह किएक जरूरी छल?

- (A) विधाकेँ फिलर वा छोट कहानीक भ्रमसँ निकालि स्वतंत्र साहित्यिक पहचान देबाक लेल
- (B) लघुकथाकेँ कविता बनएबाक लेल
- (C) समीक्षा पूर्णतः हटएबाक लेल
- (D) केवल पुरान लेखकक नाम सुरक्षित करबाक लेल

८. पंजाबी 'मिन्नी कथा', ओड़िया 'क्षुद्र कथा' आदि तुलनासँ मैथिली लघुकथाक लेल कोन शिक्षा मिलैत अछि?

- (A) भाषाक क्षमतासँ बेसी संस्थागत श्रम आ निरंतरता जरूरी अछि
- (B) मैथिलीमे लघुकथा सम्भव नहि अछि
- (C) अन्य भाषाक अनुकरण करब मात्र समाधान अछि
- (D) विधाक नाम बदललासँ साहित्य स्वतः महान होइत अछि

९. प्रत्येक रचनाकारक छोट संग्रह छपबाक आग्रहक साहित्यिक कारण की अछि?

- (A) रचनाकारक कार्य समेकित रूपमे उपलब्ध भऽ आलोचना आ पाठक-संवाद सम्भव होइत अछि
- (B) संग्रह छपलासँ कथा स्वतः श्रेष्ठ भऽ जाइत अछि
- (C) पत्रिका-प्रकाशन निरर्थक होइत अछि
- (D) संग्रह केवल पुरस्कार लेल चाही

१०. लघुकथा-कार्यशालाक प्रस्ताव कोन कमीक उपचार रूपमे देखल जा सकैत अछि?

- (A) बोध, शिल्प, मानक आ विधागत अनुशासनक कमी
- (B) पाठकक पूर्ण अभाव
- (C) भाषाक असमर्थता
- (D) कथा-विषयक निषेध

११. 'साहित्य अपन स्वभावेसँ क्रान्तिकारी होइत अछि'—एहि कथनक लघुकथा-सन्दर्भ की अछि?

- (A) सार्थक लघुकथा मानवीय-सामाजिक चेतना जगबैत अछि, केवल मान्यता मागैत नहि
- (B) साहित्य केवल सत्ता-प्रशंसा करैत अछि
- (C) लघुकथा आलोचना सँ दूर रहबाक विधा अछि
- (D) साहित्यक उद्देश्य पुरस्कार-संग्रह अछि

१२. लघुकथामे 'नोटिस' वा बाहरी मान्यता पर निर्भरता किएक हानिकारक मानल गेल अछि?

- (A) ई रचनात्मक संतोष आ समाज-सापेक्ष काजसँ ध्यान हटबैत अछि
- (B) ई लेखककेँ भाषा सिखबैत अछि
- (C) ई पाठकक संख्या बढ़बैत अछि
- (D) ई कथ्यक गहराई बढ़बैत अछि

१३. 'बीज-कथा' रूपक विहनि कथामे अन्त/मोड़क भूमिका कोना बुझल जाए?

- (A) अन्त पूरा अर्थकेँ अचानक खोलि पाठकक भीतर कथा विस्तार करैत अछि
- (B) अन्त सदैव उपदेशात्मक होएब चाही
- (C) अन्तमे पात्र-सूची देब जरूरी अछि
- (D) अन्त रहिते विहनि कथा पूर्ण होइत अछि

१४. सशक्त विहनि कथामे कथानक आ संकेतक संतुलन कोन प्रकारक होएब चाही?

- (A) घटना न्यून हो सकैत अछि, मुदा संकेत आ प्रभाव व्यापक होएब चाही
- (B) घटना अतिशय विस्तारमे होएब चाही
- (C) संकेत पूर्णतः निषिद्ध अछि
- (D) केवल संवाद रहि जाय, अर्थ नहि

१५. 'फीलर' मानल गेल रचनाकेँ स्वतंत्र विधा बनएबाक प्रक्रिया कोन रूपमे बुझल जाए?

- (A) साहित्यिक उपेक्षासँ आलोचनात्मक प्रतिष्ठा धरि विधा-संघर्ष
- (B) पत्रिका-सजावटसँ विज्ञापन-प्रबंधन धरि
- (C) केवल पृष्ठ-सज्जाक बदलाव
- (D) कथाविहीन सूचनाक संग्रह

१६. विहनि कथामे 'सम्पूर्णता' रहितहुँ 'विस्तार' नहि रहैत—एहि विरोधाभासक समाधान की?

- (A) सम्पूर्णता अर्थ-प्रभावमे, विस्तार शब्द-संख्यामे नहि
- (B) सम्पूर्णता लेल लम्बाई अनिवार्य अछि
- (C) विस्तार नहि तँ कथा नहि
- (D) लघुता हमेशा अपूर्णता अछि

१७. मुन्नाजी द्वारा 'विहनि कथा' नामपर जोर देबाक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) मैथिलीक अपन शब्द-चेतना आ विधागत स्वाधीनता स्थापित करब
- (B) हिन्दी शब्दावली पूर्णतः नकारब मात्र
- (C) विदेशी विधा नकल करब
- (D) बाल-भाषा बनएब

१८. लघुकथाक गम्भीर साधना लेल 'बोध' आ 'श्रम' दुनू किएक आवश्यक अछि?

- (A) बोध कथ्यक दिशा दैत अछि आ श्रम आकारक कसावट बनबैत अछि
- (B) बोध हो तँ भाषा जरूरी नहि
- (C) श्रम हो तँ कथ्यक आवश्यकता नहि
- (D) दुनू केवल आलोचक लेल जरूरी अछि

१९. विहनि कथा विशेषांकमे अनेक रचनाकारक संकलनक मुख्य प्रभाव की अछि?

- (A) विधाक विविध प्रयोग, पीढ़ीगत ऊर्जा आ सामूहिक साहित्यिक आंदोलनक आभास
- (B) एक लेखकक जीवनी तयार करब
- (C) कविता-संग्रहक पूर्ति
- (D) समीक्षा हटाएब

२०. खलील जिब्रान सन लेखकक 'पेटार' मे उपस्थिति विहनि कथाक कोन वैश्विक संकेत दैत अछि?

- (A) लघु गद्य/सूक्तिपरक कथा-ऊर्जा विश्व-साहित्यसँ संवाद करि सकैत अछि
- (B) मैथिली लघुकथा केवल स्थानीय रहि सकैत अछि
- (C) अनुवादक आवश्यकता नहि
- (D) विदेशी साहित्य लघुकथासँ असम्बद्ध अछि

२१. सामाजिक सरोकार छुबैत लघुकथा ककर विरोधमे खड़ा होइत अछि?

- (A) मात्र चुटकुला, निजी रोचकता वा कथ्य-विहीन कौशलक
- (B) मानवीय संवेदनाक
- (C) सामाजिक प्रश्नक
- (D) संक्षिप्त भाषाक

२२. गजेन्द्र ठाकुरक 'गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान' शीर्षकसँ कोन समस्या उठैत अछि?

- (A) गद्य-विधा सभमे लघुकथाक स्वतंत्र स्थान आ ओकर आलोचना-पद्धति तय करबाक समस्या
- (B) लघुकथा पद्य अछि कि नहि
- (C) लघुकथा केवल नाटक अछि
- (D) संगीतक इतिहास लिखबाक समस्या

२३. 'लघुकथाक समीक्षाशास्त्र' अलग किएक चाही?

- (A) कथा/उपन्यासक कसौटी सीधे लागू कएलासँ लघुकथाक संकेत, संक्षेप आ झटका अनदेखा भऽ सकैत अछि
- (B) लघुकथा समीक्षा योग्य नहि
- (C) लघुकथा केवल नाम-सूची अछि
- (D) उपन्यासक विस्तार लघुकथामे अनिवार्य अछि

२४. विहनि कथामे शीर्षकक महत्त्व किएक बेसी होइत अछि?

- (A) शीर्षक छोट रचनाक अर्थ-दिशा खोलि वा उलटि सकैत अछि
- (B) शीर्षक केवल सजावट अछि
- (C) शीर्षक नहियो रहए तँ सदैव ठीक
- (D) शीर्षक लेखकक नामक स्थानापन्न अछि

२५. 'पति-पत्नी संवाद' जकाँ संवाद-प्रधान लघुकथा कोन चुनौती राखैत अछि?

- (A) संवादहि सँ पात्र, स्थिति, व्यंग्य आ अर्थ उभारब
- (B) संवादकेँ विवरणसँ भरि देब
- (C) नाटकीयता हटाएब
- (D) कथ्य बिना बात-चीत रखब

२६. 'वी.आइ.पी.' सन शीर्षक लघुकथामे सामाजिक व्यंग्य कोना रचि सकैत अछि?

- (A) सामान्य/उपेक्षित मनुखकेँ सम्मानक केन्द्र बनाकऽ मूल्य-व्यवस्था पर प्रश्न उठबैत अछि
- (B) केवल सरकारी समारोहक विवरण देइत अछि
- (C) कथा बिना पात्रक चलैत अछि
- (D) सामाजिक अर्थ हटबैत अछि

२७. 'आनक बड़ाइ' प्रकारक कथा-शीर्षकमे नैतिक विडम्बना ककरा लक्ष्य करि सकैत अछि?

- (A) जे लोक आनक प्रशंसा/निन्दासँ अपन मूल्य-बोध उजागर करैत छथि
- (B) केवल प्रशंसा-गीतक
- (C) इतिहास-लेखनक
- (D) प्राकृतिक वर्णनक

२८. 'हमरा एकर एक बायोडाटा चाही' जकाँ कथानक लघुकथा-माध्यमे आधुनिकता पर कोन प्रश्न उठा सकैत अछि?

- (A) मनुष्यकेँ कागजी पहचान/प्रपत्रमे सीमित करबाक प्रवृत्ति
- (B) साहित्यिक भाषा-शुद्धता
- (C) प्रकृति-सौंदर्यक वर्णन
- (D) भक्तिकाव्यक छन्द

२९. 'नोकरी' आ 'बुरबक' सन शीर्षक सभ विहनि कथाक सामाजिक भूमि की देखबैत अछि?

- (A) रोजगार, वर्ग, भोलेपन, शोषण आ आम जीवनक तात्कालिकता
- (B) केवल पौराणिक आख्यान
- (C) प्रकृति-काव्यक संरचना
- (D) बालगीतक लय

३०. लघुकथाक कथावाचक दृष्टि सामान्यतः कतेक संयमित होएब चाही?

- (A) ओ पाठककेँ संकेत दे, मुदा अत्यधिक व्याख्यान नहि करए
- (B) ओ हर बात स्पष्ट उपदेशमे कहए
- (C) ओ पात्रकेँ बोलए नहि दे
- (D) ओ घटनाकेँ पूर्णतः गायब करए

३१. विहनि कथाक पाठक पर अपेक्षित प्रभाव कोन होइत अछि?

- (A) क्षणभरमे अनुभवक झटका, विचारक कम्पन आ अर्थक विस्तार
- (B) धीरे-धीरे उपन्यास-जकाँ विस्तृत संसार
- (C) केवल सूचना-संग्रह
- (D) केवल छन्द-रस

३२. समकालीन नव पीढ़ी लघुकथा आगू बढ़बैत अछि—एहि कथनमे कोन चुनौती छिपल अछि?

- (A) ऊर्जा संग मानक, श्रम, शिल्प-सजगता आ निरंतरता बनौने राखब
- (B) केवल संख्या बढ़ाएब पर्याप्त अछि
- (C) समीक्षा सँ बचब जरूरी अछि
- (D) पुरान पीढ़ीक संवाद काटि देब

३३. लघुकथा आन्दोलनमे पूर्वज रचनाकारक 'शिरोधार्य' काज मानबाक अर्थ की अछि?

- (A) पूर्वक योगदान स्वीकार करैत नव स्थापत्य आगू बढ़ाएब
- (B) पूर्वक सभ काज नकारि देब
- (C) नव प्रयोग रोकि देब
- (D) सिर्फ नाम-स्मरण करब

३४. 'कथा' आ 'विहनि कथा' बीच मुख्य रचनात्मक भेद कोन रूपमे राखल जा सकैत अछि?

- (A) कथामे विस्तार-प्रक्रिया प्रधान; विहनि कथामे संक्षेपक भीतर तीक्ष्ण सम्पूर्णता प्रधान
- (B) दूनूमे कोनो भेद नहि
- (C) विहनि कथामे पात्र नहि रहैत
- (D) कथा सदैव पद्यमय होइत

३५. साहित्यिक पत्रिकामे विशेषांक निकालब विधा-विकास लेल किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) सिद्धान्त, रचना, आलोचना आ पाठकीय विमर्शक एक मंच दैत अछि
- (B) सिर्फ विज्ञापन बढ़बैत अछि
- (C) रचनाकें व्यक्तिगत डायरी बनबैत अछि
- (D) भाषा-प्रयोग रोकैत अछि

३६. लघुकथामे 'गागरमे सागर' प्रकारक अपेक्षा कखन सफल होइत अछि?

- (A) जखन प्रत्येक शब्द अर्थ, वातावरण वा मोड़मे योगदान दैत अछि
- (B) जखन शब्द-संख्या मनमानी हो
- (C) जखन कथ्य नहियो रहए
- (D) जखन शीर्षक मात्र हो

३७. 'सामाजिक सरोकार' आ 'कलात्मक संक्षिप्तता' मे संतुलन किएक आवश्यक अछि?

- (A) केवल मुद्दा कथा नहि बनबैत, आ केवल कौशल समाजहीन बनि सकैत अछि
- (B) मुद्दा रहए तँ कला अनावश्यक अछि
- (C) कला रहए तँ जीवन अनावश्यक अछि
- (D) दूनू एक-दूसराक विरोधी अछि

३८. लघुकथाक 'झटका' पाठकक लेल उपदेशसँ बेसी प्रभावी किएक होइत अछि?

- (A) ओ पाठककें स्वयं निष्कर्ष तकबाक लेल सक्रिय करैत अछि
- (B) ओ सोचबाक रोकि दैत अछि
- (C) ओ कथा समाप्त करैत नहि
- (D) ओ भाषाकें कठिन बनबैत अछि

३९. विहनि कथा विशेषांकक सम्पादकीय प्रयत्नकें साहित्यिक आंदोलन किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) नामकरण, सिद्धान्त, रचना-संकलन, लेखक-संवाद आ आलोचना—सभ एकत्र अछि
- (B) केवल एकटा कविता प्रकाशित भेल अछि
- (C) ई केवल सूचना-पत्र अछि
- (D) एहिमे विधागत बहस नहि

४०. विहनि कथामे 'मिथिलाक जीवन' प्रवेश करबाक अर्थ की होइत अछि?

- (A) स्थानीय अनुभव सँ सार्वभौमिक मानवीय अर्थ निकालब
- (B) सिर्फ बोलीक प्रदर्शन करब
- (C) गामक नाम-सूची देब
- (D) इतिहासक वर्ष-सूची लिखब

४१. लघुकथाक भाषामे 'कसावट' ककरा कहल जाए?

- (A) अनावश्यक शब्द हटाकऽ अर्थ आ ध्वनि-दबाव बढ़ाएब
- (B) कठिन शब्द बढ़ाएब
- (C) लम्बा वाक्य लगातार राखब
- (D) संवाद पूर्णतः हटाएब

४२. यदि लघुकथा केवल चुटकुला बनि जाए तँ कोन विधागत हानि होइत अछि?

- (A) सामाजिक-मानवीय गहराइ आ अर्थ-व्यंजना कमजोर पड़ि जाइत अछि
- (B) हास्य सदैव निषिद्ध भऽ जाइत अछि
- (C) लघुता समाप्त भऽ जाइत अछि
- (D) संवाद असम्भव होइत अछि

४३. विहनि कथा आ सूक्ति बीच सीमा कोना चिन्हल जा सकैत अछि?

- (A) विहनि कथामे कथा-स्थिति/चरित्र/घटना-बीज रहैत अछि; सूक्तिमे विचार प्रत्यक्ष रहैत अछि
- (B) दूनों पूर्णतः समान अछि
- (C) सूक्ति सदैव लम्बी होइत अछि
- (D) विहनि कथा विचार-विहीन होइत अछि

४४. विधा-विकासमे आलोचकक भूमिका की होएब चाही?

- (A) रचनात्मक काजक नोटिस लऽ, कसौटी विकसित कऽ, सार्थक संवाद बनएब
- (B) केवल उपेक्षा करब
- (C) लेखकक उत्साह तोड़ब
- (D) सिर्फ पुरस्कार-सूची बनएब

४५. 'विहनि' रूपकक दृष्टिसँ पाठकक भूमिका की अछि?

- (A) कथा-बीजकेँ अपन अनुभवमे अंकुरित करब
- (B) केवल निष्क्रिय स्मरण करब
- (C) लेखकक जीवनी खोजब
- (D) पृष्ठ-संख्या गानब

४६. विशेषांकक बहुस्वरता विहनि कथा लेल कोन निष्कर्ष देइत अछि?

- (A) विधा एकरूप नहि, अनेक शिल्प, कथ्य आ सामाजिक स्वर ग्रहण करि सकैत अछि
- (B) विधा केवल एक लेखकक अधिकार अछि
- (C) संग्रहमे भिन्नता दोष अछि
- (D) बहुस्वरता लघुकथाकेँ नष्ट करैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) ई बीआ-जकाँ छोट आकारमे सम्पूर्ण कथा-संभावना रखैत अछि — 'विहनि' अर्थात् बीआ। विशेषांकक दृष्टिमे विहनि कथा छोट गातमे पूरा कथा-ऊर्जा, संकेत आ प्रभाव धारण करैत अछि।

२. (A) कारण ई आकार मात्र नहि, उत्स, स्वभाव आ प्रभावमे अलग विधा अछि — लेख-परिसरमे कथा आ विहनि/लघुकथा बीच भेद केवल लंबाईमे नहि, रचनात्मक स्रोत, स्वभाव आ पाठकीय प्रभावमे देखल गेल अछि।

३. (A) रचनाक स्पेस सीमित छल आ छोट कथा प्रायः 'फीलर' रूपमे देखल जाइत छल — वियोगीजीक कथनमे आरम्भिक कालमे छोट कथा सभकेँ पत्रिकाक खाली जगह भरबाक सामग्री जकाँ देखबाक प्रवृत्ति छल।

४. (A) ओ पाठकक चेतना पर तुरन्त सक्रिय प्रभाव छोड़ैत अछि — प्रो-एक्टिव शब्द लघुकथाक त्वरित सक्रियता, असर आ विचार-उत्तेजना दिस संकेत करैत अछि।

५. (A) किएकि कम शब्दमे स्पष्ट, तीक्ष्ण आ पूर्ण प्रभाव रचब कठिन अछि — संकुचित आकारमे गूढ़ अनुभव, चुस्त कथ्य आ पाठकीय झटका देब लेखकक सजग श्रम माँगैत अछि।

६. (A) आकार लघु हो, मुदा कथ्य-अनुभूति अपूर्ण नहि रहए — विहनि कथा बीज-सदृश होइत हुए सेहो कथा-कला, संकेत, तनाव आ असरमे पूर्णता चाहैत अछि।
७. (A) विधाकें फिलर वा छोट कहानीक भ्रमसँ निकालि स्वतंत्र साहित्यिक पहचान देबाक लेल — विधागत स्पष्टता बिना लघुकथा छोट कहानी वा भराव सामग्री भरि बुझल जाइत; सिद्धान्त ओकर स्वतंत्र पहचान बनबैत अछि।
८. (A) भाषाक क्षमतासँ बेसी संस्थागत श्रम आ निरंतरता जरूरी अछि — तुलना देखबैत अछि जे मानक काजक सम्भावना अछि, मुदा संस्थागत आयोजन, प्रकाशन, आलोचना आ पाठकीय पहुँच आवश्यक अछि।
९. (A) रचनाकारक कार्य समेकित रूपमे उपलब्ध भऽ आलोचना आ पाठक-संवाद सम्भव होइत अछि — संग्रह विधाक इतिहास, मूल्यांकन आ पाठकीय पहुँच लेल स्थायी आधार बनबैत अछि।
१०. (A) बोध, शिल्प, मानक आ विधागत अनुशासनक कमी — कार्यशाला रचनाकारक विधा-बोध, कसावट, कथ्य-संयम आ आलोचनात्मक सजगता बढ़ा सकैत अछि।
११. (A) सार्थक लघुकथा मानवीय-सामाजिक चेतना जगबैत अछि, केवल मान्यता मागैत नहि — वियोगीजी मान्यता-पिपासा सँ बेसी सार्थक रचना, देबाक वृत्ति आ सामाजिक संवेदनाकें साहित्यक आधार मानैत छथि।
१२. (A) ई रचनात्मक संतोष आ समाज-सापेक्ष काजसँ ध्यान हटबैत अछि — लेखकीय कर्मक असली मूल्य सार्थक रचना आ धरती-समाज प्रति योगदानमे अछि, बाहरी नोटिसमे नहि।
१३. (A) अन्त पूरा अर्थकें अचानक खोलि पाठकक भीतर कथा विस्तार करैत अछि — बीज-कथा पाठकक मनमे अंकुरैत अछि; तें अन्त संकेतात्मक, तीक्ष्ण आ अर्थ-उद्घाटक होइत अछि।
१४. (A) घटना न्यून हो सकैत अछि, मुदा संकेत आ प्रभाव व्यापक होएब चाही — लघुकथा अक्सर छोटी घटना पकड़ि ओकरा सामाजिक/मानवीय अर्थमे रूपान्तरित करैत अछि।
१५. (A) साहित्यिक उपेक्षासँ आलोचनात्मक प्रतिष्ठा धरि विधा-संघर्ष — विहनि कथा विशेषांकक प्रयत्न उपेक्षित छोट कथा रूपकें स्वायत्त विधा रूपमे स्थापित करबाक संघर्ष अछि।
१६. (A) सम्पूर्णता अर्थ-प्रभावमे, विस्तार शब्द-संख्यामे नहि — लघुकथा कम शब्दमे पूर्ण भावात्मक/विचारात्मक वृत्त रचैत अछि; विस्तारक काम पाठकक मनमे होइत अछि।
१७. (A) मैथिलीक अपन शब्द-चेतना आ विधागत स्वाधीनता स्थापित करब — ‘विहनि कथा’ नाम मैथिली भीतरसँ विधाकें नाम आ स्वभाव देबाक सांस्कृतिक प्रयास अछि।
१८. (A) बोध कथ्यक दिशा दैत अछि आ श्रम आकारक कसावट बनबैत अछि — गम्भीर लघुकथा भाव, विचार, संरचना आ भाषा—सभमे सजगता चाहैत अछि।
१९. (A) विधाक विविध प्रयोग, पीढ़ीगत ऊर्जा आ सामूहिक साहित्यिक आंदोलनक आभास — अनेक लेखकक कथासँ विधाक व्याप्ति, भिन्न शिल्प आ समकालीन रचनात्मक हलचल स्पष्ट होइत अछि।
२०. (A) लघु गद्य/सूक्तिपरक कथा-ऊर्जा विश्व-साहित्यसँ संवाद करि सकैत अछि — जिब्रानक समावेश लघु गद्य, रूपक आ तीक्ष्ण कथ्यक विश्व-परम्परासँ मैथिली संवादक संकेत अछि।
२१. (A) मात्र चुटकुला, निजी रोचकता वा कथ्य-विहीन कौशलक — सामाजिक सरोकारक अर्थ अछि कि लघुकथा समाजक पीड़ा, विडम्बना, अन्याय आ चेतनाक संग जुड़ल रहए।
२२. (A) गद्य-विधा सभमे लघुकथाक स्वतंत्र स्थान आ ओकर आलोचना-पद्धति तय करबाक समस्या — शीर्षक स्पष्ट करैत अछि जे लघुकथाक विधागत स्थान आ समीक्षाशास्त्र अलग सोच मांगैत अछि।
२३. (A) कथा/उपन्यासक कसौटी सीधे लागू कएलासँ लघुकथाक संकेत, संक्षेप आ झटका अनदेखा भऽ सकैत अछि — लघुकथा संकेत, कटाव, संक्षेप, अन्त-प्रभाव आ पाठकीय सह-रचना पर आधारित अछि; तें अलग आलोचनात्मक उपकरण चाही।
२४. (A) शीर्षक छोट रचनाक अर्थ-दिशा खोलि वा उलटि सकैत अछि — लघुकथा कम शब्दमे चलैत अछि; शीर्षक अक्सर कथा-बीज, संकेत वा अर्थ-विस्तारक सक्रिय अंग बनैत अछि।
२५. (A) संवादहि सँ पात्र, स्थिति, व्यंग्य आ अर्थ उभारब — संवाद-प्रधान लघुकथा कम हस्तक्षेपमे पात्र-स्वर आ अंतर्विरोध देखबैत अछि।
२६. (A) सामान्य/उपेक्षित मनुखकें सम्मानक केन्द्र बनाकऽ मूल्य-व्यवस्था पर प्रश्न उठबैत अछि — लघुकथा अक्सर छोट प्रसंगसँ सम्मान, प्रकृति, श्रम, वर्ग वा नैतिकता पर पैघ प्रश्न उठबैत अछि।

२७. (A) जे लोक आनक प्रशंसा/निन्दासँ अपन मूल्य-बोध उजागर करैत छथि — एहन शीर्षक मानव-व्यवहारक सूक्ष्म विसंगति आ सामाजिक दर्प पर केन्द्रित लघुकथा-संभावना रखैत अछि।
२८. (A) मनुष्यकेँ कागजी पहचान/प्रपत्रमे सीमित करबाक प्रवृत्ति — बायोडेटा-केन्द्रित शीर्षक आधुनिक नौकरशाही, बाजारू दृष्टि वा संबंधक कागजीकरणक आलोचना बनि सकैत अछि।
२९. (A) रोजगार, वर्ग, भोलेपन, शोषण आ आम जीवनक तात्कालिकता — विशेषांकक अनेक शीर्षक रोजमर्रा जीवनक संघर्ष आ सामाजिक स्थितिकेँ कथा-बीज बनबैत अछि।
३०. (A) ओ पाठककेँ संकेत दे, मुदा अत्यधिक व्याख्यान नहि करए — लघुकथाक असर पाठकीय सक्रियता पर टिकैत अछि; अतिशय व्याख्या ओकर तीक्ष्णता कम करैत अछि।
३१. (A) क्षणभरमे अनुभवक झटका, विचारक कम्पन आ अर्थक विस्तार — लघुकथा त्वरित प्रभाव रचैत अछि आ पाठकक भीतर बादो अर्थ अंकुरित करैत रहैत अछि।
३२. (A) ऊर्जा संग मानक, श्रम, शिल्प-सजगता आ निरंतरता बनौने राखब — नई रचना-ऊर्जा तखन सार्थक होइत अछि जखन गुणवत्ता, विधा-बोध आ आलोचनात्मक अनुशासन साथमे चलए।
३३. (A) पूर्वक योगदान स्वीकार करैत नव स्थापत्य आगू बढ़ाएब — विशेषांक पूर्ववर्ती काजकेँ आधार मानि ओकरा आगू संस्थित करबाक प्रयत्न करैत अछि।
३४. (A) कथामे विस्तार-प्रक्रिया प्रधान; विहनि कथामे संक्षेपक भीतर तीक्ष्ण सम्पूर्णता प्रधान — विहनि कथा विस्तारक बदला गहन संकेत, संक्षिप्त घटना आ सघन प्रभाव पर आधारित अछि।
३५. (A) सिद्धान्त, रचना, आलोचना आ पाठकीय विमर्शकेँ एक मंच दैत अछि — विशेषांक विधाकेँ सामूहिक दृश्यता, दस्तावेजी स्वरूप आ आलोचनात्मक विमर्श प्रदान करैत अछि।
३६. (A) जखन प्रत्येक शब्द अर्थ, वातावरण वा मोड़मे योगदान दैत अछि — लघुकथा मे अतिरिक्तता स्थान नहि पबैत; भाषा कसी, अर्थपूर्ण आ प्रभाव-केन्द्रित होएब चाही।
३७. (A) केवल मुद्दा कथा नहि बनबैत, आ केवल कौशल समाजहीन बनि सकैत अछि — सशक्त लघुकथा जीवन-संबद्ध कथ्यकेँ कलात्मक संक्षेप आ प्रभावी संरचनामे ढालैत अछि।
३८. (A) ओ पाठककेँ स्वयं निष्कर्ष तकबाक लेल सक्रिय करैत अछि — लघुकथा पाठकक मनमे अचानक अर्थ-उद्घाटन करैत अछि; एहि सह-भागितासँ प्रभाव गहिर होइत अछि।
३९. (A) नामकरण, सिद्धान्त, रचना-संकलन, लेखक-संवाद आ आलोचना—सभ एकत्र अछि — विशेषांक विधाकेँ परिभाषित, प्रतिष्ठित आ प्रसारित करबाक बहुआयामी प्रयत्न करैत अछि।
४०. (A) स्थानीय अनुभव सँ सार्वभौमिक मानवीय अर्थ निकालब — स्थानीय पात्र, भाषा आ प्रसंग विहनि कथामे व्यापक जीवन-सत्यक वाहक बनि सकैत अछि।
४१. (A) अनावश्यक शब्द हटाकऽ अर्थ आ ध्वनि-दबाव बढ़ाएब — कसावट संक्षिप्त विधाक मूल शर्त अछि; ई कथ्यकेँ तीक्ष्ण आ स्मरणीय बनबैत अछि।
४२. (A) सामाजिक-मानवीय गहराइ आ अर्थ-व्यंजना कमजोर पड़ि जाइत अछि — हास्य उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा लघुकथा केवल पंचलाइन नहि; ओ अर्थ, संवेदना आ दृष्टि मांगैत अछि।
४३. (A) विहनि कथामे कथा-स्थिति/चरित्र/घटना-बीज रहैत अछि; सूक्तिमे विचार प्रत्यक्ष रहैत अछि — विहनि कथा विचार दे सकैत अछि, मुदा ओ कथा-बीज आ कलात्मक स्थिति द्वारा देइत अछि।
४४. (A) रचनात्मक काजक नोटिस लऽ, कसौटी विकसित कऽ, सार्थक संवाद बनएब — वियोगीजीक संवाद आलोचना/मान्यता-अभावक प्रश्न उठबैत अछि; स्वस्थ आलोचना विधा-विकासक साथी अछि।
४५. (A) कथा-बीजकेँ अपन अनुभवमे अंकुरित करब — बीज-कथा पाठकक अनुभूति, स्मृति आ विचारमे विस्तार पबैत अछि; पाठक सह-रचनाकार बनैत अछि।
४६. (A) विधा एकरूप नहि, अनेक शिल्प, कथ्य आ सामाजिक स्वर ग्रहण करि सकैत अछि — अनेक लेखकक उपस्थिति देखबैत अछि जे विहनि कथा विविध सामाजिक, नैतिक, व्यंग्यात्मक आ मानवीय प्रसंग समेटि सकैत अछि।

अध्याय ४ : विदेह विशेषांक ०४ — मैथिली बाल साहित्य प्रश्नोत्तरी

१. मैथिली बाल साहित्य लेखकसँ ‘ड’ आ ‘ज’ प्रयोगक आग्रहक मूल उद्देश्य की अछि?
- (A) बच्चाकेँ सही ध्वनि-बोध देब आ मैथिलीक भाषिक विशिष्टता बचाएब
(B) लेखनकेँ कठिन बनएब
(C) देवनागरी हटाएब
(D) बाल साहित्यकेँ केवल व्याकरण-पुस्तक बनएब
२. ‘नजि’ आ ‘नै’ दुनू बाल साहित्यमे चलि सकैत अछि—एहि उदार दृष्टिक अर्थ की?
- (A) बाल लेखनमे व्यवहारिकता आ भाषिक विविधता दुनू स्वीकार होएब चाही
(B) एकर मतलब व्याकरणक आवश्यकता नहि
(C) मैथिली शब्द छोड़ि देब चाही
(D) केवल हिन्दी रूप अपनाएब चाही
३. ‘भाङ’ लिखबाक आग्रह ‘भांग’ नहि—बाल साहित्यक सन्दर्भमे कोन सिद्धान्त देखबैत अछि?
- (A) उच्चारण, ध्वनि आ मैथिली-रूपक निकटता बालक लेल महत्त्वपूर्ण अछि
(B) हिन्दी वर्तनी सदैव सही अछि
(C) बाल साहित्य वर्तनीसँ असम्बद्ध अछि
(D) केवल विदेशी शब्द लिखू
४. बाल साहित्यमे ‘सरल शब्द मुदा खाँटी मैथिली’ किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
- (A) सरलता बच्चाक सुविधा देत आ खाँटीपन मातृभाषाक संस्कार देत
(B) खाँटी शब्द सदैव कठिन होइत अछि
(C) बच्चा मातृभाषा नहि सीखि सकैत
(D) सरलता साहित्यक विरोधी अछि
५. सम्पादकीय अनुसार बाल साहित्यमे गद्य आ पद्य दुनूक महत्त्व केहन अछि?
- (A) दूनों महत्त्वपूर्ण, मुदा पद्यक आकर्षण कने अधिक मानल गेल अछि
(B) केवल गद्य मान्य अछि
(C) केवल अनुवाद मान्य अछि
(D) पद्य बाल साहित्यसँ बाहर अछि
६. बाल-कथामे विज्ञान आ समाज-विज्ञानक समावेशसँ कोन लाभ सम्भव अछि?
- (A) मनोरंजन आ शिक्षा बीच संतुलन बनैत अछि
(B) कथा पूर्णतः पाठ्यपुस्तक बनि जाइत अछि
(C) बाल-साहित्यक रस समाप्त होइत अछि
(D) विज्ञान बाल-साहित्य लेल निषिद्ध अछि
७. बाल साहित्यक मूल्यांकन मोट-पातरक आधार पर नहि, कोन आधार पर होएब चाही?
- (A) विषय-वस्तु, प्रासंगिकता, भाषा-शिल्प आ लक्ष्य-बालक लेल संप्रेषणीयता
(B) पृष्ठ संख्या आ जिल्दक आकार
(C) लेखकक प्रसिद्धि मात्र
(D) पुरस्कारक संख्या
८. ‘टारगेट ग्रुपक बच्चा लेल भाषा आ शिल्प’—एहि कसौटीक अर्थ की?
- (A) रचनाक भाषा, बिम्ब, प्रतीक आ कथन-भंगिमा बच्चाक ग्रहण-क्षमता अनुरूप होएब चाही
(B) लेखक निज कठिन भाषा थोपथि
(C) बालक लेल भाषा-अनुशासन जरूरी नहि
(D) केवल वयस्क आलोचककेँ ध्यानमे राखू

९. 'परकाया-प्रवेश' बाल लेखकक लेल किएक आवश्यक कहल गेल?

- (A) लेखक बच्चाक मन, दृष्टि आ अनुभव-जगतमे प्रवेश कए लिखए
- (B) लेखक केवल अपन वयस्क अनुभव रखए
- (C) बालक पात्र हटाए
- (D) कथा ऐतिहासिक निबंध बनि जाए

१०. उपनिषद-कथा पर लिखल कृतिकेँ मौलिक किएक कहल गेल?

- (A) ओ अनुवाद नहि, ओहि युगक पुनर्सृजन आ सकारात्मक जीवन-दृष्टिक रचनात्मक रूप अछि
- (B) उपनिषदक शाब्दिक प्रतिलिपि अछि
- (C) ओ केवल व्याख्या-सूची अछि
- (D) ओ बालक लेल असम्बद्ध इतिहास अछि

११. उपनिषद-कथाक बाल-साहित्यिक उद्देश्य की कहल गेल?

- (A) बच्चाक समक्ष सकारात्मक जीवन-प्रणाली, संबंध-बोध आ पर्यावरण-दृष्टि खोलब
- (B) बच्चाकेँ केवल पौराणिक तिथि रटाएब
- (C) वयस्क दार्शनिकता थोपब
- (D) मनोरंजन हटाएब

१२. बाल-पाठककेँ प्रेरण-तत्त्व अलगसँ न देखाए पड़ए—एहि शिल्पक श्रेष्ठता की?

- (A) शिक्षा कथाक भीतर सहज रूपेँ गुंथल रहैत अछि, उपदेश बनि नहि उठैत
- (B) संदेश पूर्णतः अनुपस्थित रहैत अछि
- (C) कथा अस्पष्ट बनि जाइत अछि
- (D) बालक अर्थ ग्रहण नहि करैत

१३. आजुक 'उपभोक्तावादी, व्यक्तिवादी' समयमे उपनिषद/जातक/त्रिपिटकक प्रासंगिकता किएक बताओल गेल?

- (A) ई सकारात्मक जीवन, सह-अस्तित्व आ नैतिक दृष्टिक वैकल्पिक संस्कार दे सकैत अछि
- (B) ई केवल पुरान कथा अछि, आधुनिकतासँ असम्बद्ध
- (C) ई बच्चाक लेल असम्भव कठिन अछि
- (D) ई विज्ञान-विरोधी पाठ मात्र अछि

१४. 'महाभारतमे वन जराओल जाइ छै, उपनिषदमे वनक संग मैत्री'—एहि विरोधक बाल साहित्यिक अर्थ की?

- (A) बालक संस्कारमे प्रकृति-संबंध आ पर्यावरण-मित्र दृष्टि रोपब
- (B) वन-विनाशक प्रचार करब
- (C) इतिहासक विवाद मात्र उठाएब
- (D) कथा सँ प्रकृति हटाएब

१५. तारानन्द वियोगीक मतमे मैथिली भविष्य लेल बाल साहित्यक भूमिका कतेक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) मैथिली जीबए-बढ़ए तें बाल साहित्य बहुत पैघ भूमिका निभाएत
- (B) बाल साहित्य गौण अछि
- (C) केवल वयस्क कविता भाषा बचाएत
- (D) बाल साहित्य पत्रिका-भराव अछि

१६. स्कूले-स्कूले बाल-पोथी पहुँचएबाक मॉडल किएक दूरदर्शी अछि?

- (A) लेखन, प्रकाशन, वितरण आ पाठक-संपर्ककेँ एकसंग जोड़ैत अछि
- (B) ई केवल व्यापारिक उपाय अछि
- (C) ई साहित्यक गुणवत्ता घटबैत अछि
- (D) ई बच्चाकेँ पोथीसँ दूर करैत अछि

१७. 'एक बच्चा पोथी किनए तँ पन्द्रह-बीस पाठक भेटि जाइत'—एहि कथनसँ कोन पाठक-दृष्टि प्रकट होइत अछि?

- (A) बाल-पोथी परिवार आ पड़ोस धरि सामूहिक पठन-संस्कृति फैला सकैत अछि
- (B) एक पोथी केवल एक पाठक धरि सीमित रहैत अछि
- (C) बाल-पोथी पढ़ल नहि जाइत
- (D) परिवार बाल साहित्यसँ असम्बद्ध अछि

१८. लेखन संग 'एक्टिविज्म'क बेगरता किएक मानल गेल?

- (A) जकर लेल लिखल जाए, ओकरा धरि पोथी पहुँचएब सेहो साहित्यिक उत्तरदायित्व अछि
- (B) लेखनक मूल्य समाप्त करब लेल
- (C) लेखककेँ आलोचक बनएब लेल
- (D) पोथीकेँ केवल बाजार बनएब लेल

१९. 'मिथिला' सं बच्चाक आत्मीय परिचय लेल पुस्तक-माला' योजनाक लक्ष्य की अछि?

- (A) भावी पीढ़ीमे अपन देस-कोस, इतिहास, संस्कृति आ पहचान प्रति अनुराग जगाएब
- (B) केवल अतीत-गान करब
- (C) बालकेँ परीक्षा-तिथि रटाएब
- (D) सांस्कृतिक विविधता हटाएब

२०. 'मात्र अतीत-गान नहि'—बाल-सांस्कृतिक लेखन लेल ई चेतावनी किएक जरूरी अछि?

- (A) अतीतसँ सकारात्मक तत्व खोजि भविष्यक जीवनमे उपयोगी पहचान बनाबय
- (B) अतीत पूर्णतः अस्वीकार करब
- (C) इतिहासक स्थान पर कल्पना मात्र राखब
- (D) बालकेँ संस्कृति सँ दूर राखब

२१. बाल-साहित्य मे गोनू झा विषयक नवीनीकरणक अर्थ की हो सकैत अछि?

- (A) छुछ हास्य-ठट्टा सँ आगाँ बुद्धि, लोकबोध आ सांस्कृतिक ऊर्जा खोजब
- (B) पुरान पात्र हटाएब
- (C) केवल चुटकुला दोहराएब
- (D) बालकेँ लोककथा नहि देब

२२. प्रेमशंकर सिंहक 'मैथिली बाल काव्यधारा'मे जीवकान्तक बाल-कविता ककरा लेल विशिष्ट मानल गेल?

- (A) टटका बाल-संवेदना, चंचलता, ग्रामीण परिवेश आ गीतात्मक सरलताक लेल
- (B) केवल कठिन संस्कृत शब्दक लेल
- (C) राजनीतिक व्यंग्यक लेल
- (D) वयस्क दार्शनिक एकालापक लेल

२३. बाल-काव्यमे ग्रामीण शब्दावलीक उपस्थिति किएक बालोचित सिद्ध होइत अछि?

- (A) ई बच्चाक वास्तविक परिवेश, खेल, श्रम, प्रकृति आ लोक-जीवनसँ जुड़ाव बनबैत अछि
- (B) ई भाषा अनावश्यक कठिन बनबैत अछि
- (C) ग्रामीण शब्द बालक नहि बुझैत
- (D) ई केवल वयस्क लोकक लेल अछि

२४. गजेन्द्र ठाकुरक बाल-काव्य विषय-वैविध्यक महत्त्व की अछि?

- (A) बालमनक जिज्ञासा, प्रसन्नता, वेदना, प्रकृति, स्कूल, खेलकूद आ सामाजिक विषमता सब समेटैत अछि
- (B) केवल एक विषय—स्कूल—धरि सीमित अछि
- (C) ई बालमनसँ असम्बद्ध अछि
- (D) ई केवल वयस्क प्रेमकाव्य अछि

२५. बालमनक 'सेनसेटिभ' होएबाक चर्चा ककरा स्पष्ट करैत अछि?

- (A) बच्चा सामाजिक सम्पन्नता-विपन्नता आ मानवीय भेदक अनुभव करि सकैत अछि
- (B) बच्चा केवल खेल बुझैत अछि
- (C) बच्चाकेँ समाजक प्रश्न नहि छुबैत
- (D) बाल कविता केवल हास्य होएब चाही

२६. नाना-नानी/मामा-मामीक प्रसंग बाल-काव्य मे किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) बालक दुलार, उत्तर, जिज्ञासा-समाधान आ अपनत्व ओहि संबंधमे पबैत अछि
- (B) ई केवल रिश्तेदार-सूची अछि
- (C) बालक परिवारसँ असम्बद्ध अछि
- (D) ई वयस्क कथा मात्र अछि

२७. स्कूल-छुट्टी पर बालकक प्रसन्नता बाल-काव्यमे की खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनक स्वतंत्रता, खेल, प्रकृति आ पारिवारिक मिलनक आकांक्षा
- (B) शिक्षाक पूर्ण अस्वीकृति
- (C) कवितामे लयक अभाव
- (D) सामाजिक यथार्थक नकार

२८. बाल-श्रमिकक वेदना बाल-काव्यक विषय बनलासँ कोन दृष्टि स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाल-साहित्य केवल मनोरंजन नहि, संवेदना आ सामाजिक न्यायक माध्यम सेहो अछि
- (B) बाल-साहित्य सामाजिक प्रश्न नहि उठाबय
- (C) दुख बाल-पाठक लेल निषिद्ध अछि
- (D) कविता केवल खेलकूद पर होएब चाही

२९. रवीन्द्रनाथ ठाकुरक बाल-दृष्टि लेखमे कोना रखल गेल?

- (A) शिशु नादान नहि, बुझनुक होइत अछि आ कठिन बात सरल बनाओल जाय तँ बुझि सकैत अछि
- (B) शिशु गंभीर विषय नहि बुझैत
- (C) बालकसँ संवाद आवश्यक नहि
- (D) बाल साहित्य केवल खिलौना अछि

३०. 'शिशुक संग शिशु बनि' लिखबाक/बात करबाक लाभ की?

- (A) बालकक वास्तविक गुण आ सृजनात्मकता सहज रूपेँ विकसित होइत अछि
- (B) लेखकक अधिकार घटैत अछि
- (C) भाषा नष्ट होइत अछि
- (D) विषय गम्भीर नहि रहैत

३१. रवीन्द्रनाथक बाल-कविता मैथिलीमे अनूदित होएब कोन सांस्कृतिक महत्व राखैत अछि?

- (A) भारतीय भाषासभक बाल-काव्य संवाद आ साझी संवेदनाक संकेत
- (B) केवल बंगला साहित्यक प्रतिस्पर्धा
- (C) मैथिली बाल-काव्यक असमर्थता
- (D) अनुवादक अप्रासंगिकता

३२. बाल-कवितामे प्रकृति-सुषमा आ जीव-जन्तु किएक बारम्बार अबैत अछि?

- (A) बालकक विस्मय, खेल, इन्द्रियानुभव आ पर्यावरण-चेतना एहि सँ बनैत अछि
- (B) प्रकृति बालक लेल कठिन विषय अछि
- (C) जीव-जन्तु केवल वैज्ञानिक तथ्य अछि
- (D) कविता प्रकृतिसँ असम्बद्ध अछि

३३. बाल-साहित्यक 'आजुक जुगक चैलेंज' सन्दर्भमे उपयोगिता ककरा कहब?

- (A) रचना बच्चाक वर्तमान जीवन, नैतिक उलझन, पर्यावरण, समाज आ पहचानक प्रश्नसँ जुड़ल हो
- (B) रचना केवल पुरान शब्द याद कराबय
- (C) रचना वर्तमानसँ आँखि मूँदि ले
- (D) रचना केवल सजावटी चित्र हो

३४. चित्रकथा 'प्रगतिक रहस्य' सन रूप बाल साहित्यमे किएक उपयुक्त हो सकैत अछि?

- (A) चित्र आ कथा मिलि बालकक दृश्य-बोध, जिज्ञासा आ सीखकें सक्रिय करैत अछि
- (B) चित्र बालकक ध्यान भंग करैत अछि
- (C) चित्रकथा साहित्य नहि
- (D) चित्रकथा केवल वयस्क लेल अछि

३५. 'कंप्यूटरक खेल' जकाँ आधुनिक विषय बाल साहित्यमे किएक आवश्यक अछि?

- (A) बालकक वर्तमान तकनीकी संसारकें मातृभाषामे अर्थपूर्ण रूप देबाक लेल
- (B) बाल-साहित्य केवल पुरान विषय पर रहए
- (C) तकनीक मातृभाषामे नहि आबि सकैत
- (D) खेल साहित्यक विरोधी अछि

३६. 'कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार' सन लेख बाल-साहित्य/बाल-संस्कृति मे कोन प्रश्न उठा सकैत अछि?

- (A) बाल-प्रतिभा, प्रदर्शन, मीडिया आ बचपनक सामाजिक उपयोग/उपेक्षा
- (B) केवल फिल्मी गपशप
- (C) भाषा-विज्ञानक नियम
- (D) छन्द-गणना

३७. 'नानीक खिस्सा' बाल-विधा मे किएक केंद्रीय रूप हो सकैत अछि?

- (A) मौखिक परम्परा, पारिवारिक अपनत्व आ कथा-संस्कार बालक धरि पहुँचैत अछि
- (B) नानीक कथा साहित्यसँ बाहर अछि
- (C) खिस्सा केवल वयस्कक लेल
- (D) बालक मौखिक कथा नहि सुनैत

३८. शिवकुमार झा 'टिल्लू', मुन्नाजी, अनमोल झा आदिक बाल-कथा उपस्थिति विशेषांकक कोन स्वरूप देखबैत अछि?

- (A) सैद्धान्तिक लेख संग रचनात्मक बाल-कथा-प्रयोगक बहुलता
- (B) केवल आलोचना-संग्रह
- (C) बालकविता-विरोध
- (D) एक लेखकक विशेषांक

३९. बाल-कविताक लय आ तुक बालक लेल किएक उपयोगी अछि?

- (A) स्मृति, उच्चारण-सुख, खेल-भाव आ भाषा-रस जागृत करैत अछि
- (B) लय बालककें भाषा सँ दूर करैत अछि
- (C) तुक सदैव उपदेश बनैत अछि
- (D) कविता केवल अर्थ लेल होइत अछि

४०. 'बबलू बनबय छक्का-सत्ता' सन शीर्षक बाल-कवितामे कोन बाल-जगत लाबैत अछि?

- (A) खेलकूद, चंचलता आ बाल-भाषाक जीवंत वातावरण
- (B) दार्शनिक निबंध
- (C) प्रशासनिक सूचना
- (D) इतिहासक तिथि

४१. 'बेटी' सन कविता बाल-साहित्य विशेषांकमे किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) बालिका-अनुभव, संवेदना आ सामाजिक दृष्टिक समावेश करैत अछि
- (B) बाल साहित्यमे बालिका विषय नहि होए
- (C) ई केवल वयस्क नारी-विमर्श अछि
- (D) कविता बिना बाल-पाठकक होए

४२. बाल साहित्यमे 'मनलगू ढंग' ककरा कहल जा सकैत अछि?

- (A) कथ्य रोचक, प्रवाहमय आ बालकक ध्यान पकड़एबला हो
- (B) कठिन व्याख्यान हो
- (C) उपदेश स्पष्ट बोझिल हो
- (D) भाषा अतिशय जटिल हो

४३. बाल साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय मानदंडक उल्लेख कोन व्यापकता देइत अछि?

- (A) मैथिली बाल साहित्यकेँ विश्वस्तरीय बाल-पठन कसौटी पर सोचबाक आग्रह
- (B) स्थानीय भाषाकेँ छोड़बाक आग्रह
- (C) केवल विदेशी अनुकरण
- (D) बालकक मनोविज्ञानक नकार

४४. बाल साहित्यक संस्थागत प्रकाशन-वितरण योजना भाषाक भविष्यसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) नव पाठक बनैत अछि, मातृभाषा पठनक आदत बनैत अछि आ भाषा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अछि
- (B) भाषा केवल वयस्क पाठकसँ बचैत अछि
- (C) बच्चा मातृभाषा पठनमे भूमिका नहि निभबैत
- (D) संस्था साहित्यक शत्रु अछि

४५. बाल साहित्यमे 'सकारात्मक जीवन-प्रणाली' ककरा कहल जा सकैत अछि?

- (A) सम्बन्ध, प्रकृति, नैतिकता, श्रम आ सामूहिकता प्रति संतुलित दृष्टि
- (B) केवल सफलता-प्रतिस्पर्धा
- (C) बाजारक उपभोक्तावाद
- (D) व्यक्तिगत अहंकार

४६. बाल लेखनमे 'आइडेन्टिटी' खोजक अर्थ की?

- (A) बच्चा अपन भाषा, भूगोल, इतिहास आ संस्कृति सँ आत्मीय परिचय बनाए
- (B) केवल जातीय गर्वक नारा दे
- (C) आधुनिक जीवन त्यागि दे
- (D) दोसरा भाषासँ बैर राखए

४७. बाल-काव्यधारामे 'टटका सम्वेदनात्मक प्रतिक्रिया' काव्यक गुण किएक मानल गेल?

- (A) बाल-अनुभव ताजगी, सहजता आ तत्कालिक भाव-स्पर्शसँ जीवंत होइत अछि
- (B) कविता पुरानी भाषा मात्र होएब चाही
- (C) भावनाकेँ दबा देब चाही
- (D) बच्चा प्रतिक्रिया नहि करैत

४८. बाल-कवितामे 'आडम्बरहीन ग्रामीण परिवेश' कोन सौंदर्य निर्मित करैत अछि?

- (A) सहज, जीवंत, स्थानीय आ अनुभव-निकट बाल-संसार
- (B) दरबारी कृत्रिमता
- (C) शहरी विज्ञापन-भाषा
- (D) कठिन दार्शनिकता

४९. रवीन्द्रनाथक बाल-काव्यक भारतीय भाषामे प्रसारसँ कोन शिक्षा मैथिली बाल-साहित्य लेल मिलैत अछि?

- (A) स्थानीय भाषा विश्व/भारतीय बाल-संवेदना सँ संवाद करि अपन धारा समृद्ध करि सकैत अछि
- (B) अनुवाद मातृभाषाक विरोधी अछि
- (C) बाल साहित्य केवल एक भाषा धरि सीमित रहए
- (D) बाहरी साहित्य पढ़ब नहि चाही

५०. बाल साहित्यक श्रेष्ठ रचना पाठककेँ 'एक्के सिटिंग' मे पढ़ा जाए, तकर अर्थ की?

- (A) रोचकता, प्रवाह आ पाठकीय आकर्षण सफल अछि
- (B) रचना बहुत हल्की अछि
- (C) गम्भीरता अनुपस्थित अछि
- (D) साहित्यक मूल्य घटि गेल

५१. बाल साहित्यमे 'सुपुरुष मैथिल' तैयार करबाक लक्ष्य ककरा दर्शबैत अछि?

- (A) संस्कृति-सचेत, सकारात्मक, आधुनिक चुनौतीक सामना करए योग्य भावी नागरिक
- (B) केवल अतीतमे अटकल व्यक्ति
- (C) भाषाहीन आधुनिक बच्चा
- (D) साहित्य-विमुख विद्यार्थी

५२. ई विशेषांक बाल साहित्यक कोन समग्र परिकल्पना प्रस्तुत करैत अछि?

- (A) भाषा-शुद्धि, बाल-मनोविज्ञान, रचनात्मक कथा-कविता, सांस्कृतिक पहचान आ पाठक-निर्माणक संयुक्त दृष्टि
- (B) केवल बाल-कविताक सूची
- (C) केवल पुरस्कार-सूचना
- (D) केवल वयस्क आलोचना

५३. बाल-पाठक लेल कठिन विषय सरल बनएबाक प्रक्रिया कोन साहित्यिक कौशल माँगैत अछि?

- (A) गंभीर विषयकेँ कथा, दृश्य, संवाद आ बाल-भाषामे रूपान्तरित करब
- (B) विषयक गहराई हटाएब
- (C) बालकक बुद्धि कम आँकब
- (D) केवल उपदेशात्मक गद्य लिखब

५४. बाल-साहित्यक लेखनमे 'लेखन अपन ठाम, वितरण अपन ठाम'—एहि द्वैतक सही समझ की?

- (A) श्रेष्ठ लेखन जरूरी अछि, मुदा पाठकधरि पहुँचबिना ओकर सामाजिक प्रभाव अधूरा रहैत अछि
- (B) वितरण लेखनक बदला ले सकैत अछि
- (C) लेखन अप्रासंगिक अछि
- (D) पाठक स्वतः बनि जाइत अछि

५५. बाल साहित्यमे मातृभाषा-आधारित आधुनिकता कोना सम्भव अछि?

- (A) कंप्यूटर, फिल्म, विज्ञान, समाज, मिथिला आ बाल-जीवन सभकेँ मैथिलीमे रचनात्मक रूप देब
- (B) आधुनिक विषय हटाएब
- (C) केवल संस्कृत कथा राखब
- (D) मातृभाषा छोड़ि देब

उत्तरमाला — अध्याय ४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) बच्चाकेँ सही ध्वनि-बोध देब आ मैथिलीक भाषिक विशिष्टता बचाएब — सम्पादकीय मतमे ड, ज, संयुक्ताक्षर आदि मैथिलीक ध्वनि-स्वरूप स्पष्ट करैत अछि, जाहिसँ बच्चाक भाषिक सुविधा आ शुद्धता दुनू बनैत अछि।

२. (A) बाल लेखनमे व्यवहारिकता आ भाषिक विविधता दुनू स्वीकार होएब चाही — सम्पादकीय भाषा-शुद्धता संग व्यवहारिक बाल-पठनक संतुलन राखैत अछि; एहि लेल वैकल्पिक स्वीकृति दैत अछि।

३. (A) उच्चारण, ध्वनि आ मैथिली-रूपक निकटता बालक लेल महत्त्वपूर्ण अछि — लेखक ध्वनि-विशेषता आ खाँटी मैथिली रूपकें बाल-पठनक आधार मानैत छथि।
४. (A) सरलता बच्चाक सुविधा देत आ खाँटीपन मातृभाषाक संस्कार देत — सम्पादकीय सरलता आ भाषिक मौलिकता बीच तालमेल चाहैत अछि—बच्चा सहजता सँ पढ़ओ, मुदा भाषा-पहचान सेहो बनओ।
५. (A) दूनू महत्त्वपूर्ण, मुदा पद्यक आकर्षण कने अधिक मानल गेल अछि — बालमन लय, ध्वनि आ स्मृति-सुखसँ गहिर जुड़ैत अछि; तँ पद्यक विशेष महत्त्व मानल गेल अछि।
६. (A) मनोरंजन आ शिक्षा बीच संतुलन बनैत अछि — सम्पादकीय कहैत अछि जे गद्यमे विज्ञान/समाज विज्ञान जोड़लासँ शिक्षा आ मनोरंजनक सार्थक मेल होइत अछि।
७. (A) विषय-वस्तु, प्रासंगिकता, भाषा-शिल्प आ लक्ष्य-बालक लेल संप्रेषणीयता — वार्तालापमे स्पष्ट अछि जे बाल पोथीक असली कसौटी आजुक बच्चा लेल उपयोगिता, प्रासंगिकता आ संप्रेषणीय भाषा-शिल्प अछि।
८. (A) रचनाक भाषा, बिम्ब, प्रतीक आ कथन-भंगिमा बच्चाक ग्रहण-क्षमता अनुरूप होएब चाही — बाल साहित्यमे पाठक बच्चा अछि; लेखककें ओकर संवेदना, आयु आ समझक भीतर प्रवेश करबाक पड़ैत अछि।
९. (A) लेखक बच्चाक मन, दृष्टि आ अनुभव-जगतमे प्रवेश कए लिखए — बाल-साहित्य रचबाक लेल लेखककें बच्चा-संवेदना भीतर सँ अनुभव करबाक कला चाही।
१०. (A) ओ अनुवाद नहि, ओहि युगक पुनर्सृजन आ सकारात्मक जीवन-दृष्टिक रचनात्मक रूप अछि — तारानन्द वियोगी स्पष्ट करैत छथि जे कथा अविकल अनुवाद नहि, शब्द द्वारा एक युगक पुनर्सृजन अछि।
११. (A) बच्चाक समक्ष सकारात्मक जीवन-प्रणाली, संबंध-बोध आ पर्यावरण-दृष्टि खोलब — वार्तालापमे उद्देश्य सकारात्मक जीवन-प्रणाली, आपसी संबंध, पर्यावरण आ प्राथमिकताक विवेक उद्घाटित करब कहल गेल अछि।
१२. (A) शिक्षा कथाक भीतर सहज रूपेँ गुंथल रहैत अछि, उपदेश बनि नहि उठैत — नीक बाल साहित्य सीखकें कथारसक भीतर मिलबैत अछि, खुला उपदेशक बोझ नहि बनबैत।
१३. (A) ई सकारात्मक जीवन, सह-अस्तित्व आ नैतिक दृष्टिक वैकल्पिक संस्कार दे सकैत अछि — लेखक आधुनिक चुनौती सभक सन्दर्भमे एहन साहित्यकें उपयोगी मानैत छथि, कारण ई जीवन-प्रणाली आ मूल्य-चेतना दैत अछि।
१४. (A) बालक संस्कारमे प्रकृति-संबंध आ पर्यावरण-मित्र दृष्टि रोपब — एहि तुलना द्वारा लेखक आजुक बालक लेल पर्यावरण-संवेदी संस्कारक आवश्यकता देखबैत छथि।
१५. (A) मैथिली जीबए-बढ़ए तँ बाल साहित्य बहुत पैघ भूमिका निभाएत — वियोगीजी कहैत छथि जे मैथिलीमे नवजीवन भरबाक लेल बाल साहित्यक प्रसार अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि।
१६. (A) लेखन, प्रकाशन, वितरण आ पाठक-संपर्ककें एकसंग जोड़ैत अछि — सांस्थानिक सक्रियता बिना बाल साहित्य सही पाठक धरि नहि पहुँचैत; स्कूल-आधारित वितरण पाठक निर्माण करैत अछि।
१७. (A) बाल-पोथी परिवार आ पढ़ोस धरि सामूहिक पठन-संस्कृति फैला सकैत अछि — बाल साहित्यक प्रसार बालकसँ आगाँ घर-परिवार, अड़ोस-पड़ोस धरि फैलि सकैत अछि।
१८. (A) जकर लेल लिखल जाए, ओकरा धरि पोथी पहुँचाएब सेहो साहित्यिक उत्तरदायित्व अछि — वियोगीजीक मतमे बाल साहित्य लेखन अपन ठाम सर्वोपरि अछि, मुदा पाठकधरि पहुँचब सेहो आवश्यक सक्रियता अछि।
१९. (A) भावी पीढ़ीमे अपन देस-कोस, इतिहास, संस्कृति आ पहचान प्रति अनुराग जगाएब — योजनाक उद्देश्य मिथिलाक इतिहास, नायक, संस्कृति आ जीवन-पद्धति कथा-रूपेँ बालक धरि पहुँचाएब अछि।
२०. (A) अतीतसँ सकारात्मक तत्व खोजि भविष्यक जीवनमे उपयोगी पहचान बनाबय — लेखक गौरवक अंध-गान नहि, पहचानक सकारात्मक तत्व आ आगामी जीवनक उपयोगिता पर बल दैत छथि।
२१. (A) छुछ हास्य-ठट्टा सँ आगाँ बुद्धि, लोकबोध आ सांस्कृतिक ऊर्जा खोजब — वार्तालाप संकेत करैत अछि जे परिचित लोक-पात्रकें अर्थपूर्ण, आधुनिक बाल-पठनक रूपमे पुनर्सृजित करब चाही।
२२. (A) टटका बाल-संवेदना, चंचलता, ग्रामीण परिवेश आ गीतात्मक सरलताक लेल — लेखांश जीवकान्तक काव्यमे बच्चा सदृश टटका संवेदना, चिदानन्द भाव, नैसर्गिक गीतमयता आ ग्रामीण जीवनक सामंजस्य देखैत अछि।

२३. (A) ई बच्चाक वास्तविक परिवेश, खेल, श्रम, प्रकृति आ लोक-जीवनसँ जुड़ाव बनबैत अछि — गाछ, पशु, खेत, खेल, मौसम आ ग्रामीण वस्तु-संसार बालकक अनुभव-जगतक अंग अछि; कविता ओहिसँ जीवंत होइत अछि।
२४. (A) बालमनक जिज्ञासा, प्रसन्नता, वेदना, प्रकृति, स्कूल, खेलकूद आ सामाजिक विषमता सब समेटैत अछि — लेखमे गजेन्द्र ठाकुरक बाल-कवितामे औत्सुक्य, टीस, प्राकृतिक सुषमा, खेल, किंडरगार्टन, छुट्टी, बाल-श्रमिक आदि अनेक प्रसंग उल्लिखित अछि।
२५. (A) बच्चा सामाजिक सम्पन्नता-विपन्नता आ मानवीय भेदक अनुभव करि सकैत अछि — बाल-काव्यधारा लेख बालमनक संवेदनशीलता द्वारा सामाजिक यथार्थक बोध देखबैत अछि।
२६. (A) बालक दुलार, उत्तर, जिज्ञासा-समाधान आ अपनत्व ओहि संबंधमे पबैत अछि — लेखक कहैत छथि जे पितामह-मातामहक लग बालक स्नेह आ जिज्ञासाक उत्तर भेटैत अछि।
२७. (A) बाल-मनक स्वतंत्रता, खेल, प्रकृति आ पारिवारिक मिलनक आकांक्षा — छुट्टीक प्रसंग बालकक सहज उल्लास, गाम-परिवार-संपर्क आ प्रकृति-दर्शनक दुनिया खोलैत अछि।
२८. (A) बाल-साहित्य केवल मनोरंजन नहि, संवेदना आ सामाजिक न्यायक माध्यम सेहो अछि — बाल-काव्यधारा बालमनक वेदना, वर्ग-विषमता आ श्रमक पीड़ा सेहो पकड़ैत अछि।
२९. (A) शिशु नादान नहि, बुझनुक होइत अछि आ कठिन बात सरल बनाओल जाय तँ बुझि सकैत अछि — लेखमे रवीन्द्रनाथ शिशुक प्रति प्रेम, विश्वास आ आदर राखैत छथि; ओ मानैत छथि जे कठिन विषय सरल कएलासँ बालक आत्मसात करैत अछि।
३०. (A) बालकक वास्तविक गुण आ सृजनात्मकता सहज रूपेँ विकसित होइत अछि — बालक संग समभाव आ खेल-वार्तालाप ओकर गुणक स्वाभाविक विकासमे सहायक मानल गेल अछि।
३१. (A) भारतीय भाषासभक बाल-काव्य संवाद आ साझी संवेदनाक संकेत — अनुवाद द्वारा रवीन्द्रनाथक बाल-आनन्द, जिज्ञासा आ चिंतन मैथिली पाठक धरि आबैत अछि।
३२. (A) बालकक विस्मय, खेल, इन्द्रियानुभव आ पर्यावरण-चेतना एहि सँ बनैत अछि — बालमन प्रकृति, पशु-पक्षी, वर्षा, रौद, गाछ-पात सँ सहज सम्बन्ध बनबैत अछि।
३३. (A) रचना बच्चाक वर्तमान जीवन, नैतिक उलझन, पर्यावरण, समाज आ पहचानक प्रश्नसँ जुड़ल हो — वार्तालापमे उपयोगिता आ प्रासंगिकता आजुक बच्चा आ युगक चुनौतीक सन्दर्भमे परखबाक बात अछि।
३४. (A) चित्र आ कथा मिलि बालकक दृश्य-बोध, जिज्ञासा आ सीखकें सक्रिय करैत अछि — बाल साहित्यमे दृश्यात्मक प्रस्तुति कथ्यकें सहज, रोचक आ ग्रहणीय बनबैत अछि।
३५. (A) बालकक वर्तमान तकनीकी संसारकें मातृभाषामे अर्थपूर्ण रूप देबाक लेल — बाल-साहित्य आजुक जीवन-जगत—कंप्यूटर, खेल, नयी जिज्ञासा—सभकें मैथिली भाषामे रूप देब आवश्यक अछि।
३६. (A) बाल-प्रतिभा, प्रदर्शन, मीडिया आ बचपनक सामाजिक उपयोग/उपेक्षा — बाल कलाकारक प्रश्न बाल-संस्कृति, प्रतिभा, श्रम, प्रदर्शन आ बाल-अधिकारक विमर्श खोलि सकैत अछि।
३७. (A) मौखिक परम्परा, पारिवारिक अपनत्व आ कथा-संस्कार बालक धरि पहुँचैत अछि — नानीक खिस्सा बालकक पहिल कथा-संसार, परिवारक स्मृति आ भाषा-संस्कारक वाहक होइत अछि।
३८. (A) सैद्धान्तिक लेख संग रचनात्मक बाल-कथा-प्रयोगक बहुलता — विशेषांक बाल साहित्यक सिद्धान्त, वार्ता, कथा, कविता आ चित्र—विविध रूपक मंच बनैत अछि।
३९. (A) स्मृति, उच्चारण-सुख, खेल-भाव आ भाषा-रस जागृत करैत अछि — बालमन ध्वनि, दोहराव, लय आ तुकसँ भाषा आत्मसात करैत अछि।
४०. (A) खेलकूद, चंचलता आ बाल-भाषाक जीवंत वातावरण — एहन शीर्षक खेलक बाल-संसार आ ध्वन्यात्मक प्रसन्नताकें कविता मे अनैत अछि।
४१. (A) बालिका-अनुभव, संवेदना आ सामाजिक दृष्टिक समावेश करैत अछि — बाल साहित्यक संसारमे बालिका, परिवार, समानता आ संवेदनात्मक दृष्टि सभ आवश्यक आयाम अछि।
४२. (A) कथ्य रोचक, प्रवाहमय आ बालकक ध्यान पकड़एबला हो — वार्तालापमे कथा-वस्तुकेँ एना गूँथबाक बात अछि जे बाल-पाठक एक-दू बैठकमे सहज पढ़ि ले।
४३. (A) मैथिली बाल साहित्यकें विश्वस्तरीय बाल-पठन कसौटी पर सोचबाक आग्रह — बाल साहित्यक गुणवत्ता केवल स्थानीय भावुकता नहि; विषय, शिल्प, आयु-उपयुक्तता, संप्रेषणीयता आदिक विस्तृत मानदंड चाही।

४४. (A) नव पाठक बनैत अछि, मातृभाषा पठनक आदत बनैत अछि आ भाषा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अछि — बाल-पाठक निर्माण मातृभाषाक दीर्घजीवनक आधार अछि; योजना एहि दिशामे सक्रिय हस्तक्षेप अछि।
४५. (A) सम्बन्ध, प्रकृति, नैतिकता, श्रम आ सामूहिकता प्रति संतुलित दृष्टि — वियोगीजीक कथनमे उपनिषद-कथाक लक्ष्य सकारात्मक जीवन-दृष्टि— पर्यावरण, संबंध, प्राथमिकता आ मूल्य-बोध—खोलब अछि।
४६. (A) बच्चा अपन भाषा, भूगोल, इतिहास आ संस्कृति सँ आत्मीय परिचय बनाए — मिथिला-आधारित पुस्तक-माला बालकमे सकारात्मक सांस्कृतिक आत्म-बोध जगाएबाक योजना अछि।
४७. (A) बाल-अनुभव ताजगी, सहजता आ तत्कालिक भाव-स्पर्शसँ जीवंत होइत अछि — बाल-काव्यक विशिष्टता ताजगी, सहजता आ अनुभवक प्रत्यक्षता मे अछि।
४८. (A) सहज, जीवंत, स्थानीय आ अनुभव-निकट बाल-संसार — ग्रामीण वातावरण, लोक-शब्द आ प्रकृति बाल-कवितामे आत्मीयता आ सहज सौंदर्य दैत अछि।
४९. (A) स्थानीय भाषा विश्व/भारतीय बाल-संवेदना सँ संवाद करि अपन धारा समृद्ध करि सकैत अछि — अनुवाद आ संवाद मैथिली बाल-साहित्यक क्षितिज बढ़बैत अछि, ओकर स्वत्व हटबैत नहि।
५०. (A) रोचकता, प्रवाह आ पाठकीय आकर्षण सफल अछि — बच्चा जँ अखंड रुचिसँ पढ़ि जाए तँ शिल्प आ कथा-प्रवाह सफल मानल जा सकैत अछि।
५१. (A) संस्कृति-सचेत, सकारात्मक, आधुनिक चुनौतीक सामना करए योग्य भावी नागरिक — योजना अतीत-गौरवसँ आगाँ जा कऽ भावी पीढ़ीक सकारात्मक सांस्कृतिक-नैतिक निर्माण चाहैत अछि।
५२. (A) भाषा-शुद्धि, बाल-मनोविज्ञान, रचनात्मक कथा-कविता, सांस्कृतिक पहचान आ पाठक-निर्माणक संयुक्त दृष्टि — विशेषांक संपादकीय सिद्धान्त, बाल काव्यधारा, वार्ता, कथा-कविता, चित्र आ प्रसार—सभकेँ जोड़ि बाल साहित्यक व्यापक दृष्टि बनबैत अछि।
५३. (A) गंभीर विषयकेँ कथा, दृश्य, संवाद आ बाल-भाषामे रूपान्तरित करब — रवीन्द्रनाथ-संबंधी विचारमे गंभीर विषय सरल रूपमे देल जाए तँ बालक ओकरा आत्मसात करि सकैत अछि।
५४. (A) श्रेष्ठ लेखन जरूरी अछि, मुदा पाठकधरि पहुँचबिना ओकर सामाजिक प्रभाव अधूरा रहैत अछि — वार्तालापमे लेखनक सर्वोच्चता मानल गेल अछि, मुदा सक्रिय प्रसारक बेगरता सेहो रेखांकित अछि।
५५. (A) कंप्यूटर, फिल्म, विज्ञान, समाज, मिथिला आ बाल-जीवन सभकेँ मैथिलीमे रचनात्मक रूप देब — विशेषांक आधुनिक विषय आ स्थानीय भाषा-संस्कृति बीच पुल बनएबाक दिशामे सोचैत अछि।

अध्याय ५ : विदेह विशेषांक ०५ — मैथिली नाटक प्रश्नोत्तरी

१. नाटक विशेषांकक संपादकीयमे 'मैथिली नाटकक समानान्तर दुनिया' कहबाक अर्थ की अछि?
 - (A) लोक-रंगमंच, मंडली, गीत-नाटिका आ मंच-अनुभवक ओ परम्परा जे किताबक इतिहाससँ अलग जीवित रहल
 - (B) केवल अंग्रेजी नाटकक अनुवाद
 - (C) केवल विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमक नाटक
 - (D) केवल रेडियो-समाचारक परम्परा
२. रामखेलावन मंडार आ हुनक मंडलीक उल्लेख मैथिली रंगमंचक कोन पक्ष खोलैत अछि?
 - (A) केवल लिखित नाटकक पुरस्कार-सूची
 - (B) गामक सामूहिक प्रदर्शन-परम्परा आ लोक-नाट्यक जीवंतता
 - (C) केवल शहरी सभागारक परम्परा
 - (D) केवल बालगीतक पाठशाला
३. 'रेशमा-चूहड़', 'शीत-बसन्त', 'अल्हा-ऊदल' आदि प्रस्तुति सभक विशेषांकमे उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
 - (A) ई मैथिली रंगमंचक लोककथा, वीरगाथा आ लोकप्रिय कथानकसँ सम्बन्ध देखबैत अछि
 - (B) ई सभ अनुवाद-शास्त्रक सूत्र अछि
 - (C) ई सभ गजल-संग्रहक शीर्षक अछि
 - (D) ई सभ केवल समीक्षा-पुस्तकक नाम अछि
४. 'मैथिली-बिदेसिया' प्रकारक प्रस्तुति विशेषांकमे कोन सांस्कृतिक पुल बनबैत अछि?
 - (A) नाट्यलेखनक पूर्णतः अंग्रेजी बनबैत अछि
 - (B) मिथिला क्षेत्रक रंग-परम्पराकें पड़ोसी लोक-रंग आ प्रवासी अनुभवसँ जोड़ैत अछि
 - (C) मैथिली नाटककें केवल संस्कृत नाटकमे सीमित करैत अछि
 - (D) नाटकमे संवादक भूमिका हटबैत अछि
५. 'आब मानि जाउ ने'कें हास्य रेडियो नाटक कहल गेल अछि; रेडियो नाटकमे हास्य कोना प्रभावी बनैत अछि?
 - (A) केवल मंच-प्रकाशसँ
 - (B) केवल रंगीन वेशभूषासँ
 - (C) केवल दृश्य-पर्दाक बदलावसँ
 - (D) संवाद, आवाज, ठाका, विराम आ ध्वनि-संकेतसँ दृश्यक कल्पना बनैत अछि
६. रेडियो नाटकमे 'हँसबाक ध्वनि' वा 'बैग खोलबाक ध्वनि' सन संकेतक साहित्यिक उपयोग की अछि?
 - (A) ई मंचन निषिद्ध करैत अछि
 - (B) ई पात्र-सूची हटएबाक उपाय अछि
 - (C) श्रोता बिना दृश्यो पात्रक क्रिया आ वातावरण बुझि लैत अछि
 - (D) ई केवल टाइपिंगक गलती अछि
७. 'आब मानि जाउ ने'मे घरेलू मनुहार आ उपहारक प्रसंग हास्यक कोन प्रकार रचैत अछि?
 - (A) शास्त्रीय त्रासदीक करुण-अन्त
 - (B) दाम्पत्य संवाद, रूठब-मनाएब आ छोटी इच्छा सभक नाटकीय अतिशयोक्ति
 - (C) वीर-रसक युद्ध-वर्णन
 - (D) राजनीतिक भाषणक व्यंग्य
८. रेडियो नाटकक पात्र-भाषा किएक बोलचालक निकट होएब चाही?
 - (A) भाषा जतेक कठिन हो ततेक असरदार
 - (B) रेडियोमे पात्रक आवाज आवश्यक नहि
 - (C) केवल संस्कृत श्लोक रेडियो-नाटक बनबैत अछि
 - (D) श्रोता तात्कालिकता आ निकटता अनुभव करए, आ दृश्य बिना अर्थ स्पष्ट रहए

९. 'रिहर्सल' शीर्षक नाटकमे शीर्षक स्वयं कोन संकेत दैत अछि?

- (A) केवल कवितापाठ
- (B) केवल विद्यालयक परीक्षा-तैयारी
- (C) केवल संगीत-सभा
- (D) मंचनक तैयारीक भीतर समाजक वास्तविक अभिनय आ सांस्कृतिक विडम्बना देखाएब

१०. रवीभूषण पाठक 'रिहर्सल'कें मिथिलाक सांस्कृतिक संकटक रूपक कहैत छथि; एहि संकटक केन्द्र कोन अछि?

- (A) केवल पुस्तकक आवरण
- (B) केवल बरखा नहेबाक समस्या
- (C) केवल छन्दक संख्या
- (D) जाति, धर्म, राजनीति आ साहित्यक उलझल गठजोड़

११. 'रिहर्सल' सामाजिक कुरूपताकें ग्लेमराइज नहि करैत—एहि कथनक नाट्य-नैतिक अर्थ की?

- (A) नाटकक उद्देश्य केवल मनोरंजन नहि
- (B) नाटक समीक्षा योग्य नहि
- (C) नाटक सामाजिक विकृति देखबैत अछि, मुदा ओकरा आकर्षक वा सजावटी नहि बनबैत
- (D) नाटकमे पात्र नहि रहैत

१२. 'भोक्ता आ रचयिता बीच दूरी'क एलियट-सम्बन्धी विचारकें 'रिहर्सल'मे चुनौती देबाक अर्थ की?

- (A) लेखककें पाठकसँ कहियो मिलबाक नहि चाही
- (B) नाटकमे समाजक कोनो प्रवेश नहि
- (C) रचना सदैव लेखकसँ पूर्णतः असंबद्ध होइत अछि
- (D) लेखक-समाजक भोगल यथार्थ आ रचनात्मक हस्तक्षेप बीच दूरी घटि जाइत अछि

१३. गाममे 'रिहर्सल'क मंचनसँ नाटकीय अभिरुचिक परिष्कारक आवश्यकता किएक सामने अबैत अछि?

- (A) मैथिलीमे अभिनय सम्भव नहि
- (B) गामक लोक नाटक देखबे नहि करैत
- (C) किएकि दर्शक, अभिनेता आ मंच-संस्कारक प्रशिक्षण बिना गम्भीर नाटकक असर अधूरा रहि सकैत अछि
- (D) रिहर्सल केवल रेडियो लेल बनल छल

१४. 'रिहर्सल'क कच्चापनकें लेखक 'कचरसक आनंद' किएक कहैत छथि?

- (A) मंचन बिना पाठ सर्वोत्तम अछि
- (B) रचनाक अधूरापनहुँमे जीवंतता, तात्कालिकता आ स्थानीय ऊर्जा रहि सकैत अछि
- (C) संपादन नाटककें नष्ट करैत अछि
- (D) कच्चापन सदैव दोष मात्र अछि

१५. 'मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान' शीर्षक लेखक मुख्य प्रयोजन की अछि?

- (A) गजल-छन्दक गणना करब
- (B) मैथिली नाट्य-इतिहासमे छूटल/कम चर्चा भेल योगदानकें केन्द्रमे आनब
- (C) वेब-पत्रकारिताक तकनीक सिखाएब
- (D) बालगीतक शब्दार्थ देब

१६. आनंद जी पर लेखमे पं. जीवन झा आ आरंभिक नाटककारक प्रसंग किएक उठैत अछि?

- (A) मैथिली नाट्य-परम्पराक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बना कऽ योगदानक स्थान तय करबाक लेल
- (B) कथा-संग्रहक मूल्य लिखबाक लेल
- (C) केवल वंशावली जोड़बाक लेल
- (D) रेडियो कार्यक्रमक समय बतएबाक लेल

१७. नाटककारक मूल्यांकनमे भाषा-प्रयोग किएक संवेदनशील प्रश्न बनैत अछि?

- (A) संवादक स्थान पर चित्र काफी अछि
- (B) किएकि मंच-भाषा पात्र, समाज आ मैथिली अस्मिता दुनूकें प्रभावित करैत अछि
- (C) नाटकमे भाषा अप्रासंगिक अछि
- (D) केवल विदेशी भाषा मंचयोग्य अछि

१८. महेश मलंगिया सन नाटककारक चर्चा मैथिली नाटकक कोन मानक उठबैत अछि?

- (A) लोकप्रियता, साहित्यिकता, मंचयोग्यता आ भाषा-स्वरूपक संयुक्त कसौटी
- (B) केवल जन्म-तिथि
- (C) केवल पृष्ठ-संख्या
- (D) केवल आवरणक रंग

१९. 'काठक लोक' सन पाठ्यक्रमीय नाटक पर भाषा-सवाल उठबैत लेख कोन आलोचनात्मक दृष्टि अपनबैत अछि?

- (A) पाठ्यक्रममे शामिल कृति सेहो भाषा आ सांस्कृतिक प्रसंगक कसौटी पर परखल जाए
- (B) विद्यार्थी नाटक नहि पढ़ि सकैत
- (C) पाठ्यक्रमक कृति पर प्रश्न निषिद्ध अछि
- (D) समीक्षा केवल प्रशंसा होएब चाही

२०. 'चटुल आ ओछ नाटक'क उल्लेख मैथिली रंगमंचक कोन जोखिम बतबैत अछि?

- (A) लोकप्रियता सदैव श्रेष्ठता अछि
- (B) नाटक केवल शास्त्रीय संस्कृतमे होएब चाही
- (C) रंगमंचमे हास्य निषिद्ध अछि
- (D) लोकप्रियताक लोभमे साहित्यिक गुणवत्ता आ सांस्कृतिक जिम्मेदारी घटि सकैत अछि

२१. 'डॉक्टर फॉस्टस' मैथिली पाठक लेल कोन नाट्य-विषयक शिक्षा दे सकैत अछि?

- (A) घरेलू उपहारक हास्य
- (B) बाल-कविता मात्र
- (C) केवल विवाह-गीत
- (D) ज्ञान, महत्वाकांक्षा आ आत्म-विनाशक त्रासदीक संरचना

२२. 'सैमसन एगोनीस्टेस'क चर्चा नाटक विशेषांकमे किएक सार्थक अछि?

- (A) ई लोकगीतक मुखड़ा अछि
- (B) विश्व-नाटकक धार्मिक, वीर आ आन्तरिक संघर्षपरक रूप मैथिली विमर्शसँ जोड़ैत अछि
- (C) ई शब्दकोशक अनुच्छेद अछि
- (D) ई केवल पाक-शास्त्रक ग्रन्थ अछि

२३. 'मर्डर इन द कैथेड्रल' सन नाटक मैथिली नाट्य-विमर्शमे कोन धुरी जोड़ैत अछि?

- (A) केवल गीत-संग्रह
- (B) धर्म, सत्ता, शहादत आ नैतिक निर्णयक मंचीय संघर्ष
- (C) केवल बाल-मनोरंजन
- (D) केवल हास्य-झुमका प्रसंग

२४. 'स्ट्राइफ'क उल्लेख मैथिली पाठककें कोन आधुनिक नाट्य-विषय दिस लऽ जाइत अछि?

- (A) केवल निजी आत्मकथा
- (B) श्रम, पूँजी, वर्ग-संघर्ष आ सामाजिक तनावक रंगमंच
- (C) केवल ऋतु-वर्णन
- (D) केवल देव-स्तुति

२५. चारि अंग्रेजी नाटकक विवेचनक समावेश विशेषांकमे कोन काम करैत अछि?

- (A) मैथिली नाटककें अप्रासंगिक बतबैत अछि
- (B) मैथिली नाटकक तुलना विश्व-नाट्य परम्परा आ विविध संघर्ष-रूपसँ करबैत अछि
- (C) नाटकक स्थान पर कथा स्थापित करैत अछि
- (D) समीक्षा हटएबाक घोषणा करैत अछि

२६. एकांकी 'प्रयोग'क रंगमंचीय समीक्षा नाटकक कोन अलग पक्ष पर जोर दैत अछि?

- (A) लिखित पाठक संग मंच-संयोजन, प्रकाश, ध्वनि, अभिनय आ दर्शक-असर
- (B) केवल छपाईक शुद्धता
- (C) केवल पुरस्कारक नाम
- (D) केवल लेखकक फोटो

२७. 'प्रयोग' एकांकीमे प्रकाश-संयोजन पर टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) केवल दर्शकक सीट गनैत अछि
- (B) केवल पुस्तकक मूल्य बतबैत अछि
- (C) प्रकाश दृश्य, भाव, तनाव आ कथ्यक दिशा उभारैत अछि
- (D) प्रकाशक नाटकसँ सम्बन्ध नहि

२८. मिथिलामे उपयुक्त प्रेक्षागृहक कमी पर टिप्पणी रंगकर्मक कोन व्यावहारिक समस्या देखबैत अछि?

- (A) नाटक लिखब असम्भव अछि
- (B) रचनाकार/प्रस्तुतिकर्ताकें ध्वनि, मंच, प्रकाश आदिक व्यवस्था स्वयं सँ सँभालए पड़ैत अछि
- (C) दर्शक मैथिली नहि बुझैत
- (D) रेडियो नाटक निषिद्ध अछि

२९. मंचीय ध्वनि-व्यवस्था सफल हो तँ अभिनेता कोन लाभ पबैत अछि?

- (A) नाटक गीतमे बदलि जाइत अछि
- (B) किसी कोनसँ बाजल संवाद सेहो दर्शकधरि स्पष्ट पहुँचैत अछि
- (C) प्रकाशक उपयोग बन्द भऽ जाइत अछि
- (D) अभिनयक जरूरत समाप्त भऽ जाइत अछि

३०. नाटकमे संगीतक उपयोग पर समीक्षा कोन संतुलन सुझबैत अछि?

- (A) संगीत भावी वातावरण बनबैत अछि, मुदा पूर्वाभ्यास आ संयोजनक सजगता चाही
- (B) संगीत भए गेल तँ संवाद हटि जाए
- (C) संगीत सदैव नाटकक शत्रु अछि
- (D) संगीत मात्र सजावट अछि

३१. 'अभिनेता पात्र बनि गेल कि अभिनेता रूपें दिखैत रहल'—एहि कसौटीक अर्थ की?

- (A) संवाद याद नहि रहए
- (B) अभिनेता मंच पर स्थिर रहए
- (C) वेशभूषा नहि होए
- (D) सफल अभिनयमे कलाकारक निजी छवि दबि पात्रक जीवन सामने अबैत अछि

३२. संवादक उतार-चढ़ाव आ शब्द-संप्रेषण स्वाभाविक नहि बनल कहबाक नाट्य-आलोचनात्मक अर्थ की?

- (A) संवाद नाटकमे अनावश्यक अछि
- (B) मंच पर मौन मात्र श्रेष्ठ अछि
- (C) दर्शककें भाषा सुनए नहि पड़ैत
- (D) बोलबाक लय, भाव आ अर्थ पात्रानुकूल नहि भेल तँ नाटकीय प्रभाव घटैत अछि

३३. एकांकी विधा नाटक विशेषांकमे किएक अलग महत्त्व पबैत अछि?

- (A) एकांकीमे मंचन सम्भव नहि
- (B) छोट आकारमे तीक्ष्ण स्थिति, सीमित पात्र आ केन्द्रित संघर्ष प्रस्तुत करए सकैत अछि
- (C) एकांकी केवल कविता अछि
- (D) एकांकी हमेशा बाल-साहित्य अछि

३४. 'जरैत मोमबत्ती' सन शीर्षक एकांकीक सम्भावित प्रतीकात्मक अर्थ कोना बुझल जा सकैत अछि?

- (A) केवल बाजारक वस्तु-सूची
- (B) धीरे-धीरे गलैत जीवन, त्याग, समय वा उजासक तनाव
- (C) केवल व्याकरणक नियम
- (D) केवल मौसम-रिपोर्ट

३५. 'एकटा आर महाभिनिष्क्रमण' शीर्षकमे बौद्ध सांस्कृतिक संकेत कोन अर्थ खोलि सकैत अछि?

- (A) त्याग, प्रस्थान, आत्म-निर्णय आ जीवनक निर्णायक मोड़
- (B) केवल खेलकूदक घोषणा
- (C) केवल हास्य-रेडियो संकेत
- (D) केवल शब्दकोशक क्रम

३६. 'केसर' एकांकीमे कैश बनएब कि केसर बनएब सन संकेत कोन मूल्य-संघर्ष दिस इशारा करैत अछि?

- (A) केवल रेडियो खरीदबाक प्रसंग
- (B) केवल रंगक नाम चुनबाक बात
- (C) सुविधा/धन आ समाजोपयोगी योगदानक बीच चयन
- (D) केवल भोजन-विधि

३७. ज्योति सुनीत चौधरीसँ गप्प-सप्प नाटक विशेषांकमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई पाठ्यक्रमक प्रश्नपत्र अछि
- (B) ई प्रवासी/अंग्रेजी-माध्यम शिक्षित मैथिली अनुरागी लेखिकाक भाषा-संबंध आ प्रेरणा खोलैत अछि
- (C) ई केवल विज्ञापन अछि
- (D) ई मंच-निर्देशकक वेतन-सूची अछि

३८. ज्योति सुनीत चौधरीक कथनमे मैथिली अनुरागक मूल स्रोत कोन-कोन अछि?

- (A) केवल नाटक पुरस्कार
- (B) परिवार, गाम, विद्यापति-समारोह, पितामहक मिथिला-विकास चिन्ता आ विदेहक प्रेरणा
- (C) केवल सरकारी आदेश
- (D) केवल विदेशी विश्वविद्यालय

३९. नाटक विशेषांकमे कविता, कथा, बहस आ वार्ता सेहो रहबाक अर्थ की?

- (A) विदेह विशेषांक नाटक-केंद्रित रहितहुँ व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक मंच बनैत अछि
- (B) विशेषांकक केन्द्र नाटक नहि रहल
- (C) संपादकीय अनुपस्थित अछि
- (D) नाटक विधा हटि गेल

४०. मैथिली विधायक सभ द्वारा मैथिलीमे शपथ लेबाक उल्लेख नाटक विशेषांकमे कोन भाषा-राजनीतिक प्रश्न जोड़ैत अछि?

- (A) केवल गजलका काफिया
- (B) मातृभाषाक सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ संस्थागत प्रयोगक प्रश्न
- (C) केवल हास्यक आखिरी दृश्य
- (D) केवल नाटकक प्रकाश-संयोजन

४१. साहित्यिक चोरी पर बहसक उपस्थिति नाटक विशेषांकमे कोन नैतिक चेतना देखबैत अछि?

- (A) बालगीतक नियम
- (B) चोरीक समर्थन
- (C) रचनात्मक मौलिकता आ साहित्यिक उत्तरदायित्व पर सजगता
- (D) समीक्षाक निषेध

४२. नाटक विधामे 'मंचनयोग्यता' आ 'पाठयोग्यता' अलग-अलग किएक परखल जाए?

- (A) लिखित संवाद नीक हो सकैत अछि, मुदा मंच पर गति, दृश्य, ध्वनि आ अभिनयक माँग अलग होइत अछि
- (B) पाठयोग्यता नाटकमे बेकार अछि
- (C) मंचनयोग्यता केवल कवितामे होइत अछि
- (D) दुनू सदैव एके बात अछि

४३. नाट्य-पात्रक सामाजिक पहचान नाटकमे किएक महत्त्वपूर्ण होइत अछि?

- (A) सामाजिकता नाटक नष्ट करैत अछि
- (B) पात्र सदैव निरपेक्ष छाया होइत अछि
- (C) पात्रक नाम पर्याप्त अछि
- (D) पात्रक भाषा, देह-व्यवहार, संघर्ष आ सम्बन्ध सामाजिक सन्दर्भसँ बनैत अछि

४४. मेटा-थिएटरक दृष्टिसँ 'रिहर्सल'क अध्ययन कोना होएब चाही?

- (A) मंचक भीतर मंच, अभिनयक भीतर सामाजिक अभिनय, आ तैयारीक भीतर सचक उद्घाटन खोजब
- (B) केवल पात्रक वेशभूषा सूची बनएब
- (C) केवल लेखकक ईमेल पढ़ब
- (D) केवल दृश्य-संख्या गनब

४५. नाटक समीक्षा करैत काल कथ्य मात्र नहि, 'प्रस्तुति' किएक जरूरी अछि?

- (A) नाटक केवल लेखकक निजी डायरी अछि
- (B) ध्वनि आ प्रकाश साहित्यक बाहर अछि
- (C) रंगमंच सामूहिक कला अछि—निर्देशन, अभिनय, प्रकाश, ध्वनि, संगीत आ दर्शक-संवाद मिलि नाटक बनबैत अछि
- (D) दर्शकक भूमिका शून्य अछि

४६. मिथिला रंगमंचक विकास लेल विशेषांक अप्रत्यक्ष रूपेँ कोन कार्य-सूची सुझबैत अछि?

- (A) केवल पुरस्कार-वितरण
- (B) लेखन, मंचन, प्रशिक्षण, प्रेक्षागृह, ध्वनि-प्रकाश सुविधा आ आलोचना—सभक समन्वय
- (C) केवल लोकगीत हटाएब
- (D) केवल पृष्ठ-सूची

४७. हास्य-रेडियो नाटक आ सामाजिक-रूपक नाटक एके विशेषांकमे रहबाक अर्थ की अछि?

- (A) रेडियो नाटक मंचीय नाटककेँ हटबैत अछि
- (B) मैथिली नाटकक रेंज घरेलू हास्यसँ गम्भीर सांस्कृतिक आलोचना धरि फैलल अछि
- (C) हास्य आ आलोचना असंगत अछि
- (D) नाटकमे विविधता नहि

४८. 'कचरस' वा लोक-रंगक स्वाद मैथिली नाटक लेल किएक बचाएब जरूरी अछि?

- (A) स्थानीयता साहित्यक विरोधी अछि
- (B) कचरस सदैव अशिक्षितता अछि
- (C) ओहि मे स्थानीय जीवन, बोली, देहभाषा आ दर्शकक अपना-पन रहैत अछि
- (D) लोक-रंगक मंचसँ सम्बन्ध नहि

४९. नाटक विशेषांकक उच्च-स्तरीय अध्ययनमे कोन प्रश्न पृष्ठ-संख्या पूछबाक अपेक्षा बेसी सार्थक अछि?

- (A) कौन लिंकक रंग की अछि
- (B) कौन शीर्षक कोन पृष्ठ पर अछि
- (C) नाटक समाज, भाषा, मंच-संरचना आ सांस्कृतिक संकटकेँ कोना रूपान्तरित करैत अछि
- (D) कतेक पंक्ति छपल अछि

५०. मैथिली नाटकमे स्त्री-पात्र आ घरेलू प्रसंगक उपयोग केवल मनोरंजन नहि किएक?

- (A) ओ परिवार, इच्छा, दबाव, मनुहार, सत्ता-सन्तुलन आ सामाजिक भूमिकाक अभिनय खोलि सकैत अछि
- (B) घरक प्रसंग नाटक नहि बनि सकैत
- (C) स्त्री-पात्र सदैव गौण होइत अछि
- (D) घरेलू संवादमे सामाजिक अर्थ नहि

५१. 'नाटकक विकास'क चर्चा केवल लेखक-नामसँ किएक पूर्ण नहि होइत?

- (A) विकासमे पाठ, मंच, दर्शक, संस्था, आलोचना, भाषा आ तकनीक सभ सम्मिलित अछि
- (B) लेखक-नाम पर्याप्त अछि
- (C) दर्शकक भूमिका शून्य अछि
- (D) मंचन इतिहाससँ बाहर अछि

उत्तरमाला — अध्याय ५ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) लोक-रंगमंच, मंडली, गीत-नाटिका आ मंच-अनुभवक ओ परम्परा जे किताबक इतिहाससँ अलग जीवित रहल — संपादकीय मैथिली नाटककेँ केवल मुद्रित साहित्य नहि, गाम-गामक मंडली, प्रस्तुति आ लोक-स्मृतिमे बाँचल रंग-संसार रूपमे देखैत अछि।
२. (B) गामक सामूहिक प्रदर्शन-परम्परा आ लोक-नाट्यक जीवंतता — एहन उल्लेख देखबैत अछि जे मैथिली नाटकक जड़ केवल पुस्तकालयमे नहि, लोकमंच, कोरस, यात्रा आ सामूहिक अभिनयमे अछि।
३. (A) ई मैथिली रंगमंचक लोककथा, वीरगाथा आ लोकप्रिय कथानकसँ सम्बन्ध देखबैत अछि — लोकप्रिय कथानक रंगमंचकेँ जनस्मृति आ सामूहिक मनोरंजनसँ जोड़ैत अछि।
४. (B) मिथिला क्षेत्रक रंग-परम्पराकेँ पड़ोसी लोक-रंग आ प्रवासी अनुभवसँ जोड़ैत अछि — बिदेसिया-धारा प्रवास, विरह, लोकगीत आ अभिनयक संयुक्त रंगरूपसँ सम्बन्धित अछि, जे मैथिली मंचक फैलाव देखबैत अछि।
५. (D) संवाद, आवाज, ठाका, विराम आ ध्वनि-संकेतसँ दृश्यक कल्पना बनैत अछि — रेडियो नाटक दृश्यविहीन होइत अछि; तँ आवाज, ध्वनि-प्रभाव आ बोलचाल हास्यक मुख्य साधन बनैत अछि।
६. (C) श्रोता बिना दृश्यो पात्रक क्रिया आ वातावरण बुझि लैत अछि — ध्वनि-संकेत रेडियो-नाटकक दृश्य-निर्माण करैत अछि; श्रोता कानसँ मंच देखैत अछि।
७. (B) दाम्पत्य संवाद, रूठब-मनाएब आ छोटी इच्छा सभक नाटकीय अतिशयोक्ति — नाटक घर-परिवारक परिचित परिस्थिति सँ हास्य पैदा करैत अछि, जतय रेडियो, झुमका, मनुहार आ ठाका नाट्य-ऊर्जा बनैत अछि।
८. (D) श्रोता तात्कालिकता आ निकटता अनुभव करए, आ दृश्य बिना अर्थ स्पष्ट रहए — बोलचालक भाषा रेडियो नाटकमे पात्रक सामाजिकता, हास्य आ परिस्थिति तुरन्त खोलैत अछि।
९. (D) मंचनक तैयारीक भीतर समाजक वास्तविक अभिनय आ सांस्कृतिक विडम्बना देखाएब — 'रिहर्सल' मेटा-थिएटरक संभावना रखैत अछि— अभ्यासक बहाने समाजक सच, भूमिका आ पाखंड सामने आबैत अछि।
१०. (D) जाति, धर्म, राजनीति आ साहित्यक उलझल गठजोड़ — लेखकीय टिप्पणीमे नाटक सांस्कृतिक संकटकेँ जाति-धर्म-राजनीति-साहित्यक कौकटेल रूपमे देखैत अछि।
११. (C) नाटक सामाजिक विकृति देखबैत अछि, मुदा ओकरा आकर्षक वा सजावटी नहि बनबैत — सजावटीकरणसँ समस्या हलुक भऽ जाएत; यथार्थक कुरूपता केँ बिना चमकौने देखाएब आलोचनात्मक नाट्य-दृष्टि अछि।
१२. (D) लेखक-समाजक भोगल यथार्थ आ रचनात्मक हस्तक्षेप बीच दूरी घटि जाइत अछि — गामक मंचन आ जीवित सामाजिक संकट लेखककेँ दूरस्थ दर्शक नहि रहने देत; रचना भोगल यथार्थसँ संवाद करैत अछि।

१३. (C) किएकि दर्शक, अभिनेता आ मंच-संस्कारक प्रशिक्षण बिना गम्भीर नाटकक असर अधूरा रहि सकैत अछि — लेखक गामक सहयोगसँ गदगद छथि, मुदा नाटकीय रुचि आ मंच-संस्कारक परिष्कारकें आवश्यक मानैत छथि।
१४. (B) रचनाक अधूरापनहुँमे जीवंतता, तात्कालिकता आ स्थानीय ऊर्जा रहि सकैत अछि — लेखकीय टिप्पणी 'कचकूही' स्वीकारैत अछि, मुदा ओहि जीवित कच्चापनमे रंगमंचक अपन रस देखैत अछि।
१५. (B) मैथिली नाट्य-इतिहासमे छूटल/कम चर्चा भेल योगदानकें केंद्रमे आनब — शीर्षकहि संकेत करैत अछि जे लेख नाट्य-विकासक इतिहासमे आनंद जीक योगदानक मूल्यांकन करैत अछि।
१६. (A) मैथिली नाट्य-परम्पराक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बना कऽ योगदानक स्थान तय करबाक लेल — किसी रचनाकारक योगदान बुझबाक लेल पूर्ववर्ती परम्परा आ वर्तमान परिस्थिति दुनूकें सामने राखब आवश्यक अछि।
१७. (B) किएकि मंच-भाषा पात्र, समाज आ मैथिली अस्मिता दुनूकें प्रभावित करैत अछि — मैथिली नाटकमे मातृभाषा, पात्रक स्थिति आ दर्शक-संपर्कक संतुलन महत्वपूर्ण अछि।
१८. (A) लोकप्रियता, साहित्यिकता, मंचयोग्यता आ भाषा-स्वरूपक संयुक्त कसौटी — नाटकक मूल्यांकनमे रचना, मंचन, भाषा, पात्र आ सांस्कृतिक अनुकूलता सभ देखल जाएत अछि।
१९. (A) पाठ्यक्रममे शामिल कृति सेहो भाषा आ सांस्कृतिक प्रसंगक कसौटी पर परखल जाए — लेख पाठ्यक्रमक अधिकारकें अन्तिम सत्य नहि मानैत; पाठक/छात्रक अनुभव सेहो महत्वपूर्ण मानैत अछि।
२०. (D) लोकप्रियताक लोभमे साहित्यिक गुणवत्ता आ सांस्कृतिक जिम्मेदारी घटि सकैत अछि — लेख लोकप्रिय मंचन आ साहित्यिक मानक बीच तनावकें रेखांकित करैत अछि।
२१. (D) ज्ञान, महत्वाकांक्षा आ आत्म-विनाशक त्रासदीक संरचना — फॉस्टसक कथा मानवक असीम इच्छा, नैतिक निर्णय आ त्रासदीक अध्ययन लेल उपयोगी अछि।
२२. (B) विश्व-नाटकक धार्मिक, वीर आ आन्तरिक संघर्षपरक रूप मैथिली विमर्शसँ जोड़ैत अछि — सैमसनक त्रासदी नायकत्व, आस्था, अपमान आ आत्म-संघर्षक नाटकीय उदाहरण दैत अछि।
२३. (B) धर्म, सत्ता, शहादत आ नैतिक निर्णयक मंचीय संघर्ष — विश्व-नाटकक अध्ययन स्थानीय नाट्यलेखनकें विषय-विस्तार आ संरचना-सजगता दैत अछि।
२४. (B) श्रम, पूँजी, वर्ग-संघर्ष आ सामाजिक तनावक रंगमंच — अंग्रेजी नाटक सभक चर्चा मैथिली नाट्य-विमर्शमे सामाजिक संघर्षक आधुनिक रूपक प्रवेश करबैत अछि।
२५. (B) मैथिली नाटकक तुलना विश्व-नाट्य परम्परा आ विविध संघर्ष-रूपसँ करबैत अछि — स्थानीय विशेषांकमे विश्व-नाटकक विवेचन तुलना, अध्ययन आ शिल्प-बोधक विस्तार दैत अछि।
२६. (A) लिखित पाठक संग मंच-संयोजन, प्रकाश, ध्वनि, अभिनय आ दर्शक-असर — रंगमंचीय समीक्षा नाटककें पढ़ल पाठ नहि, पूर्ण प्रस्तुति मानि विश्लेषित करैत अछि।
२७. (C) प्रकाश दृश्य, भाव, तनाव आ कथ्यक दिशा उभारैत अछि — मंच पर प्रकाश नाटकीय अर्थ बनबैत अछि; ओ पात्र आ परिस्थिति पर दर्शकक ध्यान केन्द्रित करैत अछि।
२८. (B) रचनाकार/प्रस्तुतिकर्ताकें ध्वनि, मंच, प्रकाश आदिक व्यवस्था स्वयं सँ सँभालए पड़ैत अछि — समीक्षा मानैत अछि जे संरचनात्मक सुविधा अभावमे रंगकर्मक तकनीकी जिम्मेदारी बढ़ि जाइत अछि।
२९. (B) किसी कोनसँ बाजल संवाद सेहो दर्शकधरि स्पष्ट पहुँचैत अछि — ध्वनि स्पष्टता दर्शक-संपर्कक मूल शर्त अछि; विशेषतः सभागार-अभावक स्थिति मे।
३०. (A) संगीत भावी वातावरण बनबैत अछि, मुदा पूर्वाभ्यास आ संयोजनक सजगता चाही — संगीत नाटकीय मूड गाढ़ करैत अछि, मुदा असंयोजन नाटकक गति बिगाड़ि सकैत अछि।
३१. (D) सफल अभिनयमे कलाकारक निजी छवि दबि पात्रक जीवन सामने अबैत अछि — समीक्षा अभिनयक विश्वसनीयता परखैत अछि—दर्शक पात्र देखय कि अभिनेता, ई बड़ा प्रश्न अछि।
३२. (D) बोलबाक लय, भाव आ अर्थ पात्रानुकूल नहि भेल तँ नाटकीय प्रभाव घटैत अछि — नाटकमे शब्द केवल लिखल पंक्ति नहि; ओकर उच्चारण, गति आ भावहि मंचीय अर्थ बनबैत अछि।

३३. (B) छोट आकारमे तीक्ष्ण स्थिति, सीमित पात्र आ केन्द्रित संघर्ष प्रस्तुत करए सकैत अछि — एकांकी संक्षिप्त होइतहुँ नाटकीयता, चरित्र आ संघर्षक केन्द्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।
३४. (B) धीरे-धीरे गलैत जीवन, त्याग, समय वा उजासक तनाव — मोमबत्ती जळब, पिघलब आ उजास देब—नाटकीय प्रतीक लेल उपयुक्त छवि अछि।
३५. (A) त्याग, प्रस्थान, आत्म-निर्णय आ जीवनक निर्णायक मोड़ — महाभिनिष्क्रमण गौतम बुद्धक गृहत्यागक सांस्कृतिक स्मृति जगबैत अछि; एकांकीमे ई गहन निर्णायक प्रतीक भऽ सकैत अछि।
३६. (C) सुविधा/धन आ समाजोपयोगी योगदानक बीच चयन — चयनक प्रश्न व्यक्ति-सफलता बनाम सांस्कृतिक/राष्ट्रीय योगदानक नैतिक तनाव खोलैत अछि।
३७. (B) ई प्रवासी/अंग्रेजी-माध्यम शिक्षित मैथिली अनुरागी लेखिकाक भाषा-संबंध आ प्रेरणा खोलैत अछि — वार्ता मैथिली लेखनक प्रेरणा, संस्कार, परिवार, गाम आ संपादकीय प्रोत्साहनक सम्बन्ध देखबैत अछि।
३८. (B) परिवार, गाम, विद्यापति-समारोह, पितामहक मिथिला-विकास चिन्ता आ विदेहक प्रेरणा — वार्तामे लेखिका अपन अंग्रेजी-माध्यम शिक्षा बावजूद मैथिल परिवेश, गाम आ संपादकीय प्रेरणा सँ मैथिली लेखनक सम्बन्ध बतबैत छथि।
३९. (A) विदेह विशेषांक नाटक-केन्द्रित रहितहुँ व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक मंच बनैत अछि — विशेषांक मुख्यतः नाटक-केन्द्रित अछि, मुदा ई पत्रिका-रूपमे समकालीन साहित्यिक बहस आ रचना सभ सेहो समेटैत अछि।
४०. (B) मातृभाषाक सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ संस्थागत प्रयोगक प्रश्न — भाषाक सार्वजनिक उपयोग साहित्यिक आंदोलनसँ जुड़ल सांस्कृतिक अस्मिताक अंग अछि।
४१. (C) रचनात्मक मौलिकता आ साहित्यिक उत्तरदायित्व पर सजगता — पत्रिका केवल रचना नहि देत; साहित्यिक नैतिकता, मौलिकता आ आलोचनात्मक बहसकें सेहो स्थान दैत अछि।
४२. (A) लिखित संवाद नीक हो सकैत अछि, मुदा मंच पर गति, दृश्य, ध्वनि आ अभिनयक माँग अलग होइत अछि — नाटक पाठ सेहो अछि, पर मंचीय कला सेहो; तें समीक्षा दुनू पक्ष पर दृष्टि रखैत अछि।
४३. (D) पात्रक भाषा, देह-व्यवहार, संघर्ष आ सम्बन्ध सामाजिक सन्दर्भसँ बनैत अछि — नाटक समाजक भूमिकासभ मंच पर आनैत अछि; जाति, वर्ग, लिंग, परिवार आ राजनीति पात्रक क्रिया प्रभावित करैत अछि।
४४. (A) मंचक भीतर मंच, अभिनयक भीतर सामाजिक अभिनय, आ तैयारीक भीतर सचक उद्घाटन खोजब — ‘रिहर्सल’ शीर्षक स्वयं अभिनय आ समाजक भूमिकाक दोहरापन खोलैत अछि।
४५. (C) रंगमंच सामूहिक कला अछि—निर्देशन, अभिनय, प्रकाश, ध्वनि, संगीत आ दर्शक-संवाद मिलि नाटक बनबैत अछि — मंचीय नाटक पाठक विस्तार अछि; प्रस्तुति-तत्त्व सभ नाटकीय अर्थ निर्माण करैत अछि।
४६. (B) लेखन, मंचन, प्रशिक्षण, प्रेक्षागृह, ध्वनि-प्रकाश सुविधा आ आलोचना—सभक समन्वय — विभिन्न लेख आ समीक्षा मिलि बतबैत अछि जे नाट्य-विकास केवल रचना-सृजन नहि, संस्थागत-सांस्कृतिक श्रम चाहैत अछि।
४७. (B) मैथिली नाटकक रेंज घरेलू हास्यसँ गम्भीर सांस्कृतिक आलोचना धरि फैलल अछि — विशेषांक विधाक बहुलता देखबैत अछि—आवाज-आधारित हास्य, सामाजिक संकट, एकांकी आ विश्व-नाटकक विवेचन।
४८. (C) ओहि मे स्थानीय जीवन, बोली, देहभाषा आ दर्शकक अपना-पन रहैत अछि — रंगमंचक जीवन्तता अनेक बेर परिष्कृत सभागारसँ बेसी लोक-स्वर आ स्थानीय ऊर्जा मे रहैत अछि।
४९. (C) नाटक समाज, भाषा, मंच-संरचना आ सांस्कृतिक संकटकें कोना रूपान्तरित करैत अछि — सार्थक क्विज पाठकें विधा, शिल्प, विचार आ सांस्कृतिक अर्थ बुझए प्रेरित करैत अछि।
५०. (A) ओ परिवार, इच्छा, दबाव, मनुहार, सत्ता-सन्तुलन आ सामाजिक भूमिकाक अभिनय खोलि सकैत अछि — हास्य आ घरेलू संवादक भीतर सेहो समाजक लिंग-भूमिका आ भाव-व्यवस्था देखल जा सकैत अछि।
५१. (A) विकासमे पाठ, मंच, दर्शक, संस्था, आलोचना, भाषा आ तकनीक सभ सम्मिलित अछि — नाट्य-विधा सामूहिक सामाजिक कला अछि; ओकर इतिहास कई स्तर पर बनैत अछि।

अध्याय ६ : विदेह विशेषांक ०६ — समीक्षा / समीक्षाशास्त्र प्रश्नोत्तरी

१. समीक्षा विशेषांकक संपादकीय 'मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धान्त'क मुख्य ध्येय की अछि?

- (A) केवल लेखकक जीवनी लिखब
- (B) समीक्षा विधाकें समाप्त करब
- (C) केवल पोथीक मूल्य-सूची देब
- (D) मैथिली साहित्यक मूल्यांकन लेल सजग, तुलनात्मक, नैतिक आ विधा-विशेष कसौटी बनएब

२. संपादकीयमे कला, साहित्य आ संगीतक सामाजिक प्रयोजन पर चर्चा किएक आवश्यक अछि?

- (A) साहित्य केवल सजावट अछि
- (B) कला समाजसँ पूर्णतः कटल अछि
- (C) कृति-मूल्यांकन केवल रुचि नहि, समाज, नैतिकता, आनंद आ बौद्धिक प्रभावसँ जुड़ल अछि
- (D) समीक्षा मे इतिहास निषिद्ध अछि

३. प्लेटो आ अरस्तू सन विचारकक प्रसंग समीक्षाशास्त्रमे कोन भूमिका निभबैत अछि?

- (A) गजल छन्द गनैत अछि
- (B) कला पर प्राच्य-पाश्चात्य दार्शनिक बहसक पृष्ठभूमि देइत अछि
- (C) केवल नाटकक पात्र-सूची बनबैत अछि
- (D) कथा-कथन रोकेत अछि

४. वेद, सामवेद आ प्राचीन पाठ-पद्धतिक उल्लेख समीक्षा-विमर्शमे किएक सार्थक अछि?

- (A) कला, वाणी, स्मृति, संगीत आ अनुकरणक भारतीय परम्परा देखबैत अछि
- (B) ई पुस्तक-समीक्षासँ असंबद्ध अछि
- (C) ई केवल पूजा-विधि अछि
- (D) ई आधुनिक समीक्षा निषिद्ध करैत अछि

५. कला 'सुखाय' सेहो करैत अछि आ 'उद्वेलित' सेहो—एहि कथनक समीक्षा-संदर्भ की?

- (A) समीक्षा भावनासँ मुक्त गणना मात्र
- (B) दुःखद कृति साहित्य नहि
- (C) कला सदैव मनोरंजन मात्र
- (D) समीक्षककें केवल आनंद नहि, बेचैनी, प्रश्न, प्रतिरोध आ अनुभवक तीव्रता सेहो देखबाक चाही

६. उत्तर-आधुनिकता पर संपादकीय टिप्पणी समीक्षा कें कोन सावधानी सिखबैत अछि?

- (A) पाठकक भूमिका शून्य
- (B) समीक्षा सदैव एकरे निष्कर्ष दे
- (C) एक सत्यक दावा पर प्रश्न उठबैत, अनेक दृष्टिकोण आ विखंडित अर्थ देखबाक सजगता
- (D) अर्थ सदैव सरल आ स्थिर

७. डेरिदा द्वारा भाषाक विखंडनक प्रसंग मैथिली समीक्षा लेल कोन चेतावनी दैत अछि?

- (A) समीक्षा असम्भव अछि
- (B) भाषा केवल व्याकरण अछि
- (C) शब्दक कोनो अर्थ नहि होइत
- (D) भाषाक अर्थ अनेक आधार, सन्दर्भ आ भिन्नताओं पर निर्भर करैत अछि

८. 'संवादक पुनर्स्थापना' लेल कथाकारमे विश्वास—तर्कपरक आ अनुभवपरक—किएक चाही?

- (A) कथाकारपर अविश्वास साहित्य बनैत अछि
- (B) कथा मे अनुभव नहि चाही
- (C) कथा पाठक-संवाद तखन बनबैत अछि जखन तर्क आ अनुभव दुनू विश्वसनीय हो
- (D) तर्क साहित्यक शत्रु अछि

९. अस्तित्ववाद, प्रत्यक्षवाद, घटनाशास्त्र आदि प्रसंग समीक्षा-सिद्धान्तक कोन विस्तार देखबैत अछि?

- (A) दर्शनक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि
- (B) कृति बिना विचार पढ़ल जाए
- (C) कृति पढ़बाक दार्शनिक पद्धति अनेक अछि; समीक्षककें विचार-परम्परासँ परिचित रहब चाही
- (D) समीक्षा केवल भावुक प्रतिक्रिया अछि

१०. अति-प्रशंसासँ बचबाक सलाहक मूल कारण की अछि?

- (A) प्रशंसा कृतिपर प्रकाश डालए, अंध-स्तुति नहि बनए
- (B) समीक्षामे सदैव निंदा होए
- (C) समीक्षक लेखकसँ शत्रुता राखए
- (D) कृति पढ़बाक जरूरत नहि

११. पोथी-समीक्षामे समान विषयक आन पोथीसँ तुलना किएक अपेक्षित अछि?

- (A) एहिसँ कृतिक विशिष्टता, रिक्त-स्थल-पूर्ति आ सीमाबोध स्पष्ट होइत अछि
- (B) केवल आवरण देखब चाही
- (C) लेखकक नाम काफी अछि
- (D) तुलना सदैव अनैतिक अछि

१२. समीक्षा 'पोथीक' होए, 'लेखकक' नहि—एहि सिद्धान्तक अर्थ की?

- (A) लेखकक व्यक्तिगत जीवनपर आक्रमण करू
- (B) पोथी न पढ़ू
- (C) समीक्षा मे केवल फोटो-वर्णन करू
- (D) मुख्य केन्द्र कृति, ओकर संरचना, कथ्य, भाषा आ योगदान रहए; लेखक-जीवनी नहि

१३. आत्मकथात्मक पोथीक समीक्षा मे लेखकक जीवनपर प्रकाश किएक देल जा सकैत अछि?

- (A) किएकि पाठ अप्रासंगिक होइत
- (B) किएकि हर समीक्षा जीवनी बने
- (C) किएकि ओहि विधामे जीवन-सन्दर्भ स्वयं कृतिक अंग होइत अछि
- (D) किएकि आवरण फोटो पर्याप्त

१४. समीक्षामे जिला-जवार, जाति-धर्म वा व्यक्तिगत पक्षपातक खतरा की अछि?

- (A) ओ पोथीक भाषा सुधारैत अछि
- (B) ओ समीक्षा कें अधिक वैज्ञानिक बनबैत अछि
- (C) ओ कृतिमूल्यांकनकें साहित्यिक कसौटीसँ हटाकऽ सामाजिक पक्षधरता/विरोधमे बदलि देत
- (D) ओ आलोचनाक अनिवार्य नियम अछि

१५. समीक्षकक भाषा सटीक आ अनावश्यक शब्द-विहीन किएक होएब चाही?

- (A) अस्पष्ट भाषा श्रेष्ठ समीक्षा
- (B) लम्बा अलंकार सत्यक प्रमाण अछि
- (C) समीक्षामे अर्थक जरूरत नहि
- (D) स्पष्ट, संक्षिप्त आ प्रमाणित आलोचना पाठककें कृतिपर केन्द्रित रखैत अछि

१६. पोथीक रूप, रंग, आवरण वा लेखकक नामपर अति-चर्चा किएक आलोचित अछि?

- (A) कृति-पठन अनावश्यक अछि
- (B) आवरणहि कृति अछि
- (C) एहिसँ मूल कृति, कथ्य, शिल्प आ भाषा पर चर्चा दबि जाइत अछि
- (D) नामहि साहित्यिक मूल्य तय करैत अछि

१७. उपन्यासक समीक्षा लेल संपादकीय कोन प्रमुख घटक बतबैत अछि?

- (A) केवल मुखड़ा
- (B) केवल तुकान्तता
- (C) वातावरण, पात्र-विवरण, कथारूप, लोक आ परिस्थिति
- (D) केवल मंच-प्रकाश

१८. नाटकक समीक्षा मे 'भावनापूर्ण संवाद आ क्रियाकलाप' पर जोर किएक अछि?

- (A) नाटक केवल उपन्यासक सार अछि
- (B) नाटक मंचीय क्रिया आ संवादसँ जीवित होइत अछि
- (C) नाटकमे दर्शकक भूमिका नहि
- (D) नाटकमे कथानक नहि होए

१९. कविताक समीक्षा मे शब्दक प्रयोगसँ चित्र-निर्माण आ ध्वनि-विज्ञानक भूमिका किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) कविता अर्थक संग ध्वनि, बिम्ब, लय आ भाव-उत्तेजना सँ काम करैत अछि
- (B) कविता केवल सूचना अछि
- (C) कवितामे ध्वनि अप्रासंगिक
- (D) बिम्ब केवल चित्रकार लेल

२०. 'कोनो खास समीक्षासँ ओहि पोथीपर प्रकाश पड़ैत अछि वा नहि'—एहि प्रश्नक अर्थ की?

- (A) समीक्षाक लक्ष्य लेखकक प्रशंसा मात्र
- (B) पोथी पढ़लासँ समीक्षा कमजोर होइत
- (C) समीक्षा केवल शीर्षक बतए
- (D) असली समीक्षा कृति बुझबामे सहायता करैत अछि, केवल सजावटी टिप्पणी नहि

२१. 'मैथिली कविता संचयन'क समीक्षा मे रचनाकार-चयन पर प्रश्न उठबैत अछि; ई कोन आलोचनात्मक कसौटी अछि?

- (A) संकलन केवल आवरणक कारण श्रेष्ठ
- (B) छूटल लेखकक चर्चा निषिद्ध
- (C) कविता मे चयनक कोनो मूल्य नहि
- (D) संकलनक प्रतिनिधित्व, संतुलन, छूटल स्वर आ संपादकीय न्याय

२२. गंगेश गुंजन संपादित संकलन पर चर्चा संकलन-समीक्षा लेल कोन मानक स्थापित करैत अछि?

- (A) केवल मित्रक कविता
- (B) केवल नाम-प्रसिद्धि
- (C) केवल एक जिलाक लेखक
- (D) स्थापित, विस्मृत आ नवतुरिया रचनाकारक संतुलित उपस्थिति

२३. समीक्षा मे छूटल कविक नाम गिनबाक उद्देश्य केवल शिकायत नहि किएक?

- (A) प्रकाशकक विज्ञापन
- (B) ई साहित्यिक इतिहासक प्रतिनिधित्व आ स्मृति-न्यायक प्रश्न उठबैत अछि
- (C) व्यक्तिगत बदला
- (D) पृष्ठ भरबाक युक्ति

२४. 'गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा'क समीक्षा मे लोककथा आ चित्रकला कोन प्रकार जुड़ैत अछि?

- (A) चित्रकथा केवल वयस्क आलोचना
- (B) गोनू झा नाटकक पात्र मात्र
- (C) लोककथा चित्रकला सँ असंबद्ध
- (D) गोनू झाक लोक-स्मृति केँ दृश्य-कथा रूपमे बाल/सामान्य पाठकधरि पहुँचबैत अछि

२५. मिथिला लोककला क संरक्षिका रूपमे महिलाक उल्लेख समीक्षा मे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) लोकगीत, लोकनृत्य आ चित्रकला घर-परिवारक स्त्री-सांस्कृतिक श्रमसँ जीवित रहल अछि
- (B) चित्रकला केवल मशीन बनबैत अछि
- (C) कला केवल राजदरबारमे जन्मैत अछि
- (D) महिलाक लोकसंस्कृतिसँ सम्बन्ध नहि

२६. 'जीवन संघर्ष' उपन्यासक समीक्षा मे 'मिनीएचर मिथिला'क अर्थ की अछि?

- (A) केवल बालचित्र
- (B) एक गामक कथा मार्फत समस्त मिथिलाक सामाजिक समस्याक संक्षिप्त प्रतिरूप
- (C) केवल लेखकक घर
- (D) मिथिलाक नक्शा

२७. 'जीवन संघर्ष' शीर्षकक समीक्षा मे संघर्षक अर्थ केवल दुःख नहि किएक?

- (A) उपन्यासमे समस्या निषिद्ध
- (B) संघर्षक समाजसँ सम्बन्ध नहि
- (C) संघर्ष केवल निराशा
- (D) संघर्षमे जिजीविषा, नव चेतना, यथार्थवादी निदान आ जीवनक पुनर्सार्थकता सेहो अछि

२८. जगदीश प्रसाद मंडलक कथा/उपन्यास-समीक्षा मे यथार्थवाद कोना देखल जाइत अछि?

- (A) समस्या वर्णनक संग बदला नहि, निदान आ मानवीय धैर्यक खोज
- (B) सामाजिक समस्या हटाएब
- (C) केवल काल्पनिक राजकथा
- (D) मात्र रोमानी पलायन

२९. 'गामक जिनगी' पर समीक्षा मे आस्था, जिजीविषा आ संघर्षक प्रवाह कहबाक अर्थ की?

- (A) कथा केवल हास्य
- (B) गाम केवल स्थिर दृश्य
- (C) गामक जीवनमे पीड़ा रहितहुँ जीवन-ऊर्जा, विश्वास आ टकराव एकसाथ बहैत अछि
- (D) संघर्ष जीवनसँ अलग

३०. 'मौलाइल गाछक फूल' प्रकारक शीर्षक आलोचनात्मक रूपेँ कोन प्रतीक खोलैत अछि?

- (A) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (B) केवल हास्य-गीत
- (C) केवल आवरण रंग
- (D) क्षीण जीवन वा सूखल परिवेशमे सेहो आशा/सृजनक संभावना

३१. दुर्गानन्द मंडलजी केँ 'शब्दक जादूगर' आ 'खर दृष्टिदर्श' कहबाक आलोचनात्मक आशय की?

- (A) हुनक भाषा-शक्ति आ तीक्ष्ण, साफ आलोचनात्मक दृष्टि दुनू पर जोर
- (B) हुनका केवल गीतकार मानब
- (C) हुनक समीक्षा न पढ़ब
- (D) हुनक भाषा अप्रासंगिक

३२. समीक्षा विशेषांकमे लेखक-साक्षात्कारक समावेश किएक उपयोगी अछि?

- (A) साक्षात्कार समीक्षा-विरोधी अछि
- (B) समीक्षक/रचनाकारक दृष्टि, प्रक्रिया आ साहित्य-बोध प्रत्यक्ष रूपेँ सामने अबैत अछि
- (C) लेखकक विचारक मूल्य नहि
- (D) वार्ता केवल मनोरंजन

३३. 'गजलक सार्थ' शीर्षक आलोचना गजल-विधा लेल कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) गजल केवल छन्द नहि, भाव, कथ्य, लय, शेरक स्वतंत्रता आ भाषिक अनुशासनक प्रश्न
- (B) गजल केवल कथा अछि
- (C) गजल समीक्षा योग्य नहि
- (D) गजलमे अर्थ आवश्यक नहि

३४. 'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास' शीर्षकसँ कोन आलोचनात्मक क्षेत्र खुलैत अछि?

- (A) अनुवाद केँ स्वतन्त्र कला, सिद्धान्त आ इतिहास सहित पढ़बाक क्षेत्र
- (B) अनुवादमे सांस्कृतिक अर्थ नहि
- (C) अनुवाद समीक्षा सँ बाहर
- (D) अनुवाद केवल शब्द बदलब

३५. 'यांत्रिक अनुवाद आ Polysemy' पर लेख समीक्षा विशेषांकमे किएक अग्रगामी विषय अछि?

- (A) मशीन सदैव पूर्ण अनुवाद करैत अछि
- (B) मैथिली भाषा-प्रसंस्करणमे बहुअर्थकता, संदर्भ आ मशीनक सीमा बुझब आवश्यक अछि
- (C) अनुवादमे संदर्भ बेकार
- (D) Polysemyक भाषासँ सम्बन्ध नहि

३६. समीक्षा मे 'महिला-विरोधी वा जाति-क्षेत्रक मानसिकता' दूर राखबाक आग्रह कोन नैतिक आधार बनबैत अछि?

- (A) पूर्वग्रहक संरक्षण
- (B) व्यक्तिगत आक्षेपक अनुमति
- (C) जातीय श्रेष्ठताक प्रमाण
- (D) साहित्यिक न्याय, समावेशी दृष्टि आ कृति-केंद्रित मूल्यांकन

३७. 'लेखकक आन रचना'क चर्चा समीक्षा मे कब उचित अछि?

- (A) हर समीक्षा मे पूरा जीवन-कार्य देब जरूरी
- (B) सम्बन्धहीन प्रसंगसँ समीक्षा भरू
- (C) कृति बिना लेखकक फोटो लिखू
- (D) जखन ओ समीक्षित कृतिसँ सीधा सम्बन्ध राखैत हो

३८. समीक्षा हजारसँ दू हजार शब्दक भीतर होएबाक सलाहक व्यावहारिक अर्थ की?

- (A) समीक्षा पर्याप्त विश्लेषण दे, मुदा अनावश्यक विस्तार सँ न भरि जाए
- (B) शब्द-सीमा कृतिपठन रोकैत अछि
- (C) दस हजार शब्द बिना समीक्षा नहि
- (D) दस शब्दहि समीक्षा अछि

३९. 'कथा-गल्प, उपन्यास, पद्यात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्टाज, नाटक, एकांकी'क सूची किएक देल गेल?

- (A) विधा भेद निरर्थक
- (B) कविता आ नाटक समान पाठ्य रूप
- (C) सभ विधा एके नियमसँ पढ़ल जाए
- (D) समीक्षाशास्त्र प्रत्येक विधाक अलग प्रकृति आ कसौटी पहचानए

४०. समीक्षा विशेषांकमे रचनात्मक कथा/कविता सेहो रहबाक अर्थ की?

- (A) रचना आलोचना केँ नष्ट करैत अछि
- (B) समीक्षा अनुपस्थित अछि
- (C) विशेषांक केवल सूची बनि गेल
- (D) पत्रिका आलोचना केँ रचना-संसारसँ अलग नहि, संवादरत रूपमे राखैत अछि

४१. 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक समीक्षा मे मंचनयोग्यता पर टिप्पणी कोन तथ्य देखबैत अछि?

- (A) मंचन समीक्षा-विरोधी अछि
- (B) नाटक मंच पर चलि नहि सकैत
- (C) नाटक केवल गीतक संग्रह
- (D) कृति केवल साहित्यिक पाठ नहि, मंचीय प्रस्तुति लेल उपयुक्तता सेहो रखैत अछि

४२. रमाजी काव्य-यात्रा पर लेख जीवन-समर्पण आ साहित्यिक सम्बन्ध कोना देखबैत अछि?

- (A) काव्य-यात्रा केवल पुरस्कारक सूची
- (B) व्यक्तिगत संघर्षक काव्यसँ सम्बन्ध नहि
- (C) साहित्य केवल सुविधा मे सम्भव
- (D) व्यक्तिगत विपत्ति बादहुँ साहित्यिक आयोजन आ लेखनप्रति अटूट निष्ठा

४३. समीक्षा विशेषांकमे 'बाल कविताक योगदान' सन विषय किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) विधागत समीक्षा बाल-साहित्यकेँ साहित्यिक विकासक गंभीर हिस्सा मानैत अछि
- (B) बाल-साहित्य समीक्षा योग्य नहि
- (C) बाल-कविता केवल पाठशाला
- (D) बाल-विधा भाषिक विकाससँ असंबद्ध

४४. 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण' पर समीक्षा कोन सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) दलित पात्र साहित्यसँ बाहर
- (B) साहित्यमे प्रतिनिधित्व, संवेदना, असमानता आ पात्र-निर्माणक प्रश्न
- (C) उपन्यास केवल राजकथा
- (D) समीक्षा सामाजिक प्रश्न नहि देखए

४५. 'भफाइत चाहक जिनगी' शीर्षकमे 'भफाइत चाह' कोन सांस्कृतिक बिम्ब बनि सकैत अछि?

- (A) केवल चाय-दुकानक मूल्य
- (B) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (C) दैनिक जीवनक उष्णता, बेचैनी, संवाद आ श्रम-जीवनक प्रतीक
- (D) केवल छन्द-नियम

४६. समीक्षा मे 'फरिछाएल कथाकार' कहबाक अर्थ की?

- (A) आलोचना न पढ़ल जाए
- (B) कथाकारक दृष्टि स्पष्ट, अनुभव पारदर्शी आ कथ्य सुसंगठित अछि
- (C) कथा बिना भाषा अछि
- (D) कथाकार अस्पष्ट अछि

४७. समीक्षा विशेषांकक व्यापकता—कविता संचयनसँ मशीन अनुवाद धरि—कोन बात सिद्ध करैत अछि?

- (A) अनुवाद अप्रासंगिक
- (B) समीक्षा संकुचित अछि
- (C) मैथिली समीक्षा केवल पारम्परिक पुस्तक-प्रशंसा नहि, आधुनिक भाषा-विज्ञान, तकनीक, समाज आ विधा-विस्तार धरि फैलल अछि
- (D) तकनीक साहित्यक बाहर

४८. समीक्षकक 'खर दृष्टि' आ 'ममता' बीच संतुलन किएक आवश्यक अछि?

- (A) कृति पर कठोर प्रश्न उठैतहुँ साहित्यिक न्याय आ संवेदनशीलता बचल रहए
- (B) केवल कठोरता पर्याप्त
- (C) समीक्षा मे तर्क नहि चाही
- (D) केवल ममता समीक्षा

४९. कथा-संग्रहक समीक्षा में 'गाम'क चित्रण केवल स्थान-वर्णन नहीं किएक?

- (A) गाम केवल नक्शाक बिंदु
- (B) गामक कथा में समाज नहीं
- (C) स्थान वर्णन समीक्षा योग्य नहीं
- (D) गाम सामाजिक सम्बन्ध, संघर्ष, संस्कृति, स्मृति आ परिवर्तनक जीवित संरचना होइत अछि

५०. समीक्षामें उद्धरण देबाक सही उपयोग की अछि?

- (A) कृतिक भाषा, बिम्ब वा तर्कक प्रमाण देब, न कि समीक्षा केँ अनावश्यक भरब
- (B) उद्धरणक अर्थ न समझब
- (C) उद्धरण बिना पढ़ने देब
- (D) पूरा पुस्तक उतारि देब

५१. 'की फर्क पड़ैत अछि' सन कवितात्मक प्रश्न पर समीक्षा कोन कसौटी लगा सकैत अछि?

- (A) इतिहास/दर्शनक बिम्ब स्पष्ट अछि कि पाठकधरि अर्थ पहुँचैत अछि
- (B) पाठकक समझ अप्रासंगिक
- (C) शीर्षक मात्र काफी
- (D) कविता पर प्रश्न नहीं उठे

५२. मधुश्रावणी आ नारी-परीक्षा पर कविता-समीक्षा कोन सांस्कृतिक आलोचना उठबैत अछि?

- (A) संस्कारक नाम पर स्त्री-जीवन पर थोपल असमान परीक्षा आ पितृसत्तात्मकता
- (B) संस्कारक आलोचना असम्भव
- (C) कविता केवल ऋतु-वर्णन
- (D) नारी अनुभव साहित्य नहीं

५३. 'गौरी दाइ'क प्रसंग विधवा-संबंधी सामाजिक दृष्टि पर कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) समाजक दृष्टि सदैव न्यायपूर्ण
- (B) समाज स्त्रीकेँ देवी/डाइनक चरम छविमें बाँधि मानवीय अस्तित्व नकारि सकैत अछि
- (C) स्त्री-पात्र केवल सजावट
- (D) विधवा प्रश्न साहित्यसँ बाहर

५४. समीक्षा विशेषांकक अध्ययनमें पृष्ठ-संख्या पूछबाक बदला कोन प्रश्न उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) कोन लेख कोन पृष्ठपर
- (B) समीक्षा कोना कृति, समाज, भाषा, विधा आ नैतिकता पर प्रकाश डालैत अछि
- (C) लिंक कोन रंगक
- (D) कतेक फोटो छपल

५५. समीक्षा कृति केँ 'रिक्त स्थानक पूर्ति' करैत अछि वा नहीं—एहि कसौटीक अर्थ की?

- (A) ई छपाईक तकनीक
- (B) रिक्त स्थान केवल पन्ना पर खाली जगह
- (C) कृति अपन विषय-क्षेत्रमें नया जरूरत, दृष्टि वा सामग्री जोड़ैत अछि कि नहीं
- (D) ई आवरणक डिजाइन

५६. समीक्षा में 'लोकक भावना उद्घेलित करबाक योग्यता' कविता लेल किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) कविता भावनारहित सूचना
- (B) भावना साहित्यक दोष
- (C) ध्वनि से अर्थ नष्ट
- (D) कविता शब्द-बिम्ब आ ध्वनिसँ पाठकक भीतरी संवेदना जगबैत अछि

५७. समालोचना आ समीक्षामे अंतरक संकेत कोना बुझल जा सकैत अछि?

- (A) समीक्षा केवल विज्ञापन
- (B) दुनू सदैव असंबद्ध
- (C) समालोचना केवल सूची
- (D) समालोचना व्यापक सिद्धान्तगत/विश्लेषणात्मक विमर्श हो सकैत अछि, समीक्षा प्रायः विशिष्ट कृतिपर केन्द्रित मूल्यांकन

५८. समीक्षा विशेषांकमे 'आर.सी. बाबू' सेमिनारक उल्लेख कोन संस्थागत पक्ष देखबैत अछि?

- (A) साहित्यिक मूल्यांकन व्यक्तिगत लेख सँ आगाँ सेमिनार, विद्वत्-विमर्श आ सामूहिक स्मृति धरि जाइत अछि
- (B) साहित्य केवल अकेले पढ़बाक वस्तु
- (C) संस्था हमेशा रचना-विरोधी
- (D) सेमिनारक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

५९. समीक्षा मे मौलिकता आ साहित्यिक चोरी पर सजगता किएक अनिवार्य अछि?

- (A) स्रोत छिपाएब साहित्यिक कौशल
- (B) कृति-मूल्यांकनक आधार लेखकीय ईमानदारी, स्रोत-संस्कार आ बौद्धिक नैतिकता अछि
- (C) मौलिकता अप्रासंगिक
- (D) चोरी आलोचना केँ समृद्ध करैत अछि

६०. समीक्षा विशेषांकक dynamic quiz मे प्रश्न संख्या बेसी किएक होएबाक चाही?

- (A) किएकि प्रश्न दोहराएब अछि
- (B) किएकि विकल्प छोट होएब चाही
- (C) किएकि एके अंकमे सिद्धान्त, अनेक पुस्तक-समीक्षा, वार्ता, अनुवाद, गजल, उपन्यास, कविता आ तकनीक विषय अछि
- (D) किएकि पृष्ठ संख्या पूछब अछि

उत्तरमाला — अध्याय ६ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (D) मैथिली साहित्यक मूल्यांकन लेल सजग, तुलनात्मक, नैतिक आ विधा-विशेष कसौटी बनएब — संपादकीय समीक्षा केँ स्वतंत्र बौद्धिक अनुशासन मानि ओकर सिद्धान्त, सीमा आ जिम्मेदारी पर विचार करैत अछि।

२. (C) कृति-मूल्यांकन केवल रुचि नहि, समाज, नैतिकता, आनंद आ बौद्धिक प्रभावसँ जुड़ल अछि — समीक्षा कृति केँ व्यापक मानव-सांस्कृतिक प्रयोजनक भीतर पढ़बाक आग्रह करैत अछि।

३. (B) कला पर प्राच्य-पाश्चात्य दार्शनिक बहसक पृष्ठभूमि देइत अछि — समीक्षा सिद्धान्त ऐतिहासिक दार्शनिक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि—कला सत्य, आनंद, ज्ञान वा अनुकरण की अछि।

४. (A) कला, वाणी, स्मृति, संगीत आ अनुकरणक भारतीय परम्परा देखबैत अछि — संपादकीय भारतीय ज्ञान-परम्परा मे साहित्य-कला-संगीतक आधार खोजि समीक्षाक ऐतिहासिक गहराइ बनबैत अछि।

५. (D) समीक्षककेँ केवल आनंद नहि, बेचैनी, प्रश्न, प्रतिरोध आ अनुभवक तीव्रता सेहो देखबाक चाही — कृति पाठककेँ शान्ति दे सकैत अछि, मुदा झकझोरियो सकैत अछि; दुनू मूल्यांकन योग्य प्रभाव अछि।

६. (C) एक सत्यक दावा पर प्रश्न उठबैत, अनेक दृष्टिकोण आ विखंडित अर्थ देखबाक सजगता — उत्तर-आधुनिक विचार सत्य, अर्थ, सत्ता आ भाषा पर संदेह करैत अछि; समीक्षककेँ एहि जटिलता सँ जूझब पड़ैत अछि।

७. (D) भाषाक अर्थ अनेक आधार, सन्दर्भ आ भिन्नताओं पर निर्भर करैत अछि — संपादकीय संकेत करैत अछि जे अर्थ एकरे पंक्ति मे बंद नहि; भाषा-सन्दर्भक तहें पढ़ब जरूरी अछि।

८. (C) कथा पाठक-संवाद तखन बनबैत अछि जखन तर्क आ अनुभव दुनू विश्वसनीय हो — लेख संवादक आधार रूपमे रचनाकारक बौद्धिक आ अनुभूतिजन्य विश्वासनीयताकेँ मानैत अछि।

९. (C) कृति पढ़बाक दार्शनिक पद्धति अनेक अछि; समीक्षककेँ विचार-परम्परासँ परिचित रहब चाही — संपादकीय समीक्षा केँ साधारण प्रशंसा नहि, बहु-विचारधारात्मक बौद्धिक अभ्यास मानैत अछि।

१०. (A) प्रशंसा कृतिपर प्रकाश डालए, अंध-स्तुति नहि बनए — अति-प्रशंसा समीक्षा केँ विज्ञापन बना देत; विवेकपूर्ण संतुलन आवश्यक अछि।

११. (A) एहिसँ कृतिक विशिष्टता, रिक्त-स्थल-पूर्ति आ सीमाबोध स्पष्ट होइत अछि — संपादकीय समीक्षा केँ तुलनात्मक पद्धति अपनएबाक सलाह दैत अछि।
१२. (D) मुख्य केन्द्र कृति, ओकर संरचना, कथ्य, भाषा आ योगदान रहए; लेखक-जीवनी नहि — समीक्षा लेखकक समग्र जीवनक बदला सम्बन्धित कृतिपर केन्द्रित रहबाक चाही, जेँ लेखक-जीवन सीधे कृतिसँ जुड़ल नहि हो।
१३. (C) किएकि ओहि विधामे जीवन-सन्दर्भ स्वयं कृतिक अंग होइत अछि — संपादकीय अपवाद मानैत अछि—आत्मकथा मे जीवन-सन्दर्भ समीक्षा केँ आवश्यक पृष्ठभूमि देत।
१४. (C) ओ कृतिमूल्यांकनकेँ साहित्यिक कसौटीसँ हटाकऽ सामाजिक पक्षधरता/विरोधमे बदलि देत — संपादकीय मैथिली समाजक आन्तरिक पूर्वग्रहसँ समीक्षा केँ बचएबाक चेतावनी दैत अछि।
१५. (D) स्पष्ट, संक्षिप्त आ प्रमाणित आलोचना पाठककेँ कृतिपर केन्द्रित रखैत अछि — समीक्षा मे शब्दाडंबरक बदला विश्लेषणक स्पष्टता महत्वपूर्ण अछि।
१६. (C) एहिसँ मूल कृति, कथ्य, शिल्प आ भाषा पर चर्चा दबि जाइत अछि — संपादकीय समीक्षककेँ बाहरी वस्तु सँ आगे बढ़ि पुस्तकक वास्तविक साहित्यिक मूल्य देखबाक कहैत अछि।
१७. (C) वातावरण, पात्र-विवरण, कथारूप, लोक आ परिस्थिति — उपन्यास जीवन-संसार बनबैत अछि; समीक्षा मे वातावरण, पात्र, कथानक आ सामाजिक स्थिति देखब जरूरी अछि।
१८. (B) नाटक मंचीय क्रिया आ संवादसँ जीवित होइत अछि — संपादकीय नाटकक विशेषता रूपमे संवाद, भाव आ क्रियाकेँ चिन्हित करैत अछि।
१९. (A) कविता अर्थक संग ध्वनि, बिम्ब, लय आ भाव-उत्तेजना सँ काम करैत अछि — संपादकीय कविता केँ शब्द-चित्र, भाव-उद्घेलन आ ध्वनि-संरचना सँ पढ़बाक आग्रह करैत अछि।
२०. (D) असली समीक्षा कृति बुझबामे सहायता करैत अछि, केवल सजावटी टिप्पणी नहि — समीक्षा पाठकक दृष्टि साफ करैत अछि; जेँ ओ कृति पर प्रकाश नहि डाले, तेँ ओकर प्रयोजन संदिग्ध अछि।
२१. (D) संकलनक प्रतिनिधित्व, संतुलन, छूटल स्वर आ संपादकीय न्याय — कविता-संचयनक समीक्षा मे केवल शामिल रचना नहि, चयनक नीति आ प्रतिनिधित्व सेहो मूल्यांकन योग्य अछि।
२२. (D) स्थापित, विस्मृत आ नवतुरिया रचनाकारक संतुलित उपस्थिति — समीक्षक पूछैत अछि जे किन-किन महत्वपूर्ण कवि छूटल; ई संकलनक व्यापकता जाँचबाक तरीका अछि।
२३. (B) ई साहित्यिक इतिहासक प्रतिनिधित्व आ स्मृति-न्यायक प्रश्न उठबैत अछि — संकलन जखन इतिहास-सदृश रूप लेत, तखन छूटल स्वर भविष्यक पाठकसँ गायब भऽ सकैत अछि।
२४. (D) गोनू झाक लोक-स्मृति केँ दृश्य-कथा रूपमे बाल/सामान्य पाठकधरि पहुँचबैत अछि — चित्रकथा लोक-बुद्धि, हास्य आ दृश्य कला केँ एकत्र करि सांस्कृतिक प्रसार करैत अछि।
२५. (A) लोकगीत, लोकनृत्य आ चित्रकला घर-परिवारक स्त्री-सांस्कृतिक श्रमसँ जीवित रहल अछि — समीक्षा मिथिलाक लोककला-संरक्षणमे महिलाक सांस्कृतिक योगदानकेँ रेखांकित करैत अछि।
२६. (B) एक गामक कथा मार्फत समस्त मिथिलाक सामाजिक समस्याक संक्षिप्त प्रतिरूप — समीक्षा बैसपुरा गामकेँ पलायन, विधवा, किसान, जलकर, कोशी, बेरोजगारी आदि समस्याक छोट मिथिला मानैत अछि।
२७. (D) संघर्षमे जिजीविषा, नव चेतना, यथार्थवादी निदान आ जीवनक पुनर्सार्थकता सेहो अछि — समीक्षा कहैत अछि जे पाठक उपन्यासक संग हँसैत, जुझैत, कानैत आ फेर नव उत्साह पबैत अछि।
२८. (A) समस्या वर्णनक संग बदला नहि, निदान आ मानवीय धैर्यक खोज — समीक्षक मंडलजीक लेखनमे वास्तविक सामाजिक विडम्बना आ संयत समाधानक दृष्टि देखैत छथि।
२९. (C) गामक जीवनमे पीड़ा रहितहुँ जीवन-ऊर्जा, विश्वास आ टकराव एकसाथ बहैत अछि — समीक्षात्मक शीर्षक स्वयं कथासंग्रहक जीवन-दृष्टि बतबैत अछि।
३०. (D) क्षीण जीवन वा सूखल परिवेशमे सेहो आशा/सृजनक संभावना — समीक्षा शीर्षकक प्रतीकात्मकता सँ आदर्श, संघर्ष आ आस्थाक अर्थ खोजि सकैत अछि।
३१. (A) हुनक भाषा-शक्ति आ तीक्ष्ण, साफ आलोचनात्मक दृष्टि दुनू पर जोर — विशेषांकक वार्ता शीर्षकहि सँ दुर्गानन्द मंडलकेँ कथाकार-समीक्षक रूपमे मूल्यांकनक केन्द्र बनबैत अछि।

३२. (B) समीक्षक/रचनाकारक दृष्टि, प्रक्रिया आ साहित्य-बोध प्रत्यक्ष रूपेँ सामने अबैत अछि — भेंटवार्ता आलोचना केँ जीवित संवाद बनबैत अछि।
३३. (A) गजल केवल छन्द नहि, भाव, कथ्य, लय, शेरक स्वतंत्रता आ भाषिक अनुशासनक प्रश्न — गजल-समीक्षा विधागत कसौटी पर आधारित होएब चाही—केवल तुकबन्दी पर्याप्त नहि।
३४. (A) अनुवाद केँ स्वतन्त्र कला, सिद्धान्त आ इतिहास सहित पढ़बाक क्षेत्र — अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरण मतलब ओकर विधि, परम्परा आ मूल्यांकनक मानक बनएब।
३५. (B) मैथिली भाषा-प्रसंस्करणमे बहुअर्थकता, संदर्भ आ मशीनक सीमा बुझब आवश्यक अछि — बहुअर्थक शब्द मशीन अनुवादक प्रमुख चुनौती अछि; संदर्भ-बोध बिना अर्थ बिगड़ि सकैत अछि।
३६. (D) साहित्यिक न्याय, समावेशी दृष्टि आ कृति-केंद्रित मूल्यांकन — समीक्षा तखन विश्वसनीय होइत अछि जखन ओ सामाजिक पूर्वग्रह छोड़ि कृतिक असली मूल्य देखैत अछि।
३७. (D) जखन ओ समीक्षित कृतिसँ सीधा सम्बन्ध राखैत हो — संपादकीय समीक्षाकेँ केन्द्रित राखबाक कहैत अछि; अनावश्यक लेखक-विस्तार समीक्षा केँ भटका सकैत अछि।
३८. (A) समीक्षा पर्याप्त विश्लेषण दे, मुदा अनावश्यक विस्तार सँ न भरि जाए — संपादकीय संतुलित आकार सुझबैत अछि—संक्षिप्तता आ पर्याप्तता दुनू चाही।
३९. (D) समीक्षाशास्त्र प्रत्येक विधाक अलग प्रकृति आ कसौटी पहचानए — अलग विधाक अलग रचनात्मक तत्त्व होइत अछि; तें समीक्षा पद्धति सेहो विधा-सापेक्ष होए।
४०. (D) पत्रिका आलोचना केँ रचना-संसारसँ अलग नहि, संवादरत रूपमे राखैत अछि — विदेहक अंक समीक्षा-केंद्रित अछि, मुदा साहित्यिक जीवनक बहुविध रूप सेहो समेटैत अछि।
४१. (D) कृति केवल साहित्यिक पाठ नहि, मंचीय प्रस्तुति लेल उपयुक्तता सेहो रखैत अछि — समीक्षा निष्कर्ष देत अछि जे नाटक मंचन लेल उपयुक्त लागल—ई नाटक-समीक्षाक विशेष कसौटी अछि।
४२. (D) व्यक्तिगत विपत्ति बादहुँ साहित्यिक आयोजन आ लेखनप्रति अटूट निष्ठा — रमाजीक जीवन-घटना आ काव्य-संध्या आयोजन साहित्यिक समर्पणक प्रमाण रूपमे प्रस्तुत होइत अछि।
४३. (A) विधागत समीक्षा बाल-साहित्यकेँ साहित्यिक विकासक गंभीर हिस्सा मानैत अछि — बाल कविता मातृभाषा-पाठक, संवेदना आ सांस्कृतिक हस्तांतरणक मूल आधार बनि सकैत अछि।
४४. (B) साहित्यमे प्रतिनिधित्व, संवेदना, असमानता आ पात्र-निर्माणक प्रश्न — एहन विषय आलोचना केँ समाजशास्त्रीय दृष्टि आ प्रतिनिधित्वक न्याय दिस लऽ जाइत अछि।
४५. (C) दैनिक जीवनक उष्णता, बेचैनी, संवाद आ श्रम-जीवनक प्रतीक — चाय मिथिला/भारतीय सामाजिक संवादक सामान्य स्थल अछि; ‘भफाइट’ जीवनक ताप सेहो संकेत करैत अछि।
४६. (B) कथाकारक दृष्टि स्पष्ट, अनुभव पारदर्शी आ कथ्य सुसंगठित अछि — ‘फरिछाएल’ शब्द साहित्यिक दृष्टि आ अभिव्यक्तिक साफगोईक संकेत दैत अछि।
४७. (C) मैथिली समीक्षा केवल पारम्परिक पुस्तक-प्रशंसा नहि, आधुनिक भाषा-विज्ञान, तकनीक, समाज आ विधा-विस्तार धरि फैलल अछि — अंकक विषय-विस्तार समीक्षाकेँ बहुआयामी बौद्धिक क्षेत्र बनबैत अछि।
४८. (A) कृति पर कठोर प्रश्न उठैतहुँ साहित्यिक न्याय आ संवेदनशीलता बचल रहए — समीक्षा न निजी आक्रमण हो, न अंध-प्रशंसा; ई कृतिपर सचेत करुण विवेक चाहैत अछि।
४९. (D) गाम सामाजिक सम्बन्ध, संघर्ष, संस्कृति, स्मृति आ परिवर्तनक जीवित संरचना होइत अछि — ‘गामक जिनगी’ सन कृतिमे गाम कथ्यक सक्रिय चरित्र बनि जाइत अछि।
५०. (A) कृतिक भाषा, बिम्ब वा तर्कक प्रमाण देब, न कि समीक्षा केँ अनावश्यक भरब — समीक्षा प्रमाण-आधारित होए, मुदा उद्धरण विश्लेषणक सहायक रहए।
५१. (A) इतिहास/दर्शनक बिम्ब स्पष्ट अछि कि पाठकधरि अर्थ पहुँचैत अछि — समीक्षा मे बिम्बक सौंदर्यसंग ओकर संप्रेषणीयता सेहो परखल जाइत अछि।
५२. (A) संस्कारक नाम पर स्त्री-जीवन पर थोपल असमान परीक्षा आ पितृसत्तात्मकता — समीक्षा सांस्कृतिक प्रथा भीतर छिपल लैंगिक अन्यायकेँ देखबाक क्षमता रखैत अछि।

५३. (B) समाज स्त्रीकें देवी/डाइनक चरम छविमे बाँधि मानवीय अस्तित्व नकारि सकैत अछि — समीक्षा कवितामे स्त्री-अनुभवक सामाजिक क्रूरता आ विरोधाभास देखैत अछि।
५४. (B) समीक्षा कोना कृति, समाज, भाषा, विधा आ नैतिकता पर प्रकाश डालैत अछि — उच्च-स्तरीय प्रश्न पाठककें सिद्धान्त, पद्धति आ आलोचनात्मक सोच दिस लऽ जाइत अछि।
५५. (C) कृति अपन विषय-क्षेत्रमे नया जरूरत, दृष्टि वा सामग्री जोड़ैत अछि कि नहि — संपादकीय समीक्षककें पूछबाक कहैत अछि जे पोथी पूर्व उपलब्ध साहित्यसँ अलग की देलक।
५६. (D) कविता शब्द-बिम्ब आ ध्वनिसँ पाठकक भीतरी संवेदना जगबैत अछि — कविताक असर अर्थ मात्र नहि, भाव, लय, ध्वनि आ बिम्बक संयुक्त क्रिया अछि।
५७. (D) समालोचना व्यापक सिद्धान्तगत/विश्लेषणात्मक विमर्श हो सकैत अछि, समीक्षा प्रायः विशिष्ट कृतिपर केन्द्रित मूल्यांकन — विशेषांक दुनू रूपक उपयोग करैत अछि—सिद्धान्त सेहो, विशिष्ट पुस्तक/विधा मूल्यांकन सेहो।
५८. (A) साहित्यिक मूल्यांकन व्यक्तिगत लेख सँ आगाँ सेमिनार, विद्वत्-विमर्श आ सामूहिक स्मृति धरि जाइत अछि — साहित्यिक इतिहास सामूहिक चर्चा, आयोजन आ विद्वानक भागीदारीसँ बनैत अछि।
५९. (B) कृति-मूल्यांकनक आधार लेखकीय ईमानदारी, स्रोत-संस्कार आ बौद्धिक नैतिकता अछि — समीक्षककें रचनात्मक नैतिकता पर सतर्क रहबाक चाही; अन्यथा साहित्यिक इतिहास दूषित होइत अछि।
६०. (C) किएकि एके अंकमे सिद्धान्त, अनेक पुस्तक-समीक्षा, वार्ता, अनुवाद, गजल, उपन्यास, कविता आ तकनीक विषय अछि — सामग्रीक वैविध्य आ गहराई प्रश्न-संख्या बढ़बैत अछि; संख्या स्थिर नहि, विषय-समृद्धि पर आधारित होएब चाही।

अध्याय ७ : विदेह विशेषांक ०७ — नारी विशेषांक

१. नारी विशेषांकक मूल पाठकीय चुनौती की अछि?

- (A) केवल छपाई आ आवरणक विवरण
- (B) केवल पृष्ठ-सूची याद रखब
- (C) केवल लेखकक नामक गणना
- (D) स्त्री-अनुभवकें साहित्य, समाज, देह, भाषा आ अस्मिताक संयुक्त प्रश्न रूपमे पढ़ब

२. 'छिन्नमस्ता'क मैथिली अनुवाद विशेषांकमे स्त्री-विमर्शक कोन द्वार खोलैत अछि?

- (A) उपन्यासकें बालगीत बना दैत अछि
- (B) हिंदी स्त्रीवादी उपन्यासक जटिल देह-चेतना आ आत्मसंघर्षकें मैथिली पाठकक समक्ष आनैत अछि
- (C) केवल हास्य-नाटकक रूपान्तरण करैत अछि
- (D) स्त्री पात्रकें इतिहाससँ बाहर करैत अछि

३. स्त्री-विमर्शक संदर्भमे 'देह' शब्द केवल जैविक अर्थमे सीमित किएक नहि अछि?

- (A) किएकि देह पर चर्चा सदैव अनावश्यक अछि
- (B) किएकि देहक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि देह समाज, नियंत्रण, इच्छा, श्रम, हिंसा आ स्वायत्तताक स्थल बनैत अछि
- (D) किएकि देह केवल चिकित्सा-विषय अछि

४. 'हमर फोटो कहिया' सन कन्या-भ्रूणहत्या कथा किएक मार्मिक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) ओ केवल कैमरा-तकनीकक कथा अछि
- (B) ओ पुत्र-मोहक समर्थन करैत अछि
- (C) ओ जन्मसँ पहिने नकारल गेल बेटीकें आवाज आ दृश्य-अधिकार देबाक आग्रह करैत अछि
- (D) ओ स्त्री-प्रश्नकें हास्यमे समाप्त करैत अछि

५. कन्या-भ्रूणहत्या पर साहित्यिक कथा समाजशास्त्रीय रिपोर्टसँ कतेक भिन्न असर करैत अछि?

- (A) साहित्यमे सामाजिक प्रश्न निषिद्ध अछि
- (B) कथा आँकड़ाकें अनुभव, पीड़ा आ नैतिक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि
- (C) कथा तथ्यकें सदैव नष्ट करैत अछि
- (D) रिपोर्टहि मात्र साहित्य होइत अछि

६. 'आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रभाव क्षेत्रमे नारी तत्त्व' सन विषयक केन्द्रीयता की अछि?

- (A) मैथिली साहित्यमे स्त्री-स्वर, स्त्री-पात्र आ स्त्री-दृष्टिक प्रभावकें व्यवस्थित रूपे देखब
- (B) केवल कविताक मात्राक गणना
- (C) केवल पुरुष लेखकक जन्मस्थल
- (D) केवल पत्रिका-सूची

७. मैथिली आ तमिल कवयित्री सम्मेलनक उल्लेख नारी विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई स्त्री-लेखनकें क्षेत्रीय सीमा सँ बाहर भारतीय भाषा-संवादक रूपमे देखबैत अछि
- (B) ई मैथिलीकें तमिलमे समाप्त करैत अछि
- (C) ई कविता-विमर्शक विरोध करैत अछि
- (D) ई केवल पर्यटन समाचार अछि

८. द्रौपदीक पुनर्पाठ नारी-कवितामे किएक प्रभावी होइत अछि?

- (A) मिथक आधुनिक साहित्यमे अनुपयोगी अछि
- (B) द्रौपदीक कथा केवल युद्ध-गणना अछि
- (C) द्रौपदीक मिथकीय अपमान आधुनिक स्त्री-प्रतिरोध आ न्यायक प्रतीक बनि सकैत अछि
- (D) स्त्री मिथकमे प्रश्न नहि उठा सकैत

९. राधा-काव्यक नारी-पाठमे प्रमुख जिज्ञासा की होएब चाही?

- (A) राधाकेँ केवल विरहिणी नहि, इच्छाशक्ति, प्रेम, प्रश्न आ आत्मस्वरक रूपमे पढ़ब
- (B) राधाकेँ केवल सजावटी पात्र मानब
- (C) राधाकेँ केवल पृष्ठ-सूचीमे सीमित करब
- (D) राधा-विमर्शमे स्त्री अनुभव हटाएब

१०. स्त्री-पात्रक 'देवी' वा 'डाइन' रूपमे सीमितीकरणक आलोचना किएक जरूरी अछि?

- (A) ई साहित्यिक विश्लेषण नहि
- (B) ई स्त्रीक मानवीय जटिलता आ सामान्य जीवनाधिकारकेँ नकारैत अछि
- (C) ई स्त्रीक पूर्ण सम्मानक एकमात्र तरीका अछि
- (D) ई केवल हास्य-विनोद अछि

११. नारी विशेषांकमे अनुवादित स्त्री-लेखनक भूमिका की अछि?

- (A) भिन्न भाषाक स्त्री-अनुभवकेँ मैथिली विमर्शक भीतर तुलनात्मक रूपे आनब
- (B) अनुवादसँ स्त्री-विषय समाप्त भऽ जाइत अछि
- (C) अनुवाद केवल शब्दकोश अभ्यास अछि
- (D) अनुवाद साहित्यक दर्जा नहि रखैत

१२. स्त्री-विमर्शमे 'मौन'क साहित्यिक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) मौन सदैव सहमति होइत अछि
- (B) मौन केवल रिक्त पृष्ठ अछि
- (C) मौनक साहित्यसँ कोनो अर्थ नहि
- (D) दबाओल गेल आवाज, सामाजिक भय, अथवा चुप्पी भीतर पलैत प्रतिरोध

१३. बालिका-जीवन पर कथा लिखलासँ नारी-विमर्शमे कोन नयापन अबैत अछि?

- (A) बालिका प्रश्न स्त्री-विमर्शसँ बाहर अछि
- (B) स्त्री-अनुभवक आरंभिक सामाजिक निर्माण—पालन, शिक्षा, भय, चयन—सामने अबैत अछि
- (C) बचपनमे लिंगभेद नहि होइत
- (D) कथा केवल वयस्कक विषय अछि

१४. 'नारी तत्त्व' शब्दकेँ सतही रूपे पढ़लासँ कोन जोखिम अछि?

- (A) भाषा बदलि अंग्रेजी भऽ जाएत
- (B) साहित्यक नाम बदलि जाएत
- (C) स्त्री-विमर्श अत्यधिक व्यापक भऽ जाएत
- (D) स्त्रीकेँ केवल कोमलता वा भावुकताक रूढ़ छविमे सीमित कऽ देब

१५. नारी विशेषांकमे समीक्षा-लेखनक महत्त्व की अछि?

- (A) स्त्री-संबंधी रचना पर आलोचनात्मक दृष्टि बनबैत, प्रशंसा मात्र नहि करैत
- (B) समीक्षा केवल विज्ञापन अछि
- (C) समीक्षा पृष्ठ-संख्या गनबाक विधि अछि
- (D) समीक्षा नारी-विमर्शक शत्रु अछि

१६. स्त्री-लेखनक मूल्यांकनमे भाषा-प्रयोग किएक केंद्रीय प्रश्न अछि?

- (A) मैथिलीमे स्त्री-अनुभव लिखल असम्भव अछि
- (B) स्त्री-विषयमे केवल कथानक गनल जाए
- (C) भाषा कृति सँ अलग चीज अछि
- (D) भाषा स्त्रीक अनुभव, घरेलू बोली, प्रतिरोध आ सामाजिक स्थानकेँ रचैत अछि

१७. पितृसत्ता पर साहित्यिक प्रश्न उठेबाक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यिक अन्त करब
- (B) परिवार, धर्म, रीति, भाषा आ अर्थव्यवस्था मे निहित असमान सत्ता-संबंधकेँ पहचानब
- (C) केवल पुरुष-विरोध करब
- (D) इतिहासक तथ्य हटाएब

१८. स्त्री पात्र यदि स्वयं अपन कथा कहैत अछि तँ पाठकीय असर कोना बदलैत अछि?

- (A) लेखकक भूमिका समाप्त भऽ जाइत अछि
- (B) वह वस्तु नहि, वक्ता बनैत अछि; अनुभव भीतरसँ खुलैत अछि
- (C) कथा सदैव कमजोर भऽ जाइत अछि
- (D) संवादक अर्थ नष्ट भऽ जाइत अछि

१९. नारी विशेषांकमे कविता आ कथा दुनूक संग उपस्थिति किएक जरूरी अछि?

- (A) कविता सामाजिक प्रश्न नहि उठा सकैत
- (B) कथा सामाजिक परिस्थिति खोलैत अछि आ कविता आन्तरिक संवेदना आ प्रतीक-संसार गाढ़ करैत अछि
- (C) कथा मे भावनात्मकता नहि होइत
- (D) दुनू विधा एक-दोसरक विरोधी अछि

२०. स्त्री-विमर्शमे 'प्रतिरोध' सदैव घोषणात्मक नारा किएक नहि होइत?

- (A) बहुत बेर प्रतिरोध मौन, स्मृति, अस्वीकार, प्रश्न वा वैकल्पिक जीवन-चयनमे प्रकट होइत अछि
- (B) प्रतिरोध केवल हास्यक साधन अछि
- (C) प्रतिरोध साहित्यमे असम्भव अछि
- (D) प्रतिरोध केवल मंचीय भाषण अछि

२१. स्त्री-संबंधी कथा मे घरेलू स्थानक अर्थ किएक गहन होइत अछि?

- (A) घर साहित्यमे अप्रासंगिक अछि
- (B) घर प्रेम, श्रम, नियंत्रण, सुरक्षा आ बंदिशक विरोधाभासी स्थल बनैत अछि
- (C) घर केवल सजावट अछि
- (D) घरक वर्णन इतिहास नहि

२२. स्त्री-अस्मिता आ भाषा-अस्मिता बीच सम्बन्ध कोना देखल जा सकैत अछि?

- (A) भाषा केवल सरकारी माध्यम अछि
- (B) दुनूक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) स्त्री-अस्मिता बिना भाषाक बनैत अछि
- (D) मातृभाषा स्त्रीक लोकानुभव, कहावत, गीत, घरेलू स्मृति आ बोलचालक भंडार खोलैत अछि

२३. नारी-कथा मे 'शरीर' आ 'सम्मान'क सामाजिक सम्बन्ध पर प्रश्न किएक उठैत अछि?

- (A) सम्मानक देहसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) कथा ई प्रश्न उठा नहि सकैत
- (C) समाज प्रायः स्त्रीक सम्मानकेँ ओकर देह पर नियंत्रणसँ जोड़ि दैत अछि
- (D) समाज सदैव स्त्रीकेँ स्वतन्त्र राखैत

२४. स्त्री-विमर्शमे 'आत्मनिर्णय'क अर्थ की अछि?

- (A) केवल आर्थिक प्रश्न
- (B) परिवारक आदेशहि अंतिम निर्णय
- (C) स्त्रीक निर्णय साहित्यिक दोष
- (D) स्त्री अपन शिक्षा, देह, प्रेम, श्रम, भाषा आ जीवन-चयन पर स्वयं निर्णय लए

२५. नारी विशेषांकक प्रश्न उच्च-स्तरीय बनेबाक लेल कोन प्रकारक प्रश्न टारबाक चाही?

- (A) भाषा आ समाजक सम्बन्ध पर प्रश्न
- (B) अनुवादक प्रभाव पर प्रश्न
- (C) विमर्श, प्रतीक आ पात्र-दृष्टि पर प्रश्न
- (D) कोन लेख कोन पृष्ठपर अछि वा क्रम-संख्या की अछि सन यांत्रिक प्रश्न

२६. स्त्री लेखनमे 'लोकगीत' वा 'संस्कारगीत'क पुनर्पाठ किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) संस्कारगीत केवल धुन होइत
- (B) लोकगीत आधुनिक साहित्यसँ असम्बद्ध अछि
- (C) ओहि गीतमे स्त्रीक सामूहिक स्मृति, दुख, व्यंग्य, कामना आ सामाजिक आलोचना छिपल रहैत अछि
- (D) लोकगीतमे स्त्री आवाज नहि होइत

२७. कन्या-जीवन पर केन्द्रित कथा समाजक कोन नैतिक परीक्षा बनैत अछि?

- (A) समाज बेटीकेँ जन्म, पहचान, शिक्षा आ सम्मान देबाक लेल तैयार अछि कि नहि
- (B) बालिका-विषय साहित्यिक नहि
- (C) कथा केवल मनोरंजनक परीक्षा
- (D) समाज केवल उत्सवक संख्या गनैत अछि

२८. स्त्री-विमर्शक संदर्भमे 'बाजार' किएक आलोचनात्मक विषय अछि?

- (A) बाजार स्त्री-देह, सौन्दर्य, श्रम आ आकांक्षाकेँ वस्तु बना सकैत अछि
- (B) बाजार केवल मुद्रा-सूची अछि
- (C) बाजार सदैव मुक्तिदाता अछि
- (D) बाजारक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि

२९. नारी-पात्रक 'चुप रहब' आ 'बोली उठब' बीच साहित्यिक तनाव की अछि?

- (A) ई हास्य-मात्र
- (B) ई कवितामे लागू नहि
- (C) समाजक डर आ आत्मस्वरक उदय बीच संघर्ष
- (D) ई केवल व्याकरणक भेद

३०. स्त्री-कथा मे पुरुष पात्रक भूमिका केवल विरोधी रूपमे किएक नहि पढ़बाक चाही?

- (A) पात्र-संबंध जटिल होइत अछि; सहायक, पीड़ित, पितृसत्ताक वाहक आ परिवर्तनकारी सभ रूप सम्भव
- (B) जटिलता समीक्षा के दोष
- (C) पुरुष पात्र साहित्यमे आवश्यक नहि
- (D) सब पुरुष पात्र एके अर्थ रखैत

३१. नारी विशेषांक मे 'साक्षात्कार' विधा किएक उपयोगी भऽ सकैत अछि?

- (A) साक्षात्कार केवल फोटो-संग्रह
- (B) साक्षात्कारमे विचार असम्भव
- (C) साक्षात्कार साहित्य नहि
- (D) प्रत्यक्ष संवादसँ लेखकीय अनुभव, समय-बोध आ स्त्री-प्रश्नक निजी-सार्वजनिक पक्ष खुलैत अछि

३२. स्त्री-विमर्शक पाठककेँ कोन सावधानी रखबाक चाही?

- (A) केवल नैतिक नारा खोजब
- (B) केवल लेखकक नाम याद रखब
- (C) केवल कथाक अन्त पूछब
- (D) रचना केँ उपदेश-पत्र नहि, सौंदर्य, भाषा, संघर्ष आ संरचनाक संयुक्त पाठ रूपमे पढ़ब

३३. मैथिली नारी लेखनमे स्थानीयता किएक शक्ति बनैत अछि?

- (A) स्थानीय भाषा स्त्री-विषय रोकैत
- (B) स्थानीयता साहित्यक कमी अछि
- (C) स्थानीयता केवल भूगोलक नाम
- (D) मिथिलाक रीति, बोली, श्रम, पर्व, परिवार आ स्मृति स्त्री-अनुभवकें ठोस धरातल दैत अछि

३४. स्त्री-कविता मे रक्त, देह, खिड़की, भरोस सन बिम्ब सभ किएक प्रभावी होइत अछि?

- (A) बिम्बक अर्थ केवल शब्दकोशमे अछि
- (B) कविता बिम्ब बिना श्रेष्ठ
- (C) स्त्री-कविता प्रतीक प्रयोग नहि करैत
- (D) ई आंतरिक पीड़ा, बाहरी सीमा, दृष्टि आ आशाक प्रतीक बनि सकैत अछि

३५. नारी विमर्शमे 'शिक्षा'क प्रश्न किएक बार-बार उभरैत अछि?

- (A) शिक्षा केवल परीक्षा पास करब
- (B) शिक्षाक स्त्री जीवनसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) शिक्षा आत्मस्वर, आर्थिक स्वायत्तता आ सामाजिक निर्णय-क्षमता बढ़बैत अछि
- (D) शिक्षा पितृसत्ताक समर्थन मात्र

३६. स्त्री-लेखनक इतिहास बनबैत समय 'किन्नर' या हाशिये पर रहल स्त्री-स्वरकें शामिल करब किएक जरूरी अछि?

- (A) विविधता भ्रम पैदा करैत
- (B) इतिहासमे केवल प्रसिद्ध नाम चाही
- (C) किएकि नारी अनुभव एकरूप नहि, जाति, वर्ग, देह, लैंगिकता आ क्षेत्र अनुसार बदलैत अछि
- (D) हाशियाक आवाज साहित्य नहि

३७. नारी विशेषांकक आलोचनात्मक लक्ष्य केवल 'स्त्रीक दुख' लिखब किएक नहि अछि?

- (A) दुखहि साहित्यक एकमात्र विषय
- (B) नारी-विमर्श केवल आँसू
- (C) स्त्रीक शक्ति लिखब निषिद्ध
- (D) ई दुखक संग शक्ति, सृजन, प्रश्न, प्रतिरोध आ वैकल्पिक भविष्य सेहो देखैत अछि

३८. स्त्री-पात्रक आर्थिक निर्भरता कथा-संघर्षमे कोना काम करैत अछि?

- (A) निर्भरता सदैव सुखद
- (B) निर्णय, सम्मान, सुरक्षा आ स्वतंत्रताक सीमा निर्धारित करैत अछि
- (C) आर्थिक प्रश्न केवल पुरुषक विषय
- (D) कथा मे अर्थव्यवस्था नहि होइत

३९. स्त्री-विमर्शमे 'प्रेम'क पुनर्पाठ किएक आवश्यक अछि?

- (A) प्रेम सामाजिक प्रश्न नहि
- (B) प्रेम केवल शृंगार अलंकार
- (C) प्रेममे स्त्रीक आवाज अप्रासंगिक
- (D) प्रेमकें त्याग वा अधिकार मात्र नहि, समानता, सहमति आ आत्मसम्मानक कसौटी पर पढ़ब

४०. नारी विशेषांक मे सामाजिक-राजनीतिक लेख आ साहित्यिक रचना साथ-साथ किएक सार्थक अछि?

- (A) स्त्री-विषय केवल निजी कथा नहि, सार्वजनिक नीति, समाज आ सत्ता-संरचनासँ जुड़ल अछि
- (B) साहित्य आ समाजक संबंध नहि
- (C) स्त्री-विषय केवल घरक बात
- (D) राजनीति आएत तँ साहित्य नष्ट

४१. स्त्री-समीक्षा में 'प्रतिनिधित्व'क प्रश्न ककरा लेल उठैत अछि?

- (A) केवल प्रकाशकक विज्ञापन लेल
- (B) केवल पुस्तकक आवरण लेल
- (C) कृति स्त्रीकें स्वयं बोलए देइत अछि कि केवल बाहरी दृष्टिसँ चित्रित करैत अछि
- (D) केवल पृष्ठ-क्रम लेल

४२. मिथिला संस्कृतिक भीतर नारी-विमर्शक चुनौती की अछि?

- (A) सुधार बिना संस्कृति बाँचैत
- (B) संस्कारक गरिमा बचबैत ओकर भीतरक असमानता आ हिंसाकें प्रश्नांकित करब
- (C) नारी-विमर्श संस्कृति-विरोध मात्र
- (D) संस्कृति पर प्रश्न करब असम्भव

४३. नारी-केंद्रित रचनामे शीर्षकक महत्त्व किएक बढ़ि जाइत अछि?

- (A) शीर्षक अक्सर चुप आवाज, प्रश्न वा प्रतिरोधक पहिल संकेत बनैत अछि
- (B) शीर्षक प्रश्न नहि उठा सकैत
- (C) शीर्षक केवल सजावट
- (D) शीर्षकक अर्थ पाठसँ अलग

४४. स्त्री-विमर्श पर आधारित quiz में 'सही उत्तर' ककरा आधार पर चुनल जाए?

- (A) यादृच्छिक विकल्प
- (B) सबसे छोट विकल्प
- (C) रचनाक अवधारणा, सामाजिक अर्थ, भाषा-शिल्प आ आलोचनात्मक संकेतक आधार पर
- (D) पृष्ठ-संख्याक निकटता

४५. नारी विशेषांकक बहुविध सामग्री प्रश्न संख्या बढ़बैत किएक अछि?

- (A) किएकि प्रश्न दोहराएब आसान अछि
- (B) किएकि केवल नामावली पूछब अछि
- (C) किएकि अंक-सूची लंबी अछि
- (D) किएकि एतय उपन्यास-अनुवाद, कथा, कविता, सम्मेलन, समीक्षा, सामाजिक प्रश्न आ साक्षात्कार सभ अछि

४६. स्त्रीवादी पाठमे 'न्याय' शब्दक व्यापक अर्थ की अछि?

- (A) केवल भावुक सहानुभूति
- (B) कानूनी अधिकारक संग सामाजिक सम्मान, देह-स्वायत्तता, भाषा-स्वर आ अवसर-समानता
- (C) केवल अदालतक फैसला
- (D) केवल दान-दक्षिणा

४७. नारी-विमर्शमे स्मृति किएक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक साधन अछि?

- (A) स्मृति मे समाज नहि होइत
- (B) व्यक्तिगत अनुभूति सामूहिक इतिहास आ दबाओल गेल अनुभवसँ जुड़ैत अछि
- (C) स्मृति साहित्यक विरुद्ध
- (D) स्मृति केवल भूल-चूक अछि

४८. स्त्री-कथा मे 'प्रश्न पूछब' स्वयं एक रचनात्मक क्रिया किएक अछि?

- (A) प्रश्न साहित्यमे अनावश्यक
- (B) प्रश्न स्थिर परम्परा आ असमान मान्यताकें हिलबैत अछि
- (C) प्रश्न केवल व्याकरण
- (D) प्रश्न पाठकक विरोध

४९. नारी विशेषांकक पाठक लेल सबसे जरूरी आलोचनात्मक अभ्यास की अछि?

- (A) रचना मे स्त्रीक आवाज, सत्ता-संबंध, भाषा, प्रतीक आ सामाजिक परिणामक संयुक्त पाठ
- (B) केवल अंकक तारीख
- (C) केवल लेखक-नाम याद
- (D) केवल क्रमांकक मिलान

उत्तरमाला — अध्याय ७ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (D) स्त्री-अनुभवकें साहित्य, समाज, देह, भाषा आ अस्मिताक संयुक्त प्रश्न रूपमे पढ़ब — नारी विमर्श केवल 'नारी विषय' नहि; ई सत्ता-संबंध, भाषा, सामाजिक रूढ़ि, देह-बोध आ रचनात्मक आवाजक बहुस्तरीय अध्ययन अछि।
२. (B) हिंदी स्त्रीवादी उपन्यासक जटिल देह-चेतना आ आत्मसंघर्षकें मैथिली पाठकक समक्ष आनैत अछि — प्रभा खेतानक उपन्यासक अनुवाद मैथिलीमे आधुनिक स्त्री अस्मिता, देह, बाजार आ स्वत्वक प्रश्नकें प्रवेश करबैत अछि।
३. (C) किएकि देह समाज, नियंत्रण, इच्छा, श्रम, हिंसा आ स्वायत्तताक स्थल बनैत अछि — नारी-विमर्शमे देह पितृसत्ता, बाजारीकरण, इच्छा आ आत्मनिर्णयक प्रश्नसँ जुड़ल रहैत अछि।
४. (C) ओ जन्मसँ पहिने नकारल गेल बेटीकें आवाज आ दृश्य-अधिकार देबाक आग्रह करैत अछि — शीर्षकहि बेटीकें दृश्यता, पहचान आ जन्मक अधिकारक प्रतीक बनि जाइत अछि।
५. (B) कथा आँकड़ाकें अनुभव, पीड़ा आ नैतिक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि — साहित्य पाठककें केवल सूचना नहि, भीतरक भावनात्मक-नैतिक सामना करबैत अछि।
६. (A) मैथिली साहित्यमे स्त्री-स्वर, स्त्री-पात्र आ स्त्री-दृष्टिक प्रभावकें व्यवस्थित रूपे देखब — एहन विषय साहित्येतिहासमे स्त्रीक उपस्थिति, प्रतिनिधित्व आ agency क मूल्यांकन करैत अछि।
७. (A) ई स्त्री-लेखनकें क्षेत्रीय सीमा सँ बाहर भारतीय भाषा-संवादक रूपमे देखबैत अछि — भाषा-पार संवाद स्त्री अनुभवक समानता आ भिन्नता दुनूकें देखबाक अवसर दैत अछि।
८. (C) द्रौपदीक मिथकीय अपमान आधुनिक स्त्री-प्रतिरोध आ न्यायक प्रतीक बनि सकैत अछि — द्रौपदी स्त्री-अस्मिता, लांछन, प्रतिरोध आ सत्ता-समीक्षा लेल शक्तिशाली सांस्कृतिक प्रतिमान अछि।
९. (A) राधाकें केवल विरहिणी नहि, इच्छाशक्ति, प्रेम, प्रश्न आ आत्मस्वरक रूपमे पढ़ब — राधा भारतीय काव्यपरम्पराक महत्वपूर्ण स्त्री-प्रतिमा छथि; आधुनिक पाठ हुनका agency क संदर्भमे पुनः पढ़ैत अछि।
१०. (B) ई स्त्रीक मानवीय जटिलता आ सामान्य जीवनाधिकारकें नकारैत अछि — स्त्रीकें चरम छविमे बाँधल समाजक नियंत्रण-प्रक्रिया होइत अछि; साहित्य ओकरा प्रश्नांकित करैत अछि।
११. (A) भिन्न भाषाक स्त्री-अनुभवकें मैथिली विमर्शक भीतर तुलनात्मक रूपे आनब — अनुवाद भाषा-समाजक बीच सेतु अछि; स्त्री-विमर्शमे ई अनुभवक साझा आ अंतर दुनू उजागर करैत अछि।
१२. (D) दबाओल गेल आवाज, सामाजिक भय, अथवा चुप्पी भीतर पलैत प्रतिरोध — नारी लेखनमे मौन बहुत बेर सत्ता-भयक संकेत सेहो होइत अछि आ भीतरक प्रतिरोधक संकेत सेहो।
१३. (B) स्त्री-अनुभवक आरंभिक सामाजिक निर्माण—पालन, शिक्षा, भय, चयन—सामने अबैत अछि — लैंगिक भेद बहुत जल्दी परिवार, भाषा, खेल, शिक्षा आ सुरक्षा-संस्कारमे बनैत अछि।
१४. (D) स्त्रीकें केवल कोमलता वा भावुकताक रूढ़ छविमे सीमित कऽ देब — नारी तत्त्वक गंभीर अर्थ स्त्रीक रचनात्मक, सामाजिक, राजनीतिक आ बौद्धिक उपस्थिति अछि।
१५. (A) स्त्री-संबंधी रचना पर आलोचनात्मक दृष्टि बनबैत, प्रशंसा मात्र नहि करैत — आलोचना बिना विमर्श भावुक नारा बनि सकैत अछि; समीक्षा तर्क, कसौटी आ पाठ-गहराई दैत अछि।
१६. (D) भाषा स्त्रीक अनुभव, घरेलू बोली, प्रतिरोध आ सामाजिक स्थानकें रचैत अछि — भाषा मे संबोधन, व्यंग्य, चुप्पी, लोकपद आ देह-बोध सभ स्त्री-अनुभवक अर्थ बनबैत अछि।

१७. (B) परिवार, धर्म, रीति, भाषा आ अर्थव्यवस्था मे निहित असमान सत्ता-संबंधके पहचानब — पितृसत्ता व्यक्ति-विशेषक निन्दा नहि; सामाजिक संरचनाक आलोचनात्मक अध्ययन अछि।
१८. (B) वह वस्तु नहि, वक्ता बनैत अछि; अनुभव भीतरसँ खुलैत अछि — आत्मस्वर स्त्रीक agency स्थापित करैत अछि आ बाहरी दृष्टिक सीमाकेँ चुनौती दैत अछि।
१९. (B) कथा सामाजिक परिस्थिति खोलैत अछि आ कविता आन्तरिक संवेदना आ प्रतीक-संसार गाढ़ करैत अछि — विधा-वैविध्य नारी अनुभवक बाहरी आ भीतरी दुनू आयाम पकड़ैत अछि।
२०. (A) बहुत बेर प्रतिरोध मौन, स्मृति, अस्वीकार, प्रश्न वा वैकल्पिक जीवन-चयनमे प्रकट होइत अछि — साहित्य सूक्ष्म प्रतिरोधक रूप—दृष्टि, भाषा, प्रतीक, अस्वीकृति—केँ पकड़ि सकैत अछि।
२१. (B) घर प्रेम, श्रम, नियंत्रण, सुरक्षा आ बंदिशक विरोधाभासी स्थल बनैत अछि — नारी लेखनमे घरक भीतर सत्ता, श्रम-वितरण आ चुप्पी सभ प्रकट होइत अछि।
२२. (D) मातृभाषा स्त्रीक लोकानुभव, कहावत, गीत, घरेलू स्मृति आ बोलचालक भंडार खोलैत अछि — मैथिलीमे नारी अनुभव लिखब मातृभाषाक भीतर छिपल संवेदनात्मक संसारकेँ साहित्य बनबैत अछि।
२३. (C) समाज प्रायः स्त्रीक सम्मानकेँ ओकर देह पर नियंत्रणसँ जोड़ि दैत अछि — पितृसत्तात्मक समाजमे देह-नियंत्रण प्रतिष्ठा, भय आ हिंसासँ जुड़ल रहैत अछि।
२४. (D) स्त्री अपन शिक्षा, देह, प्रेम, श्रम, भाषा आ जीवन-चयन पर स्वयं निर्णय लए — आत्मनिर्णय नारी अस्मिताक मूल तत्त्व अछि; ई निजी आ सामाजिक दुनू स्तर पर लागू होइत अछि।
२५. (D) कोन लेख कोन पृष्ठपर अछि वा क्रम-संख्या की अछि सन यांत्रिक प्रश्न — उच्च-स्तरीय क्विज पाठककेँ समझ, व्याख्या आ आलोचना दिस लऽ जाइत अछि; पृष्ठ-सूची मात्र स्मरण-परीक्षा अछि।
२६. (C) ओहि गीतमे स्त्रीक सामूहिक स्मृति, दुख, व्यंग्य, कामना आ सामाजिक आलोचना छिपल रहैत अछि — लोकपरम्परा स्त्री अनुभवक महत्त्वपूर्ण संग्रहालय अछि; आधुनिक पाठ ओकर भीतरक अर्थ निकालैत अछि।
२७. (A) समाज बेटीकेँ जन्म, पहचान, शिक्षा आ सम्मान देबाक लेल तैयार अछि कि नहि — बेटीक अधिकार पर कथा समाजक भविष्य, न्याय आ संवेदना पर प्रश्न अछि।
२८. (A) बाजार स्त्री-देह, सौन्दर्य, श्रम आ आकांक्षाकेँ वस्तु बना सकैत अछि — आधुनिक स्त्री-विमर्श बाजार आ उपभोग-संस्कृतिक भीतर स्त्रीक स्थिति पर प्रश्न उठबैत अछि।
२९. (C) समाजक डर आ आत्मस्वरक उदय बीच संघर्ष — स्त्रीक बोली अक्सर सत्ता-संरचनाक चुनौती बनैत अछि; चुप्पी ओहि चुनौतीक दबाव देखबैत अछि।
३०. (A) पात्र-संबंध जटिल होइत अछि; सहायक, पीड़ित, पितृसत्ताक वाहक आ परिवर्तनकारी सभ रूप सम्भव — गंभीर आलोचना रूढ़ विभाजनक बदला सत्ता-संबंध आ मानवीय जटिलताकेँ देखैत अछि।
३१. (D) प्रत्यक्ष संवादसँ लेखकीय अनुभव, समय-बोध आ स्त्री-प्रश्नक निजी-सार्वजनिक पक्ष खुलैत अछि — साक्षात्कार आलोचना आ रचना बीच जीवित संवाद बनबैत अछि।
३२. (D) रचना केँ उपदेश-पत्र नहि, सौंदर्य, भाषा, संघर्ष आ संरचनाक संयुक्त पाठ रूपमे पढ़ब — साहित्यिक स्त्री-विमर्श भावनात्मक आ बौद्धिक दुनू स्तर पर कृति पढ़बाक मांग करैत अछि।
३३. (D) मिथिलाक रीति, बोली, श्रम, पर्व, परिवार आ स्मृति स्त्री-अनुभवकेँ ठोस धरातल दैत अछि — स्थानीय संस्कृतिक भीतर स्त्रीक विशिष्ट अनुभव, संघर्ष आ प्रतिरोधक रूप खुलैत अछि।
३४. (D) ई आंतरिक पीड़ा, बाहरी सीमा, दृष्टि आ आशाक प्रतीक बनि सकैत अछि — नारी कवितामे प्रतीक सभ अनुभवक गहनता आ संक्षिप्ति प्रदान करैत अछि।
३५. (C) शिक्षा आत्मस्वर, आर्थिक स्वायत्तता आ सामाजिक निर्णय-क्षमता बढ़बैत अछि — शिक्षा स्त्रीक agency, भाषा आ सार्वजनिक उपस्थितिक आधार बनि सकैत अछि।
३६. (C) किएकि नारी अनुभव एकरूप नहि, जाति, वर्ग, देह, लैंगिकता आ क्षेत्र अनुसार बदलैत अछि — समावेशी स्त्री-विमर्श अनुभवक बहुलता स्वीकारैत अछि।
३७. (D) ई दुखक संग शक्ति, सृजन, प्रश्न, प्रतिरोध आ वैकल्पिक भविष्य सेहो देखैत अछि — गंभीर नारी-विमर्श स्त्रीकेँ पीड़ित मात्र नहि, विचारक, रचयिता आ परिवर्तनकारी मानैत अछि।

३८. (B) निर्णय, सम्मान, सुरक्षा आ स्वतंत्रताक सीमा निर्धारित करैत अछि — आर्थिक संरचना स्त्री-अस्मिता आ घरेलू सत्ता-संबंधकें प्रभावित करैत अछि।
३९. (D) प्रेमकें त्याग वा अधिकार मात्र नहि, समानता, सहमति आ आत्मसम्मानक कसौटी पर पढ़ब — आधुनिक स्त्री-पाठ प्रेमक संबंधमे शक्ति-संतुलन आ सहमति पर प्रश्न उठबैत अछि।
४०. (A) स्त्री-विषय केवल निजी कथा नहि, सार्वजनिक नीति, समाज आ सत्ता-संरचनासँ जुड़ल अछि — नारी विमर्श निजी अनुभव आ सार्वजनिक संरचना बीच संबंध बनबैत अछि।
४१. (C) कृति स्त्रीकें स्वयं बोलए देइत अछि कि केवल बाहरी दृष्टिसँ चित्रित करैत अछि — प्रतिनिधित्व कृति केन्द्रीय शक्ति-संबंधक प्रश्न अछि—कौन बोलैत अछि, केकरा लेल, कोन भाषामे।
४२. (B) संस्कारक गरिमा बचबैत ओकर भीतरक असमानता आ हिंसाकें प्रश्नांकित करब — गंभीर विमर्श परम्परा-विरोध नहि, परम्पराक भीतर न्याय आ मानवीयता खोजैत अछि।
४३. (A) शीर्षक अक्सर चुप आवाज, प्रश्न वा प्रतिरोधक पहिल संकेत बनैत अछि — ‘हमर फोटो कहिया’ जेकाँ शीर्षक पूरा सामाजिक प्रश्नकें एक वाक्यमे संकुचित करि सकैत अछि।
४४. (C) रचनाक अवधारणा, सामाजिक अर्थ, भाषा-शिल्प आ आलोचनात्मक संकेतक आधार पर — उच्च-स्तरीय प्रश्न कृति-समझ आ विवेचन क्षमताकें जाँचैत अछि।
४५. (D) किएकि एतय उपन्यास-अनुवाद, कथा, कविता, सम्मेलन, समीक्षा, सामाजिक प्रश्न आ साक्षात्कार सभ अछि — सामग्रीक विस्तार गतिशील प्रश्न-संख्या मांग करैत अछि; स्थिर १५ प्रश्न पर्याप्त नहि।
४६. (B) कानूनी अधिकारक संग सामाजिक सम्मान, देह-स्वायत्तता, भाषा-स्वर आ अवसर-समानता — न्याय स्त्री-अनुभवमे कई स्तर पर लागू होइत अछि —शरीर, श्रम, शिक्षा, भाषा, सुरक्षा आ पहचान।
४७. (B) व्यक्तिगत अनुभूति सामूहिक इतिहास आ दबाओल गेल अनुभवसँ जुड़ैत अछि — स्त्री-स्मृति घर, परिवार, श्रम, गीत, हिंसा आ स्नेहक इतिहाससँ भरल रहैत अछि।
४८. (B) प्रश्न स्थिर परम्परा आ असमान मान्यताकें हिलबैत अछि — नारी विमर्श प्रश्न सँ आरम्भ होइत अछि—किए, केकरा, केकरा लेल, केना।
४९. (A) रचना मे स्त्रीक आवाज, सत्ता-संबंध, भाषा, प्रतीक आ सामाजिक परिणामक संयुक्त पाठ — एहि तरहक पाठ साहित्यिक समझकें उच्च स्तर पर लऽ जाइत अछि।

अध्याय ८ : विदेह विशेषांक ०८ — अनुवाद विशेषांक / गद्य-पद्य भारती

१. अनुवाद विशेषांकक मूल उद्देश्य कोना बुझल जा सकैत अछि?

- (A) भिन्न भाषा-संसारक गद्य, पद्य, विचार आ संस्कृति केँ मैथिली पाठकधरि रचनात्मक रूपे पहुँचाब
- (B) साहित्यकेँ समाजसँ अलग मानब
- (C) केवल अलंकारक नाम रटब
- (D) केवल अंक-क्रम पूछब

२. 'गद्य-पद्य भारती' नामक संकेत अनुवादक दृष्टिसँ की बतबैत अछि?

- (A) केवल कविता-कंठस्थ करब
- (B) गद्य आ कविता दुनू विधामे भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक सम्पर्क बनाएबाक आग्रह
- (C) केवल पत्रिका-विज्ञापन
- (D) केवल गद्यक निषेध

३. अनुवादमे 'निष्ठा'क अर्थ केवल शब्दशः समानता किएक नहि अछि?

- (A) निष्ठा मूल भाव, सन्दर्भ, शैली आ पाठकीय असरक प्रति सेहो होइत अछि
- (B) निष्ठा अनुवादमे असम्भव
- (C) निष्ठा केवल शब्दकोश मिलान
- (D) निष्ठा मतलब वाक्य अस्वाभाविक बनाउ

४. हिंदीसँ मैथिली अनुवादमे सबसे सूक्ष्म चुनौती की अछि?

- (A) हिंदी शब्द जस्ताक तस्तै राखब सदैव उत्तम
- (B) दुनू भाषाक निकटताक कारण झूठी समानता आ अस्वाभाविक मिश्रणसँ बचब
- (C) मैथिलीमे भाव व्यक्त नहि होइत
- (D) दुनू भाषा पूर्णतः अलग संसार

५. कविता-अनुवादमे छन्द, लय आ बिम्बक समस्या किएक गम्भीर अछि?

- (A) लयक कोनो महत्त्व नहि
- (B) बिम्बक अनुवाद निषिद्ध
- (C) कविता अनुवादमे केवल कथानक चाही
- (D) अर्थक संग संगीत, ध्वनि आ प्रतीक-संरचना सेहो पुनः रचए पड़ैत अछि

६. गद्य-अनुवादमे पठनीयता किएक प्रमुख कसौटी अछि?

- (A) जतेक अटपट वाक्य, ततेक सफल अनुवाद
- (B) पठनीयता केवल मुद्रणक बात
- (C) पाठ लक्ष्य भाषामे स्वाभाविक, स्पष्ट आ प्रवाहपूर्ण लागए
- (D) गद्य मे अर्थ गौण

७. अनुवादक 'सांस्कृतिक पद'केँ कोना सँभालि सकैत अछि?

- (A) कहियो मूल शब्द राखि व्याख्या, कहियो सांस्कृतिक समतुल्य, कहियो सन्दर्भानुसार पुनर्लेखन
- (B) अनुवादमे संस्कृति नहि रहैत
- (C) केवल अंग्रेजी शब्द राखब
- (D) सभ सांस्कृतिक पद हटाएब

८. 'हम, देह आ विदेह' सन शीर्षक अनुवाद/विचार विमर्शमे कोन दार्शनिक संकेत दे सकैत अछि?

- (A) केवल वेबसाइटक नाम
- (B) केवल भूगोलक नक्शा
- (C) केवल हास्य शीर्षक
- (D) अहं, शरीर, भाषा आ आत्म-अतिक्रमणक सम्बन्ध पर विचार

९. आचार्य भामहक चिंतनक समावेश अनुवाद विशेषांकमे किएक सार्थक अछि?

- (A) काव्यशास्त्रक अनुवादसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) सिद्धान्त विशेषांकमे निषिद्ध
- (C) भामह केवल आधुनिक पत्रकार छथि
- (D) अनुवादक संग काव्यशास्त्रीय विचार आ आलोचनात्मक परम्पराक सेतु बनेबाक लेल

१०. दण्डी आ काव्यलक्षणक अध्ययन अनुवादकें कोन लाभ दैत अछि?

- (A) गद्यक अर्थ समाप्त करब
- (B) शैली, गुण, रीति, वर्णन आ काव्य-सौंदर्यक सूक्ष्मता बुझब
- (C) साहित्यकें गणित बना देब
- (D) कविता अनुवाद रोकि देब

११. अनुवादित कथा मे पात्र-भाषा कोना संभालल जाए?

- (A) सभ पात्र एके संस्कृतनिष्ठ भाषा बाजए
- (B) मूल पात्रक आवाज हटाएब
- (C) पात्रक सामाजिक स्तर आ मूल स्वर बचबैत लक्ष्य भाषाक स्वाभाविक बोलचाल दऽ
- (D) केवल शब्दकोशक भाषा प्रयोग करब

१२. रिपोर्ट, डायरी, समाचार आ साहित्यिक लेखक अनुवादक शैली एके किएक नहि रहि सकैत?

- (A) विधा अनुवादमे अप्रासंगिक
- (B) प्रत्येक विधाक उद्देश्य, लहजा, गति आ पाठक-संबंध अलग होइत अछि
- (C) समाचारक भाषा कविताजहन होएब चाही
- (D) सभ अनुवाद एके टेम्पलेटमे

१३. अनुवादमे 'स्थानीयकरण'क खतरा की अछि?

- (A) अधिक स्थानीयकरणसँ मूल संस्कृतिक विशिष्टता मेटि सकैत अछि
- (B) स्थानीयकरण केवल टाइपिंग
- (C) स्थानीयकरण अर्थ बढ़बैत नहि
- (D) स्थानीयकरण सदैव निषिद्ध

१४. अनुवादमे 'विदेशीपन' बचाएब कखन उपयोगी भऽ सकैत अछि?

- (A) जखन पाठककें भ्रमित करब लक्ष्य हो
- (B) जखन अनुवादक अर्थ नहि बुझै
- (C) जखन मूल पाठक सांस्कृतिक भिन्नता स्वयं अर्थक हिस्सा हो
- (D) जखन मैथिली शब्द उपलब्ध नहि

१५. मैथिलीमे अनुवाद साहित्यिक भाषा विकासमे की योगदान दैत अछि?

- (A) भाषाकें दरिद्र करैत अछि
- (B) नव शब्द, वाक्य-विन्यास, विचार-क्षेत्र आ शैलीगत प्रयोग जोड़ैत अछि
- (C) मूल लेखन रोकैत अछि
- (D) केवल गलती बढ़बैत अछि

१६. अनुवादकक नैतिक जिम्मेदारी की अछि?

- (A) मूल पाठ छिपाएब
- (B) मूल लेखक, लक्ष्य पाठक, भाषा आ सन्दर्भ सभक प्रति ईमानदार रहब
- (C) अर्थ मनमाने बदलि देब
- (D) अपन विचारकें मूलक नामे देब

१७. कविता-अनुवादमे अनुप्रास आ ध्वनि-सौंदर्यक हानि किएक होइत अछि?

- (A) भाषा बदललासँ ध्वनि-संबंध आ शब्द-संगति स्वतः बदलि जाइत अछि
- (B) ध्वनि सभ भाषामे एके होइत
- (C) कविता ध्वनिरहित होइत
- (D) अनुवादक ध्वनि पर ध्यान नहि दैत

१८. सांस्कृतिक मुहावराक अनुवादमे शब्दशः विधि किएक असफल भऽ सकैत अछि?

- (A) मुहावराक अर्थ नहि होइत
- (B) मुहावरा हटाएब सदैव सही
- (C) मुहावरा सदैव शब्दशः अनुवादित होइत
- (D) मुहावराक अर्थ शब्दक योगफल नहि, सांस्कृतिक प्रयोगसँ बनैत अछि

१९. अनुवादित बालनाटक वा कथा मे भाषा-सादगीक अर्थ की नहि अछि?

- (A) सादगी केवल छोटे वाक्य
- (B) सादगी मतलब खराब भाषा
- (C) सादगी मतलब सपाटपन नहि; बाल-मानसक अनुरूप स्पष्ट, जीवंत, लययुक्त भाषा
- (D) सादगी मतलब विचारहीनता

२०. भारतीय भाषाक बीच अनुवाद राष्ट्रीय साहित्यिक संवादमे कोन काम करैत अछि?

- (A) क्षेत्रीय अनुभवकेँ साझा करैत, तुलना आ सहानुभूति बढ़बैत अछि
- (B) भाषा सभकेँ एके बना दैत
- (C) केवल प्रशासनिक सुविधा
- (D) स्थानीय साहित्य मिटा दैत

२१. अनुवादक कतेक रचनात्मक स्वतंत्रता लऽ सकैत अछि?

- (A) मूल भाव आ संरचना नष्ट नहि करैत लक्ष्य भाषाक प्रभावशीलता लेल विवेकपूर्ण स्वतंत्रता
- (B) मूलक आधा पाठ हटाएब
- (C) कुनो स्वतंत्रता नहि
- (D) पूर्ण मनमानी

२२. अनुवाद-समीक्षा ककरा पर ध्यान देत?

- (A) अर्थ-संरक्षण, भाषा-स्वाभाविकता, शैली, सांस्कृतिक निर्णय आ पाठकीय प्रभाव
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) केवल शीर्षकक लम्बाई
- (D) केवल अनुवादकक फोटो

२३. यदि मूल पाठमे व्यंग्य अछि तँ अनुवादकेँ कोन सावधानी चाही?

- (A) व्यंग्यक लहजा, विडम्बना आ सांस्कृतिक संकेत लक्ष्य भाषामे प्रभावी बनए
- (B) व्यंग्यकेँ उपदेश बना देब
- (C) व्यंग्य हटाएब
- (D) सभी वाक्य शाब्दिक करब

२४. अनुवाद विशेषांकमे रिपोर्ट आ समारोह-लेख सभक उपस्थिति कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) ई अनुवादक विरोध अछि
- (B) रिपोर्ट साहित्यसँ बाहर सदैव
- (C) भाषिक-सांस्कृतिक गतिविधि सेहो साहित्यिक संसारक हिस्सा अछि
- (D) समारोहक वर्णन अर्थहीन

२५. 'द्रौपदी'क कविता-अनुवादमे मिथकीय नाम केना काम करैत अछि?

- (A) मिथक आधुनिक पाठककें कोनो अर्थ नहि
- (B) सांस्कृतिक स्मृति कें लक्ष्य भाषामे पुनः सक्रिय करैत अछि
- (C) मिथकीय नाम सदैव हटाएब
- (D) नामक अनुवाद नहि, तँ कविता असम्भव

२६. अनुवादमे लिपि आ भाषा बीच भेद किएक बुझब जरूरी अछि?

- (A) भाषाक लिपिसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) लिपि लेखनक रूप अछि, भाषा अर्थ, ध्वनि, व्याकरण आ सांस्कृतिक व्यवस्था
- (C) लिपि बदललासँ भाषा बदलि जाइत
- (D) दुनू बिल्कुल एके अछि

२७. अनुवादकें कखन टीका/टिप्पणी जोड़बाक जरूरत पड़ि सकैत अछि?

- (A) कहियो टिप्पणी नहि
- (B) टिप्पणी मूलक बदला अनुवाद होइत
- (C) हर वाक्य पर टिप्पणी जरूरी
- (D) जखन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक वा दार्शनिक सन्दर्भ लक्ष्य पाठक लेल अपरिचित हो

२८. अनुवादक भाषा-शुद्धता आ लोकप्रयोग बीच संतुलन कोना बनबैत अछि?

- (A) मानकक पूर्ण निषेध
- (B) केवल मिश्रित बोलचाल बिना कसौटी
- (C) मानक मैथिली राखैत, जहाँ जरूरी हो तहाँ पात्र/प्रसंगानुकूल लोकपद प्रयोग करैत
- (D) केवल अत्यंत सांस्कृतिक भाषा

२९. अनुवाद विशेषांकक पाठक लेल 'मूल' आ 'अनुवाद'क संबंध कोना देखबाक चाही?

- (A) मूल आधार अछि, अनुवाद लक्ष्य भाषामे ओकर नया जीवन
- (B) अनुवाद मूलक दुश्मन
- (C) मूलक आवश्यकता नहि
- (D) अनुवाद केवल प्रतिलिपि

३०. अनुवादमे स्त्री-स्वरक रक्षा किएक विशेष सावधानी माँगैत अछि?

- (A) भाषा बदललासँ agency, व्यंग्य, पीड़ा आ प्रतिरोधक TOH कमजोर भऽ सकैत अछि
- (B) स्त्री-स्वर अनुवादमे अप्रासंगिक
- (C) प्रतिरोध हटाएब पठनीयता बढ़बैत
- (D) सभी स्वर एके करब उत्तम

३१. शास्त्रीय काव्यशास्त्रक अनुवादमे शब्द-समतुल्य खोजब किएक कठिन अछि?

- (A) सब शब्दक अंग्रेजी पर्याय पर्याप्त
- (B) अलंकार, रीति, गुण, ध्वनि सन पदक ऐतिहासिक अर्थ-संसार बहुत घना होइत अछि
- (C) काव्यशास्त्र अनुवाद योग्य नहि
- (D) शास्त्रीय पद सरल गाली अछि

३२. अनुवादक यदि मूलक सांस्कृतिक आलोचना कें नरम कऽ देत तँ की हानि?

- (A) अर्थ बढ़ि जाएत
- (B) अनुवाद बेसी सफल भऽ जाएत
- (C) कृतिक वैचारिक धार आ सामाजिक प्रश्न कमजोर भऽ जाएत
- (D) पाठक सभ संतुष्ट रहत तँ सही

३३. अनुवादित हास्य में सबसे कठिन तत्व की होइत अछि?

- (A) हास्य हटाएब अनुवादक नियम
- (B) हास्यमें भाषा जरूरी नहि
- (C) स्थानीय कहावत, ध्वनि-खेल, प्रसंग आ सांस्कृतिक अपेक्षा
- (D) हास्यक अनुवाद सदैव सरल

३४. अनुवाद साहित्यक इतिहासमें 'सेतु' रूपक किएक बार-बार प्रयुक्त होइत अछि?

- (A) सेतु रूपक अर्थहीन
- (B) सेतु केवल नदी-इंजीनियरिंग
- (C) अनुवाद अलगाव बढ़बैत
- (D) किएकि ई भाषा, समाज, समय, विधा आ पाठक समुदाय सभकेँ जोड़ैत अछि

३५. अनुवादकेँ शब्दकोश पर निर्भरता सीमित किएक रखबाक चाही?

- (A) अनुवादक सोचब नहि चाही
- (B) शब्दकोश अर्थ देत, मुदा प्रसंग, लहजा, मुहावरा आ भावप्रभाव नहि पूरा देत
- (C) प्रसंगक जरूरत नहि
- (D) शब्दकोश सदैव सम्पूर्ण

३६. अनुवाद विशेषांक में मैथिली पाठक कोन बौद्धिक लाभ पवैत छथि?

- (A) केवल मनोरंजनक सूची
- (B) अपन भाषामें बाहरी/अन्य भाषिक विचार पढ़ि तुलनात्मक दृष्टि विकसित करैत छथि
- (C) अन्य भाषा सँ दूरी
- (D) मूल साहित्यक अस्वीकार

३७. अनुवादित लेखमें लेखकक शैली बचाएब किएक जरूरी अछि?

- (A) शैली लेखकक विचारक चाल, संवेदना आ व्यक्तित्वक वाहक अछि
- (B) शैली हटाएब पठनीयता बढ़बैत
- (C) शैली केवल फॉन्ट
- (D) लेखकक शैलीक अर्थ नहि

३८. कविता-अनुवादमें बिम्बक स्थानीय समतुल्य चुनब कखन उचित अछि?

- (A) बिम्बक अर्थ महत्वहीन
- (B) सदैव मूल बिम्ब हटाउ
- (C) कहियो स्थानीय समतुल्य नहि
- (D) जखन मूल बिम्बक भावार्थ लक्ष्य पाठक धरि अन्यथा न पहुँचत, मुदा मूल भाव नष्ट नहि हो

३९. अनुवाद में 'स्वर' शब्दक अर्थ की अछि?

- (A) केवल ध्वनि की ऊँचाई
- (B) केवल छपाईक शैली
- (C) कृतिक बोलबाक अंदाज—गंभीर, व्यंग्यात्मक, करुण, आत्मीय, विद्रोही आदि
- (D) केवल गायकक स्वर

४०. अनुवादकेँ लक्ष्य पाठकक ज्ञान-स्तर किएक ध्यानमें रखबाक चाही?

- (A) अनुवाद केवल अनुवादक लेल
- (B) कठिनता सदैव श्रेष्ठ
- (C) अपरिचित सन्दर्भ, कठिन पद आ शैलीक प्रस्तुति पाठकक ग्रहणक्षमता अनुसार हो
- (D) पाठकक कोनो महत्त्व नहि

४१. अनुवादित निबंधमे तर्क-संरचना बचाएब किएक अनिवार्य अछि?

- (A) विचारक क्रम टूटलासँ निष्कर्ष आ विवेचन गलत बुझाईत अछि
- (B) तर्क हटाएब शैली सुधारैत
- (C) अनुवादमे निष्कर्ष जरूरी नहि
- (D) निबंधमे क्रम नहि होइत

४२. अनुवादमे 'अर्थ-हानि' पूर्णतः टारल जा सकैत अछि?

- (A) कहियो हानि नहि होइत
- (B) अर्थ-हानि उपयोगी अछि
- (C) पूर्णतः नहि; मुदा सजगता, टिप्पणी, शैली-बोध आ पुनर्सृजनसँ ओकरा न्यून कएल जा सकैत अछि
- (D) हानि भेल तँ अनुवाद रोकि देब

४३. अनुवाद विशेषांकमे भाषापाक रचना-लेखनक संकेत कोन बात जोड़ैत अछि?

- (A) लेखनक अभ्यास जरूरी नहि
- (B) अनुवादमे भाषा-मानक अप्रासंगिक
- (C) भाषापाक केवल हास्य
- (D) अनुवादक संग मानक, शुद्ध, सक्षम मैथिली लेखनक अभ्यास जरूरी अछि

४४. अनुवादक यदि मूल पाठक जातीय/क्षेत्रीय संवेदनशीलता नहि बुझै तँ कोन समस्या?

- (A) वह अर्थक सांस्कृतिक परत, सम्मानसूचक संकेत आ सामाजिक दर्द बिगाड़ि सकैत अछि
- (B) जातीय संकेत हटाएब सदैव सही
- (C) समस्या नहि
- (D) क्षेत्रीयता अर्थहीन

४५. अनुवादक लेल पुनर्पाठ किएक आवश्यक अछि?

- (A) पुनर्पाठ समयक बरबादी
- (B) संपादन मूलक अपमान
- (C) पहिल लिखल हमेशा अंतिम
- (D) पहिल ड्राफ्टमे अर्थ-सटीकता, शैली, लय आ भाषा-स्वाभाविकता पूरा नहि होइत

४६. अनुवाद-साहित्य पर उच्च-स्तरीय क्विजमे कोन प्रश्न उचित अछि?

- (A) केवल लिंकक रंग
- (B) अनुवादक निर्णय, शैली, सांस्कृतिक समतुल्यता, विधा-भेद आ पाठकीय प्रभाव पर प्रश्न
- (C) केवल अनुक्रमांक
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या

४७. अनुवाद विशेषांकक प्रश्न संख्या सामान्य अंकसँ बेसी किएक होएबाक चाही?

- (A) किएकि केवल नाम-सूची लंबी अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या बेसी अछि
- (C) किएकि विषय गद्य, पद्य, काव्यशास्त्र, संस्कृति, बाल-नाटक, रिपोर्ट आ भाषापाक लेखन धरि फैलल अछि
- (D) किएकि एके प्रश्न दोहराएब अछि

उत्तरमाला — अध्याय ८ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) भिन्न भाषा-संसारक गद्य, पद्य, विचार आ संस्कृति केँ मैथिली पाठकधरि रचनात्मक रूपे पहुँचाब — अनुवाद शब्द-प्रतिस्थापन नहि; ई अर्थ, शैली, संस्कार आ पाठकीय प्रभावक पुनर्सृजन अछि।

२. (B) गद्य आ कविता दुनू विधामे भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक सम्पर्क बनएबाक आग्रह — शीर्षक अनुवादकेँ विधा-सीमा पार करयवला सांस्कृतिक सेतु रूपमे देखबैत अछि।

३. (A) निष्ठा मूल भाव, सन्दर्भ, शैली आ पाठकीय असरक प्रति सेहो होइत अछि — सफल अनुवाद मूलक आत्मा बचबैत लक्ष्य भाषाक स्वाभाविकता राखैत अछि।
४. (B) दुनू भाषाक निकटताक कारण झूठी समानता आ अस्वाभाविक मिश्रणसँ बचब — निकट भाषामे अनुवादकें अधिक सावधानी चाही—वाक्य-लय, मुहावरा आ बोलीक स्वाभाविकता नष्ट नहि हो।
५. (D) अर्थक संग संगीत, ध्वनि आ प्रतीक-संरचना सेहो पुनः रचए पड़ैत अछि — कविता शब्दार्थसँ बेसी ध्वनि, छवि आ भावक संग बनैत अछि; अनुवादमे ई संतुलन कठिन अछि।
६. (C) पाठ लक्ष्य भाषामे स्वाभाविक, स्पष्ट आ प्रवाहपूर्ण लागए — गद्य पाठकक विचार-प्रवाह सँ जुड़ैत अछि; अनुवादक वाक्य यदि कृत्रिम अछि त’ अर्थ कमजोर होइत अछि।
७. (A) कहियो मूल शब्द राखि व्याख्या, कहियो सांस्कृतिक समतुल्य, कहियो सन्दर्भानुसार पुनर्लेखन — संस्कृति-विशेष शब्द अनुवादक निर्णयक परीक्षा अछि; एके नियम सभ जगह लागू नहि होइत।
८. (D) अहं, शरीर, भाषा आ आत्म-अतिक्रमणक सम्बन्ध पर विचार — एहन शीर्षक देह-चेतना आ आत्मबोधक गूढ़ प्रश्न खोलि सकैत अछि।
९. (D) अनुवादक संग काव्यशास्त्रीय विचार आ आलोचनात्मक परम्पराक सेतु बनेबाक लेल — काव्यशास्त्र भाषा, अलंकार, अर्थ आ काव्यगुणक विवेचन दैत अछि; अनुवादक लेल ई संवेदनशीलता उपयोगी अछि।
१०. (B) शैली, गुण, रीति, वर्णन आ काव्य-सौंदर्यक सूक्ष्मता बुझब — काव्यलक्षण समझलासँ अनुवादक केवल कथ्य नहि, सौंदर्य-व्यवस्था सेहो देखैत अछि।
११. (C) पात्रक सामाजिक स्तर आ मूल स्वर बचबैत लक्ष्य भाषाक स्वाभाविक बोलचाल दऽ — पात्रक भाषा ओकर सामाजिकता आ स्वभाव बनबैत अछि; अनुवादमे एकर सम्मान जरूरी अछि।
१२. (B) प्रत्येक विधाक उद्देश्य, लहजा, गति आ पाठक-संबंध अलग होइत अछि — अनुवादकें विधा-संवेदना चाही—रिपोर्टमे स्पष्टता, कवितामे लय, विचारलेखमे तर्क, कथा मे वातावरण।
१३. (A) अधिक स्थानीयकरणसँ मूल संस्कृतिक विशिष्टता मेटि सकैत अछि — मूल संस्कृतिक पहचान बचबैत लक्ष्य पाठकक समझ सुनिश्चित करब संतुलनक काम अछि।
१४. (C) जखन मूल पाठक सांस्कृतिक भिन्नता स्वयं अर्थक हिस्सा हो — सफल अनुवाद अनेक बेर अपरिचित संस्कृतिक स्वाद बचबैत पाठककें नया संसारमे लऽ जाइत अछि।
१५. (B) नव शब्द, वाक्य-विन्यास, विचार-क्षेत्र आ शैलीगत प्रयोग जोड़ैत अछि — अनुवाद भाषा कें नया विषय, पदावली, शैली आ वैचारिक ऊर्जा दैत अछि।
१६. (B) मूल लेखक, लक्ष्य पाठक, भाषा आ सन्दर्भ सभक प्रति ईमानदार रहब — अनुवादक बीचक सेतु छथि; ईमानदारी बिना सेतु भरोसेमंद नहि रहैत।
१७. (A) भाषा बदललासँ ध्वनि-संबंध आ शब्द-संगति स्वतः बदलि जाइत अछि — एक भाषाक ध्वनि-व्यवस्था दोसर भाषामे जस्ताक तस्तै नहि जाइत; नव ध्वनि-संतुलन बनए पड़ैत अछि।
१८. (D) मुहावराक अर्थ शब्दक योगफल नहि, सांस्कृतिक प्रयोगसँ बनैत अछि — मुहावराक भावार्थ, प्रसंग आ प्रभाव लक्ष्य भाषामे खोजब पड़ैत अछि।
१९. (C) सादगी मतलब सपाटपन नहि; बाल-मानसक अनुरूप स्पष्ट, जीवंत, लययुक्त भाषा — बाल साहित्यक अनुवादमे सरलता आ कलात्मकता दुनू चाही।
२०. (A) क्षेत्रीय अनुभवकें साझा करैत, तुलना आ सहानुभूति बढ़बैत अछि — अनुवाद बहुभाषी भारतमे परस्पर पाठकीयता आ सांस्कृतिक सम्मानक माध्यम अछि।
२१. (A) मूल भाव आ संरचना नष्ट नहि करैत लक्ष्य भाषाक प्रभावशीलता लेल विवेकपूर्ण स्वतंत्रता — अनुवाद नकल नहि, मुदा स्वतंत्र रचना सेहो नहि; ई नियंत्रित पुनर्सृजन अछि।
२२. (A) अर्थ-संरक्षण, भाषा-स्वाभाविकता, शैली, सांस्कृतिक निर्णय आ पाठकीय प्रभाव — समीक्षा अनुवादक निर्णयसभक आलोचनात्मक मूल्यांकन करैत अछि।
२३. (A) व्यंग्यक लहजा, विडम्बना आ सांस्कृतिक संकेत लक्ष्य भाषामे प्रभावी बनए — व्यंग्य केवल अर्थ नहि, टोन आ अंतर्निहित विरोधाभाससँ बनैत अछि।
२४. (C) भाषिक-सांस्कृतिक गतिविधि सेहो साहित्यिक संसारक हिस्सा अछि — पत्रिका साहित्यकें जीवित गतिविधि, संस्था, पाठक आ समुदायसँ जोड़ैत अछि।

२५. (B) सांस्कृतिक स्मृति के लक्ष्य भाषामे पुनः सक्रिय करैत अछि — मिथकीय नाम पाठकक सामूहिक स्मृति जगबैत अछि; अनुवादमे ओकर अर्थक्षेत्र बचब आवश्यक अछि।
२६. (B) लिपि लेखनक रूप अछि, भाषा अर्थ, ध्वनि, व्याकरण आ सांस्कृतिक व्यवस्था — मैथिली विविध लिपि/लिप्यंतरण संदर्भमे रहल अछि; अनुवादकेँ भाषा-संरचना पर ध्यान देब चाही।
२७. (D) जखन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक वा दार्शनिक सन्दर्भ लक्ष्य पाठक लेल अपरिचित हो — टिप्पणी पाठक-सहायता अछि, मुदा ओकर अति प्रवाह रोकि सकैत अछि।
२८. (C) मानक मैथिली राखैत, जहाँ जरूरी हो तहाँ पात्र/प्रसंगानुकूल लोकपद प्रयोग करैत — अनुवादकेँ पठनीय, शुद्ध, पर जीवंत भाषा चाही।
२९. (A) मूल आधार अछि, अनुवाद लक्ष्य भाषामे ओकर नया जीवन — अनुवाद मूलसँ जन्मैत अछि मुदा नया पाठक-संसारमे स्वतन्त्र प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।
३०. (A) भाषा बदललासँ agency, व्यंग्य, पीड़ा आ प्रतिरोधक तथ कमजोर भऽ सकैत अछि — स्त्री-विमर्शक पाठमे आवाजक सूक्ष्मता अनुवादक प्रमुख जिम्मेदारी अछि।
३१. (B) अलंकार, रीति, गुण, ध्वनि सन पदक ऐतिहासिक अर्थ-संसार बहुत घना होइत अछि — तकनीकी साहित्यक अनुवादमे पारिभाषिकता आ परम्परागत अर्थ दुनू सम्हारए पड़ैत अछि।
३२. (C) कृतिक वैचारिक धार आ सामाजिक प्रश्न कमजोर भऽ जाएत — अनुवादकेँ असुविधाजनक प्रश्न सेहो ईमानदारीसँ पहुँचाबक चाही।
३३. (C) स्थानीय कहावत, ध्वनि-खेल, प्रसंग आ सांस्कृतिक अपेक्षा — हास्य समाजक साझा संकेत पर निर्भर करैत अछि; भाषा बदललासँ ओकर असर बदलि सकैत अछि।
३४. (D) किएकि ई भाषा, समाज, समय, विधा आ पाठक समुदाय सभकेँ जोड़ैत अछि — अनुवाद बहुल समाजमे साहित्यिक सम्पर्कक मूल क्रिया अछि।
३५. (B) शब्दकोश अर्थ देत, मुदा प्रसंग, लहजा, मुहावरा आ भावप्रभाव नहि पूरा देत — अनुवादक पाठक सम्पूर्ण अर्थ-प्रक्रिया बुझैत अछि; शब्दकोश आरम्भिक साधन मात्र अछि।
३६. (B) अपन भाषामे बाहरी/अन्य भाषिक विचार पढ़ि तुलनात्मक दृष्टि विकसित करैत छथि — अनुवाद पाठकक संसार विस्तार करैत अछि आ मातृभाषाक आलोचनात्मक क्षमता बढ़बैत अछि।
३७. (A) शैली लेखकक विचारक चाल, संवेदना आ व्यक्तित्वक वाहक अछि — अनुवादक केवल सूचना नहि दैत; लेखकक स्वभाव आ लेखन-ऊर्जा सेहो पहुँचबैत अछि।
३८. (D) जखन मूल बिम्बक भावार्थ लक्ष्य पाठक धरि अन्यथा न पहुँचत, मुदा मूल भाव नष्ट नहि हो — बिम्ब-निर्णय अनुवादक रचनात्मक विवेकक हिस्सा अछि।
३९. (C) कृतिक बोलबाक अंदाज—गंभीर, व्यंग्यात्मक, करुण, आत्मीय, विद्रोही आदि — स्वर बदललासँ कृतिक सम्पूर्ण असर बदलि सकैत अछि।
४०. (C) अपरिचित सन्दर्भ, कठिन पद आ शैलीक प्रस्तुति पाठकक ग्रहणक्षमता अनुसार हो — अनुवाद संवाद अछि; पाठकक पहुँच ओकर मूल कसौटीमे सँ एक अछि।
४१. (A) विचारक क्रम टूटलासँ निष्कर्ष आ विवेचन गलत बुझाइत अछि — विचारात्मक गद्यक अनुवादमे तर्कक क्रम, संक्रमण आ स्पष्टता महत्वपूर्ण अछि।
४२. (C) पूर्णतः नहि; मुदा सजगता, टिप्पणी, शैली-बोध आ पुनर्सृजनसँ ओकरा न्यून कएल जा सकैत अछि — भाषा बदललासँ किछु अर्थ-छाया बदलैत अछि; अनुवादक ओकरा सम्भव सीमा धरि सहेजैत अछि।
४३. (D) अनुवादक संग मानक, शुद्ध, सक्षम मैथिली लेखनक अभ्यास जरूरी अछि — अनुवाद भाषा-विकासक साधन अछि; शुद्धता आ अभिव्यक्ति क्षमता दुनू आवश्यक अछि।
४४. (A) वह अर्थक सांस्कृतिक परत, सम्मानसूचक संकेत आ सामाजिक दर्द बिगाड़ि सकैत अछि — अनुवादकेँ पाठक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ तक पहुँचना पड़ैत अछि।
४५. (D) पहिल ड्राफ्टमे अर्थ-सटीकता, शैली, लय आ भाषा-स्वाभाविकता पूरा नहि होइत — उत्कृष्ट अनुवाद संशोधन, तुलना आ भाषा-तराश सँ बनैत अछि।
४६. (B) अनुवादक निर्णय, शैली, सांस्कृतिक समतुल्यता, विधा-भेद आ पाठकीय प्रभाव पर प्रश्न — अनुवाद-विमर्श समझ-आधारित प्रश्न मांग करैत अछि; यांत्रिक प्रश्न ओकर गहराई छटबैत अछि।

४७. (C) कलकल वलषड गडु, डडु, कलवुशलसुतुर, संसुकृतल, डलल-नलडक, रलडुलरुतु आ डलषलडलक ललखन धरल डलललल अछल — सलडगुरीक वलवुधुड डुरशुन-संखुडल आ अवधलरणल-वलसुतलर डडुडलत अछल।

अध्याय ९ : मैथिली बाल गजल विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. बाल गजलक मूल साहित्यिक चुनौती की अछि?

- (A) गजलक रदीफ-काफिया-बहरक अनुशासन बचबैत बाल-मनक सहज अनुभव व्यक्त करब
- (B) साहित्यकें समाजसँ अलग राखब
- (C) केवल अनुक्रमांक पूछब
- (D) केवल तुक मिलाएब

२. 'पुरान देहक नव चेहरा' कहबाक आशय बाल गजलमे की बुझाईत अछि?

- (A) गजलकें बालकथा बना देब
- (B) केवल नाम बदलि देब
- (C) परम्परागत गजल-रूपक भीतर बाल-संसारक नवीन भाव आ भाषा आनब
- (D) पुरान गजलकें जस्ताक तस्तै दोहराएब

३. बाल गजल वयस्क गजलसँ मुख्यतः कोन स्तरपर अलग होइत अछि?

- (A) विषय, भाषा, बिम्ब आ संवेदनाक स्तरपर
- (B) गजल-रूप पूर्णतः त्यागि देबामे
- (C) केवल कागजक रंगपर
- (D) केवल पृष्ठ-संख्यापर

४. बाल गजलमे उपदेशात्मकता किएक सीमित राखबाक चाही?

- (A) किएकि बच्चा अर्थ बुझि नहि सकैत
- (B) किएकि नैतिकता असंभव अछि
- (C) किएकि बाल-साहित्य अनुभव, आनंद आ खोजसँ मूल्य-बोध जगबैत अछि
- (D) किएकि गजलमे विचार निषिद्ध अछि

५. गजलमे 'मतला' बाल-पाठक लेल विशेष किएक उपयोगी भऽ सकैत अछि?

- (A) ओ गजल समाप्त करैत अछि
- (B) ओ प्रारम्भहि मे रदीफ-काफियाक ध्वनि-पद्धति स्पष्ट कऽ दैत अछि
- (C) ओ केवल लेखकक परिचय अछि
- (D) ओ छंदक विरोध करैत अछि

६. बाल गजलमे रदीफक सौंदर्य की अछि?

- (A) ओ अर्थहीन पुनरावृत्ति मात्र अछि
- (B) ओ गजलमे नहि होइत
- (C) बार-बार आबि बालकें ध्वनिक प्रतीक्षा आ सहभागिताक आनंद दैत अछि
- (D) ओ केवल संस्कृत शब्दक सूची अछि

७. काफिया बाल-भाषा शिक्षणमे कोन भूमिका निभा सकैत अछि?

- (A) ओ कविता सँ बाहरक वस्तु अछि
- (B) समान ध्वनि-संबंधक माध्यमे शब्द-संवेदना आ श्रवण-रुचि विकसित करैत अछि
- (C) ओ केवल कठिन अरबी-फारसी शब्द अछि
- (D) ओ भाषा-बोध रोकेत अछि

८. बहर अथवा लय बाल गजलमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) लय केवल नाटकक गुण अछि
- (B) लय बाल-साहित्यमे हानिकारक अछि
- (C) लय सँ अर्थ नष्ट होइत अछि
- (D) लय स्मरण, पाठ, गायन आ रस-ग्रहणकें सहज बनबैत अछि

९. 'कोमल करेजक आखर' सन अभिव्यक्ति बाल गजल लेल कोन कसौटी सुझबैत अछि?

- (A) अत्यंत दुरुह पारिभाषिक भाषा चाही
- (B) केवल वयस्क विरह चाही
- (C) भाषा कोमल, आत्मीय, भावपूर्ण आ बाल-हृदयक निकट होएब चाही
- (D) भाषा कठोर उपदेशात्मक होएब चाही

१०. बाल गजलमे बिम्ब कोन प्रकारक प्रभावी होइत अछि?

- (A) बिम्बहीन नारा
- (B) केवल प्रशासकीय शब्द
- (C) ठोस, दृश्य, श्रव्य, खेलमय आ बाल-दैनिक जीवनसँ जुड़ल बिम्ब
- (D) अत्यंत अमूर्त दार्शनिक बिम्ब

११. बाल गजलमे कल्पना आ सूचना बीच सही संबंध की अछि?

- (A) कल्पना पूर्णतः निषिद्ध अछि
- (B) सूचना आ भाषा असम्बद्ध अछि
- (C) सूचना कल्पनाशील अनुभूतिक भीतर स्वाभाविक रूपे आबय
- (D) सूचना-सूचीये कविता अछि

१२. बाल गजलकें नर्सरी राइमसँ अलग करयवला तत्त्व की अछि?

- (A) गजलक शेर-रचना, रदीफ-काफिया आ बहरक विशिष्ट अनुशासन
- (B) केवल छोट वाक्य
- (C) केवल बालक नाम
- (D) केवल चित्रक प्रयोग

१३. बाल गजलमे शेरक स्वतंत्रता बाल-पाठक लेल कोना अनुकूल भऽ सकैत अछि?

- (A) शेरक स्वतंत्रता अर्थहीनता अछि
- (B) हर शेरमे एके वाक्य दोहराएब चाही
- (C) स्वतंत्र शेर बालकें दूर करैत अछि
- (D) प्रत्येक शेर स्वतंत्र छोट अनुभव दैत अछि, मुदा सामूहिक बाल-संसार बनबैत अछि

१४. बाल गजलमे हास्यक स्थान की अछि?

- (A) हास्य सँ बालक पढ़ब छोड़ैत अछि
- (B) हास्य तनाव घटबैत, जिज्ञासा जगबैत आ भाषा-खेल बनबैत अछि
- (C) हास्य गजलमे निषिद्ध अछि
- (D) हास्य सदैव अशिष्ट होइत अछि

१५. बाल गजलमे 'सरल भाषा'क अर्थ की नहि अछि?

- (A) सरलता मतलब छंदहीनता
- (B) सरलता मतलब केवल टूटी भाषा
- (C) सरलता सपाट, अशुद्ध वा कलाहीन भाषा नहि अछि
- (D) सरलता मतलब विचारहीनता

१६. मैथिली बाल गजलक निर्माणमे लोक-जीवनक भूमिका की अछि?

- (A) लोकपद सभ हटाएब चाही
- (B) लोक-जीवन बाल-साहित्यसँ बाहर अछि
- (C) गाम, आँगन, खेत, चिड़ै, खेल, पर्व आ परिवार बाल-संसारक जीवित आधार बनैत अछि
- (D) केवल शहरी अमूर्तन चाही

१७. बाल गजलमे अत्यधिक वयस्क विरह-प्रसंगक खतरा की अछि?

- (A) बच्चा सदैव वयस्क विरह पसिन करैत अछि
- (B) बाल-संवेदनाक स्वाभाविकता दबि जाइत अछि
- (C) बाल गजल तुरन्त श्रेष्ठ भऽ जाइत अछि
- (D) रदीफ स्वतः ठीक भऽ जाइत अछि

१८. बाल गजलमे नैतिक मूल्य केना प्रस्तुत होएब अधिक प्रभावी अछि?

- (A) घटना, बिम्ब, संवाद आ अनुभव द्वारा; प्रत्यक्ष भाषण कम
- (B) केवल आदेश द्वारा
- (C) केवल लम्बा नारा द्वारा
- (D) केवल दंडक डर द्वारा

१९. बाल गजलमे प्रकृति-संबंध किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) प्रकृति केवल वयस्क राजनीति अछि
- (B) प्रकृति बच्चाक लेल नीरस अछि
- (C) प्रकृति बच्चाक जिज्ञासा, रंग, ध्वनि आ संवेदनाक सहज संसार अछि
- (D) प्रकृति गजल-विरोधी अछि

२०. बाल गजलमे मातृभाषा मैथिलीक मूल्य की अछि?

- (A) बच्चा अपन घरेलू भाव, संबोधन आ सांस्कृतिक स्मृति अपन भाषामे बेसी सहज पबैत अछि
- (B) मैथिलीमे बाल-विधा असंभव अछि
- (C) मातृभाषा सीखब बाधा अछि
- (D) बालक लेल भाषा अप्रासंगिक अछि

२१. बाल गजलक अवधारणा पर अनेक लेखकक लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) विधाक चर्चा अनावश्यक
- (B) सभी लेख एके बात दोहराबय लेल
- (C) नव विधागत प्रयोगक सीमा, शिल्प आ पाठक-परिसर पर सामूहिक विमर्श बनैत अछि
- (D) बाल साहित्यकें आलोचना नहि चाही

२२. बाल गजलमे 'बालक' केवल विषय नहि, किएक?

- (A) बालकक विचारक अर्थ नहि
- (B) बालक पाठक, दृष्टि, भाषा, संवेदना आ मूल्य-ग्रहणक केंद्र अछि
- (C) बालक केवल सजावटी शब्द अछि
- (D) बालककें वयस्क पाठकसँ बदलि देब उचित

२३. गजलकें बाल-साहित्य बनाबयमे सबसे पैघ शिल्पगत जोखिम की अछि?

- (A) लेखकक नाम कम होएब
- (B) रूप बचबैत-बचबैत बाल-स्वाभाविकता खो देब अथवा बालपन बचबैत-बचबैत गजल-रूप खो देब
- (C) शीर्षक लम्बा होएब
- (D) कागज छोट होएब

२४. बाल गजलमे प्रश्नवाचक शैली किएक उपयोगी भऽ सकैत अछि?

- (A) प्रश्न कविता नष्ट करैत अछि
- (B) बच्चा प्रश्न नहि करैत
- (C) गजलमे प्रश्न निषिद्ध अछि
- (D) बच्चाक जिज्ञासा, आश्चर्य आ संवादक स्वभावकें व्यक्त करैत अछि

२५. बाल गजलमे ध्वनि-अनुकरणक प्रयोग कोन प्रभाव दैत अछि?

- (A) खेल, श्रवण-आनंद आ जीवंत दृश्य बनबैत अछि
- (B) अर्थ पूर्णतः नष्ट करैत
- (C) साहित्यिकता घटबैत मात्र
- (D) शब्द-संगीत रोकैत

२६. बाल गजलमे सामाजिक चेतना केना आवि सकैत अछि?

- (A) बाल-दृष्टिसँ परिवार, विद्यालय, प्रकृति, असमानता वा स्वच्छता सन अनुभव प्रस्तुत कऽ
- (B) बालक आवाज हटाकऽ
- (C) केवल आँकड़ा देलासँ
- (D) राजनीतिक घोषणापत्र बनि

२७. बाल गजलमे चित्रात्मकताक महत्त्व की अछि?

- (A) चित्र केवल बाहरी सजावट
- (B) चित्रमय पंक्ति बच्चाक मनमे दृश्य रचैत आ स्मरण बढ़बैत अछि
- (C) कविता दृश्य बना नहि सकैत
- (D) चित्रात्मकता व्यर्थ अछि

२८. बाल गजलमे पुनरुक्ति कब कलात्मक बनैत अछि?

- (A) हर पुनरुक्ति गलती अछि
- (B) जखन ओ लय, रदीफ, खेल वा भाव-वृद्धि करैत अछि
- (C) पुनरुक्ति अर्थहीन सजावट
- (D) पुनरुक्ति सदैव पृष्ठ भरबाक साधन

२९. बाल गजलमे 'बालपन'क रक्षा कोन प्रकारे होइत अछि?

- (A) केवल बड़ोंक निराशा दोहराएलासँ
- (B) केवल नाम-सूची लिखलासँ
- (C) चमत्कार-बोध, खेल, सरल संवेदना, करुणा, जिज्ञासा आ आश्चर्य बचबैत
- (D) केवल कठिन दर्शन देलासँ

३०. मैथिली बाल गजलमे पारिवारिक संबोधनक प्रयोग किएक आत्मीय होइत अछि?

- (A) संबोधन केवल नाटकमे होइत
- (B) परिवार बालक लेल अप्रासंगिक
- (C) संबोधन कविता बिगाड़ैत अछि
- (D) माँ, बाबा, दादी, भैया, बहिन सन संबोधन बाल-जीवनक निकट परिवेश खोलैत अछि

३१. बाल गजलमे तुकबंदी मात्र पर्याप्त किएक नहि अछि?

- (A) रदीफ-काफिया अनावश्यक
- (B) तुक अछि तँ कविता पूर्ण
- (C) अर्थक जरूरत नहि
- (D) तुक संग अर्थ, भाव, बिम्ब, लय आ शेरक पूर्णता जरूरी अछि

३२. बाल गजलमे 'गाम' वा स्थानीय स्थल किएक उपयोगी बिम्ब अछि?

- (A) गाम बालक लेल अजनबी रहबाक चाही
- (B) स्थानीयता साहित्यकें संकुचित करैत मात्र
- (C) ओ बालकें अपन भूगोल, स्मृति आ भाषिक संस्कृति सँ जोड़ैत अछि
- (D) स्थल-बोधक कविता सँ कोनो सम्बन्ध नहि

३३. बाल गजलमे विद्यालयक प्रसंग कखन कलात्मक बनैत अछि?

- (A) जखन केवल नियमावली पढ़ाओल जाए
- (B) जखन पाठशाला केवल उपदेश नहि, बच्चाक हँसी, डर, दोस्ती आ खोजक संसार बनैत अछि
- (C) जखन कविता परीक्षा-सूची बनि जाए
- (D) जखन बालकक आवाज नहि हो

३४. बाल गजलमे लघु आकारक लाभ की अछि?

- (A) छोट आकार मतलब कमजोर रचना
- (B) लघुता गजल-विरोधी
- (C) लघुता विचारक अंत
- (D) कम शब्दमे तीव्र प्रभाव, स्मरणीयता आ पाठ-सुगमता

३५. बाल गजलमे कल्पना लोककथासँ कोना जुड़ि सकैत अछि?

- (A) गजलमे कथा-स्मृति नहि आबि सकैत
- (B) लोककथा हटाएब आवश्यक
- (C) कल्पना केवल विज्ञान-विरोध
- (D) परिचित लोक-चरित्र, जादुई दृश्य आ बाल-विश्वासकें गजल-शेरमे रूपांतरित कऽ

३६. बाल गजलमे करुणा किएक जरूरी, मुदा सावधान भाव अछि?

- (A) करुणा सदैव निषिद्ध
- (B) करुणा बच्चाक संवेदना खोलैत अछि, पर अत्यधिक बोझिलता बाल-रस तोड़ि सकैत अछि
- (C) करुणा मतलब भय मात्र
- (D) करुणा गजलमे असंभव

३७. बाल गजलमे संवादात्मकताक लाभ की अछि?

- (A) बालक, प्रकृति, खिलौना वा परिवार संग बातचीत कविता केँ जीवंत बनबैत अछि
- (B) संवाद केवल नाटकमे सम्भव
- (C) संवाद बालकें निष्क्रिय करैत
- (D) संवाद सँ लय समाप्त

३८. बाल गजलमे 'स्वर' कोना जाँचल जाएत?

- (A) स्वरक साहित्यिक अर्थ नहि
- (B) स्वर केवल फॉन्ट अछि
- (C) स्वर केवल गायकक आवाज
- (D) की पंक्ति सचमुच बाल-जिज्ञासा आ बाल-भावसँ बोलैत अछि, कि वयस्क बनावटी आवाजसँ

३९. बाल गजलमे पर्यावरण-चेतना केना कलात्मक बनि सकैत अछि?

- (A) चिड़ै, पेड़, नदी, वर्षा संग बच्चाक आत्मीय संबंध रचि
- (B) प्रकृति-विरोधी नारा देलासँ
- (C) केवल आदेश-पत्र देलासँ
- (D) सभी बिम्ब हटाएलासँ

४०. बाल गजलमे भाषा-शुद्धता आ बोलचाल बीच संतुलन कोना होएब चाही?

- (A) मानकक पूर्ण अस्वीकार
- (B) मानक मैथिली राखैत बाल-प्रसंगानुकूल जीवंत लोकपद प्रयोग करब
- (C) केवल अत्यंत दुरुह भाषा
- (D) केवल असंगत मिश्रित भाषा

४१. बाल गजलमे बालिका-अनुभवक उपस्थिति किएक आवश्यक अछि?

- (A) स्त्री-स्वर बाल-साहित्यमे निषिद्ध
- (B) बालिका-अनुभव अप्रासंगिक
- (C) बाल-संसार आधा नहि, बेटी, बहिन, सहेली, खेल आ स्वप्न सभक आवाज चाही
- (D) केवल बालकक अनुभव पर्याप्त

४२. बाल गजलमे स्मरणीय पंक्ति केना बनैत अछि?

- (A) सटीक बिम्ब, लय, तुक, सरल भाव आ आश्चर्यक मेलसँ
- (B) केवल लम्बा वाक्यसँ
- (C) केवल नाम-सूचीसँ
- (D) केवल कठिन शब्दसँ

४३. बाल गजल पर आलोचना-समीक्षा किएक जरूरी अछि?

- (A) नव प्रयोगक गुण-दोष, विधा-कसौटी आ भविष्य-दिशा स्पष्ट करबाक लेल
- (B) समीक्षा केवल पुरस्कार लेल
- (C) बाल साहित्यकेँ मूल्यांकन नहि चाही
- (D) आलोचना रचना-विरोधी अछि

४४. बाल गजलमे अनुवाद योग्यताक प्रश्न किएक जटिल अछि?

- (A) रदीफ-काफिया, बाल-स्वर, लोकपद आ ध्वनि-खेल दोसरा भाषामे सहज नहि जाइत
- (B) बाल स्वरक अनुवादमे बाधा नहि
- (C) अनुवाद सदैव शब्दशः होइत
- (D) ध्वनि महत्वहीन अछि

४५. बाल गजलमे गीतात्मकता आ गजलत्वक संबंध की अछि?

- (A) गीतात्मकता रहत तँ गजलत्व नहि रहत
- (B) गीत आ गजल पूर्णतः एके अछि
- (C) गजलत्व केवल शीर्षकसँ
- (D) गीतात्मक लय रहि सकैत अछि, मुदा गजलत्व रदीफ-काफिया-बहर आ शेर-संरचनासँ बनैत अछि

४६. बाल गजलमे 'आश्चर्य' किएक मूल सौंदर्य तत्व अछि?

- (A) आश्चर्य सँ भाषा बिगड़ैत
- (B) आश्चर्य वयस्क-विरोधी अछि
- (C) आश्चर्य केवल विज्ञानक विषय
- (D) बालक संसारकेँ पहिल बेर देखैत सन चमत्कार-बोधसँ भरल रहैत अछि

४७. बाल गजलमे बहुविध लेखकक उपस्थिति कोन लाभ दैत अछि?

- (A) लेखक-संख्या मात्र पृष्ठ भरैत
- (B) विधाक अनेक शैली, आवाज, विषय आ प्रयोग सामने आबैत अछि
- (C) विविधता पाठकक नुकसान
- (D) सब रचना एके बना देब

४८. बाल गजलमे 'रचनात्मक अनुशासन' ककरा कहल जाएत?

- (A) छंद/तुकक नियम मानैत भावक सहजता आ बाल-भाषाक स्वाभाविकता राखब
- (B) नियमक पूर्ण अस्वीकार
- (C) भावकेँ नियमसँ कुचलि देब
- (D) केवल नियमक नाम लिखब

४९. बाल गजल विशेषांक लेल ५० सँ बेसी प्रश्न किएक उचित अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद कराबय अछि
- (B) किएकि एतय अवधारणा-लेख, अनेक कवि, बाल-साहित्य विमर्श, समीक्षा, साक्षात्कार आ अन्य विधा सभ अछि
- (C) किएकि प्रश्न दोहराएब लक्ष्य अछि
- (D) किएकि केवल अनुक्रमांक बहुत अछि

५०. बाल गजलमे पाठक-भागीदारी कतेक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) रदीफ, लय, तुक आ सरल दृश्य बच्चाक उच्चारण, गान आ पुनरावृत्तिमे भागीदारी बढ़बैत अछि
- (B) बच्चा कविता बोलि नहि सकैत
- (C) भागीदारी गजल-विरोधी
- (D) पाठक निष्क्रिय रहबाक चाही

५१. बाल गजलमे सर्वोत्तम कसौटी कोन अछि?

- (A) केवल तुकक संख्या
- (B) गजल-शिल्पक सम्मान, बाल-मनक सच्चाई, भाषा-सौंदर्य आ स्मरणीयता
- (C) केवल मुद्रणक आकार
- (D) केवल लेखकक प्रतिष्ठा

उत्तरमाला — अध्याय ९ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) गजलक रदीफ-काफिया-बहरक अनुशासन बचबैत बाल-मनक सहज अनुभव व्यक्त करब — बाल गजल केवल बच्चा-सम्बन्धी विषय नहि; ई गजल-रूपक शिल्प आ बाल-संवेदनाक संतुलित मेल अछि।

२. (C) परम्परागत गजल-रूपक भीतर बाल-संसारक नवीन भाव आ भाषा आनब — गजल पुरान रूप अछि, मुदा बाल गजल ओकरा बच्चाक संवेदना, खेल, जिज्ञासा आ भाषा सँ नव रूप दैत अछि।

३. (A) विषय, भाषा, बिम्ब आ संवेदनाक स्तरपर — बाल गजलमे संरचना गजलसँ जुड़ल रहैत अछि, मुदा कथ्य आ अभिव्यक्ति बाल-पाठकक अनुभवक अनुरूप होइत अछि।

४. (C) किएकि बाल-साहित्य अनुभव, आनंद आ खोजसँ मूल्य-बोध जगबैत अछि — सफल बाल गजल प्रत्यक्ष भाषण नहि, बल्कि दृश्य, लय, खेल आ भावसँ सीख पैदा करैत अछि।

५. (B) ओ प्रारम्भहि मे रदीफ-काफियाक ध्वनि-पद्धति स्पष्ट कऽ दैत अछि — मतला बच्चाक कानमे आवृत्ति आ तुकक नियम स्थापित करैत अछि, जाहिसँ पाठ/गान सुगम होइत अछि।

६. (C) बार-बार आबि बालकें ध्वनिक प्रतीक्षा आ सहभागिताक आनंद दैत अछि — रदीफ लयात्मक प्रत्याशा बनबैत अछि; बच्चा अगिला आवृत्ति अनुमान कऽ पाठमे सहभागी होइत अछि।

७. (B) समान ध्वनि-संबंधक माध्यमे शब्द-संवेदना आ श्रवण-रुचि विकसित करैत अछि — काफिया बच्चाकें ध्वनि, शब्द, तुक, अर्थ-भिन्नता आ काव्यात्मक खेल सिखबैत अछि।

८. (D) लय स्मरण, पाठ, गायन आ रस-ग्रहणकें सहज बनबैत अछि — बाल पाठक श्रवण-आधारित ग्रहण बेसी करैत अछि; लय ओकरा कविता सँ जोड़ैत अछि।

९. (C) भाषा कोमल, आत्मीय, भावपूर्ण आ बाल-हृदयक निकट होएब चाही — बाल गजलमे भावुकता आ कोमलता, नाद आ सरलता, दुनू शिल्पक अंग बनैत अछि।

१०. (C) ठोस, दृश्य, श्रव्य, खेलमय आ बाल-दैनिक जीवनसँ जुड़ल बिम्ब — बच्चा दृश्य, ध्वनि, वस्तु, प्रकृति, खेल आ संबंधक माध्यमे कविता ग्रहण करैत अछि।

११. (C) सूचना कल्पनाशील अनुभूतिक भीतर स्वाभाविक रूपे आबय — बाल-साहित्यमे ज्ञान सेहो कथा, दृश्य, लय आ आनंदक सहारे टिकैत अछि।

१२. (A) गजलक शेर-रचना, रदीफ-काफिया आ बहरक विशिष्ट अनुशासन — नर्सरी राइममे तुक-लय होइत अछि, मुदा गजलमे विशेष शेर-व्यवस्था आ रदीफ-काफियाक पद्धति होइत अछि।

१३. (D) प्रत्येक शेर स्वतंत्र छोट अनुभव दैत अछि, मुदा सामूहिक बाल-संसार बनबैत अछि — छोट स्वतंत्र इकाइ बच्चाक ध्यान-लयक अनुरूप होइत अछि।
१४. (B) हास्य तनाव घटबैत, जिज्ञासा जगबैत आ भाषा-खेल बनबैत अछि — हास्य बाल-संवेदनाक सहज माध्यम अछि; ई तुक, ध्वनि आ उलटबाँसीसँ जुड़ि सकैत अछि।
१५. (C) सरलता सपाट, अशुद्ध वा कलाहीन भाषा नहि अछि — नीक बाल-भाषा सुगम रहैत अछि, मुदा ओकरा मे लय, सटीकता, शुद्धता आ सौंदर्य रहैत अछि।
१६. (C) गाम, आँगन, खेत, चिड़ै, खेल, पर्व आ परिवार बाल-संसारक जीवित आधार बनैत अछि — मैथिली बाल गजल मातृभाषा आ स्थानीय अनुभव सँ अपन आत्मीयता पबैत अछि।
१७. (B) बाल-संवेदनाक स्वाभाविकता दबि जाइत अछि — बाल गजलमे भाव गजल-सुलभ भऽ सकैत अछि, मुदा अनुभव बाल-जगतक अनुरूप रहबाक चाही।
१८. (A) घटना, बिम्ब, संवाद आ अनुभव द्वारा; प्रत्यक्ष भाषण कम — बाल पाठक कहानी, गीत, दृश्य आ खेलसँ मूल्य अनुभव करैत अछि।
१९. (C) प्रकृति बच्चाक जिज्ञासा, रंग, ध्वनि आ संवेदनाक सहज संसार अछि — चिड़ै, फूल, वर्षा, नदी, खेत, आकाश सन बिम्ब बाल-काव्यक आधार बनि सकैत अछि।
२०. (A) बच्चा अपन घरेलू भाव, संबोधन आ सांस्कृतिक स्मृति अपन भाषामे बेसी सहज पबैत अछि — बाल-साहित्य मातृभाषाक प्रेम आ अभिव्यक्ति-कौशल दुनू बढ़बैत अछि।
२१. (C) नव विधागत प्रयोगक सीमा, शिल्प आ पाठक-परिसर पर सामूहिक विमर्श बनैत अछि — बाल गजल स्थापित विधा बनए लेल परिभाषा, उदाहरण, कसौटी आ आलोचना चाहैत अछि।
२२. (B) बालक पाठक, दृष्टि, भाषा, संवेदना आ मूल्य-ग्रहणक केंद्र अछि — बाल-साहित्यक कसौटी बाल-मनक सक्रिय उपस्थिति अछि।
२३. (B) रूप बचबैत-बचबैत बाल-स्वाभाविकता खो देब अथवा बालपन बचबैत-बचबैत गजल-रूप खो देब — बाल गजल संतुलनक विधा अछि—दुनू पक्षमे ढील देलासँ विधागत कमजोरी आबैत अछि।
२४. (D) बच्चाक जिज्ञासा, आश्चर्य आ संवादक स्वभावकें व्यक्त करैत अछि — बाल-मन प्रश्नक माध्यमे संसार बुझैत अछि; कविता एहि स्वभावकें आवाज दैत अछि।
२५. (A) खेल, श्रवण-आनंद आ जीवंत दृश्य बनबैत अछि — चिड़ै, पानी, खेल, बाजा आदिक ध्वनि बच्चाक अनुभूतिक निकट होइत अछि।
२६. (A) बाल-दृष्टिसँ परिवार, विद्यालय, प्रकृति, असमानता वा स्वच्छता सन अनुभव प्रस्तुत कऽ — सामाजिकता बाल-साहित्यमे बच्चाक अनुभव-क्षेत्रक मार्फत प्रभावी होइत अछि।
२७. (B) चित्रमय पंक्ति बच्चाक मनमे दृश्य रचैत आ स्मरण बढ़बैत अछि — बालक दृश्य-संवेदना सँ अर्थ पकड़ैत अछि, तँ चित्रात्मक भाषा आवश्यक अछि।
२८. (B) जखन ओ लय, रदीफ, खेल वा भाव-वृद्धि करैत अछि — सजग पुनरावृत्ति बच्चाक स्मरण आ सहभागिता बढ़बैत अछि।
२९. (C) चमत्कार-बोध, खेल, सरल संवेदना, करुणा, जिज्ञासा आ आश्चर्य बचबैत — बालपन भावनात्मक और कल्पनात्मक लचक अछि, जे बाल गजलक प्राण बनैत अछि।
३०. (D) माँ, बाबा, दादी, भैया, बहिन सन संबोधन बाल-जीवनक निकट परिवेश खोलैत अछि — बाल-साहित्य संबंधक भाषा सँ अपनापन बनबैत अछि।
३१. (D) तुक संग अर्थ, भाव, बिम्ब, लय आ शेरक पूर्णता जरूरी अछि — बाल गजल शिल्पहीन तुकबंदी नहि; ओकर प्रत्येक शेर अर्थपूर्ण होएब चाही।
३२. (C) ओ बालकें अपन भूगोल, स्मृति आ भाषिक संस्कृति सँ जोड़ैत अछि — स्थानीय अनुभवसँ सार्वभौमिक भाव उत्पन्न भऽ सकैत अछि।
३३. (B) जखन पाठशाला केवल उपदेश नहि, बच्चाक हँसी, डर, दोस्ती आ खोजक संसार बनैत अछि — विद्यालय बाल-जीवनक प्रमुख क्षेत्र अछि; साहित्य ओकर भावनात्मक रूप देखबैत अछि।
३४. (D) कम शब्दमे तीव्र प्रभाव, स्मरणीयता आ पाठ-सुगमता — गजल-शेरक संक्षिप्तता बाल-पाठकक ग्रहणक्षमतासँ मेल खा सकैत अछि।
३५. (D) परिचित लोक-चरित्र, जादुई दृश्य आ बाल-विश्वासकें गजल-शेरमे रूपांतरित कऽ — लोक-संसार बाल-कल्पना कें सांस्कृतिक गहराई दैत अछि।
३६. (B) करुणा बच्चाक संवेदना खोलैत अछि, पर अत्यधिक बोझिलता बाल-रस तोड़ि सकैत अछि — बाल-साहित्य दुखक अनुभूति दऽ सकैत अछि, मुदा आशा आ समझक राह सेहो देबाक चाही।
३७. (A) बालक, प्रकृति, खिलौना वा परिवार संग बातचीत कविता कें जीवंत बनबैत अछि — बच्चा संसारसँ बोलि-बतिया कऽ सीखैत अछि; संवाद बाल गजलमे ई प्रक्रिया आनैत अछि।

३८. (D) की पंक्ति सचमुच बाल-जिज्ञासा आ बाल-भावसँ बोलैत अछि, कि वयस्क बनावटी आवाजसँ — बाल-स्वर बनावटी भेल तँ रचना पाठकसँ कटि जाइत अछि।
३९. (A) चिड़ै, पेड़, नदी, वर्षा संग बच्चाक आत्मीय संबंध रचि — बालक प्रकृतिसँ सीधे जुड़ैत अछि; एहि संबंधमे पर्यावरण-संवेदना सहज बनैत अछि।
४०. (B) मानक मैथिली राखैत बाल-प्रसंगानुकूल जीवंत लोकपद प्रयोग करब — बाल गजल पढ़बाक योग्य, शुद्ध, मुदा बोलबाक आनंदयुक्त होएब चाही।
४१. (C) बाल-संसार आधा नहि; बेटी, बहिन, सहेली, खेल आ स्वप्न सभक आवाज चाही — समावेशी बाल गजल विविध बच्चा-अनुभवक प्रतिनिधित्व करैत अछि।
४२. (A) सटीक बिम्ब, लय, तुक, सरल भाव आ आश्चर्यक मेलसँ — स्मरणीयता बाल-काव्यक प्रमुख गुण अछि।
४३. (A) नव प्रयोगक गुण-दोष, विधा-कसौटी आ भविष्य-दिशा स्पष्ट करबाक लेल — विधा केँ विकसित करबा लेल आलोचना अनिवार्य अछि।
४४. (A) रदीफ-काफिया, बाल-स्वर, लोकपद आ ध्वनि-खेल दोसरा भाषामे सहज नहि जाइत — बाल गजल अनुवादमे शिल्प आ बाल-संवेदना दुनू केँ पुनर्सृजित करबाक पड़ैत अछि।
४५. (D) गीतात्मक लय रहि सकैत अछि, मुदा गजलत्व रदीफ-काफिया-बहर आ शेर-संरचनासँ बनैत अछि — बाल गजल मधुर होइतो अपन विधागत अनुशासन राखैत अछि।
४६. (D) बालक संसारकेँ पहिल बेर देखैत सन चमत्कार-बोधसँ भरल रहैत अछि — बाल-कविता जिज्ञासा आ विस्मयक ऊर्जा सँ चलैत अछि।
४७. (B) विधाक अनेक शैली, आवाज, विषय आ प्रयोग सामने आबैत अछि — विशेषांक मे अनेक कविक उपस्थिति बाल गजलक संभावनाकेँ विस्तृत रूपे देखबैत अछि।
४८. (A) छंद/तुकक नियम मानैत भावक सहजता आ बाल-भाषाक स्वाभाविकता राखब — सफल बाल गजलमे अनुशासन आ सहजता विरोधी नहि, सहयोगी होइत अछि।
४९. (B) किएकि एतय अवधारणा-लेख, अनेक कवि, बाल-साहित्य विमर्श, समीक्षा, साक्षात्कार आ अन्य विधा सभ अछि — सामग्रीक व्यापकता प्रश्न-संख्या बढ़बैत अछि; मुदा प्रश्न अवधारणा-आधारित रहबाक चाही।
५०. (A) रदीफ, लय, तुक आ सरल दृश्य बच्चाक उच्चारण, गान आ पुनरावृत्तिमे भागीदारी बढ़बैत अछि — बाल-साहित्य पढ़लासँ बेसी बोलल, सुनल आ दोहराओल जाइत अछि।
५१. (B) गजल-शिल्पक सम्मान, बाल-मनक सच्चाई, भाषा-सौंदर्य आ स्मरणीयता — उच्च बाल गजल रूप, कथ्य, भाषा आ पाठकीय प्रभाव—चारु स्तरपर सफल होइत अछि।

अध्याय १० : भक्ति गजल विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. भक्ति गजलक मूल स्वरूप की अछि?

- (A) साहित्यकें समाजसँ अलग राखब
- (B) गजलक शिल्पमे भक्तिपरक संवेदना, संवाद, विनय आ आत्मसमर्पणक अभिव्यक्ति
- (C) केवल अनुक्रमांक पूछब
- (D) केवल तुक मिलाएब

२. भक्ति गजलकें केवल भजन कहि देब किएक अधूरा बुझाइत अछि?

- (A) किएकि ओकरा मे शेर, रदीफ-काफिया, बहर आ गजल-संरचनाक स्वतंत्र भूमिका अछि
- (B) किएकि गजलमे लय नहि होइत
- (C) किएकि भजनमे भक्ति नहि होइत
- (D) किएकि भक्ति गजलमे ईश्वर नहि होइत

३. भक्ति गजलमे रदीफ कखन 'जप' सन प्रभाव दैत अछि?

- (A) जखन ओ पूर्णतः हटि जाइत अछि
- (B) जखन हर शेर गद्य बनि जाइत अछि
- (C) जखन पुनरावृत्त शब्द भाव-स्मरण आ नाम-स्मरणक लय बनबैत अछि
- (D) जखन ओ अर्थ तोड़ैत अछि

४. भक्ति गजलमे काफिया किएक केवल सजावट नहि अछि?

- (A) ओ भक्ति रोकैत अछि
- (B) ओ केवल शीर्षकमे होइत अछि
- (C) ओ भावक क्रम, ध्वनि-संबंध आ गजलात्मक अनुशासन कायम रखैत अछि
- (D) ओ अर्थहीन तुक मात्र

५. भक्ति गजलमे भक्त आ ईश्वरक संबंध कोना व्यक्त भऽ सकैत अछि?

- (A) केवल शुष्क सूचना रूपमे
- (B) संवाद, पुकार, शिकायत, विनय, आत्मालोचन आ प्रेमक रूपमे
- (C) केवल हास्य-व्यंग्यक निषेध रूपमे
- (D) केवल राजनीतिक आदेश रूपमे

६. भक्ति गजलमे 'विरह' किएक महत्वपूर्ण भाव भऽ सकैत अछि?

- (A) ईश्वरसँ दूरी भक्तिक उत्कंठा आ खोजकें तीव्र बनबैत अछि
- (B) भक्ति मे दूरीक अर्थ नहि
- (C) विरह केवल लौकिक प्रेममे सम्भव
- (D) विरह गजल-विरोधी

७. भक्ति गजलमे भाषा केहन होएब अधिक प्रभावी अछि?

- (A) पूर्णतः असंगत मिश्रित
- (B) अत्यंत दुरुह मात्र
- (C) सिर्फ प्रशासकीय शैली
- (D) सरल, भाव-सघन, लययुक्त, शुद्ध आ आत्मीय

८. भक्ति गजलमे उपदेशात्मकताक खतरा की अछि?

- (A) भक्ति मे भाषा महत्वहीन
- (B) गजलमे अनुभव नहि चाही
- (C) काव्यात्मक अनुभव नारा वा प्रवचनमे बदलि सकैत अछि
- (D) उपदेश सँ सौंदर्य सदा बढ़ैत

९. भक्ति गजलमे आत्मालोचनक भूमिका की अछि?

- (A) भक्तिक अर्थ केवल दूसराक दोष
- (B) आत्मालोचन भक्ति-विरोधी
- (C) आत्मालोचन केवल समीक्षा-विधा
- (D) भक्त अपन दोष, अहंकार, दुर्बलता आ आकांक्षा केँ ईश्वर समक्ष रखैत अछि

१०. भक्ति गजलमे 'नाम-स्मरण'क काव्यात्मक रूप की भऽ सकैत अछि?

- (A) नाम हटाएब
- (B) नामक कोनो ध्वनि-अर्थ नहि
- (C) नामकेँ फुटनोट मात्र बनाब
- (D) रदीफ, आवृत्ति, पुकार आ लयक माध्यमे दिव्य नामक भाव-विस्तार

११. भक्ति गजलमे लौकिक प्रेमक शब्दावली कखन आध्यात्मिक बनि जाइत अछि?

- (A) ई परिवर्तन असंभव
- (B) लौकिक शब्द सदैव वर्जित
- (C) आध्यात्मिकता तुक सँ खत्म
- (D) जखन प्रियतम, दूरी, मिलन, दर्द आदि ईश्वरानुभूतिक प्रतीक बनैत अछि

१२. भक्ति गजलमे रस-दृष्टि सँ कोन जटिलता देखल जा सकैत अछि?

- (A) केवल हास्य रस होइत
- (B) रस-सिद्धान्त गजलपर लागू नहि
- (C) भक्ति मे कोनो रस नहि
- (D) भक्ति रस शांत, करुण, प्रेम, विरह आ आशाक संग मिश्रित भऽ सकैत अछि

१३. मैथिलीमे भक्ति गजल लोकभाषाक परंपरा सँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) भक्ति केवल संस्कृतमे सम्भव
- (B) मैथिलीमे आध्यात्मिकता असंभव
- (C) मातृभाषामे ईश्वर, लोक-विश्वास, गामक भजन-ध्वनि आ आत्मीय संबोधन अभिव्यक्त होइत अछि
- (D) लोकभाषा भक्ति लेल अनुपयुक्त

१४. भक्ति गजलमे संगीतात्मकता किएक मूल तत्व अछि?

- (A) भक्ति भाव श्रवण, गायन, पुनरावृत्ति आ सामूहिक पाठसँ तीव्र होइत अछि
- (B) संगीत भक्ति-विरोधी
- (C) लयक कोनो प्रभाव नहि
- (D) गजल सदैव नीरव गद्य

१५. भक्ति गजलमे शेरक स्वतंत्रता केना काम करैत अछि?

- (A) शेरक स्वतंत्रता गजल समाप्त करैत
- (B) हर शेर अलग विनय, प्रश्न वा अनुभूति दैत, मुदा भक्ति-केंद्रसँ जुड़ल रहैत अछि
- (C) हर शेर अनिवार्यतः कथा-अध्याय
- (D) स्वतंत्रता मतलब असम्बद्धता

१६. भक्ति गजलमे मक्ता वा तखल्लुस किएक अर्थपूर्ण हो सकैत अछि?

- (A) कवि-स्वर हटाएब चाही
- (B) तखल्लुस अर्थहीन गलती
- (C) कवि अपन नाम/स्वर सँ भक्ति-अनुभवकेँ निजी साक्ष्य बनबैत अछि
- (D) मक्ता गजलमे नहि होइत

१७. भक्ति गजलमे सामाजिक चेतना कखन वैध रूपे आवैत अछि?

- (A) दुखक चर्चा अधार्मिक
- (B) भक्ति समाजसँ कटि रहबाक नाम
- (C) सामाजिक प्रश्न सदैव निषिद्ध
- (D) जखन आध्यात्मिकता मनुष्य-दुख, करुणा, न्याय आ लोकहितसँ जुड़ैत अछि

१८. भक्ति गजलमे दार्शनिकता आ भावुकता बीच संतुलन कोना बनैत अछि?

- (A) भावुकता सदैव पर्याप्त
- (B) गहरा विचार भावक सहज लयमे उतरत, न कि शुष्क व्याख्यान बनत
- (C) दार्शनिकता मतलब कविता समाप्त
- (D) विचार आ भाव एक-दोसरक शत्रु

१९. भक्ति गजलमे प्रार्थना आ याचना मे भेद की अछि?

- (A) दुनू पूर्णतः असम्बद्ध
- (B) दुनू केवल गद्य-विषय
- (C) प्रार्थना आत्मिक संवाद हो सकैत अछि; याचना प्रायः विशेष कृपा वा समाधानक मांग
- (D) दुनू गजलमे असंभव

२०. भक्ति गजलमे 'शिकायत' भक्तिभावक विरोध किएक नहि मानल जाए?

- (A) किएकि निकट संबंधमे प्रश्न, पीड़ा आ भरोसा एक संग रहि सकैत अछि
- (B) गजलमे भाव-विविधता नहि
- (C) भक्त कहियो प्रश्न नहि करैत
- (D) शिकायत मतलब अविश्वास मात्र

२१. भक्ति गजलमे प्रतीकक भूमिका की अछि?

- (A) प्रतीक अर्थ रोकैत अछि
- (B) प्रतीक केवल चित्रकला लेल
- (C) दीप, नाव, नदी, पथ, अँधार, प्रभात सन प्रतीक आध्यात्मिक यात्रा व्यक्त करैत अछि
- (D) भक्ति मे केवल शाब्दिक कथन

२२. भक्ति गजलमे काव्यात्मक संक्षिप्तता किएक आवश्यक अछि?

- (A) संक्षिप्तता अर्थहीन
- (B) गजलमे शेरक सीमा नहि
- (C) लम्बा प्रवचन श्रेष्ठ
- (D) शेर कम शब्दमे तीव्र भाव, दर्शन आ लय समेटैत अछि

२३. भक्ति गजलमे लोक-उत्सव, होरी वा कीर्तन-ध्वनि कोन अर्थ जोड़ैत अछि?

- (A) उत्सव भक्ति-विरोधी
- (B) गजलमे सामूहिकता नहुँए
- (C) भक्ति केँ सामुदायिक आनंद, रंग आ लोक-भागीदारीसँ जोड़ैत अछि
- (D) लोक-रंग हटाएब जरूरी

२४. भक्ति गजलमे कठिन पारिभाषिक धर्मशब्दक अति किएक सावधानी माँगैत अछि?

- (A) भावक कोनो अर्थ नहि
- (B) कठिनता सदैव गुण
- (C) शब्दक चयन अप्रासंगिक
- (D) ओ बाल/सामान्य पाठकक भावग्रहण रोकि सकैत अछि

२५. भक्ति गजलमे छंदानुशासन आ भावावेगक संबंध की अछि?

- (A) भावावेग हो तँ शिल्प चाही नहि
- (B) अनुशासन भावावेगकेँ आकार दैत अछि, ओकरा कमजोर नहि करैत
- (C) अनुशासन भावक शत्रु
- (D) छंद केवल गणित अछि

२६. भक्ति गजलमे अनेक कविक उपस्थिति विशेषांकमे कोन लाभ दैत अछि?

- (A) सभी कवि एके स्वर देबाक चाही
- (B) भक्ति-स्वरक विविधता—विनय, प्रेम, करुणा, लोकधुन, दार्शनिकता—देखाइत अछि
- (C) लेखक-संख्या मात्र गणना
- (D) विविधता अर्थहीन

२७. भक्ति गजलमे स्त्री-स्वरक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) स्त्री-स्वर अप्रासंगिक
- (B) भक्ति मे लिंग-अनुभवक अर्थ नहि
- (C) केवल एक स्वर पर्याप्त
- (D) भक्ति-अनुभव केवल पुरुष-केंद्रित नहि; स्त्री संवेदना, पीड़ा आ समर्पणक अलग स्वर रहैत अछि

२८. भक्ति गजलमे 'ईश्वर'क प्रतिमा बहुविध किएक हो सकैत अछि?

- (A) भक्ति मे कल्पना नहि
- (B) ईश्वरक केवल एक चित्र संभव
- (C) प्रतीकक प्रयोग निषिद्ध
- (D) ईश्वर प्रिय, माता-पिता, मित्र, स्वामी, प्रकाश, सत्य वा अन्तःचेतना रूपमे आ सकैत छथि

२९. भक्ति गजलमे करुणा आ आशा केना संतुलित होइत अछि?

- (A) भक्ति केवल उत्सव
- (B) आशा अछि तँ दुःख नहि
- (C) मानवीय दुःख स्वीकारैत, दिव्य सहारा वा आन्तरिक उजासक राह देखबैत
- (D) करुणा अछि तँ आशा नहि

३०. भक्ति गजलमे दुरूह सूफी/दार्शनिक संकेत कखन सफल होइत अछि?

- (A) जखन संकेत मात्र सजावट
- (B) जखन मूल भाव हटि जाए
- (C) जखन संकेत भाव आ शेरक अर्थकेँ गहराई दैत, अस्पष्टता नहि
- (D) जखन पाठक बिल्कुल नहि बुझै

३१. भक्ति गजलमे 'समर्पण' निष्क्रियता किएक नहि अछि?

- (A) समर्पण मतलब सामाजिक पलायन
- (B) समर्पण अहंकार-त्याग आ नैतिक जागरणक सक्रिय अवस्था भऽ सकैत अछि
- (C) समर्पण मतलब सोचब बंद
- (D) समर्पण काव्य-विरोधी

३२. भक्ति गजलमे व्याकरणिक शुद्धताक महत्व किएक अछि?

- (A) अशुद्ध भाषा लय, अर्थ आ भावविश्वक प्रभाव कमजोर करैत अछि
- (B) व्याकरण केवल गद्य लेल
- (C) भक्ति अछि तँ भाषाक जरूरत नहि
- (D) गलती सौंदर्य बनैत अछि सदैव

३३. भक्ति गजलमे श्रोता-पाठकक भूमिका की अछि?

- (A) भक्ति सामूहिक नहि हो सकैत
- (B) गजल केवल निजी नोट
- (C) ओ पुनरावृत्ति, गायन, स्मरण आ भाव-साझेदारीसँ रचना केँ जीवित करैत अछि
- (D) श्रोता अप्रासंगिक

३४. भक्ति गजलमे 'अहंकार' कोन प्रकारक विरोधी तत्त्व रूपे आबि सकैत अछि?

- (A) अहंकारक काव्यसँ सम्बन्ध नहि
- (B) अहंकार भक्ति बढ़बैत अछि
- (C) ईश्वर-निकटता आ आत्मशुद्धिक बाधा रूपे
- (D) अहंकार केवल नाटक-विषय

३५. भक्ति गजलमे लौकिक संसारक वर्णन किएक हटाएबाक वस्तु नहि?

- (A) केवल अमूर्त ईश्वर लिखू
- (B) भक्ति लोकजीवन, परिवार, दुःख, श्रम आ प्रकृति बीचहि अर्थ पबैत अछि
- (C) लोक जीवन असाहित्यिक
- (D) संसारक वर्णन भक्ति-विरोधी

३६. भक्ति गजलमे अनुवादित रचना वा अन्य विधा संग उपस्थिति कोन संकेत दैत अछि?

- (A) अनुवादक भक्ति सँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) अन्य विधा विशेषांक समाप्त करैत
- (C) विविधता सदैव दोष
- (D) विशेषांक भक्ति-गजल केन्द्रित रहितो व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक संवाद खोलैत अछि

३७. भक्ति गजलमे बाल-पाठ्य सामग्रीक समावेश कोन दृष्टि देखबैत अछि?

- (A) बाल सामग्री विशेषांकक दोष
- (B) भक्ति, उत्सव आ भाषा-संस्कार बाल-रसक माध्यमे सेहो पहुँचि सकैत अछि
- (C) होरी वा उत्सव बालक लेल अनुपयुक्त
- (D) बाल साहित्य भक्ति सँ बाहर

३८. भक्ति गजलमे 'दिव्य प्रियतम'क रूपक कोन साहित्यिक परंपरा संग जुड़ैत अछि?

- (A) कुनो परंपरा नहि
- (B) भक्ति, सूफी आ प्रेम-काव्यक साझा विरह-मिलन परंपरा
- (C) केवल प्रशासनिक भाषा
- (D) केवल आधुनिक विज्ञापन

३९. भक्ति गजलमे 'प्रकाश'क प्रतीक किएक बार-बार कारगर होइत अछि?

- (A) प्रतीक सदैव अर्थहीन
- (B) प्रकाश केवल बिजली-विषय
- (C) प्रकाशक भक्ति सँ सम्बन्ध नहि
- (D) ओ ज्ञान, कृपा, आशा, मार्गदर्शन आ अज्ञान-नाशक अर्थ खोलैत अछि

४०. भक्ति गजलमे पाठकक धार्मिक विविधता किएक ध्यानमे राखबाक चाही?

- (A) उच्च कविता संकीर्णता नहि, व्यापक करुणा आ आध्यात्मिक अनुभवक भाषा खोजैत अछि
- (B) सभी पाठक एके मान्यता रखैत
- (C) कविता संवाद नहि करैत
- (D) संकीर्णता सदैव गुण

४१. भक्ति गजलमे भावुकता कखन कमजोरी बनैत अछि?

- (A) शिल्पक जरूरत नहि
- (B) जखन भाव बिम्ब, लय, विचार आ शिल्प बिना केवल रोदन रहि जाए
- (C) भावुकता सदैव पर्याप्त
- (D) विचार भावक शत्रु

४२. भक्ति गजलमे मिथिला-संस्कृतिक संकेत कोन काम करैत अछि?

- (A) स्थानीय देव-स्मृति, पर्व, बोली, नदी, लोकविश्वास सँ भक्ति केँ मैथिली धरातल दैत अछि
- (B) स्थानीयता हटाएब जरूरी
- (C) मिथिला संकेत भक्ति-विरोधी
- (D) संस्कृति कविता रोकैत

४३. भक्ति गजलमे आलोचनात्मक प्रश्न पूछब किएक उचित अछि?

- (A) समीक्षा श्रद्धाहीनता
- (B) भक्ति पर प्रश्न वर्जित
- (C) विधा-संरचना, भाव-गहराई, भाषा, रस आ सामाजिक अर्थक मूल्यांकन लेल
- (D) कविता केवल याद करबाक वस्तु

४४. भक्ति गजलमे 'लय' यदि कमजोर अछि तँ की हानि?

- (A) भक्ति-भावक श्रवणीयता, गेयता आ स्मरणीयता घटि जाइत अछि
- (B) कुनो हानि नहि
- (C) लय गजलमे निषिद्ध
- (D) लय केवल वाद्ययंत्रक काम

४५. भक्ति गजलमे प्रत्येक शेरमे एके बात दोहराएब किएक पर्याप्त नहि?

- (A) विविधता गजल-विरोधी
- (B) दोहरावहि साहित्यक लक्ष्य
- (C) शेरक अर्थ जरूरी नहि
- (D) गजलमे आवृत्ति संग भाव-विस्तार, नवा कोण आ अर्थ-वृद्धि अपेक्षित अछि

४६. भक्ति गजलमे 'दुःख'क प्रस्तुति कखन आध्यात्मिक भऽ सकैत अछि?

- (A) दुःखक भक्ति सँ संबंध नहि
- (B) दुःख हटाएब अनिवार्य
- (C) दुःख मात्र शिकायत
- (D) जखन दुःख आत्मबोध, करुणा, ईश्वर-खोज वा नैतिक रूपान्तरणक कारण बनैत अछि

४७. भक्ति गजल विशेषांकक गतिशील प्रश्न-संख्या किएक ३०-४० धरि सीमित नहि राखल गेल?

- (A) किएकि मुख्य भक्ति-गजल संग अनेक कवि, गद्य, एकांकी, विहानि कथा, समीक्षा, अनुवाद आ बाल सामग्री अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि लेखक-नाम मात्र गणना अछि
- (D) किएकि प्रश्न दोहराएबाक अछि

४८. भक्ति गजलमे उच्च-स्तरीय प्रश्न कोन प्रकारक होएब चाही?

- (A) केवल लिंकक पता
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) केवल अनुक्रमांक
- (D) शिल्प, भक्ति-रस, भाषा, प्रतीक, भाव-संरचना, लोक-संस्कृति आ आलोचनात्मक अर्थ पर

४९. भक्ति गजलमे सर्वोत्तम उपलब्धि की मानल जाएत?

- (A) केवल तुकबंदी
- (B) जखन श्रद्धा, काव्य-शिल्प, लय, भाषा-सौंदर्य आ मानवीय करुणा एक संग आ जाए
- (C) केवल धार्मिक शब्दक संख्या
- (D) केवल कविक नाम

उत्तरमाला — अध्याय १० (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) गजलक शिल्पमे भक्तिपरक संवेदना, संवाद, विनय आ आत्मसमर्पणक अभिव्यक्ति — भक्ति गजल भजन मात्र नहि; ई गजल-रूपक अनुशासनमे भक्त-हृदयक काव्यात्मक आवाज अछि।
२. (A) किएकि ओकरा मे शेर, रदीफ-काफिया, बहर आ गजल-संरचनाक स्वतंत्र भूमिका अछि — भक्ति भाव साझा होइतो विधागत रूप भक्ति गजलकें विशिष्ट बनबैत अछि।
३. (C) जखन पुनरावृत्त शब्द भाव-स्मरण आ नाम-स्मरणक लय बनबैत अछि — रदीफक आवृत्ति भक्ति-काव्यक स्मरण, पुकार आ ध्यानक अनुभूति जगा सकैत अछि।
४. (C) ओ भावक क्रम, ध्वनि-संबंध आ गजलात्मक अनुशासन कायम रखैत अछि — काफिया शेरसभ कें गजल-परंपरासँ बाँधि रखैत अछि।
५. (B) संवाद, पुकार, शिकायत, विनय, आत्मालोचन आ प्रेमक रूपमे — भक्ति साहित्यमे भक्त-ईश्वर संबंध बहुरंगी होइत अछि—समर्पण संग प्रश्न सेहो आबि सकैत अछि।
६. (A) ईश्वरसँ दूरी भक्तिक उत्कंठा आ खोजकें तीव्र बनबैत अछि — सूफी आ भक्तिक अनेक परंपरामे विरह आध्यात्मिक आकांक्षाक रूप लैत अछि।
७. (D) सरल, भाव-सघन, लययुक्त, शुद्ध आ आत्मीय — भक्ति भाव पाठक/श्रोता धरि पहुँचे लेल भाषा सहज आ ऊर्जस्वित होएब चाही।
८. (C) काव्यात्मक अनुभव नारा वा प्रवचनमे बदलि सकैत अछि — सफल भक्ति गजल भावक अनुभूति दैत अछि, केवल आदेश नहि।
९. (D) भक्त अपन दोष, अहंकार, दुर्बलता आ आकांक्षा कें ईश्वर समक्ष रखैत अछि — भक्ति काव्य में विनय आ आत्म-परीक्षण प्रमुख तत्त्व अछि।
१०. (D) रदीफ, आवृत्ति, पुकार आ लयक माध्यमे दिव्य नामक भाव-विस्तार — नाम-स्मरण भक्ति-संवेदना कें ध्वनि, स्मृति आ श्रद्धासँ जोड़ैत अछि।
११. (D) जखन प्रियतम, दूरी, मिलन, दर्द आदि ईश्वरानुभूतिक प्रतीक बनैत अछि — गजल-परंपरामे प्रेमक भाषा लौकिक आ अलौकिक दुनू अर्थ-क्षेत्र खोलि सकैत अछि।
१२. (D) भक्ति रस शांत, करुण, प्रेम, विरह आ आशाक संग मिश्रित भऽ सकैत अछि — भक्ति काव्य भाव-संयोजनक विधा अछि; एकल भावक बंद कोठरी नहि।
१३. (C) मातृभाषामे ईश्वर, लोक-विश्वास, गामक भजन-ध्वनि आ आत्मीय संबोधन अभिव्यक्त होइत अछि — लोकभाषा भक्ति कें जन-संवेदना आ सामूहिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।
१४. (A) भक्ति भाव श्रवण, गायन, पुनरावृत्ति आ सामूहिक पाठसँ तीव्र होइत अछि — गजल-लय आ भक्ति-गानक प्रवृत्ति एक-दोसरकें बल दे सकैत अछि।
१५. (B) हर शेर अलग विनय, प्रश्न वा अनुभूति दैत, मुदा भक्ति-केंद्रसँ जुड़ल रहैत अछि — गजल एक-एक शेरमे पूर्ण अनुभव देबाक क्षमता रखैत अछि।
१६. (C) कवि अपन नाम/स्वर सँ भक्ति-अनुभवकें निजी साक्ष्य बनबैत अछि — मक्ता कविक आत्म-स्थिति आ ईश्वरसँ संबंधक हस्ताक्षर बनि सकैत अछि।
१७. (D) जखन आध्यात्मिकता मनुष्य-दुख, करुणा, न्याय आ लोकहितसँ जुड़ैत अछि — भक्ति अनेक बेर करुणा आ लोकमंगलक मार्ग खोलैत अछि।
१८. (B) गहरा विचार भावक सहज लयमे उतरत, न कि शुष्क व्याख्यान बनत — उच्च भक्ति गजल विचार आ अनुभूति दुनू कें सम्हारैत अछि।
१९. (C) प्रार्थना आत्मिक संवाद हो सकैत अछि; याचना प्रायः विशेष कृपा वा समाधानक मांग — भक्ति गजल दुनू रूपकें काव्यात्मक बना सकैत अछि।
२०. (A) किएकि निकट संबंधमे प्रश्न, पीड़ा आ भरोसा एक संग रहि सकैत अछि — कई भक्त परंपरासँ ईश्वर संग संवादमे शिकायत सेहो प्रेमक रूप बनैत अछि।
२१. (C) दीप, नाव, नदी, पथ, अँधार, प्रभात सन प्रतीक आध्यात्मिक यात्रा व्यक्त करैत अछि — प्रतीक भक्ति भावक अमूर्त गहराई कें दृश्य बनबैत अछि।
२२. (D) शेर कम शब्दमे तीव्र भाव, दर्शन आ लय समेटैत अछि — गजल-शेरक प्रकृति सूक्तिपरक आ तीक्ष्ण होइत अछि।
२३. (C) भक्ति कें सामुदायिक आनंद, रंग आ लोक-भागीदारीसँ जोड़ैत अछि — भक्ति केवल एकान्त साधना नहि, लोक-उत्सव आ सामूहिकता सेहो अछि।

२४. (D) ओ बाल/सामान्य पाठकक भावग्रहण रोकि सकैत अछि — भक्ति काव्य हृदयगम्य भाषा चाहैत अछि।
२५. (B) अनुशासन भावावेगकें आकार दैत अछि, ओकरा कमजोर नहि करैत — गजल-रूप भाव कें धार आ स्मरणीयता दैत अछि।
२६. (B) भक्ति-स्वरक विविधता—विनय, प्रेम, करुणा, लोकधुन, दार्शनिकता—देखाइत अछि — विशेषांक बहु-स्वरक माध्यमे विधाक विस्तार देखबैत अछि।
२७. (D) भक्ति-अनुभव केवल पुरुष-केंद्रित नहि; स्त्री संवेदना, पीड़ा आ समर्पणक अलग स्वर रहैत अछि — भक्ति साहित्यमे स्त्री-अनुभव गहराई आ वैविध्य जोड़ैत अछि।
२८. (D) ईश्वर प्रिय, माता-पिता, मित्र, स्वामी, प्रकाश, सत्य वा अन्तःचेतना रूपमे आ सकैत छथि — काव्य ईश्वरानुभूतिक अनेक प्रतीकात्मक रूप रचि सकैत अछि।
२९. (C) मानवीय दुःख स्वीकारैत, दिव्य सहारा वा आन्तरिक उजासक राह देखबैत — भक्ति गजल दुःखक बीच आशाक काव्य हो सकैत अछि।
३०. (C) जखन संकेत भाव आ शेरक अर्थकें गहराई दैत, अस्पष्टता नहि — गूढ़ता उपयोगी अछि जँ ओ अर्थ-विस्तार करै, अर्थ-रुकावट नहि।
३१. (B) समर्पण अहंकार-त्याग आ नैतिक जागरणक सक्रिय अवस्था भऽ सकैत अछि — भक्ति समर्पण अनेक बेर आत्म-संशोधन आ लोकमंगलक प्रेरणा दैत अछि।
३२. (A) अशुद्ध भाषा लय, अर्थ आ भावविश्वक प्रभाव कमजोर करैत अछि — भक्ति-भावक प्रामाणिकता भाषा-संयमसँ बल पबैत अछि।
३३. (C) ओ पुनरावृत्ति, गायन, स्मरण आ भाव-साझेदारीसँ रचना कें जीवित करैत अछि — भक्ति गजल सुनबाक आ गाबक विधा सेहो बनि सकैत अछि।
३४. (C) ईश्वर-निकटता आ आत्मशुद्धिक बाधा रूपे — भक्ति परंपरामे अहंकार-त्याग आध्यात्मिक यात्रा क मुख्य चरण मानल जाइत अछि।
३५. (B) भक्ति लोकजीवन, परिवार, दुःख, श्रम आ प्रकृति बीचहि अर्थ पबैत अछि — भक्ति काव्य आध्यात्मिकता कें जीवित जीवनसँ जोड़ैत अछि।
३६. (D) विशेषांक भक्ति-गजल केंद्रित रहितो व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक संवाद खोलैत अछि — पत्रिकाक विशेषांक प्रायः मुख्य विषयक संग सहवर्ती साहित्यिक सामग्री सेहो समेटैत अछि।
३७. (B) भक्ति, उत्सव आ भाषा-संस्कार बाल-रसक माध्यमे सेहो पहुँचि सकैत अछि — भक्ति-संवेदना पीढ़ी-दर-पीढ़ी गीत, पर्व आ खेलसँ पहुँचैत अछि।
३८. (B) भक्ति, सूफी आ प्रेम-काव्यक साझा विरह-मिलन परंपरा — प्रियतमक आध्यात्मिक रूप भक्ति आ गजल दुनूक सेतु बनबैत अछि।
३९. (D) ओ ज्ञान, कृपा, आशा, मार्गदर्शन आ अज्ञान-नाशक अर्थ खोलैत अछि — प्रकाश भक्ति साहित्यक सार्वभौमिक प्रतीक सभमे एक अछि।
४०. (A) उच्च कविता संकीर्णता नहि, व्यापक करुणा आ आध्यात्मिक अनुभवक भाषा खोजैत अछि — भक्ति गजल आस्था व्यक्त करैत अछि, मुदा साहित्यिक रूप ओकरा संवादक्षम बनबैत अछि।
४१. (B) जखन भाव बिम्ब, लय, विचार आ शिल्प बिना केवल रोदन रहि जाए — कविता मे भाव कें कलात्मक रूप चाही।
४२. (A) स्थानीय देव-स्मृति, पर्व, बोली, नदी, लोकविश्वास सँ भक्ति कें मैथिली धरातल दैत अछि — मैथिली भक्ति गजल अपन क्षेत्रीय आत्मासँ विशिष्ट बनैत अछि।
४३. (C) विधा-संरचना, भाव-गहराई, भाषा, रस आ सामाजिक अर्थक मूल्यांकन लेल — साहित्यिक अध्ययन श्रद्धा आ आलोचना दुनूक संतुलन माँगैत अछि।
४४. (A) भक्ति-भावक श्रवणीयता, गेयता आ स्मरणीयता घटि जाइत अछि — गजल आ भक्ति दुनूक प्रभाव ध्वनि-संरचनासँ गहिर रूपे जुड़ल अछि।
४५. (D) गजलमे आवृत्ति संग भाव-विस्तार, नवा कोण आ अर्थ-वृद्धि अपेक्षित अछि — रदीफ दोहराइत अछि, मुदा शेरक भाव प्रत्येक बेर नव आयाम खोलबाक चाही।
४६. (D) जखन दुःख आत्मबोध, करुणा, ईश्वर-खोज वा नैतिक रूपान्तरणक कारण बनैत अछि — भक्ति साहित्य दुःखकें अर्थहीन नहि, रूपान्तरकारी अनुभव बना सकैत अछि।
४७. (A) किएकि मुख्य भक्ति-गजल संग अनेक कवि, गद्य, एकांकी, विहनि कथा, समीक्षा, अनुवाद आ बाल सामग्री अछि — सामग्री-विस्तार प्रश्न-संख्या बढ़बैत अछि, मुदा प्रश्न अवधारणा-आधारित रहबाक चाही।
४८. (D) शिल्प, भक्ति-रस, भाषा, प्रतीक, भाव-संरचना, लोक-संस्कृति आ आलोचनात्मक अर्थ पर — उच्च-स्तरीय क्विज समझ, व्याख्या आ विधा-बोध जाँचैत अछि।
४९. (B) जखन श्रद्धा, काव्य-शिल्प, लय, भाषा-सौंदर्य आ मानवीय करुणा एक संग आ जाए — सफल भक्ति गजल रूप आ भावक समन्वय अछि।

अध्याय ११ : गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांकक केन्द्र-बिंदु की अछि?

- (A) कविक नाम गिनब मात्र
- (B) केवल प्रशंसात्मक वाक्य लिखब
- (C) मैथिली गजलक भाषा, शिल्प, व्याकरण, दोष-गुण आ भाव-गहराईक विवेकपूर्ण परीक्षण
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या देखब

२. संपादकीय दृष्टिसँ गजलक समीक्षा मे सभसँ पहिने की देखबाक चाही?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या देखब
- (B) कविक नाम गिनब मात्र
- (C) केवल प्रशंसात्मक वाक्य लिखब
- (D) गजलक भाषा मैथिली-संस्कार, स्वाभाविकता आ शब्दचयनक कसौटी पर खड़ी अछि कि नहि

३. गजलमे 'स्वतंत्रता'क नामपर हिन्दी-प्रभुत्व किएक प्रश्न बनैत अछि?

- (A) किएकि केवल कठिन शब्द चाही
- (B) किएकि हिन्दी शब्द सदैव निषिद्ध
- (C) किएकि भाषा-स्वाधीनता मातृभाषाक स्वभाव बचबैत, अनावश्यक मिश्रण नहि बढ़बैत अछि
- (D) किएकि गजलमे भाषा जरूरी नहि

४. गजल-व्याकरण कहला पर मुख्यतः कोन तत्त्व बुझबाक चाही?

- (A) केवल कथा-सार
- (B) केवल शीर्षक
- (C) केवल कविक परिचय
- (D) रदीफ, काफिया आ बहरक अनुशासन

५. रदीफक समीक्षा किएक जरूरी अछि?

- (A) ओ कविक उपनाम
- (B) ओ गजलमे निषिद्ध
- (C) ओ शेर-शेरमे ध्वनि-पुनरावृत्ति आ भाव-सूत्रक कार्य करैत अछि
- (D) ओ केवल सजावटी विराम

६. काफियाक आलोचनात्मक परीक्षण की देखैत अछि?

- (A) कागजक रंग
- (B) लेखक-सूची
- (C) कविक जीवन-वर्ष
- (D) रदीफसँ पहिने ध्वनि-साम्य सही, स्वाभाविक आ अर्थपूर्ण अछि कि नहि

७. बहरक उपेक्षा भेलासँ गजलमे कोन मुख्य हानि होइत अछि?

- (A) लय, संतुलन आ गजलत्व कमजोर भऽ जाइत अछि
- (B) भाषा अपने सुधरि जाइत
- (C) प्रकाशन रुकि जाइत
- (D) शीर्षक बदलि जाइत

८. संपादकीय क्रममे भाषा आ व्याकरणक बाद सामान्य गजल-दोष देखबाक अर्थ की अछि?

- (A) कविक जाति जानब
- (B) पृष्ठ संख्या मिलान
- (C) शिल्पगत कमजोरी, असंगति, कृत्रिमता आ अनावश्यक दोहरावक पहचान
- (D) समीक्षा रोकि देब

९. गजल समीक्षा में भावनाओं अंतर्गत देखना सुझावक अर्थ की अछि?

- (A) भावना मात्र पर्याप्त अछि
- (B) व्याकरणक जरूरत नहि
- (C) शिल्पक आधार देखाक बाद भाव-संवेदनाक प्रामाणिकता परखब
- (D) भावना अप्रासंगिक अछि

१०. 'काव्य कागज पर लिखल शब्द मात्र नहि' — एहि बातक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल मौखिक पाठ हो
- (B) गजलमे जीवनक अर्थ नहि
- (C) कविता लिखल नहि जाए
- (D) रचना जीवनक कर्म, अनुभव आ नैतिक संवेदनासँ अनुप्राणित होएब चाही

११. प्रतिबद्ध साहित्यकारक गजल समीक्षा में 'प्रतिबद्धता'क कसौटी की बनैत अछि?

- (A) केवल आत्मप्रशंसा
- (B) केवल राजनीतिक नारा
- (C) समाज, भाषा, पाठक आ शिल्प—चारू प्रति जिम्मेदारी
- (D) कुनो अनुशासन नहि

१२. 'अप्रतिबद्ध गजल'क आलोचना कखन उचित होइत अछि?

- (A) जखन रचना जीवन-सरोकार, भाषा-संयम वा शिल्प-ईमानदारीसँ खाली रहि जाए
- (B) जखन पृष्ठ कम हो
- (C) जखन कविक नाम अज्ञात हो
- (D) जखन रदीफ अछि

१३. गजल-संग्रहक समीक्षा में 'गेटअप' आ छपाई पर ध्यान देब पर्याप्त किएक नहि?

- (A) किएकि पाठक पुस्तक नहि देखैत
- (B) किएकि बाह्य रूपसँ अधिक महत्वपूर्ण भाषा, शिल्प, बहर, कथ्य आ प्रभाव अछि
- (C) किएकि छपाई सदैव गलत
- (D) किएकि गजल मौखिक मात्र

१४. मैथिली गजलक नवजागरण कहबा योग्य पक्ष की अछि?

- (A) केवल कवि-संख्या
- (B) केवल पुरस्कार
- (C) नव पीढ़ीक सजग गजलकार, गजलशास्त्र, चर्चा-मंच आ शिल्प-बोधक विकास
- (D) केवल इंटरनेटक नाम

१५. 'फराक गजलशास्त्र' भेटबाक अर्थ की अछि?

- (A) गजलकें समाप्त करब
- (B) समीक्षा रोकि देब
- (C) केवल अनुवाद करब
- (D) मैथिलीमे गजल, रुबाइ, कता, नात आदि लेल व्याकरणिक पृष्ठभूमि विकसित होएब

१६. इंटरनेट आ ब्लॉगक भूमिका मैथिली गजलमे कोना महत्वपूर्ण भेल?

- (A) ओ गजलशास्त्र, बहस, प्रशिक्षण आ रचनाक व्यापक प्रसारक मंच बनल
- (B) ओ मुद्रित पाठकें नष्ट कएलक
- (C) ओ केवल मनोरंजन रहल
- (D) ओ शिल्पसँ असंबद्ध रहल

१७. मैथिली गजलक इतिहासमे जीवन झाक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) गजल-विरोध सिद्ध करबाक लेल
- (B) मंच सज्जाक लेल
- (C) आरंभिक मैथिली गजल-प्रयासक ऐतिहासिक सूत्र बुझबाक लेल
- (D) केवल नाम-स्मरण लेल

१८. फारसी प्रभावक चर्चा मैथिली गजल आलोचनामे किएक अबैत अछि?

- (A) सभी गजल फारसीमे लिखबाक लेल
- (B) मैथिलीकेँ फारसी घोषित करबाक लेल
- (C) भाषा बदलि देबाक लेल
- (D) किएकि गजल-विधाक आरंभिक शब्द-शिल्प आ सांस्कृतिक सम्पर्क बुझबाक लेल ई प्रसंग उपयोगी अछि

१९. 'गीतल' बनाम गजल विवादक मुख्य आलोचनात्मक प्रश्न की अछि?

- (A) नाम बदललासँ सभ सिद्ध
- (B) रचना गजल-शास्त्रीय कसौटी पूरा करैत अछि कि केवल गीतात्मक रूपमे रहि जाइत अछि
- (C) गजलमे लय नहि
- (D) गीत सदैव हीन

२०. पुरान गजलकारक त्रुटि पर नव आलोचकक दृष्टि कोना होएबाक चाही?

- (A) केवल अनुक्रमणिका
- (B) अंध-प्रशंसा
- (C) ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध गजलशास्त्र आ रचनाक सामर्थ्य—तीनू देखबाक चाही
- (D) पूर्ण नकार

२१. गजल-समीक्षा मे कठोरता कखन रचनात्मक बनैत अछि?

- (A) जखन दोष चिन्हित करैत समाधान, दिशा आ कसौटी सेहो देलक जाए
- (B) जखन केवल अपमान हो
- (C) जखन लेखकक परिचय हटाए
- (D) जखन पाठक डरि जाए

२२. 'बहुत किछु बुझबैए : कियो बूझि नहि सकल हमरा' सन शीर्षक समीक्षा-दृष्टि सँ की खोलैत अछि?

- (A) गजलक अर्थ-स्तर, अस्पष्टता, संप्रेषण आ पाठकीय ग्रहणक प्रश्न
- (B) केवल छपाईक दोष
- (C) केवल कविक पता
- (D) कुनो अर्थ नहि

२३. गजल समीक्षा मे 'डाह' आ 'प्रेम'क विवेचन कोन बड़ प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) समीक्षा मे संबंध नहिये
- (B) प्रेम शिल्प समाप्त करैत
- (C) डाह श्रेष्ठ आलोचना अछि
- (D) रचनात्मक उन्नति प्रेम, उदारता आ साहित्यिक संवादसँ सम्भव अछि, ईर्ष्यासँ नहि

२४. मैथिली गजल आलोचना मे 'नवतूर' साहित्यकारक भूमिका की अछि?

- (A) समीक्षा-विरोध
- (B) केवल पुरानक नकल
- (C) पूर्वपरंपरा पर पुनर्विचार, शास्त्र-निर्माण आ नव कविक प्रशिक्षण
- (D) केवल पृष्ठ सज्जा

२५. आरंभिक गजलमे अरबी बहर-सदृश अनुशासनक उल्लेख किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) मैथिलीमे बहर असंभव
- (B) एहि सँ देखाइत अछि जे मैथिली गजल प्रारंभहि सँ शिल्प-नियमक निकट रहल
- (C) इतिहास असंगत
- (D) गजल मात्र गीत

२६. 'गजलक नव-विधान' स्वीकार करबासँ इनकार किएक समस्या बनैत अछि?

- (A) किएकि विधाक विकास लेल शास्त्रीय कसौटी आ संवाद स्वीकार करब जरूरी अछि
- (B) किएकि पुरान कविता मिटि जाए
- (C) किएकि लेखक बदलि जाए
- (D) किएकि पाठक कम हो

२७. गजलमे भाव उत्तम होइतहुँ रचना 'निंघेस' किएक सिद्ध भऽ सकैत अछि?

- (A) जँ भाषा मैथिली हो
- (B) जँ शिल्प, बहर, रदीफ-काफिया वा गजलत्व टूटि जाए
- (C) जँ कवि प्रसिद्ध हो
- (D) जँ भाव अधिक हो

२८. समालोचना आ समीक्षा मे सूक्ष्म भेद कोना बुझल जा सकैत अछि?

- (A) दुनू पृष्ठ संख्या
- (B) दुनू केवल निंदा
- (C) दुनू असाहित्यिक
- (D) समीक्षा तात्कालिक मूल्यांकन दैत, समालोचना गहिर सिद्धान्तात्मक विश्लेषण धरि पहुँचैत अछि

२९. गजल-समीक्षा मे उद्धरणक उपयोग कखन सार्थक होइत अछि?

- (A) जखन उद्धरण सँ शिल्प, भाव वा दोष स्पष्ट हो
- (B) जखन संदर्भ हटि जाए
- (C) जखन उद्धरण मात्र सजावट
- (D) जखन पूरा पाठ नकल हो

३०. गजल समीक्षा मे 'भाषापाक' दृष्टि किएक जरूरी अछि?

- (A) व्याकरण सदैव बोझ
- (B) मानक, स्वच्छ, स्वाभाविक मैथिली गजलक संप्रेषण आ गरिमा बढ़बैत अछि
- (C) भाषा अप्रासंगिक
- (D) मानक भाषा गजल रोकैत

३१. गजलमे देशज शब्दक प्रयोग कखन सफल मानल जाए?

- (A) जखन ओ अर्थ रोकि दे
- (B) जखन शिल्प तोड़ि दे
- (C) जखन ओ भाव, ध्वनि आ सांस्कृतिक धरातल केँ स्वाभाविक रूपे समृद्ध करै
- (D) जखन केवल दिखावा हो

३२. गजल समीक्षा मे 'कथ्य'क परीक्षण की देखैत अछि?

- (A) शेरक भाव-विषय नवीन, सघन, जीवन-सापेक्ष आ संक्षिप्त अछि कि नहि
- (B) कविक हस्ताक्षर
- (C) फॉन्ट
- (D) कागजक मूल्य

३३. कमजोर गजलमे सामान्यतः कोन दोष देखाइत अछि?

- (A) अर्थ बहुत स्पष्ट
- (B) मैथिली शब्द अधिक
- (C) रदीफ उपस्थित
- (D) तुकबंदी त अछि, मुदा भाव-सघनता, शिल्प-संतुलन आ भाषा-संयम नहि

३४. गजल समीक्षा मे 'शेरक स्वतंत्रता' केना परखल जाए?

- (A) हर शेर पूर्णतः असंबद्ध
- (B) प्रत्येक शेर अपन अर्थपूर्ण इकाई हो, मुदा रदीफ-काफिया-लय सँ समग्र गजलसँ जुड़ल हो
- (C) हर शेर कथा-अध्याय
- (D) शेरक अर्थ जरूरी नहि

३५. गजलमे सामाजिक आलोचना कखन काव्यात्मक बनैत अछि?

- (A) जखन पाठकक उपदेश हो
- (B) जखन विचार प्रतीक, बिम्ब, लय आ सूक्ति-सघनता मे ढलि जाए
- (C) जखन केवल भाषण हो
- (D) जखन तुक हटि जाए

३६. 'आजाद गजल'क समीक्षा मे मुख्य सावधानी की अछि?

- (A) कुनो कसौटी नहि
- (B) स्वतंत्रता आ विधा-विघटन बीच अंतर साफ करब
- (C) गजल शब्द हटाएब
- (D) नामे पर्याप्त

३७. गजल आलोचना मे पूर्वाग्रहक सबसे बड़ा खतरा की अछि?

- (A) शिल्प देखब
- (B) भाषा देखब
- (C) रचनाक बदला व्यक्ति, गुट वा निजी संबंधक आधार पर निर्णय
- (D) संदर्भ देखब

३८. गजल संग्रह पर समीक्षा लिखैत काल पाठकीय उपयोगिता की होएबाक चाही?

- (A) पाठक केँ बुझा देब जे संग्रहक सामर्थ्य, सीमा आ गजल-दृष्टि कोन अछि
- (B) केवल आवरणक वर्णन
- (C) केवल खरीद सूचना
- (D) केवल लेखक प्रशंसा

३९. मैथिली गजलमे 'लोक'क उपस्थिति की संकेत करैत अछि?

- (A) गजल केवल दरबारी
- (B) भाषा, मुहावरा, सामाजिक अनुभव आ मिथिला-संस्कार गजलक भीतर आबि रहल अछि
- (C) लोकभाषा गजल-विरोधी
- (D) लोक अनुभव असाहित्यिक

४०. गजल समालोचना मे 'इतिहास' आ 'वर्तमान'क संगति किएक चाही?

- (A) समीक्षा कालहीन
- (B) इतिहास सदैव बाधा
- (C) वर्तमान अप्रासंगिक
- (D) इतिहास बिना वर्तमान प्रवृत्तिक मूल्यांकन अधूरा रहैत अछि

४१. गजल आलोचना मे 'अनचिन्हार युग'क उल्लेख कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) केवल नामक भ्रम
- (B) गजल-विरोधी आंदोलन
- (C) केवल अज्ञात काल
- (D) ब्लॉग/नवमाध्यम द्वारा गजल-शास्त्र, बहस आ नव लेखनक सक्रिय चरण

४२. गजल लेखनमे प्रशिक्षणक आवश्यकता किएक रेखांकित होइत अछि?

- (A) प्रशिक्षण रचना रोकैत
- (B) शिल्प जरूरी नहि
- (C) किएकि गजल स्वाभाविक भाव संग कठिन शिल्प-अनुशासन मांगैत अछि
- (D) कविता सिखल नहि जा सकैत

४३. समीक्षा मे 'सामान्य गजल दोष' बताबि देब किएक उपयोगी अछि?

- (A) दोष बतब आलोचना नहि
- (B) नव रचनाकारकेँ पुनरावृत्त त्रुटिसँ बचबाक मार्ग भेटैत अछि
- (C) सभी गजल समान
- (D) दोष छिपेब श्रेष्ठ

४४. गजलमे 'भावना'क आलोचना कखन कएल जाए?

- (A) जखन भाषा स्वाभाविक हो
- (B) जखन बहर सही हो
- (C) जखन भाव सघन हो
- (D) जखन भावना कृत्रिम, उधार, अतिनाटकीय वा शिल्पहीन हो

४५. समीक्षकक भाषा कोना होएबाक चाही?

- (A) अस्पष्ट प्रशंसा
- (B) स्पष्ट, प्रमाणसंगत, मर्यादित आ साहित्यिक
- (C) केवल उपहास
- (D) व्यक्तिगत आक्रामक

४६. गजल समीक्षा मे 'मौलिकता'क अर्थ की अछि?

- (A) परंपरा पूर्ण नकार
- (B) उधार भाव वा घिसल प्रतीकक बजाय निजी अनुभवक सघन काव्यात्मक रूप
- (C) छंद तोड़ब मात्र
- (D) अर्थहीन कठिनता

४७. रदीफ-काफिया सही होइतहुँ गजल कमजोर किएक भऽ सकैत अछि?

- (A) जँ शेरमे विचार, चित्र, भाव-संक्षेप वा काव्यात्मक चमक नहि हो
- (B) किएकि रदीफ निषिद्ध
- (C) किएकि सही शिल्प दोष अछि
- (D) किएकि काफिया अनावश्यक

४८. गजलमे 'सूक्ति' गुण कखन उत्पन्न होइत अछि?

- (A) जखन शेर लम्बा हो
- (B) जखन अर्थ बिखरि जाए
- (C) जखन तुक मात्र रहे
- (D) जखन शेर कम शब्दमे व्यापक अनुभव वा विचारक तीक्ष्ण रूप दे

४९. गजल आलोचना मे मिथिला-समाजक प्रश्न किएक प्रासंगिक अछि?

- (A) समाजक प्रश्न गद्य लेल
- (B) भाषा आ साहित्य समाजक दुःख, संघर्ष, प्रेम, राजनीति आ संस्कारसँ अलग नहि
- (C) गजल समाज-विरोधी विधा
- (D) साहित्य केवल निजी खेल

५०. गजल-समीक्षा विशेषांक मे अनेक समीक्षकक उपस्थिति कोन लाभ दैत अछि?

- (A) एक लेखक पर्याप्त
- (B) सब एके बात दोहराबै
- (C) विविधता दोष
- (D) एकहि विधा पर बहु-दृष्टि, बहु-कसौटी आ आलोचनात्मक संवाद संभव होइत अछि

५१. गजल आलोचना मे 'परंपरा'क सम्मान आ 'नवता'क आग्रह कोना संतुलित हो?

- (A) कसौटी नहुँए
- (B) परंपरा पूर्ण नकार
- (C) परंपराक शिल्पबोध स्वीकारैत नव अनुभव, भाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब
- (D) नवता पूर्ण नकार

५२. गजल समीक्षा मे गद्यात्मक व्याख्या किएक सावधानी चाहैत अछि?

- (A) शेर अर्थहीन हो
- (B) व्याख्या सदैव निषिद्ध
- (C) समीक्षा केवल अनुवाद
- (D) अधिक व्याख्या शेरक संक्षिप्त ध्वनि आ रहस्यक सौंदर्य कुंद कऽ सकैत अछि

५३. गजलमे 'बिम्ब'क समीक्षा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) बिम्ब शिल्प-विरोधी
- (B) बिम्ब केवल चित्रकला
- (C) बिम्ब भावकें दृश्य, संक्षिप्त आ स्मरणीय बनबैत अछि
- (D) गजलमे चित्रण नहि

५४. मैथिली गजल आलोचना मे 'मानक मैथिली' आ बोलचालक संबंध कोना बुझबाक चाही?

- (A) केवल असंयमित मिश्रण
- (B) केवल कठोर शुद्धतावाद
- (C) भाषा अप्रासंगिक
- (D) मानकता आ जीवंत बोलचालक संतुलन सँ भाषा सुगठित आ स्वाभाविक बनैत अछि

५५. गजल विशेषांकक गतिशील प्रश्न-संख्या किएक बेसी राखल गेल?

- (A) किएकि नाम गिनबाक अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि ई अंक संपादकीय सिद्धान्त, इतिहास, गजलशास्त्र आ अनेक समीक्षात्मक आलेख समेटैत अछि
- (D) किएकि प्रश्न दोहराएबाक अछि

उत्तरमाला — अध्याय ११ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) मैथिली गजलक भाषा, शिल्प, व्याकरण, दोष-गुण आ भाव-गहराईक विवेकपूर्ण परीक्षण — ई विशेषांक गजलकें केवल पढ़बाक नहि, ओकर संरचना आ साहित्यिक मूल्य बुझबाक अभ्यास करबैत अछि।

२. (D) गजलक भाषा मैथिली-संस्कार, स्वाभाविकता आ शब्दचयनक कसौटी पर खड़ी अछि कि नहि — भाषा आधार अछि; भाषा अस्वाभाविक भेल तँ शिल्प आ भावक प्रभाव कमजोर भऽ जाइत अछि।

३. (C) किएकि भाषा-स्वाधीनता मातृभाषाक स्वभाव बचबैत, अनावश्यक मिश्रण नहि बढबैत अछि — संपादकीय दृष्टि अनावश्यक भाषायी निर्भरता पर प्रश्न उठबैत अछि; जरूरत पर शब्द-ग्रहण संभव अछि, मुदा स्वभाव नष्ट नहि।
४. (D) रदीफ, काफिया आ बहरक अनुशासन — मैथिली गजल आलोचनामे व्याकरण शब्द शिल्प-संरचनाक मूल संकेत दैत अछि।
५. (C) ओ शेर-शेरमे ध्वनि-पुनरावृत्ति आ भाव-सूत्रक कार्य करैत अछि — रदीफ एकरूपता दैत अछि; कमजोर रदीफ गजलक श्रवणीयता घटा सकैत अछि।
६. (D) रदीफसँ पहिने ध्वनि-साम्य सही, स्वाभाविक आ अर्थपूर्ण अछि कि नहि — काफिया गजलक ध्वनिक बुनावटमे मुख्य भूमिका निभबैत अछि।
७. (A) लय, संतुलन आ गजलत्व कमजोर भऽ जाइत अछि — गजल भाव-मात्र नहि, अनुशासित लयात्मक संरचना सेहो अछि।
८. (C) शिल्पगत कमजोरी, असंगति, कृत्रिमता आ अनावश्यक दोहरावक पहचान — दोष-गुणक विवेचन समीक्षा केँ ठोस बनबैत अछि।
९. (C) शिल्पक आधार देखलाक बाद भाव-संवेदनाक प्रामाणिकता परखब — समीक्षा भावकेँ नकारैत नहि; ओकरा शिल्पक संग जोड़ि देखैत अछि।
१०. (D) रचना जीवनक कर्म, अनुभव आ नैतिक संवेदनासँ अनुप्राणित होएब चाही — एहि दृष्टिमे साहित्य जीवन-सापेक्ष अछि, केवल शब्द-कौशल नहि।
११. (C) समाज, भाषा, पाठक आ शिल्प—चारू प्रति जिम्मेदारी — प्रतिबद्धता गजलमे विचार, भाषा आ काव्य-कर्मक समन्वय माँगैत अछि।
१२. (A) जखन रचना जीवन-सरोकार, भाषा-संयम वा शिल्प-ईमानदारीसँ खाली रहि जाए — अप्रतिबद्धता साहित्यिक जिम्मेदारीक अभावक संकेत भऽ सकैत अछि।
१३. (B) किएकि बाह्य रूपसँ अधिक महत्वपूर्ण भाषा, शिल्प, बहर, कथ्य आ प्रभाव अछि — बाह्य प्रस्तुति उपयोगी अछि, मुदा साहित्यिक मूल्यांकनक केंद्र रचना होएब चाही।
१४. (C) नव पीढ़ीक सजग गजलकार, गजलशास्त्र, चर्चा-मंच आ शिल्प-बोधक विकास — विशेषांक मैथिली गजलक नूतन जागरण केँ शास्त्रीयता आ संवादक रूपमे देखैत अछि।
१५. (D) मैथिलीमे गजल, रुबाइ, कता, नात आदि लेल व्याकरणिक पृष्ठभूमि विकसित होएब — गजलशास्त्र विधाक आत्मनिर्भरता आ अनुशासन स्थापित करैत अछि।
१६. (A) ओ गजलशास्त्र, बहस, प्रशिक्षण आ रचनाक व्यापक प्रसारक मंच बनल — सूचना-क्रांतिक माध्यम नवतूर साहित्यकारक संवादक साधन बनल।
१७. (C) आरंभिक मैथिली गजल-प्रयासक ऐतिहासिक सूत्र बुझबाक लेल — इतिहास विधाक निरंतरता देखबैत अछि, मात्र वर्तमान प्रवृत्ति नहि।
१८. (D) किएकि गजल-विधाक आरंभिक शब्द-शिल्प आ सांस्कृतिक सम्पर्क बुझबाक लेल ई प्रसंग उपयोगी अछि — इतिहास बतबैत अछि जे साहित्यिक रूप पर भाषिक-सांस्कृतिक सम्पर्कक असर पड़ैत अछि।
१९. (B) रचना गजल-शास्त्रीय कसौटी पूरा करैत अछि कि केवल गीतात्मक रूपमे रहि जाइत अछि — विधा-नाम पर्याप्त नहि; संरचना आ शिल्प जाँचल आवश्यक अछि।
२०. (C) ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध गजलशास्त्र आ रचनाक सामर्थ्य—तीनू देखबाक चाही — समालोचना न्यायपूर्ण होएबाक लेल काल-संदर्भ आ शिल्प दुनू बुझैत अछि।
२१. (A) जखन दोष चिन्हित करैत समाधान, दिशा आ कसौटी सेहो देलक जाए — उच्च समीक्षा आलोचना संग मार्गदर्शन दैत अछि।
२२. (A) गजलक अर्थ-स्तर, अस्पष्टता, संप्रेषण आ पाठकीय ग्रहणक प्रश्न — गजलमे संकेत आ संक्षिप्तता रहैत अछि, मुदा संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक अछि।
२३. (D) रचनात्मक उन्नति प्रेम, उदारता आ साहित्यिक संवादसँ सम्भव अछि, ईर्ष्यासँ नहि — साहित्यिक समाजक स्वास्थ्य आलोचकक भाव-दृष्टिसँ जुड़ल अछि।
२४. (C) पूर्वपरंपरा पर पुनर्विचार, शास्त्र-निर्माण आ नव कविक प्रशिक्षण — नव पीढ़ी मात्र रचना नहि, विधा-चेतना सेहो गढ़ैत अछि।
२५. (B) एहि सँ देखाइत अछि जे मैथिली गजल प्रारंभिक सँ शिल्प-नियमक निकट रहल — गजल-व्याकरणक परंपरा मैथिलीमे पूर्णतः बाहरी आरोप नहि, ऐतिहासिक रूपे मौजूद छल।
२६. (A) किएकि विधाक विकास लेल शास्त्रीय कसौटी आ संवाद स्वीकार करब जरूरी अछि — जड़ आग्रह विधा-विकास रोकि सकैत अछि।
२७. (B) जँ शिल्प, बहर, रदीफ-काफिया वा गजलत्व टूटि जाए — उत्तम भाव आवश्यक अछि, मुदा गजल-रूपक अनुशासन सेहो आवश्यक अछि।
२८. (D) समीक्षा तात्कालिक मूल्यांकन दैत, समालोचना गहिर सिद्धान्तात्मक विश्लेषण धरि पहुँचैत अछि — विशेषांकक शीर्षकेँ आलोचना-समीक्षा-समालोचना रखबाक कारण एहि स्तर-विस्तारमे अछि।
२९. (A) जखन उद्धरण सँ शिल्प, भाव वा दोष स्पष्ट हो — उद्धरण प्रमाण बनैत अछि, स्थानापन्न समीक्षा नहि।

३०. (B) मानक, स्वच्छ, स्वाभाविक मैथिली गजलक संप्रेषण आ गरिमा बढ़बैत अछि — भाषापाक रचना-लेखनक चिंता साहित्यिक गुणवत्ता सँ जुड़ल अछि।
३१. (C) जखन ओ भाव, ध्वनि आ सांस्कृतिक धरातल केँ स्वाभाविक रूपे समृद्ध करै — देशजता गजलक कमजोरी नहि; स्वाभाविकता आ लय सँ जुड़ल हो तँ शक्ति अछि।
३२. (A) शेरक भाव-विषय नवीन, सघन, जीवन-सापेक्ष आ संक्षिप्त अछि कि नहि — गजल कम शब्दमे तीव्र कथ्य माँगैत अछि।
३३. (D) तुकबंदी त अछि, मुदा भाव-सघनता, शिल्प-संतुलन आ भाषा-संयम नहि — तुक मिलब गजल बनबाक प्रारंभिक शर्त हो सकैत अछि, पर्याप्त शर्त नहि।
३४. (B) प्रत्येक शेर अपन अर्थपूर्ण इकाई हो, मुदा रदीफ-काफिया-लय सँ समग्र गजलसँ जुड़ल हो — गजल अलग-अलग शेरक कला अछि, परंतु ध्वनि-संरचना ओकरा जोड़ैत अछि।
३५. (B) जखन विचार प्रतीक, बिम्ब, लय आ सूक्ति-सघनता मे ढलि जाए — गजल विचार केँ काव्य-संक्षेप आ ध्वनि-सौंदर्य मे रूपांतरित करैत अछि।
३६. (B) स्वतंत्रता आ विधा-विघटन बीच अंतर साफ करब — आज्ञादी काव्यात्मक होए, विधागत आलस्य नहि।
३७. (C) रचनाक बदला व्यक्ति, गुट वा निजी संबंधक आधार पर निर्णय — समीक्षा वस्तुनिष्ठता माँगैत अछि।
३८. (A) पाठक केँ बुझा देब जे संग्रहक सामर्थ्य, सीमा आ गजल-दृष्टि कोन अछि — समीक्षा पाठकक विवेक बढ़बैत अछि।
३९. (B) भाषा, मुहावरा, सामाजिक अनुभव आ मिथिला-संस्कार गजलक भीतर आबि रहल अछि — मैथिली गजल अपन लोक-जीवनसँ शक्ति लैत अछि।
४०. (D) इतिहास बिना वर्तमान प्रवृत्तिक मूल्यांकन अधूरा रहैत अछि — गजलक आजुक रूप ओकर पुरान संघर्ष आ शिल्प-यात्रासँ जुड़ल अछि।
४१. (D) ब्लॉग/नवमाध्यम द्वारा गजल-शास्त्र, बहस आ नव लेखनक सक्रिय चरण — नवमाध्यम मैथिली गजलचेतनाक प्रसारमे महत्वपूर्ण रहल।
४२. (C) किएकि गजल स्वाभाविक भाव संग कठिन शिल्प-अनुशासन माँगैत अछि — गजल-शास्त्र सीखलासँ अभिव्यक्ति अधिक कसावट पबैत अछि।
४३. (B) नव रचनाकारकेँ पुनरावृत्त त्रुटिसँ बचबाक मार्ग भेटैत अछि — समीक्षा केवल निर्णय नहि, शिक्षण सेहो अछि।
४४. (D) जखन भावना कृत्रिम, उधार, अतिनाटकीय वा शिल्पहीन हो — प्रामाणिकता आ कलात्मकता भावक कसौटी अछि।
४५. (B) स्पष्ट, प्रमाणसंगत, मर्यादित आ साहित्यिक — समीक्षा संवाद रचैत अछि; भाषा असंयमित भेल तँ विवेचन कमजोर होइत अछि।
४६. (B) उधार भाव वा घिसल प्रतीकक बजाय निजी अनुभवक सघन काव्यात्मक रूप — मौलिकता परंपरा सँ संवाद करैत नव अनुभव जोड़ैत अछि।
४७. (A) जँ शेरमे विचार, चित्र, भाव-संक्षेप वा काव्यात्मक चमक नहि हो — शिल्प ढाँचा अछि; आत्मा कथ्य आ अभिव्यक्ति सँ आबैत अछि।
४८. (D) जखन शेर कम शब्दमे व्यापक अनुभव वा विचारक तीक्ष्ण रूप दे — गजल शेरक संक्षिप्तता ओकर सूक्तिपरक शक्ति बढ़बैत अछि।
४९. (B) भाषा आ साहित्य समाजक दुःख, संघर्ष, प्रेम, राजनीति आ संस्कारसँ अलग नहि — मैथिली गजल अपन समाजक जीवनानुभव सँ अर्थ पबैत अछि।
५०. (D) एकहि विधा पर बहु-दृष्टि, बहु-कसौटी आ आलोचनात्मक संवाद संभव होइत अछि — विविध समीक्षा विधाक परिपक्वता देखबैत अछि।
५१. (C) परंपराक शिल्पबोध स्वीकारैत नव अनुभव, भाषा आ सामाजिक चेतना जोड़ब — सफल आलोचना इतिहासक आँखि आ वर्तमानक संवेदना दुनू रखैत अछि।
५२. (D) अधिक व्याख्या शेरक संक्षिप्त ध्वनि आ रहस्यक सौंदर्य कुंद कऽ सकैत अछि — समीक्षा अर्थ खोलैत अछि, मुदा कविता केँ गद्यमे पूरी तरह खत्म नहि करबाक चाही।
५३. (C) बिम्ब भावकेँ दृश्य, संक्षिप्त आ स्मरणीय बनबैत अछि — सशक्त बिम्ब शेरकेँ पाठकक भीतर टिकाबैत अछि।
५४. (D) मानकता आ जीवंत बोलचालक संतुलन सँ भाषा सुगठित आ स्वाभाविक बनैत अछि — भाषा न तँ कृत्रिम हो, न बिखरल; गजलक लय ओकरा सँ जुड़ल अछि।
५५. (C) किएकि ई अंक संपादकीय सिद्धान्त, इतिहास, गजलशास्त्र आ अनेक समीक्षात्मक आलेख समेटैत अछि — रिच कंटेन्ट भेलासँ प्रश्न संख्या बढ़ाओल गेल, मुदा प्रश्न अवधारणा-आधारित राखल गेल।

अध्याय १२ : काशीकान्त मिश्र 'मधुप' विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. काशीकान्त मिश्र 'मधुप' विशेषांकक मूल अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) मधुपजीक काव्य, जन-चेतना, विद्रोही स्वर, गीत-परंपरा आ 'घसल अठन्नी'क सामाजिक अर्थ
- (B) केवल छपाईक विवरण
- (C) केवल श्रृंगारिक मनोरंजन
- (D) सामाजिक यथार्थसँ दूरी

२. मधुपजी केँ प्रकृति-प्रेमक विलक्षण कवि कहबाक आधार की अछि?

- (A) प्रकृति मात्र सजावट
- (B) ओ प्रकृतिक विराटता आ सौन्दर्यकेँ मानवीय करुणा आ जीवन-संघर्षसँ जोड़ैत छथि
- (C) प्रकृति हुनका लगे अनुपस्थित
- (D) ओ केवल ऋतु-सूची बनबैत छथि

३. 'राधाविरह' मधुपजीक साहित्यिक प्रतिष्ठामे कोन अर्थ रखैत अछि?

- (A) महाकाव्यात्मक क्षमता आ शास्त्रीय काव्य-संवेदनाक प्रमाण
- (B) गजल-विरोधी लेख
- (C) केवल बाल-कथा
- (D) केवल निबंध

४. 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति-गीतक आह्वान कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) गीतमे विचार निषिद्ध
- (B) कविता केवल मनोरंजन
- (C) क्रान्ति शब्द शिल्प-विरोधी
- (D) कविता लोक-चेतना, प्रतिरोध आ सामाजिक जागरणक ध्वनि बनैत अछि

५. 'घसल अठन्नी'क लोकप्रियता केवल कथ्यसँ नहि, शिल्पसँ सेहो किएक जुड़ल अछि?

- (A) केवल अनुवाद उपलब्ध
- (B) कवितामे शब्द-चित्र, लय, प्रतीक, करुणा आ सामाजिक यथार्थक तीव्र संयोजन अछि
- (C) केवल शीर्षक असामान्य अछि
- (D) केवल लेखक प्रसिद्ध

६. 'घसल अठन्नी'मे अठन्नी कोन प्रतीक बनैत अछि?

- (A) व्यापारीक लाभ
- (B) केवल सिक्काक इतिहास
- (C) घसल व्यवस्था सँ पिसाएल गरीब, श्रमिक आ उपेक्षित मनुष्यक प्रतीक
- (D) राजसी वैभव

७. बुचनीक चरित्र 'घसल अठन्नी'मे कोन सामाजिक अर्थ दैत अछि?

- (A) केवल हास्य पात्र
- (B) सामंती सुख
- (C) शोषित स्त्री, श्रम, भूख आ असुरक्षित मातृत्वक करुण यथार्थ
- (D) नगरीय ऐश्वर्य

८. भुटकुन बाबू कवितामे कोन प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व करैत छथि?

- (A) कवि-स्वर
- (B) सामंती शोषण, अहंकार आ अन्यायपूर्ण सत्ता-संरचना
- (C) निर्दोष बालक
- (D) करुण सहायक

९. 'घसल अठन्नी'मे प्रकृतिक तापक वर्णन किएक प्रभावी अछि?

- (A) केवल मौसम-रिपोर्ट
- (B) सुखद पर्यटन
- (C) कवितासँ असंबद्ध
- (D) बाह्य गरमी आ सामाजिक क्रूरताक ताप एक-दोसरकेँ तीव्र करैत अछि

१०. मधुपजीक भाषा 'व्यावहारिक' कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) लोकजीवनक स्वाभाविक, चित्रात्मक आ अनुभव-सन्निकट भाषा
- (B) केवल कठिन संस्कृत
- (C) केवल दफ्तरी भाषा
- (D) केवल अंग्रेजी मिश्रण

११. 'घसल अठन्नी'क शब्द-चित्र पाठक पर कोन असर करैत अछि?

- (A) केवल अलंकार गिनाइत
- (B) दृश्य चलचित्र जकाँ खुलैत अछि आ पाठक पीड़ित स्थितिसँ तादात्म्य करैत अछि
- (C) कुनो भाव नहि उठैत
- (D) अर्थ छिपि जाइत

१२. कविताक अंतमे 'हम कतए जाउ, अवलम्ब पाउ' कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) कवि-नामक संकेत
- (B) यात्रा-मार्गक प्रश्न
- (C) भौगोलिक पहेली
- (D) शोषित मनुष्यक आश्रय, न्याय आ सामाजिक जिम्मेदारीक प्रश्न

१३. 'घसल अठन्नी' काल-निरपेक्ष किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) किएकि सिक्का आजुओ चलैत अछि
- (B) किएकि शोषणक रूप बदलैत रहैत अछि, मुदा उपेक्षित मनुष्यक पीड़ा आजुओ प्रासंगिक अछि
- (C) किएकि कविता मौसम बतबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ नहि बदलल

१४. घसल अठन्नीक आधुनिक तुलना नकली पाँच सौ टाकाक नोटसँ किएक सार्थक अछि?

- (A) शोषणक पुरान संरचना नवा आर्थिक रूपमे दोहराइत रहबाक संकेत
- (B) कविताकेँ हास्य बनाबक लेल
- (C) बैंक नियम बुझाबक लेल
- (D) मुद्रा-विज्ञान पढ़ेबाक लेल

१५. मधुपजी केँ 'जन-कवि' कहबाक मूल आधार की अछि?

- (A) केवल पुरस्कार
- (B) केवल लोकप्रियता
- (C) केवल लंबी सूची
- (D) हुनकर कविता वंचित वर्ग, लोक-जीवन, सामाजिक विषमता आ जन-मनक पीड़ा केँ केन्द्रमे राखैत अछि

१६. 'जन-चेतनाक स्वर वाहक' कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) केवल निजी स्मृति
- (B) लोकसँ कटि गेल रचना
- (C) मधुपजीक रचना लोकसमाजक पीड़ा, प्रश्न आ जागरण केँ वहन करैत अछि
- (D) केवल दरबारी गीत

१७. मधुपजीक गीत-प्रतिभा प्रगतिशील विचारसँ विरोधाभासी किएक नहि अछि?

- (A) बौद्धिकता गीत-विरोधी
- (B) लय प्रगतिशीलता रोकैत
- (C) गीतमे विचार नहि
- (D) राग-लय-ताल सामाजिक चेतना आ बौद्धिकता केँ अधिक पहुँचयोग्य बना सकैत अछि

१८. 'विद्रोही कवि' रूपमे मधुपजीक पहचान कोन बातसँ बनैत अछि?

- (A) केवल आवाज ऊँच करब
- (B) कठिन शब्द भरब
- (C) पुरस्कारक विरोध
- (D) परंपरागत विषय-सीमा तोड़ि सामाजिक अन्याय, श्रम, भूख आ वंचना केँ कविता बनाओल

१९. मधुपजीक 'छुतहर' सन विषय उठेनाइ साहित्यिक साहस किएक अछि?

- (A) समाजसँ असंबंधित
- (B) ओ जाति, अस्पृश्यता आ सामाजिक पाखंड पर प्रत्यक्ष प्रश्न करैत अछि
- (C) ई केवल हास्य-विषय
- (D) कविता लेल अनुपयुक्त

२०. 'पतित पीक' वा साधारण जीवन-वस्तु पर कविता लिखब मधुपजीक शिल्प-दृष्टि की बतबैत अछि?

- (A) लोकजीवन हटबैत
- (B) ओ केवल सजावट करैत
- (C) ओ तुच्छ मानल वस्तु मे सामाजिक अर्थ आ काव्य-संभावना देखैत छथि
- (D) उच्च विषय सँ डरैत

२१. मधुपजीक कविता मे दलित चेतना कोना देखाइत अछि?

- (A) वंचित अनुभव हटाकऽ
- (B) केवल कल्पना-लोक
- (C) केवल राजसी सौन्दर्य
- (D) शोषित देह, श्रम, अपमान आ व्यवस्था-संचालित अन्याय केँ केन्द्र बनाकऽ

२२. 'घसल अठन्नी'मे स्त्री-विमर्शक आधार की अछि?

- (A) बुचनीक श्रम, भूख, मातृत्व, असुरक्षा आ हिंसा स्त्री-अनुभवक कठोर पक्ष खोलैत अछि
- (B) स्त्री पात्र अनुपस्थित
- (C) केवल हास्य
- (D) केवल श्रृंगार

२३. मधुपजीक मार्क्सवादी अर्थ-पठन कखन सार्थक होइत अछि?

- (A) जखन कविता न पढ़ल जाए
- (B) जखन जीवन-संदर्भ हटि जाए
- (C) जखन केवल नारा लगाओल जाए
- (D) जखन वर्ग-संघर्ष, श्रम, पूँजी, सामंती शक्ति आ शोषणक संरचना पाठमे देखल जाए

२४. मधुपजीक रचना-व्यक्तित्वमे करुणा आ प्रतिरोध केना एक संग अछि?

- (A) दुनू असंबद्ध
- (B) पीड़ितक दुःखसँ करुणा जन्मैत अछि आ अन्यायक विरुद्ध प्रतिरोधक स्वर बनैत अछि
- (C) प्रतिरोध भावहीन
- (D) करुणा प्रतिरोध रोकैत

२५. मधुपजीक प्रकृति-चित्रण 'सजावट' मात्र किएक नहि?

- (A) केवल फूल-पात
- (B) मौसम विज्ञापन
- (C) कथ्यसँ कटल
- (D) ओ सामाजिक यथार्थ, श्रम-दशा आ मानवीय कष्टक वातावरण रचैत अछि

२६. 'घसल अठन्नी'मे मखनाक भूमिका कोन जटिलता खोलैत अछि?

- (A) पूर्ण मुक्तिदाता
- (B) शोषित वर्गक भीतर सत्ता-भय, हिंसा आ आपसी दमनक स्थिति
- (C) असंबद्ध पात्र
- (D) केवल हास्य

२७. मधुपजीक कविता मे भूखक चित्रण किएक गहिर सामाजिक प्रश्न अछि?

- (A) भूख नैतिक, आर्थिक आ मानवीय व्यवस्था-विफलताक प्रमाण बनैत अछि
- (B) भूख हास्य प्रसंग
- (C) भूख केवल निजी समस्या
- (D) भूख कविता-विरोधी

२८. 'अवलम्ब' शब्द शोषित पात्रक संदर्भमे कोन अर्थ खोलैत अछि?

- (A) संगीत-वाद्य
- (B) सुरक्षा, सहारा, न्याय आ सामाजिक मान्यता लेल पुकार
- (C) लकड़ीक सहारा मात्र
- (D) यात्रा-छड़ी

२९. मधुपजीक कवितामे लोकधुन वा फिल्मी धुनक प्रयोगक आलोचना कोना संतुलित हो?

- (A) धुनक साहित्यसँ संबंध नहि
- (B) लोकप्रियता सदैव पर्याप्त
- (C) लोकधुन सदैव दोष
- (D) रचना-संदर्भमे देखब जे लोकप्रिय ध्वनि कविता केँ जन-समाजधरि पहुँचबैत अछि कि सतही बनबैत अछि

३०. मधुपजीक 'रचना-व्यक्तित्व'मे श्रृंगारक स्थान की अछि?

- (A) श्रृंगार पूर्णतः अनुपस्थित
- (B) श्रृंगार असाहित्यिक
- (C) केवल श्रृंगारहि सब किछु
- (D) श्रृंगार रहितो हुनकर काव्य करुणा, लोकचेतना आ विद्रोहसँ विस्तृत बनैत अछि

३१. मधुपजीक साहित्य मे 'मिथिला' कोन रूपमे उपस्थित अछि?

- (A) भाषा, लोकजीवन, सामाजिक संरचना, ग्रामीण दृश्य आ सांस्कृतिक चेतनाक रूपमे
- (B) कुनो उपस्थिति नहि
- (C) केवल प्रशासनिक नाम
- (D) केवल मानचित्र

३२. मधुपजी पर केन्द्रित विशेषांकमे संस्मरणक महत्त्व की अछि?

- (A) संस्मरण असाहित्यिक
- (B) कवितासँ संबंध नहि
- (C) लेखकक मानवीय व्यक्तित्व, व्यवहार, स्मृति आ साहित्यिक प्रभावक जीवित चित्र भेटैत अछि
- (D) केवल तारीख-सूची

३३. 'मधुपजी हमरा किएक मन पड़ैत छथि' सन आलेखक अध्ययन-संकेत की अछि?

- (A) निजी स्मृति बेकार
- (B) लेखक विस्मृत होथि
- (C) कवि-स्मृति निजी अनुभवसँ साहित्यिक व्यक्तित्वक अर्थ खोलि सकैत अछि
- (D) केवल पृष्ठ देखू

३४. 'मधुपक गीत अमर, मिथिलामे' कथन किएक विचारणीय अछि?

- (A) गीत पढ़ल नहि जाए
- (B) गीत लोक-स्मृति, गेयता आ सामुदायिक भावमे जीवित रहैत अछि
- (C) मिथिला गान-विरोधी
- (D) अमरता छपाईक कारण

३५. मधुपजीक काव्यक 'लोक-चेतना' आ 'भाषा'क संबंध की अछि?

- (A) भाषा अप्रासंगिक
- (B) लोकभाषा हीन
- (C) केवल संस्कृतनिष्ठ शब्द चाही
- (D) लोकभाषा बिना जन-पीड़ा आ जीवन-लयक प्रामाणिक अभिव्यक्ति कमजोर भऽ जाइत अछि

३६. 'घसल अठन्नी'मे करुणा पाठक पर दया नहि, प्रश्न किएक बनैत अछि?

- (A) करुणा केवल आँसू
- (B) कविता विचार रोकेत
- (C) दया पर्याप्त समाधान
- (D) कविता पाठककेँ व्यवस्था आ अपन सामाजिक जिम्मेदारी पर सोचबाक बाध्य करैत अछि

३७. मधुपजीक विद्रोह केना कलात्मक अछि?

- (A) ओ प्रत्यक्ष नारा सँ बेसी पात्र, दृश्य, प्रतीक, ध्वनि आ कथा-स्थितिसँ विद्रोह रचैत छथि
- (B) केवल घोषणापात्र
- (C) अर्थहीन कठिनता
- (D) शिल्पहीन क्रोध

३८. 'बुचनी'क मृत्यु वा मुक्ति पर विचार किएक जटिल अछि?

- (A) ई हास्य अंत
- (B) ई कथा-संरचना नहि
- (C) ओ शोषित जीवनक असह्य पीड़ा आ दयनीय विकल्पहीनता केँ उजागर करैत अछि
- (D) ई केवल सुखांत

३९. मधुपजीक काव्य मे 'शोषक' आ 'शोषित'क द्वंद्व किएक केंद्रीय अछि?

- (A) द्वंद्व अनुपस्थित
- (B) समाजक असमान संरचना कविता मे पात्र, प्रतीक आ घटना द्वारा मूर्त होइत अछि
- (C) केवल रोमांस
- (D) शोषण सजावट

४०. 'घसल अठन्नी'मे मुद्रा आ मनुष्यक समानता कोना बनैत अछि?

- (A) सिक्का राजा बनैत
- (B) जेकाँ घसल सिक्का मूल्यहीन कएल जाइत अछि, ओहिना गरीब मनुष्य व्यवस्था मे अपमानित होइत अछि
- (C) गरीबक तुलना निषिद्ध
- (D) मुद्रा अमर होइत

४१. मधुपजीक कविता आजुक अर्थव्यवस्था मे किएक पढ़ल जाए?

- (A) सिक्का बदलल त कविता समाप्त
- (B) पुरान कविता अप्रासंगिक
- (C) नकली विकास, श्रम-शोषण, ऋण, भूख आ असमानता आजुओ कायम अछि
- (D) साहित्य समयसँ कटल

४२. मधुपजीक आलोचना मे 'यात्री'क तुलना कोन सावधानी माँगैत अछि?

- (A) एककै नकारल मात्र
- (B) लेखक-दर-लेखक भिन्न भाषा, समाज-दृष्टि आ साहित्यिक धरातलकें संदर्भ सहित देखब
- (C) तुलना असंभव
- (D) हिन्दी पदवीक नकल

४३. मधुपजीक कविता मे 'ब्राह्मण वर्ण' आ 'छुतहर' विषयक तनाव कोन अर्थ खोलैत अछि?

- (A) कवि अपन सामाजिक स्थिति पार कऽ अस्पृश्यता-विरोधी संवेदनाक पक्ष लैत छथि
- (B) वर्ण प्रश्न अप्रासंगिक
- (C) सामाजिक आलोचना नहि
- (D) छुतहर केवल हास्य

४४. मधुपजीक गीत 'देश-दशा आ मातृभाषा'क पृष्ठभूमिमे किएक महत्वपूर्ण मानल जाए?

- (A) देश-दशा गद्य-विषय
- (B) गीत केवल प्रणय
- (C) मातृभाषा असंगत
- (D) ओ गीतकें समाज, भाषा-अधिकार आ जन-जीवनक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि

४५. मधुपजीक काव्य मे श्रमजीवी जीवनक प्रस्तुति कोना अलग अछि?

- (A) श्रमिक अनुपस्थित
- (B) ओ श्रमिक कें दया-पात्र नहि, सामाजिक व्यवस्था कें प्रश्न करयवला केंद्र बनबैत अछि
- (C) श्रम केवल पृष्ठभूमि
- (D) दया मात्र पर्याप्त

४६. मधुपजीक साहित्य पर आलोचना लिखैत समय केवल 'लोकप्रिय' कहब किएक कम अछि?

- (A) लोकप्रियताक कारण—भाषा, शिल्प, भाव, सामाजिक अर्थ—सब विश्लेषित करब जरूरी अछि
- (B) आलोचना केवल प्रशंसा
- (C) विश्लेषण अनावश्यक
- (D) लोकप्रियता पर्याप्त प्रमाण

४७. 'घसल अठन्नी'मे बच्चाक रोदन कोन भावभूमि बनबैत अछि?

- (A) हास्य विराम
- (B) भूख, मातृत्व, भविष्यक संकट आ असहाय समाजक करुण बिंदु
- (C) केवल ध्वनि-सजावट
- (D) युद्ध-घोष

४८. मधुपजीक कवितामे ध्वनि-संकेत—सनसन, छनछन आदि—किएक प्रभावी अछि?

- (A) ओ वातावरण, ताप, भय आ जीवित दृश्य-संवेदना रचैत अछि
- (B) केवल छंद-वृत्ति
- (C) पाठकक ध्यान हटबैत
- (D) ध्वनि अर्थहीन

४९. मधुपजीक काव्य मे 'सौन्दर्य गरीबीसँ दागल' सन बिम्ब कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) सौन्दर्य निरर्थक
- (B) गरीबी सजावट
- (C) गरीबी मनुष्यक देह, यौवन आ अस्तित्व पर हिंसक छाप छोड़ैत अछि
- (D) सामाजिक अर्थ नहि

५०. 'घसल जिनकर अदृष्टि' पदबंध कोन व्यापक भाव दैत अछि?

- (A) केवल सिक्का
- (B) केवल शब्द-खेल
- (C) भाग्य नहि, व्यवस्था द्वारा घसाएल जीवनक सामूहिक व्यथा
- (D) केवल ज्योतिष

५१. मधुपजीक विशेषांकमे अनुवादक उपस्थिति कोन साहित्यिक संकेत दैत अछि?

- (A) मधुपजीक रचना स्थानीय रहितो व्यापक पाठकीय संवादक क्षमता रखैत अछि
- (B) अनुवाद मूल रचना हटबैत
- (C) स्थानीयता समाप्त
- (D) समीक्षा असंभव

५२. 'Worn-out fifty paise coin' अनुवाद शीर्षक मूल प्रतीक केँ कोना पहुँचबैत अछि?

- (A) कविता केँ बैंक नोट बनबैत
- (B) घसल मुद्रा आ घसल मनुष्यक संबंध अंग्रेजी पाठक धरि संकेतित करैत अछि
- (C) सिर्फ सिक्का-सूची
- (D) मूल अर्थ मेटा दैत

५३. मधुपजीक आलोचना मे 'सामंती व्यवस्था' शब्द किएक आवश्यक अछि?

- (A) कविताक अन्याय व्यक्तिगत नहि, संरचनागत सत्ता-संबंधसँ जुड़ल अछि
- (B) सामंत प्रेम-पात्र
- (C) सत्ता अप्रासंगिक
- (D) कवितामे व्यवस्था नहि

५४. मधुपजीक रचना मे करुणा आ वर्ग-चेतना एक-दोसरकेँ कोना बल दैत अछि?

- (A) करुणा वर्ग-विरोधी
- (B) करुणा पीड़ितक मानवीयता खोलैत, वर्ग-चेतना पीड़ाक सामाजिक कारण देखबैत
- (C) वर्ग-दृष्टि भावहीन
- (D) दुनू अलग रहबाक

५५. मधुपजीक 'आलोचनात्मक पुनर्पाठ' आज किएक जरूरी अछि?

- (A) हुनकर सामाजिक विषय, भाषा-साहस आ लोकचेतना नव पीढ़ीक साहित्य-बोध विस्तार करैत अछि
- (B) केवल पुरस्कार याद रखब
- (C) रचना नहि, नाम काफी
- (D) पुरान लेखक पढ़ब व्यर्थ

५६. लेखक-विशेषांकमे प्रश्न-संख्या ३०-४० पर सीमित नहि राखबाक कारण की अछि?

- (A) किएकि फाइल पैघ अछि मात्र
- (B) किएकि नाम-दोहराव करबाक अछि
- (C) किएकि मधुपजी पर जीवनी, संस्मरण, समीक्षा, कविता, गीत, 'घसल अठन्नी', दलित चेतना आ मार्क्सवादी पाठ सभ अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

५७. मधुपजीक अध्ययनमे केवल जीवनी जानब पर्याप्त किएक नहि?

- (A) हुनकर काव्य-संरचना, प्रतीक, सामाजिक दृष्टि, भाषा आ पाठकीय प्रभाव समझब जरूरी अछि
- (B) कविता पढ़बाक जरूरत नहि
- (C) समीक्षा असंगत
- (D) जीवनीहि सब किछु

५८. 'मधुप' उपनामक साहित्यिक अर्थ कोना पढ़ल जा सकैत अछि?

- (A) कविता सँ असंबंधित
- (B) केवल औपचारिक नाम
- (C) मधुरता, गीतात्मकता आ रसधारा संग सामाजिक करुणा/विद्रोहक विरोधाभासी संगति
- (D) कठोर नारा मात्र

५९. मधुपजीक गीतक अमरता काव्यशास्त्रीय दृष्टि सँ कोन गुण पर निर्भर अछि?

- (A) लय, स्मरणीय पंक्ति, लोक-संवेदना, भाव-संक्षेप आ भाषिक सहजता
- (B) केवल लेखकक प्रसिद्धि
- (C) केवल लंबाई
- (D) केवल छपाई

६०. 'घसल अठन्नी'क पाठमे नैतिक प्रश्न की बनैत अछि?

- (A) समाज श्रमजीवी, विधवा, भूखल बालक आ अन्यायग्रस्त मनुष्यक प्रति की जिम्मेदारी लैत अछि
- (B) सिक्काक धातु की अछि
- (C) गर्मी कतेक डिग्री अछि
- (D) कौन पृष्ठ पर कविता अछि

६१. मधुपजीक काव्य-भाषा मे देह-वर्णन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) देह गरीबी, भूख, श्रम आ हिंसाक असरक प्रत्यक्ष पाठ बनि जाइत अछि
- (B) देह-वर्णन निषिद्ध
- (C) केवल श्रृंगार
- (D) देहसँ समाजक संबंध नहि

६२. मधुपजीक कविता मे 'यौवन भागल' बिम्ब कोन सामाजिक त्रासदी बतबैत अछि?

- (A) सामाजिक अर्थ नहि
- (B) सुखद हास्य
- (C) यौवन उत्सव
- (D) गरीबी आ भूख मनुष्यक स्वाभाविक जीवन-विकास केँ नष्ट करैत अछि

६३. मधुपजीक कवितामे 'लोकप्रिय' आ 'महान' बीच संबंध कोना बुझबाक चाही?

- (A) लोकप्रियता सदैव हल्की
- (B) दुनू असंबद्ध
- (C) महानता पाठक-विरोधी
- (D) लोकप्रियता जँ गहिर सामाजिक-सौंदर्यात्मक गुणसँ जुड़ल हो तँ साहित्यिक महानता केँ बल दैत अछि

६४. 'घसल अठन्नी'मे नारी पात्रक केंद्रियता केहन पाठ खोलैत अछि?

- (A) स्त्री केवल उपस्थिति
- (B) स्त्री-श्रम, गरीबी, मातृत्व आ सामाजिक हिंसाक बहुस्तरीय पाठ
- (C) केवल सजावट
- (D) नारी प्रश्न अनुपस्थित

६५. मधुपजीक विशेषांकक उच्च-स्तरीय प्रश्न कोन प्रकारक होएब चाही?

- (A) केवल सूची
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) रचना, प्रतीक, सामाजिक चेतना, भाषा, विद्रोह, करुणा, लोकधारा आ आलोचना-दृष्टि पर
- (D) केवल जन्म-वर्ष

६६. मधुपजीक साहित्यिक मूल्यांकनमे 'करुणा' केँ कमजोर भाव किएक नहि मानल जाए?

- (A) करुणा मात्र रोदन
- (B) ई करुणा अन्याय-विरोधी चेतना आ मानवीय गरिमा केँ जन्म दैत अछि
- (C) करुणा साहित्यिक दोष
- (D) करुणा विचार-विरोधी

६७. मधुपजीक कवितामे वर्गीय अन्याय देखैत समय शिल्प किएक नहि छोड़ल जा सकैत?

- (A) विचारक प्रभाव बिम्ब, लय, भाषा आ संरचना सँ बढ़ैत अछि
- (B) शिल्प सामाजिकता रोकेत
- (C) विचार हो तँ शिल्प व्यर्थ
- (D) कविता नारा मात्र

६८. मधुपजीक साहित्य मिथिला-केंद्रित रहितो व्यापक किएक अछि?

- (A) मिथिला बाहर अर्थ नहि
- (B) स्थानीयता संकीर्णता मात्र
- (C) स्थानीय पात्र आ भाषा सार्वभौमिक भूख, अन्याय, श्रम आ गरिमाक प्रश्न खोलैत अछि
- (D) लोकभाषा अनुवाद-असम्भव

६९. 'घसल अठन्नी'क सफल अध्ययन लेल पाठक केँ कोन संयोजन चाही?

- (A) केवल सिक्का-ज्ञान
- (B) केवल जन्म-वर्ष
- (C) केवल अनुवाद शीर्षक
- (D) सामाजिक इतिहास, प्रतीक-बोध, काव्य-भाषा, पात्र-विश्लेषण आ करुणा-दृष्टि

७०. मधुपजीक गीत आ कविता बीच भेद करैत समय कोन बात ध्यानमे राखब चाही?

- (A) गीतमे चेतना नहि
- (B) दुनू रूपमे लय आ भाषा अलग ढंगसँ काम करैत, मुदा सामाजिक चेतना साझा भऽ सकैत अछि
- (C) दुनू पूर्ण असंबद्ध
- (D) कविता लयहीन

७१. 'घसल अठन्नी'क शीर्षक किएक स्मरणीय अछि?

- (A) छोट, ठोस, लोकजीवनक वस्तु द्वारा पूरा शोषित जगत केँ प्रतीकित करैत अछि
- (B) किएकि ओ कठिन अछि
- (C) किएकि केवल मुद्रा
- (D) किएकि अर्थ नहि

उत्तरमाला — अध्याय १२ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) मधुपजीक काव्य, जन-चेतना, विद्रोही स्वर, गीत-परंपरा आ 'घसल अठन्नी'क सामाजिक अर्थ — ई विशेषांक एक लेखकक रचनात्मक व्यक्तित्वक बहुआयामी मूल्यांकन करैत अछि।

२. (B) ओ प्रकृतिक विराटता आ सौन्दर्यकेँ मानवीय करुणा आ जीवन-संघर्षसँ जोड़ैत छथि — मधुपजीक प्रकृति-चित्रण दृश्य-सौंदर्य मात्र नहि, सामाजिक स्थितिक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

३. (A) महाकाव्यात्मक क्षमता आ शास्त्रीय काव्य-संवेदनाक प्रमाण — मधुपजी एकहि कविताक कवि नहि; हुनकर रचनाधर्मिता विस्तृत अछि।

४. (D) कविता लोक-चेतना, प्रतिरोध आ सामाजिक जागरणक ध्वनि बनैत अछि — मधुपजीक कविता समाजक निष्क्रियता तोड़बाक आह्वान करैत अछि।
५. (B) कवितामे शब्द-चित्र, लय, प्रतीक, करुणा आ सामाजिक यथार्थक तीव्र संयोजन अछि — लोकप्रियता रचनाक गहिर कलात्मक-सामाजिक प्रभावसँ पैदा भेल।
६. (C) घसल व्यवस्था सँ पिसाएल गरीब, श्रमिक आ उपेक्षित मनुष्यक प्रतीक — अठन्नी छोट मुद्रा अछि, मुदा कविता ओकरा शोषित वर्गक भाग्यक प्रतीक बनबैत अछि।
७. (C) शोषित स्त्री, श्रम, भूख आ असुरक्षित मातृत्वक करुण यथार्थ — बुचनीक माध्यमे कविता वर्ग, लिंग आ गरीबीक संयुक्त पीड़ा देखबैत अछि।
८. (B) सामंती शोषण, अहंकार आ अन्यायपूर्ण सत्ता-संरचना — भुटकुन बाबू व्यवस्था-समर्थित उत्पीड़नक प्रतीक बनैत छथि।
९. (D) बाह्य गरमी आ सामाजिक क्रूरताक ताप एक-दोसरकें तीव्र करैत अछि — जेठक दुपहरिया श्रमजीवी जीवनक असह्य परिस्थिति कें दृश्य बनबैत अछि।
१०. (A) लोकजीवनक स्वाभाविक, चित्रात्मक आ अनुभव-सन्निकट भाषा — व्यावहारिक भाषा पाठकक सामने दृश्यकें जीवित करैत अछि।
११. (B) दृश्य चलचित्र जकाँ खुलैत अछि आ पाठक पीड़ित स्थितिसँ तादात्म्य करैत अछि — मधुपजी दृश्यात्मकता सँ पाठकक अनुभव-भागीदारी बनबैत छथि।
१२. (D) शोषित मनुष्यक आश्रय, न्याय आ सामाजिक जिम्मेदारीक प्रश्न — कविता समाधान न देबाक बावजूद समाजक विवेककें झकझोरैत अछि।
१३. (B) किएकि शोषणक रूप बदलैत रहैत अछि, मुदा उपेक्षित मनुष्यक पीड़ा आजुओ प्रासंगिक अछि — रचना अपन समय सँ जन्मि, समयकें पार करबाक सामर्थ्य रखैत अछि।
१४. (A) शोषणक पुरान संरचना नवा आर्थिक रूपमे दोहराइत रहबाक संकेत — रूप बदलल, अन्याय नहि; यही प्रासंगिकता लेखमे रेखांकित अछि।
१५. (D) हुनकर कविता वंचित वर्ग, लोक-जीवन, सामाजिक विषमता आ जन-मनक पीड़ा कें केंद्रमे राखैत अछि — जन-कविता लोकक दुःख आ प्रतिरोधक भाषिक स्वर बनैत अछि।
१६. (C) मधुपजीक रचना लोकसमाजक पीड़ा, प्रश्न आ जागरण कें वहन करैत अछि — लेख मधुपजीक साहित्यक सामाजिक वाहकत्व पर बल दैत अछि।
१७. (D) राग-लय-ताल सामाजिक चेतना आ बौद्धिकता कें अधिक पहुँचयोग्य बना सकैत अछि — मधुपजी सिद्ध करैत छथि जे गीत सामाजिक यथार्थक सशक्त माध्यम हो सकैत अछि।
१८. (D) परंपरागत विषय-सीमा तोड़ि सामाजिक अन्याय, श्रम, भूख आ वंचना कें कविता बनाओल — विद्रोह हुनका लगे विषय, भाषा आ जन-पक्षधरता मे प्रकट होइत अछि।
१९. (B) ओ जाति, अस्पृश्यता आ सामाजिक पाखंड पर प्रत्यक्ष प्रश्न करैत अछि — मधुपजी निषिद्ध मानल गेल यथार्थ कें कविता मे आनैत छथि।
२०. (C) ओ तुच्छ मानल वस्तु मे सामाजिक अर्थ आ काव्य-संभावना देखैत छथि — आधुनिक संवेदना साधारण वस्तुकें अर्थपूर्ण बना सकैत अछि।
२१. (D) शोषित देह, श्रम, अपमान आ व्यवस्था-संचालित अन्याय कें केंद्र बनाकऽ — दलित चेतना सामाजिक पदानुक्रमक आलोचना आ मानवीय समानताक आग्रह करैत अछि।
२२. (A) बुचनीक श्रम, भूख, मातृत्व, असुरक्षा आ हिंसा स्त्री-अनुभवक कठोर पक्ष खोलैत अछि — कविता शोषित स्त्रीक वर्गीय आ लैंगिक पीड़ा एक संग प्रस्तुत करैत अछि।
२३. (D) जखन वर्ग-संघर्ष, श्रम, पूँजी, सामंती शक्ति आ शोषणक संरचना पाठमे देखल जाए — वर्ग-दृष्टि मधुपजीक जन-केन्द्रित कविताक एक महत्वपूर्ण व्याख्या दे सकैत अछि।
२४. (B) पीड़ितक दुःखसँ करुणा जन्मैत अछि आ अन्यायक विरुद्ध प्रतिरोधक स्वर बनैत अछि — मधुपजीक काव्य करुण संवेदना कें निष्क्रिय नहि, जाग्रत बनबैत अछि।
२५. (D) ओ सामाजिक यथार्थ, श्रम-दशा आ मानवीय कष्टक वातावरण रचैत अछि — प्रकृति कविताक भाव-व्यवस्था सक्रिय करैत अछि।
२६. (B) शोषित वर्गक भीतर सत्ता-भय, हिंसा आ आपसी दमनक स्थिति — कविता देखबैत अछि जे शोषणक तंत्र केवल ऊपरसँ नहि, भीतरहुँ काम करैत अछि।
२७. (A) भूख नैतिक, आर्थिक आ मानवीय व्यवस्था-विफलताक प्रमाण बनैत अछि — भूख समाजक न्याय-बोधक परीक्षा अछि।
२८. (B) सुरक्षा, सहारा, न्याय आ सामाजिक मान्यता लेल पुकार — कविता अवलम्बहीन मनुष्यक असहायता केंद्रमे आनैत अछि।
२९. (D) रचना-संदर्भमे देखब जे लोकप्रिय ध्वनि कविता कें जन-समाजधरि पहुँचबैत अछि कि सतही बनबैत अछि — मधुपजीक गीत-प्रयोग पर बहस शिल्प आ संप्रेषण दुहुँ मांगैत अछि।

३०. (D) श्रृंगार रहितो हुनकर काव्य करुणा, लोकचेतना आ विद्रोहसँ विस्तृत बनैत अछि — मधुपजी एकरंगी कवि नहि; अनेक रस-धारा हुनका मे भेटैत अछि।
३१. (A) भाषा, लोकजीवन, सामाजिक संरचना, ग्रामीण दृश्य आ सांस्कृतिक चेतनाक रूपमे — मधुपजीक काव्य मिथिलाक धरातलसँ अपना अर्थ पबैत अछि।
३२. (C) लेखकक मानवीय व्यक्तित्व, व्यवहार, स्मृति आ साहित्यिक प्रभावक जीवित चित्र भेटैत अछि — लेखक-विशेषांकमे रचना संग व्यक्ति-स्मृति सेहो मूल्यवान होइत अछि।
३३. (C) कवि-स्मृति निजी अनुभवसँ साहित्यिक व्यक्तित्वक अर्थ खोलि सकैत अछि — संस्मरण आलोचना केँ मानवीय धरातल दैत अछि।
३४. (B) गीत लोक-स्मृति, गेयता आ सामुदायिक भावमे जीवित रहैत अछि — गीतक जीवन पाठक/श्रोता समाजमे निरंतर पुनरावृत्ति सँ बनैत अछि।
३५. (D) लोकभाषा बिना जन-पीड़ा आ जीवन-लयक प्रामाणिक अभिव्यक्ति कमजोर भऽ जाइत अछि — जन-काव्यक आत्मा ओकर जीवित भाषामे छुपल रहैत अछि।
३६. (D) कविता पाठककेँ व्यवस्था आ अपन सामाजिक जिम्मेदारी पर सोचबाक बाध्य करैत अछि — उच्च करुणा निष्क्रिय भावुकता नहि, नैतिक बेचैनी जगबैत अछि।
३७. (A) ओ प्रत्यक्ष नारा सँ बेसी पात्र, दृश्य, प्रतीक, ध्वनि आ कथा-स्थितिसँ विद्रोह रचैत छथि — काव्यात्मक विद्रोह अनुभवक रूपमे पाठकधरि पहुँचैत अछि।
३८. (C) ओ शोषित जीवनक असह्य पीड़ा आ दयनीय विकल्पहीनता केँ उजागर करैत अछि — आलेख बुचनीक भाग्य पर विचार करैत करुणा आ भय दुनू पैदा करैत अछि।
३९. (B) समाजक असमान संरचना कविता मे पात्र, प्रतीक आ घटना द्वारा मूर्त होइत अछि — मधुपजीक सामाजिक कविता वर्गीय तनावकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।
४०. (B) जेकाँ घसल सिक्का मूल्यहीन कएल जाइत अछि, ओहिना गरीब मनुष्य व्यवस्था मे अपमानित होइत अछि — प्रतीक आर्थिक आ मानवीय मूल्यक प्रश्न एक संग खोलैत अछि।
४१. (C) नकली विकास, श्रम-शोषण, ऋण, भूख आ असमानता आजुओ कायम अछि — प्रासंगिकता विषयक सतत सामाजिक उपस्थिति सँ बनैत अछि।
४२. (B) लेखक-दर-लेखक भिन्न भाषा, समाज-दृष्टि आ साहित्यिक धरातलकेँ संदर्भ सहित देखब — तुलना उपयोगी हो, मुदा न्यायपूर्ण संदर्भ आ पाठ-विश्लेषण चाही।
४३. (A) कवि अपन सामाजिक स्थिति पार कऽ अस्पृश्यता-विरोधी संवेदनाक पक्ष लैत छथि — ई साहित्यिक साहस आ आत्म-समीक्षा दुनू संकेत करैत अछि।
४४. (D) ओ गीतकेँ समाज, भाषा-अधिकार आ जन-जीवनक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि — गीत-साहित्य सामूहिक चेतना केँ स्वर दऽ सकैत अछि।
४५. (B) ओ श्रमिक केँ दया-पात्र नहि, सामाजिक व्यवस्था केँ प्रश्न करयवला केन्द्र बनबैत अछि — श्रमजीवी पात्रक माध्यमे व्यवस्था पर नैतिक आरोप बनैत अछि।
४६. (A) लोकप्रियताक कारण—भाषा, शिल्प, भाव, सामाजिक अर्थ—सब विश्लेषित करब जरूरी अछि — उच्च आलोचना कारण खोलैत अछि, न कि केवल विशेषण देत अछि।
४७. (B) भूख, मातृत्व, भविष्यक संकट आ असहाय समाजक करुण बिंदु — बच्चाक उपस्थिति पीढ़ीगत अन्यायक संकेत बनैत अछि।
४८. (A) ओ वातावरण, ताप, भय आ जीवित दृश्य-संवेदना रचैत अछि — ध्वन्यात्मक शब्द कविता केँ श्रव्य आ दृश्य दुनू बनबैत अछि।
४९. (C) गरीबी मनुष्यक देह, यौवन आ अस्तित्व पर हिंसक छाप छोड़ैत अछि — बिम्ब सौन्दर्यशास्त्रकेँ सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि।
५०. (C) भाग्य नहि, व्यवस्था द्वारा घसाएल जीवनक सामूहिक व्यथा — पदबंध निजी दुर्भाग्यसँ आगाँ बढ़ि सामाजिक नियति पर प्रश्न उठबैत अछि।
५१. (A) मधुपजीक रचना स्थानीय रहितो व्यापक पाठकीय संवादक क्षमता रखैत अछि — अनुवाद रचनाक अर्थ-क्षेत्र विस्तार करैत अछि।
५२. (B) घसल मुद्रा आ घसल मनुष्यक संबंध अंग्रेजी पाठक धरि संकेतित करैत अछि — शीर्षक अनुवादमे केन्द्रीय प्रतीकक सांस्कृतिक रूपान्तरणक प्रयास अछि।
५३. (A) कविताक अन्याय व्यक्तिगत नहि, संरचनागत सत्ता-संबंधसँ जुड़ल अछि — सामंती ढाँचा पात्रक व्यवहार आ शोषणक कारण बुझबैत अछि।
५४. (B) करुणा पीड़ितक मानवीयता खोलैत, वर्ग-चेतना पीड़ाक सामाजिक कारण देखबैत — दुनू संग हो त कविता भावुकता सँ ऊपर उठैत अछि।

५५. (A) हुनकर सामाजिक विषय, भाषा-साहस आ लोकचेतना नव पीढ़ीक साहित्य-बोध विस्तार करैत अछि — पुनर्पाठ साहित्यिक परंपरा केँ जीवित आ आलोचनात्मक बनबैत अछि।
५६. (C) किएकि मधुपजी पर जीवनी, संस्मरण, समीक्षा, कविता, गीत, 'घसल अठन्नी', दलित चेतना आ मार्क्सवादी पाठ सभ अछि — समृद्ध लेखक-केंद्रित सामग्री गतिशील रूपे अधिक उच्च-स्तरीय प्रश्न माँगैत अछि।
५७. (A) हुनकर काव्य-संरचना, प्रतीक, सामाजिक दृष्टि, भाषा आ पाठकीय प्रभाव समझब जरूरी अछि — लेखकक साहित्यिक मूल्य रचना-पाठ सँ खुलैत अछि।
५८. (C) मधुरता, गीतात्मकता आ रसधारा संग सामाजिक करुणा/विद्रोहक विरोधाभासी संगति — उपनाम मधुरता दैत अछि, मुदा रचना मे मधुरता संग तीक्ष्ण सामाजिक चेतना सेहो अछि।
५९. (A) लय, स्मरणीय पंक्ति, लोक-संवेदना, भाव-संक्षेप आ भाषिक सहजता — गीत जखन लोक-जीवनमे गूँजैत अछि तखन ओकर काव्यिक जीवन दीर्घ होइत अछि।
६०. (A) समाज श्रमजीवी, विधवा, भूखल बालक आ अन्यायग्रस्त मनुष्यक प्रति की जिम्मेदारी लैत अछि — कविता पाठककेँ सामाजिक नैतिकता पर सोचबाक बाध्य करैत अछि।
६१. (A) देह गरीबी, भूख, श्रम आ हिंसाक असरक प्रत्यक्ष पाठ बनि जाइत अछि — शोषित देह सामाजिक संरचनाक दस्तावेज बनैत अछि।
६२. (D) गरीबी आ भूख मनुष्यक स्वाभाविक जीवन-विकास केँ नष्ट करैत अछि — व्यक्तिगत क्षय असमान व्यवस्था पर आरोप बनैत अछि।
६३. (D) लोकप्रियता जँ गहिर सामाजिक-सौंदर्यात्मक गुणसँ जुड़ल हो तँ साहित्यिक महानता केँ बल दैत अछि — मधुपजीक लोकप्रियता रचना-गुणक अध्ययन माँगैत अछि।
६४. (B) स्त्री-श्रम, गरीबी, मातृत्व आ सामाजिक हिंसाक बहुस्तरीय पाठ — बुचनी कविता केँ मानवीय गहराई दैत अछि।
६५. (C) रचना, प्रतीक, सामाजिक चेतना, भाषा, विद्रोह, करुणा, लोकधारा आ आलोचना-दृष्टि पर — लेखक-विशेषांकमे समझ-आधारित प्रश्न जरूरी अछि।
६६. (B) ई करुणा अन्याय-विरोधी चेतना आ मानवीय गरिमा केँ जन्म दैत अछि — सक्रिय करुणा समाज-समीक्षा बनि जाइत अछि।
६७. (A) विचारक प्रभाव बिम्ब, लय, भाषा आ संरचना सँ बढ़ैत अछि — मधुपजीक शक्ति विचार आ शिल्पक संयोगमे अछि।
६८. (C) स्थानीय पात्र आ भाषा सार्वभौमिक भूख, अन्याय, श्रम आ गरिमाक प्रश्न खोलैत अछि — सशक्त स्थानीयता विश्वसनीय सार्वभौमिकता बनबैत अछि।
६९. (D) सामाजिक इतिहास, प्रतीक-बोध, काव्य-भाषा, पात्र-विश्लेषण आ करुणा-दृष्टि — उच्च अध्ययन रचना केँ बहुस्तर पर पढ़ैत अछि।
७०. (B) दुनू रूपमे लय आ भाषा अलग ढंगसँ काम करैत, मुदा सामाजिक चेतना साझा भऽ सकैत अछि — मधुपजीक रचना-संसार विधा-पार सामाजिक स्वर रखैत अछि।
७१. (A) छोट, ठोस, लोकजीवनक वस्तु द्वारा पूरा शोषित जगत केँ प्रतीकित करैत अछि — सफल शीर्षक रचनाक केंद्रीय भाव-सूत्र बनि जाइत अछि।

अध्याय १३ : अरविन्द ठाकुर विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. अरविन्द ठाकुर विशेषांकक मूल साहित्यिक केन्द्र की अछि?

- (A) भाषिक सजावट मात्र
- (B) केवल निजी प्रेमक वर्णन
- (C) अरविन्द ठाकुरक लघुकथा, आजाद गजल, आत्मकथात्मक लेखन आ सामाजिक आलोचनाक संयुक्त मूल्यांकन
- (D) पृष्ठ-सूची आधारित जानकारी

२. 'अन्हारक विरोध मे' शीर्षकमे 'अन्हार' मुख्यतः कोन प्रतीक अछि?

- (A) केवल रातिक दृश्य
- (B) केवल दुखद मौसम
- (C) सामाजिक अन्याय, साम्प्रदायिकता, राजनीतिक हिंसा, पाखंड आ नैतिक अंधकार
- (D) केवल व्यक्तिगत उदासी

३. अरविन्द ठाकुरक लघुकथा सभक सशक्त पक्ष कोन मानल जा सकैत अछि?

- (A) केवल हास्य प्रसंग
- (B) राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक यथार्थक तीक्ष्ण संक्षिप्त प्रस्तुति
- (C) केवल मिथक-वर्णन
- (D) केवल लोकगीतक पुनर्लेखन

४. जाँ जेने आ अंतोन चेखवक उद्धरण एक संग राखब अरविन्द ठाकुरक कथाशिल्प लेल की संकेत दैत अछि?

- (A) दुनू लेखकक समान मत मात्र
- (B) विरोधी सौंदर्य-दृष्टि आ स्वतंत्र लेखक-चेतना दुनूक बीच रचनात्मक तनाव
- (C) विदेशी नामक सजावट
- (D) केवल अनुवाद-अभ्यास

५. चेखवक 'स्वतंत्र लेखक' सम्बन्धी भाव अरविन्द ठाकुरक लघुकथापर कोना लागू होइत अछि?

- (A) रचना केँ लोकप्रिय मान्यता वा तैयार सिद्धान्तक कसौटी पर मात्र नहि कसल जाए
- (B) कथा केवल रोमांस हो
- (C) लेखक कोनो सामाजिक प्रश्न न उठाबय
- (D) कथा सदैव उपदेश हो

६. जाँ जेनेक 'भाषासँ घृणा' वाली उक्ति अरविन्द ठाकुरक सन्दर्भमे कोन पाठ खोलैत अछि?

- (A) भाषा छोड़ि देबाक सलाह
- (B) साहित्य-विरोध
- (C) मातृभाषाक नकार
- (D) भाषाक प्रति तीव्र असंतोष कखनो नव रूपाकार रचबाक ऊर्जा बनि सकैत अछि

७. 'खिस्सा सियार यार'मे राजनीतिक शब्दावलीक प्रयोगक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) एक व्यक्ति कोना समर्थक, विरोधी आ मनबद्ध भाषिक निर्माणमे बदलैत अछि
- (B) राजनीति अनुपस्थित
- (C) शब्दावली अर्थहीन
- (D) कथा केवल पशु-कथा

८. 'पियासल पानि'क स्त्री-पात्र सम्बन्धी जटिलता कोन अछि?

- (A) ई केवल हास्य कथा
- (B) स्त्री-चरित्रक निर्णय समाजक तयशुदा नैतिक कसौटी सँ परे जटिल बनैत अछि
- (C) स्त्री पात्र पूर्ण अनुपस्थित
- (D) ई जल-संकट रिपोर्ट

९. 'अन्हारक विरोध मे' लघुकथा साम्प्रदायिक सम्बन्ध पर कोन बात रेखांकित करैत अछि?

- (A) समुदाय-विरोधी नारा
- (B) हिंसा के उत्सव
- (C) धर्मक पूर्ण असंबद्धता
- (D) हिंसा के बाद बचे लोकमे लज्जा, करुणा आ नैतिक आत्म-परीक्षण सम्भव अछि

१०. 'ढाँचा-१९९२'क पत्र-शैलीक महत्त्व की अछि?

- (A) पत्र लिखबाक नियम
- (B) केवल औपचारिक चिट्ठी
- (C) डाकघरक विवरण
- (D) निजी पत्राचारक बहाना सँ सार्वजनिक साम्प्रदायिक तनाव आ इतिहासक घटना खोलब

११. 'मूस' लघुकथामे मूसक प्रयोग कोन साहित्यिक युक्ति बनैत अछि?

- (A) कृषि-विज्ञान
- (B) एक बाहरी वस्तु/प्राणीक बहाने मनुष्यक मनोविश्लेषण
- (C) पशु-पूजा मात्र
- (D) नैतिकता-विहीन हास्य

१२. 'प्रजातंत्र परिकथा' शीर्षकक विडम्बना कोन अछि?

- (A) राजतंत्रक प्रशंसा
- (B) चुनावसँ असंबंधित कथा
- (C) प्रजातंत्रक आदर्शक नामपर समाचार, हत्या आ राजनीतिक लाभक खेल उजागर होइत अछि
- (D) बाल-परिकथा मात्र

१३. 'अथ गिरगिट कथा'मे गिरगिट प्रतीक ककरा लेल उपयुक्त अछि?

- (A) मानवीय अवसरवाद, वोट-बैंक राजनीति आ रंग बदलैत सामाजिक गठजोड़
- (B) प्रकृति-वर्णन मात्र
- (C) गिरगिट विज्ञान
- (D) बाल-कथा मात्र

१४. 'अय्यासी'मे अय्याशीक परिभाषा कोना उलटि जाइत अछि?

- (A) केवल पर्यटन
- (B) राजदरबारक आनंद
- (C) छोट व्यक्तिगत खर्च गरीब घरक जरूरतक संदर्भमे नैतिक प्रश्न बनि जाइत अछि
- (D) धनक अपार विलास

१५. 'बैकबा-फोड़बा' जाति-राजनीति केँ कोना देखबैत अछि?

- (A) निजी उधारी विवादकेँ पिछड़ा-फॉरवर्ड राजनीति मे बदलैत सामाजिक तंत्र
- (B) जाति प्रश्न अनुपस्थित
- (C) केवल बाल-खेल
- (D) सिर्फ व्यापारिक लेखा

१६. 'बैकबा-फोड़बा'क बाल-खेल प्रसंगक गम्भीर अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असंबद्ध विराम
- (B) बच्चा सभ वयस्क समाजक जातीय हिंसा केँ खेलक रूपमे पुनरावृत्त करैत अछि
- (C) खेलक नियम सिखेनाइ
- (D) बाल-निर्दोषता मात्र

१७. 'विष-पान'मे न्याय-प्रक्रिया कोन रूपमे देखाइत अछि?

- (A) न्याय व्यवस्था निष्पक्ष आ सरल
- (B) कचहरीक उत्सव
- (C) तारीख, गायब प्रमाण, वकीली दबाव आ राजनीतिक संरक्षणसँ पीड़ितक आत्मसमर्पण
- (D) त्वरित न्यायक आदर्श

१८. अरविन्द ठाकुरक लघुकथा शिल्पमे 'रिपोर्ट', 'पत्र', 'झलकी' आदि प्रयोगक महत्त्व की अछि?

- (A) कथ्यक सामाजिक जटिलता अनुरूप विविध संरचना अपनाएब
- (B) केवल शैलीक प्रदर्शन
- (C) शिल्पक असंगति
- (D) कथाविहीन सजावट

१९. 'अन्हारक विरोध मे' संग्रह मैथिली लघुकथाक रिक्तता कोना भरैत अछि?

- (A) लोकगीत संग्रह बनाकऽ
- (B) समाज-राजनीति, ब्यूरोक्रेसी, न्यायपालिका आ आर्थिक जीवनक कथात्मक प्रवेश कराकऽ
- (C) केवल प्रेमकथा लिखिकऽ
- (D) इतिहास-सूची देकऽ

२०. अरविन्द ठाकुरक कथा-दृष्टिमे 'मनुष्यक स्वतंत्रता' किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) केवल उपदेशात्मक धर्म
- (B) झूठ, अहंकार, ढोंग आ क्रूरता सँ मुक्त जीवनक आकांक्षा कथाक नैतिक आधार बनैत अछि
- (C) केवल आर्थिक लाभ
- (D) स्वतंत्रता अप्रासंगिक

२१. 'अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व' कहला सँ अरविन्द ठाकुरक कोन पक्ष उभरैत अछि?

- (A) अन्हारक सौंदर्य-पूजा
- (B) अन्याय, पाखंड, सामंती मानसिकता आ साम्प्रदायिक अंधकारक प्रतिरोध
- (C) सामाजिक प्रश्नसँ दूरी
- (D) निष्क्रिय मौन

२२. 'सामंती सभहँक विरुद्ध तैयार कवि' कथन अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर की बतबैत अछि?

- (A) कवि सामंती प्रशंसा करैत
- (B) कविता समाज-विहीन
- (C) कविता सत्ता, सामंती अहंकार आ सामाजिक अन्यायक विरुद्ध तैयार हस्तक्षेप बनैत अछि
- (D) कविता केवल श्रृंगार

२३. 'परती टूटि गेलै' सन शीर्षक अरविन्द ठाकुरक रचनाने कोन प्रतीकात्मक दिशा खोलैत अछि?

- (A) सूखा मौसम मात्र
- (B) जड़, बंजर वा निष्क्रिय धरातल टूटि नव सामाजिक-सांस्कृतिक अंकुर फूटबाक संभावना
- (C) खेती रिपोर्ट मात्र
- (D) भूमि-मापन

२४. अरविन्द ठाकुरक 'आजाद गजल' पर चर्चा मैथिली गजल-विमर्श लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) केवल नामकरण
- (B) छंदक पूर्ण नकार
- (C) गजल-विमर्श समाप्त करैत
- (D) किएकि ओ गजलमे अनुशासन, स्वतंत्रता आ भाषिक प्रयोगक सीमा पर बहस खोलैत अछि

२५. 'बहुरुपिया प्रदेश' शीर्षकक आलोचनात्मक अर्थ की बुझाईत अछि?

- (A) नाट्य-वेशभूषा मात्र
- (B) समाज आ राजनीति मे बदलैत चेहरा, भूमिका आ मुखौटाक परख
- (C) रंग-बिरंगा उत्सव
- (D) प्रदेशक पर्यटन

२६. अरविन्द ठाकुरक आत्मकथात्मक खंड विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) आत्मकथा साहित्यसँ असंबंधित
- (B) रचनाकारक आत्म-खोज, स्मृति, संवाद आ साहित्यिक संवेदनाक निजी पृष्ठभूमि दैत अछि
- (C) केवल उम्र-सूची
- (D) केवल औपचारिक घोषणा

२७. 'बुल्लियाँ की जाणां में कौन' शीर्षक आत्म-खोजक कोन स्वर दैत अछि?

- (A) राजनीतिक नारा
- (B) केवल हास्य-पंक्ति
- (C) अपन पहचान, भाषा, समाज आ अनुभवक जटिल खोज
- (D) अहंकारक घोषणा

२८. 'बात निकलल, कुठाम तक पहुँचल' चलभाष-वार्ता किएक रोचक विधागत प्रयोग अछि?

- (A) वार्ता/संवादक बहुअर्थी गतिशीलता सँ आत्मकथा आ आलोचना मिलि जाइत अछि
- (B) केवल फोन-नंबर सूची
- (C) शब्दहीन मौन
- (D) प्रश्नोत्तरीक अभाव

२९. जीवकान्त पर अरविन्द ठाकुरक स्मृति-टिप्पणी लेखक-विशेषांकमे कोन भूमिका निभबैत अछि?

- (A) केवल उद्धरण-संग्रह
- (B) जीवनी हटबैत
- (C) साहित्यिक परंपरा, मित्र-स्मृति आ आलोचनात्मक संवाद जोड़ैत अछि
- (D) रचना-संबंध तोड़ैत

३०. 'मिथिलाक संस्कृति: किछु अप्रिय बिन्दु' लेखनक साहस कोन अछि?

- (A) पर्यटन वर्णन
- (B) अपन समाजक असुविधाजनक प्रश्नकेँ आलोचनात्मक ढंगसँ उठेनाइ
- (C) संस्कृतिक नकार मात्र
- (D) केवल प्रशंसा

३१. मिथिला मे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य पर विचार लेखकक कोन चिंता दैत अछि?

- (A) केवल उत्सव-प्रदर्शन
- (B) भविष्यक नकार
- (C) भाषा-संस्कृति केँ जीवित सामाजिक क्रिया आ जन-सहभागितासँ जोड़ब
- (D) सांस्कृतिक निष्क्रियता

३२. लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर 'परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव' चर्चा कोन सूत्र जोड़ैत अछि?

- (A) भक्ति-परंपरा, लोकभाषा आ निर्गुण आध्यात्मिक चेतनाक अंतर्संबंध
- (B) निर्गुण भावक नकार
- (C) केवल वंशावली
- (D) भाषाहीन अध्यात्म

३३. 'ट्रान्सफर्मर' कथा-संग्रह पर अरविन्द ठाकुरक समीक्षा विशेषांकमे किएक रखल गेल?

- (A) कथासँ असंबंधित सूचना
- (B) केवल विज्ञापन
- (C) समीक्षा-विरोध
- (D) ओ लेखकक आलोचनात्मक पाठ-कौशल आ समकालीन कथा-संवाद देखबैत अछि

३४. अरविन्द ठाकुरक विहनि कथा खंड विशेषांकक प्रश्न-संख्या बढ़ेबाक किएक आधार बनैत अछि?

- (A) लेखकक नाम पर्याप्त
- (B) प्रश्न केवल पृष्ठपर हो
- (C) कथ्य, शिल्प, राजनीति, मनोविज्ञान, जाति, साम्प्रदायिकता आ न्याय-प्रक्रिया सभ विषय उपलब्ध अछि
- (D) कथाएँ खाली सूचीमात्र

३५. 'गोरेया बहिन बन्दी/बन्नी' आ कुलदेवी-स्मरणक प्रसंग लेखकक रचना-आरम्भमे कोन संकेत दैत अछि?

- (A) साहित्यसँ असंबंधित पूजा-सूची
- (B) लोक-देवता, स्मृति, वाणी आ रचनात्मक आस्थाक संग कथा-संसारक प्रवेश
- (C) केवल रंग-वर्णन
- (D) देवीक नकार

३६. अरविन्द ठाकुरक कथामे 'राजनीति' केवल पृष्ठभूमि किएक नहि?

- (A) राजनीति अनुपस्थित
- (B) कथानकसँ कटल प्रसंग
- (C) राजनीति पात्रक भाषा, निर्णय, हिंसा, नैतिकता आ सामाजिक संबंध बनबैत/बिगाड़ैत अछि
- (D) केवल मंच-सजावट

३७. 'प्रजातंत्र परिकथा'मे मीडिया-चयनक प्रश्न किएक उभरैत अछि?

- (A) समाचार असंगत
- (B) मीडिया पूर्ण तटस्थ
- (C) हत्या निजी घटना मात्र
- (D) समाचारमे की छपैत अछि आ की छूटैत अछि, ताहिसँ सत्ता-संबंध देखाइत अछि

३८. 'विष-पान'मे 'मेल पेटीशन' पर हस्ताक्षर कोन भाव पैदा करैत अछि?

- (A) न्याय-संघर्षक थकान आ व्यवस्था सामने विवश आत्मसमर्पण
- (B) विजय-उत्सव
- (C) निर्दोष हास्य
- (D) मोकदमा प्रारम्भ

३९. 'अथ गिरगिट कथा'मे नगरमे शान्ति लौटब व्यंग्यात्मक किएक अछि?

- (A) हिंसा समाप्त बिना कारण
- (B) अशांति पैदा करनिहार शक्तिये चुनावी पद पाबि 'शांति'क लाभ उठबैत अछि
- (C) कथा आदर्श प्रशासन
- (D) गिरगिटक प्राकृतिक शांति

४०. 'अय्यासी'मे पत्नीक लाल आँखि कथानकक अंतिम नैतिक दर्पण किएक बनैत अछि?

- (A) घर अप्रासंगिक
- (B) मौज पूर्णतः निर्दोष
- (C) घरक अभावक सामने कथानायकक छोटी मौज अपराध-बोध बनि उठैत अछि
- (D) पत्नी हास्य पात्र

४१. 'ढाँचा-१९९२'मे क्लाइमेक्सक समाचार कथाक संरचना केँ कोना बदलैत अछि?

- (A) कथा बिना अंत
- (B) समाचार असंगत
- (C) इतिहास नहि
- (D) लंबा निजी संवाद अचानक ऐतिहासिक-साम्प्रदायिक दुर्घटना सँ टकरा जाइत अछि

४२. अरविन्द ठाकुरक कथा सभमे 'संक्षिप्तता'क मतलब की नहि अछि?

- (A) कम शब्दमे तीक्ष्ण कथ्य
- (B) अर्थक बहुलता
- (C) सघन संकेत
- (D) गंभीर सामाजिक जटिलता हटाएब नहि

४३. अरविन्द ठाकुरक रचनामे हास्य आ व्यंग्यक उपयोग कोना होइत अछि?

- (A) कथ्य मिटेबाक लेल
- (B) विषय हल्का करबाक लेल
- (C) केवल मनोरंजन
- (D) व्यवस्था, राजनीति आ सामाजिक पाखंडक नकाब उतारबाक लेल

४४. 'बहुरूपिया' संज्ञा अरविन्द ठाकुरक सामाजिक दृष्टिमे कोन समस्या पर वार करैत अछि?

- (A) व्यक्ति, समाज आ सत्ता द्वारा लगातार भूमिका/चेहरा बदलि स्वार्थ साधब
- (B) रंगमंचक पोशाक मात्र
- (C) बच्चाक खेल
- (D) मेला-नाच

४५. अरविन्द ठाकुरक संस्मरण-खंड विशेषांकमे कोन मूल्य जोड़ैत अछि?

- (A) लेखकक मानवीय रूप, सम्बन्ध-संसार आ पाठक-समाजक स्मृति
- (B) केवल तारीख भरैत
- (C) साहित्यिक अर्थ नहि
- (D) रचना हटबैत अछि

४६. 'हाली-हाली बहथु कोसी' सन संस्मरण शीर्षक अरविन्द ठाकुरक संदर्भमे कोन भावभूमि बना सकैत अछि?

- (A) सिर्फ जल-विज्ञान
- (B) प्रश्नसूची
- (C) मिथिला-भूगोल, स्मृति, प्रवाह आ व्यक्तित्वक आत्मीय सम्बन्ध
- (D) कोसीक नक्शा

४७. 'हमरामे अहाँ, अहाँमे हम' शीर्षक लेखक-व्यक्तित्वक कोन सम्बन्धात्मक पक्ष उभारैत अछि?

- (A) लेखक आ पाठक/मित्रक बीच आत्मीय परस्परता
- (B) केवल विरोध
- (C) पूर्ण दूरी
- (D) निरपेक्ष तथ्य-सूची

४८. अरविन्द ठाकुरक बाल-रचना 'टिमटिम'क उपस्थिति विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) बाल-साहित्य असंगत
- (B) लेखकक कमजोरी
- (C) केवल खाली स्थान भरब
- (D) लेखकक गंभीर सामाजिक लेखन संग बाल-संवेदना आ सरल कल्पना सेहो देखाइत अछि

४९. अरविन्द ठाकुरक लेखनमे 'अन्हार'क विरोध आ 'इजोत'क पक्ष ककरा संकेत करैत अछि?

- (A) आँखिक रोशनी मात्र
- (B) रात्रि-वर्णन
- (C) मानवीय न्याय, विवेक, स्वतंत्रता आ सामाजिक सजगता
- (D) दीया-बाती पूजा मात्र

५०. अरविन्द ठाकुरक कथा-पात्र सभ अकसर 'साधारण' किएक होइत अछि?

- (A) साधारण जीवनमे सत्ता, जाति, गरीबी, हिंसा आ पाखंडक वास्तविक असर देखाइत अछि
- (B) उच्चवर्गीय पात्र अनिवार्य
- (C) कथा केवल राजदरबार
- (D) साधारण पात्र अर्थहीन

५१. 'कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइ सँ हटि कऽ' कथा लिखबाक अर्थ की अछि?

- (A) कथा छोड़ि देब
- (B) स्थिर पारिवारिक/परंपरागत कथ्यसँ बाहर समाज-राजनीति-आर्थिक यथार्थ केँ जोड़ब
- (C) पुरान पात्रक अपमान मात्र
- (D) बाल-कथा लिखब

५२. अरविन्द ठाकुरक लघुकथा मे नौकरशाही/ब्यूरोक्रेसीक उपस्थिति किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ब्यूरोक्रेसी कल्पना मात्र
- (B) सत्ता-प्रक्रिया साधारण लोकक जीवनकेँ प्रत्यक्ष प्रभावित करैत अछि
- (C) साहित्यसँ असंगत
- (D) केवल पदनाम

५३. 'बैकबा-फोड़बा'मे दुकान, उधारी आ मारि-पीट ककरा रूपमे बदलैत अछि?

- (A) बाजारक साधारण हिसाब
- (B) हास्य-रंगमंच
- (C) कृषि-पंचांग
- (D) आर्थिक लेन-देन जातीय-सामाजिक संघर्षक आगि बना देल जाइत अछि

५४. अरविन्द ठाकुरक गद्य आ पद्य दुनू पढ़बाक सर्वश्रेष्ठ तरीका की अछि?

- (A) केवल नाम याद रखब
- (B) विषय, भाषा, शिल्प, सामाजिक दृष्टि आ विधागत प्रयोग केँ एक संग देखब
- (C) केवल पुस्तक-लिंक
- (D) केवल छंद गिनब

५५. अरविन्द ठाकुरक आलोचना पर आलोचना लिखैत समय कोन सावधानी आवश्यक अछि?

- (A) केवल दोषारोपण
- (B) केवल प्रशंसा
- (C) पाठ पढ़ने बिना निष्कर्ष
- (D) रचनाक सामाजिक साहसक संग शिल्पगत प्रयोगक सूक्ष्म परीक्षण

५६. 'स्वतंत्र लेखक' बनल रहबाक इच्छा अरविन्द ठाकुरक समाज-दृष्टि सँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) लेखक जिम्मेदारी त्यागैत
- (B) लेखक ककरो विचारधारात्मक कैदमे न फँसि मनुष्यक स्वतंत्रता आ क्रूरता-विरोध केँ प्राथमिकता दैत अछि
- (C) लेखक केवल निजी सुख लिखैत
- (D) लेखक समाज छोड़ैत अछि

५७. अरविन्द ठाकुरक 'स्खलनक प्रतिरोध' काव्य/कथा-पठन मे कोन अवधारणा दैत अछि?

- (A) भाषा-सूची
- (B) कथानक रहित व्याख्या
- (C) स्खलनक उत्सव
- (D) मूल्य-पतन, सामाजिक पतन आ नैतिक अंधकारक विरुद्ध साहित्यिक प्रतिरोध

५८. अरविन्द ठाकुरक लघुकथा सभक पाठक सँ अपेक्षा की अछि?

- (A) कथा-सार रटब
- (B) तैयार नैतिक उत्तर नहि, जटिल सामाजिक प्रश्न पर सोचबाक क्षमता
- (C) केवल हँसी
- (D) प्रश्न न करब

५९. 'अन्हारक विरोध मे'क सफलताक एक कारण की मानल जा सकैत अछि?

- (A) कथा केवल सूचना
- (B) शीर्षक लंबा अछि
- (C) पात्रक नाम कठिन
- (D) व्यक्तिगत घटना, सामुदायिक स्मृति आ नैतिक बेचैनीक सघन मेल

६०. अरविन्द ठाकुर विशेषांकमे प्रश्न ३०-४० सँ अधिक किएक उचित अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ संख्या बेसी अछि मात्र
- (B) किएकि प्रश्न दोहराएब अछि
- (C) किएकि एहि मे साक्षात्कार, आलोचना, संस्मरण, आत्मकथा, लेख, विहनि कथा, कविता, आजाद गजल आ बाल-रचना सभ अछि
- (D) किएकि क्रमांक बेसी अछि

उत्तरमाला — अध्याय १३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) अरविन्द ठाकुरक लघुकथा, आजाद गजल, आत्मकथात्मक लेखन आ सामाजिक आलोचनाक संयुक्त मूल्यांकन — ई विशेषांक लेखकक रचना-संसार केँ एकटा विधा तक सीमित नहि करैत; कथा, गजल, आत्मकथा, संस्मरण आ आलोचना सभकेँ जोड़ैत अछि।

२. (C) सामाजिक अन्याय, साम्प्रदायिकता, राजनीतिक हिंसा, पाखंड आ नैतिक अंधकार — शीर्षकक अन्हार बाहरी राति मात्र नहि, बल्कि समाजक अन्यायपूर्ण संरचना आ मनुष्यक भीतरक अंधकार अछि।

३. (B) राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक यथार्थक तीक्ष्ण संक्षिप्त प्रस्तुति — संपादकीय टिप्पणी हुनकर राजनीतिक-आर्थिक लघुकथा केँ मैथिली कथाक जड़ता तोड़यवला मानैत अछि।

४. (B) विरोधी सौंदर्य-दृष्टि आ स्वतंत्र लेखक-चेतना दुनूक बीच रचनात्मक तनाव — जेने बहिष्कृत-सौंदर्य आ चेखव स्वतंत्रता-नैतिकताक संकेत दैत छथि; अरविन्दक लघुकथा एहि तनावमे पढ़ल जा सकैत अछि।

५. (A) रचना केँ लोकप्रिय मान्यता वा तैयार सिद्धान्तक कसौटी पर मात्र नहि कसल जाए — लघुकथा केँ रूढ़ कसौटी सँ मुक्त रखबाक आग्रह लेखकक स्वतंत्रता आ प्रयोगशीलता केँ बल दैत अछि।

६. (D) भाषाक प्रति तीव्र असंतोष कखनो नव रूपाकार रचबाक ऊर्जा बनि सकैत अछि — उक्ति विरोधाभासी अछि; ई भाषा-संघर्षक मार्फत नव अभिव्यक्ति खोजबाक संकेत बनैत अछि।

७. (A) एक व्यक्ति कोना समर्थक, विरोधी आ मनबद्ध भाषिक निर्माणमे बदलैत अछि — कथा लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवहारमे भाषा द्वारा छवि-निर्माण आ विघटन देखबैत अछि।

८. (B) स्त्री-चरित्रक निर्णय समाजक तयशुदा नैतिक कसौटी सँ परे जटिल बनैत अछि — कथा प्रेम, चरित्र, आवेश आ सामाजिक आरोपक सीमाकेँ उलटि पाठक केँ पुनर्विचार लेल बाध्य करैत अछि।

९. (D) हिंसा के बाद बचे लोकमे लज्जा, करुणा आ नैतिक आत्म-परीक्षण सम्भव अछि — अलीमुद्दीनक लज्जा कथा केँ साम्प्रदायिक आघातक मानवीय उत्तर बनबैत अछि।

१०. (D) निजी पत्राचारक बहाना सँ सार्वजनिक साम्प्रदायिक तनाव आ इतिहासक घटना खोलब — पत्रात्मक रूप कथा केँ निजी स्वर दैत अछि, मुदा अंतमे सार्वजनिक इतिहासक भयावहता सामने अबैत अछि।
११. (B) एक बाहरी वस्तु/प्राणीक बहाने मनुष्यक मनोविश्लेषण — कथा मूस मारबाक विचारसँ आगाँ बढ़ि भीतरी भय, हिंसा आ मनःस्थिति खोलैत अछि।
१२. (C) प्रजातंत्रक आदर्शक नामपर समाचार, हत्या आ राजनीतिक लाभक खेल उजागर होइत अछि — शीर्षक परिकथा कहैत अछि, मुदा भीतर वास्तविक राजनीति आ मीडिया-चयनक कठोर आलोचना अछि।
१३. (A) मानवीय अवसरवाद, वोट-बैंक राजनीति आ रंग बदलैत सामाजिक गठजोड़ — गिरगिट रंग बदलैत अछि; कथामे मनुष्यक राजनीतिक रंग-परिवर्तन ओकरो लजाबैत अछि।
१४. (C) छोट व्यक्तिगत खर्च गरीब घरक जरूरतक संदर्भमे नैतिक प्रश्न बनि जाइत अछि — पत्रिका-सिगरेट-रिक्शा जे मामूली लगैत अछि, घरक तरकारी आ बच्चाक किताबक बरक्स अय्याशी बनैत अछि।
१५. (A) निजी उधारी विवादकेँ पिछड़ा-फॉरवर्ड राजनीति मे बदलैत सामाजिक तंत्र — कथा बतबैत अछि जे स्वार्थ आ हिंसा जातीय पहचानक नामपर राजनीतिक तमाशा बनि सकैत अछि।
१६. (B) बच्चा सभ वयस्क समाजक जातीय हिंसा केँ खेलक रूपमे पुनरावृत्त करैत अछि — ई प्रसंग देखबैत अछि जे सामाजिक विषाक्तता अगिला पीढ़ी धरि पहुँचैत अछि।
१७. (C) तारीख, गायब प्रमाण, वकीली दबाव आ राजनीतिक संरक्षणसँ पीड़ितक आत्मसमर्पण — कथा न्यायालयक क्रिया-प्रक्रिया केँ पीड़ित लेल विष-पान जकाँ अनुभव करबैत अछि।
१८. (A) कथ्यक सामाजिक जटिलता अनुरूप विविध संरचना अपनाएब — प्रत्येक रूप घटना केँ अलग दृष्टि दैत अछि; एहिसँ लघुकथा संक्षिप्त रहितो बहुस्तरीय बनैत अछि।
१९. (B) समाज-राजनीति, ब्यूरोक्रेसी, न्यायपालिका आ आर्थिक जीवनक कथात्मक प्रवेश कराकऽ — हुनकर कथा सभ मैथिली लघुकथामे दुर्लभ राजनीतिक-प्रशासनिक यथार्थ केँ केंद्रमे आनैत अछि।
२०. (B) झूठ, अहंकार, ढोंग आ क्रूरता सँ मुक्त जीवनक आकांक्षा कथाक नैतिक आधार बनैत अछि — चेखवक उद्धरणक पृष्ठभूमि मे स्वतंत्रता कथा-संसारक मूल नैतिक आकांक्षा बनैत अछि।
२१. (B) अन्याय, पाखंड, सामंती मानसिकता आ साम्प्रदायिक अंधकारक प्रतिरोध — व्यक्तित्वक मूल्यांकन रचना-कथ्यसँ जुड़ल अछि—अन्हारक विरोध सामाजिक-साहित्यिक प्रतिरोध अछि।
२२. (C) कविता सत्ता, सामंती अहंकार आ सामाजिक अन्यायक विरुद्ध तैयार हस्तक्षेप बनैत अछि — ई कथन अरविन्दजीक कविता केँ सामाजिक शक्ति-संरचनाक आलोचना सँ जोड़ैत अछि।
२३. (B) जड़, बंजर वा निष्क्रिय धरातल टूटि नव सामाजिक-सांस्कृतिक अंकुर फूटबाक संभावना — परती टूटब रचनात्मक जागरण आ स्थिरता-विरोधक प्रतीक बनि सकैत अछि।
२४. (D) किएकि ओ गजलमे अनुशासन, स्वतंत्रता आ भाषिक प्रयोगक सीमा पर बहस खोलैत अछि — आजाद गजल पारंपरिक गजल-व्याकरण आ आधुनिक अभिव्यक्ति बीचक तनाव पर सोचय बाध्य करैत अछि।
२५. (B) समाज आ राजनीति मे बदलैत चेहरा, भूमिका आ मुखौटाक परख — बहुरूपियापन राजनीतिक-सामाजिक दोहरापनक संकेत अछि।
२६. (B) रचनाकारक आत्म-खोज, स्मृति, संवाद आ साहित्यिक संवेदनाक निजी पृष्ठभूमि दैत अछि — आत्मकथा रचना-व्यक्तित्वक भीतरी स्रोत चिन्हएबाक अवसर दैत अछि।
२७. (C) अपन पहचान, भाषा, समाज आ अनुभवक जटिल खोज — शीर्षक ‘हम के छी’क गहिर प्रश्न उठबैत अछि, जे आत्मकथा आ रचना-दृष्टि सँ जुड़ल अछि।
२८. (A) वार्ता/संवादक बहुअर्थी गतिशीलता सँ आत्मकथा आ आलोचना मिलि जाइत अछि — चलभाष-वार्ता व्यक्तिगत संवादकेँ साहित्यिक अर्थ-क्षेत्र बना दैत अछि।
२९. (C) साहित्यिक परंपरा, मित्र-स्मृति आ आलोचनात्मक संवाद जोड़ैत अछि — लेखक अपन समकालीन आ पूर्ववर्ती साहित्यिक संसारसँ संवाद करैत छथि।
३०. (B) अपन समाजक असुविधाजनक प्रश्नकेँ आलोचनात्मक ढंगसँ उठेनाइ — सांस्कृतिक प्रेमक अर्थ अंध-प्रशंसा नहि, बल्कि दोषक आत्मालोचना सेहो अछि।

३१. (C) भाषा-संस्कृति केँ जीवित सामाजिक क्रिया आ जन-सहभागितासँ जोड़ब — सांस्कृतिक आन्दोलन भविष्य-दृष्टि, संगठन आ लोक-भागीदारीक मांग करैत अछि।
३२. (A) भक्ति-परंपरा, लोकभाषा आ निर्गुण आध्यात्मिक चेतनाक अंतर्संबंध — लेख परंपरा केँ भाषा आ भाव-दर्शनक संग पढ़बाक आग्रह करैत अछि।
३३. (D) ओ लेखकक आलोचनात्मक पाठ-कौशल आ समकालीन कथा-संवाद देखबैत अछि — लेखक केवल सृजक नहि, समकालीन साहित्यक पाठक-आलोचक सेहो छथि।
३४. (C) कथ्य, शिल्प, राजनीति, मनोविज्ञान, जाति, साम्प्रदायिकता आ न्याय-प्रक्रिया सभ विषय उपलब्ध अछि — समृद्ध विधा-वैविध्य गतिशील अधिक प्रश्नक अपेक्षा करैत अछि।
३५. (B) लोक-देवता, स्मृति, वाणी आ रचनात्मक आस्थाक संग कथा-संसारक प्रवेश — कुलदेवीक स्मरण रचना केँ स्थानीय सांस्कृतिक संवेदना सँ जोड़ैत अछि।
३६. (C) राजनीति पात्रक भाषा, निर्णय, हिंसा, नैतिकता आ सामाजिक संबंध बनबैत/बिगाड़ैत अछि — हुनकर लघुकथामे राजनीति कथा-संरचना आ पात्र-व्यवहारक केन्द्र होइत अछि।
३७. (D) समाचारमे की छपैत अछि आ की छूटैत अछि, ताहिसँ सत्ता-संबंध देखाइत अछि — डॉक्टरक सामाजिक भूमिका नहि छपब मीडियाक नैतिक चयन पर प्रश्न अछि।
३८. (A) न्याय-संघर्षक थकान आ व्यवस्था सामने विवश आत्मसमर्पण — लंबी कचहरी-यात्रा पीड़ित केँ समझौता/विष-पान दिस धकेलैत अछि।
३९. (B) अशांति पैदा करनिहार शक्तिये चुनावी पद पाबि 'शांति'क लाभ उठबैत अछि — चेयरमैन-वाइस चेयरमैन बनलाक बाद शांति सत्ता-समझौता पर व्यंग्य करैत अछि।
४०. (C) घरक अभावक सामने कथानायकक छोटी मौज अपराध-बोध बनि उठैत अछि — अंतिम दृश्य घरक वास्तविकता केँ नायकक आत्म-छल पर भारी बना दैत अछि।
४१. (D) लंबा निजी संवाद अचानक ऐतिहासिक-साम्प्रदायिक दुर्घटना सँ टकरा जाइत अछि — टीवी-सूचना कथा केँ निजी पत्रसँ राष्ट्रीय आघात धरि लऽ जाइत अछि।
४२. (D) गंभीर सामाजिक जटिलता हटाएब नहि — लघुकथा छोटी होइत अछि, मुदा छोटका आकार गहिर विषयक निषेध नहि करैत।
४३. (D) व्यवस्था, राजनीति आ सामाजिक पाखंडक नकाब उतारबाक लेल — हुनकर व्यंग्य समाजक गम्भीर प्रश्न केँ तेज बनबैत अछि।
४४. (A) व्यक्ति, समाज आ सत्ता द्वारा लगातार भूमिका/चेहरा बदलि स्वार्थ साधब — बहुरूपिया समाजक छद्म, अवसरवाद आ राजनीतिक रूपांतरणक प्रतीक अछि।
४५. (A) लेखकक मानवीय रूप, सम्बन्ध-संसार आ पाठक-समाजक स्मृति — संस्मरण रचनाकारक जीवित प्रभाव आ सामाजिक उपस्थिति देखबैत अछि।
४६. (C) मिथिला-भूगोल, स्मृति, प्रवाह आ व्यक्तित्वक आत्मीय सम्बन्ध — शीर्षक स्मृति आ नदीक प्रवाहक माध्यमे व्यक्तित्वक आत्मीयता जगबैत अछि।
४७. (A) लेखक आ पाठक/मित्रक बीच आत्मीय परस्परता — लेखक-विशेषांक मे व्यक्तित्व केवल बाहरी परिचय नहि, सम्बन्धक अनुभव सेहो अछि।
४८. (D) लेखकक गंभीर सामाजिक लेखन संग बाल-संवेदना आ सरल कल्पना सेहो देखाइत अछि — लेखकक बहु-विधात्मकता बाल कविताक रूपमे सेहो देखल जाइत अछि।
४९. (C) मानवीय न्याय, विवेक, स्वतंत्रता आ सामाजिक सजगता — अन्हार-इजोतक द्वंद्व नैतिक आ सामाजिक चेतनाक रूपक अछि।
५०. (A) साधारण जीवनमे सत्ता, जाति, गरीबी, हिंसा आ पाखंडक वास्तविक असर देखाइत अछि — सामान्य पात्रक माध्यमे समाजक असाधारण जटिलता देखाइत अछि।
५१. (B) स्थिर पारिवारिक/परंपरागत कथ्यसँ बाहर समाज-राजनीति-आर्थिक यथार्थ केँ जोड़ब — ई कथन मैथिली कथाक विषय-विस्तारक संकेत अछि।
५२. (B) सत्ता-प्रक्रिया साधारण लोकक जीवनकेँ प्रत्यक्ष प्रभावित करैत अछि — राजनीतिक यथार्थ बिना प्रशासनिक तंत्रक आलोचना अधूरा रहैत अछि।
५३. (D) आर्थिक लेन-देन जातीय-सामाजिक संघर्षक आगि बना देल जाइत अछि — निजी आर्थिक प्रश्न राजनीतिक पहिचानक ईंधन बनि जाइत अछि।
५४. (B) विषय, भाषा, शिल्प, सामाजिक दृष्टि आ विधागत प्रयोग केँ एक संग देखब — लेखक बहु-विधात्मक छथि; एकांगी पठन हुनकर साहित्यिक जटिलता घटा देत।
५५. (D) रचनाक सामाजिक साहसक संग शिल्पगत प्रयोगक सूक्ष्म परीक्षण — हुनकर लेखन विषय-साहस आ शिल्प-दोन्हु आधार पर मूल्यांकन मांगैत अछि।

५६. (B) लेखक ककरो विचारधारात्मक कैदमे न फँसि मनुष्यक स्वतंत्रता आ कूरता-विरोध केँ प्राथमिकता दैत अछि — स्वतंत्रता समाज-विमुखता नहि; ई सचेत नैतिक आलोचनाक आधार अछि।
५७. (D) मूल्य-पतन, सामाजिक पतन आ नैतिक अंधकारक विरुद्ध साहित्यिक प्रतिरोध — प्रतिरोध लेखकक रचनात्मक पहचानक प्रमुख सूत्र अछि।
५८. (B) तैयार नैतिक उत्तर नहि, जटिल सामाजिक प्रश्न पर सोचबाक क्षमता — ई कथाएँ पाठककेँ निष्क्रिय नहि छोड़ैत; ओहिमे आलोचनात्मक सहभागिता चाहैत अछि।
५९. (D) व्यक्तिगत घटना, सामुदायिक स्मृति आ नैतिक बेचैनीक सघन मेल — कथा साम्प्रदायिक परिस्थिति केँ भावुक नारा नहि, मानवीय ग्लानिक रूपमे देखबैत अछि।
६०. (C) किएकि एहि मे साक्षात्कार, आलोचना, संस्मरण, आत्मकथा, लेख, विहनि कथा, कविता, आजाद गजल आ बाल-रचना सभ अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक वास्तविक घनत्व पर आधारित होयबाक चाही।

अध्याय १४ : जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक — उच्च-स्तरीय प्रश्नोत्तरी

१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांकक मूल साहित्यिक केन्द्र की अछि?

- (A) लेखकक नाम मात्र
- (B) अनिलजीक गीत, गजल, आत्मकथा-संस्मरण, समीक्षा, एकांकी, पत्राचार आ बाल-कविताक बहुआयामी मूल्यांकन
- (C) क्रम-संख्या याद रखब
- (D) केवल मंचीय मनोरंजन

२. संपादकीय दृष्टिसँ अनिलजी 'मूलतः कवि' कहला पर की संकेत भेटैत अछि?

- (A) ओ गद्य नहि लिखलनि
- (B) ओ साहित्यसँ असंबंधित छथि
- (C) ओ केवल इतिहासकार छथि
- (D) हुनकर साहित्यिक आत्मा पद्य, गीत, गजल आ लयात्मक अभिव्यक्तिमे केंद्रित अछि

३. 'पद्यक मूल गुण गेयता अछि'—एहि विचार पर संपादकीय बहसक मूल बिंदु की अछि?

- (A) गेयता केँ पुरानपन नहि, पद्यक लयात्मक ऊर्जाक रूपमे बुझबाक चाही
- (B) पद्य गेय नहिहो
- (C) लय साहित्यसँ असंबंधित
- (D) गेयता सदैव दोष

४. अनिलजीक गीत-लेखनक कारण हुनकर आत्मकथात्मक कथनमे कोना उभरैत अछि?

- (A) गीत न गाएल जाए
- (B) जीवनक लय, सस्वर पाठ, गायन, स्मरणीयता आ लोकगीत-संस्कारक कारण
- (C) केवल पुरस्कार लेल
- (D) कविता सँ दूरी लेल

५. 'लिखब हमर संस्कारमे शामिल अछि' कथनक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) लेखन अस्थायी शौक
- (B) लेखन दंड
- (C) लेखन पेशा वा मजबूरी नहि, जीवन-सत्य आ आनंदक स्थायी संस्कार अछि
- (D) लेखन केवल रोजगार

६. अनिलजीक 'घोषणा जे हम प्रेमक पक्षमे छी, हिंसाक विरोधमे छी' कथन हुनकर काव्य-दृष्टि कोना बतबैत अछि?

- (A) हिंसाक पक्ष
- (B) भाषाहीन प्रयोग
- (C) कविता केँ नैतिक पक्षधरता—प्रेम, इजोत, अहिंसा—सँ जोड़ैत अछि
- (D) नैतिकता-विहीन मनोरंजन

७. 'गीतसँ गजल धरि' यात्रा कोन साहित्यिक विकासक संकेत अछि?

- (A) लयमय गीत-संस्कारसँ गजल-शिल्पक अनुशासन धरि क्रमिक विस्तार
- (B) गीत छोड़ि साहित्य त्याग
- (C) गद्यसँ चित्रकला धरि
- (D) गजल बिना लय

८. अनिलजीक रचनात्मक विकासमे 'बहर'क भूमिका कोना बदलैत अछि?

- (A) पहिने झंझट लगैत, बादमे सरल वार्णिक/अरबी बहर द्वारा गजलकेँ शिल्प-संयम दैत अछि
- (B) बहर अर्थहीन क्रम
- (C) बहर सदैव अस्वीकार
- (D) बहर गीतक शत्रु

९. 'बहरक झंझटिसँ हमरा आजाद करू' पंक्ति के बाद अनिलजीक पुनर्लेखन कोन बात सिद्ध करैत अछि?

- (A) गजल समाप्त भेल
- (B) बहरक अर्थ नहि
- (C) कवि मैदान छोड़ि देलनि
- (D) प्रतिभा आलोचनात्मक ललकार स्वीकार करि शिल्प-सुधार करि सकैत अछि

१०. 'खिड़की, केबार किछु नै, महल कोना भेलै / ने रदीफ आ ने काफिया, गजल कोना भेलै' मे मूल तर्क की अछि?

- (A) गजल लेल रदीफ-काफिया संरचनात्मक आधार जकाँ आवश्यक अछि
- (B) काफिया निषिद्ध
- (C) महल बिना आधार पर्याप्त
- (D) गजलमे कोनो नियम नहि

११. अनिलजीक रदीफ-प्रयोगक विशेषता की कहल गेल अछि?

- (A) एके रदीफक पुनरावृत्ति
- (B) केवल संस्कृत शब्द
- (C) बहुत विविध, बोलचाल-आधारित आ नूतन रदीफद्वारा गजलकें जीवंत बनब
- (D) रदीफक पूर्ण अभाव

१२. रदीफ 'मोन होइए', 'अछि', 'की', 'राम-राम', 'अहाँ छी' आदि प्रयोग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) रदीफ केवल अरबी शब्द हो
- (B) रदीफक अर्थ नहि
- (C) बोलचाल असाहित्यिक
- (D) बोलचाल, भाव, संवाद आ लोकलयक शब्द गजलमे रदीफ बनि सकैत अछि

१३. अनिलजीक गजल पर 'लौलवश' आ 'झोंकमे' लिखल गजलक भेद किएक उठैत अछि?

- (A) गजल केँ गद्य कहबाक लेल
- (B) स्वाभाविक आवेग आ शिल्प-सचेतताक बीच अंतर देखेबाक लेल
- (C) कवि नकारबाक लेल
- (D) भाषा छोड़बाक लेल

१४. धीरेन्द्र प्रेमर्षिकें देल सियाराम झा सरसक टिप्पणी पर संपादकीय संतुलन कोना अछि?

- (A) पूर्ण नकार मात्र
- (B) साक्षात्कार अप्रासंगिक
- (C) पूर्ण अंध-प्रशंसा
- (D) मंचस्थ लोकप्रियताक आलोचना स्वीकार करैत, मुदा बादक शिल्पीय विकास केँ रेखांकित करैत

१५. मंचस्थ रचना आ साहित्यिक कसौटीक बीच तनाव अनिलजीक सन्दर्भमे की बतबैत अछि?

- (A) साहित्यिक कसौटी बेकार
- (B) लोकप्रिय प्रस्तुति पर्याप्त नहि; रचना केँ शिल्प, भाव आ भाषा पर सेहो खड़ा होयबाक चाही
- (C) पाठक अप्रासंगिक
- (D) मंच पर्याप्त प्रमाण

१६. 'गजल गंगा' नामक संग्रह पर चर्चा किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) केवल नदी-वर्णन
- (B) केवल भक्ति-पुस्तक
- (C) समीक्षा रहित सूची
- (D) एहि मे अनिलजीक गजल-शिल्प, बहर, रदीफ-काफिया आ विचारक तीक्ष्णता देखाइत अछि

१७. 'गीत गंगा' पर अनेक समीक्षा विशेषांकमे किएक अछि?

- (A) गीत अनुपस्थित
- (B) समीक्षा अनावश्यक
- (C) केवल नाम दोहराव
- (D) किएकि गीत-संग्रह अनिलजीक गीतमयता, लोकलय, भाव-धारा आ कवि-स्वर बुझबाक आधार अछि

१८. 'तोरा अंगनामे' पर चर्चा अनिलजीक रचना-संसारक कोन पक्ष खोलैत अछि?

- (A) अडना असाहित्यिक
- (B) केवल वास्तु-विवरण
- (C) गजल-विरोध
- (D) मैथिल अडना, घरेलू-सांस्कृतिक भावभूमि आ गीतात्मक निकटता

१९. 'धारक अइ पार' / 'धारक ओइ पार' सम्बन्धी चर्चा कोन प्रतीक-संभावना खोलैत अछि?

- (A) काव्य-विहीन भूगोल
- (B) सीमा, पारगमन, स्मृति, जीवन-यात्रा आ दीर्घ काव्यात्मक दृष्टि
- (C) नदी-पुलक इंजीनियरिंग
- (D) सिर्फ नाव

२०. अनिलजीक नारी-स्वर पर संपादकीय टिप्पणीक मूल बिंदु की अछि?

- (A) समाज-संबंध नहि
- (B) बालिका-आगमन, दहेज आ सामाजिक यथार्थक विरुद्ध आशा आ प्रतिरोधक स्वर
- (C) केवल श्रृंगार
- (D) नारी-स्वर अनुपस्थित

२१. 'मम्मी तौ चिन्ता जुनि कर'मे बच्ची दहेज लैबला सँ बिआह नहि करबाक बात किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) दहेज समर्थन
- (B) गीतक अर्थ नहि
- (C) बालिका मौन
- (D) बालिका-स्वर सामाजिक कुप्रथा विरुद्ध आत्मसम्मानक घोषणा बनैत अछि

२२. 'कन्नारोहट'क अभाव पर टिप्पणी अनिलजीक नारी-कवितामे कोन गुण देखबैत अछि?

- (A) असंवेदनशीलता
- (B) दुःखक बावजूद आत्मविश्वास आ वास्तविकता सँ लड़बाक रस्ता खोजब
- (C) स्त्री-विरोध
- (D) दुःखक नकार

२३. अनिलजीक बाल-कविताक उपस्थिति लेखक-विशेषांकमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) लय आवश्यक नहि
- (B) बाल साहित्य असंगत
- (C) कवि केवल वयस्कक लेल
- (D) ओ लय, सरलता, बाल-मन आ शिक्षात्मक-संवेदनात्मक भाषाक क्षमता देखबैत अछि

२४. 'बालानां कृते' खंड कोन पाठक-चिन्ता दैत अछि?

- (A) केवल वयस्क आलोचना
- (B) भाषा-विमुखता
- (C) बाल-पाठकक उपेक्षा
- (D) बाल-पाठक लेल मैथिलीमे लयात्मक, सहज, संस्कारात्मक साहित्य उपलब्ध करब

२५. अनिलजीक आत्मकथा-संस्मरण 'किए लिखै छी?' प्रश्नक उत्तरमे लेखनक कोन रूप सामने अबैत अछि?
- (A) आनंद, सत्य, संस्कार, घोषणा आ जीवन-क्रमक रूपमे लेखन
(B) लेखन केवल नौकरी
(C) लेखन दुर्घटना
(D) लेखन अस्वीकार
२६. अनिलजीक लेखन-आनंदक सूची—छपब, पाठ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, मंच—कथी पर बल दैत अछि?
- (A) श्रोता अप्रासंगिक
(B) लेखनक सृजन-सुख आ पाठक/श्रोता-संपर्कक सामुदायिक आनंद
(C) लेखन निजी बंद कमरा मात्र
(D) प्रकाशन अनावश्यक
२७. 'सत्य वएह थिक जे काल्हियो छल, आइयो अछि आ काल्हियो रहत' लेखनक संदर्भमे कोन भाव दैत अछि?
- (A) सत्य अप्रासंगिक
(B) लेखन क्षणिक फैशन
(C) कवि मौन
(D) लेखन अनिलजीक स्थायी जीवन-मूल्य अछि, समयानुसार बदलयवला दिखावा नहि
२८. अनिलजीक गीत-संस्कारमे स्त्रीगणक मुख सँ सुनल अवसर-गीतक भूमिका की अछि?
- (A) लोकगीतक नकार
(B) गीत शास्त्रहीन
(C) लोक-जीवनक विविध संस्कार, अवसर आ लय गीत-लेखनक प्रारंभिक स्रोत बनैत अछि
(D) स्त्री-स्वर असंगत
२९. गीतक स्मरणीयता पर अनिलजीक जोर शिक्षण/साहित्य लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
- (A) लय स्मृति घटबैत
(B) गीत याद नहि रहैत
(C) लयबद्ध गेय पाठ स्मृति आ सामूहिक पुनरावृत्ति केँ आसान बनबैत अछि
(D) गीत केवल मौन पाठ
३०. अनिलजीक समीक्षात्मक लेख 'प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल' शीर्षक कोन समस्या उठबैत अछि?
- (A) गजल पर समीक्षा निषिद्ध
(B) लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धता आ गजल-रचनाक शिल्प/भावमे असंगति पर प्रश्न
(C) लेखक नाम-सूची
(D) प्रतिबद्धता निरर्थक
३१. अनिलजी द्वारा 'अरविन्दजीक आजाद गजल' पर लेखनक अर्थ की अछि?
- (A) अरविन्दजीक नकार मात्र
(B) गजल-विमर्शसँ दूरी
(C) गीतक अन्त
(D) ओ समकालीन गजल-प्रयोगक आलोचनात्मक पठन करैत छथि
३२. 'कोरांटी' एकांकीक उपस्थिति अनिलजीक रचनाकार-रूपमे कोन विस्तार देखबैत अछि?
- (A) संवाद-विहीनता
(B) कवि-गजलकारक संग नाट्य-संवाद आ मंचीय संरचनाक क्षमता
(C) एकांकी असाहित्यिक
(D) अनिलजी केवल आलोचक

३३. पत्राचार खंड लेखक-विशेषांकमें किएक मूल्यवान अछि?

- (A) लेखकक संवादशीलता, साहित्यिक सम्बन्ध आ युगीन साहित्यिक परिवेशक दस्तावेज
- (B) केवल निजी कागज
- (C) पत्र असाहित्यिक
- (D) रचनासँ असंबंधित

३४. 'की भेटल आ की हेरा गेल' शीर्षक लेखकक कोन आत्ममूल्यांकन-भाव खोलैत अछि?

- (A) स्मृति-विहीनता
- (B) प्रश्नक अभाव
- (C) खरीद-बिक्री सूची
- (D) सृजन-यात्राक उपलब्धि आ हानि, स्मृति आ समयक आलोचनात्मक लेखा-जोखा

३५. अनिलजीक गजलमें विचारक तीक्ष्णता कखन उभरैत अछि?

- (A) जखन रदीफ-काफिया आ बहरक अनुशासनमें सामाजिक/नैतिक कथ्य कसि जाइत अछि
- (B) रदीफ अर्थहीन हो
- (C) भाव विखरि जाइ
- (D) नियम हटि जाइ

३६. अनिलजीक गजल-विकासमें आलोचना की भूमिका निभबैत अछि?

- (A) सृजनक सीमापर ध्यान खींचि कविक आत्म-संशोधन आ शिल्प-साधना बढ़बैत अछि
- (B) कवि सुधारि नहि सकैत
- (C) समीक्षा निरर्थक
- (D) आलोचना सदा हानिकारक

३७. 'सरल वार्षिक बहर, वर्ष-१७' उल्लेख गजल-शिल्पमें किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) एहि सँ गजलकें माप, अनुशासन आ श्रव्य-संतुलन भेटैत अछि
- (B) वर्ष-संख्या सजावट
- (C) बहर नकार
- (D) गजल मात्र गद्य

३८. अनिलजीक रचनामें लोकभाषा आ बोलचालक प्रयोग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) लोकभाषा निषिद्ध
- (B) केवल कृत्रिम भाषा चाही
- (C) रचना कें मैथिली जीवन-लय, संवाद आ पाठकक अनुभवसँ जोड़ैत अछि
- (D) बोलचाल अर्थहीन

३९. अनिलजीक 'गजल गंगा' पर जगदानन्द झा 'मनु'क समीक्षाक महत्त्व की हो सकैत अछि?

- (A) केवल नामोल्लेख
- (B) गजल-संग्रहक शिल्प, भाव आ मैथिली गजल परंपरामें स्थानक आलोचनात्मक विवेचन
- (C) समीक्षा असंबंधित
- (D) गजल पढ़ब नहि

४०. 'गीत-गंगा' पर कामिनी, परमानन्द प्रभाकर, छत्रानंद सिंह झा, अमरनाथ ठाकुर आदि लेख किएक संकेतपूर्ण अछि?

- (A) एके संग्रह पर अनेक दृष्टि लेखकक गीत-संसारक बहुस्तरीयता देखबैत अछि
- (B) समीक्षा दोहराव मात्र
- (C) आलोचना न हो
- (D) गीत महत्वहीन

४१. 'गीतगंगामे अनिल' सन शीर्षकक आलोचनात्मक आशय की अछि?

- (A) संग्रहक भीतर कवि-व्यक्तित्व, गीत-धारा आ भाव-संरचना खोजब
- (B) गंगा नदी-विज्ञान
- (C) केवल शीर्षक-सूची
- (D) कवि अनुपस्थित

४२. 'मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर अनिल' कहला सँ कोन कसौटी अपेक्षित अछि?

- (A) सामग्री-विहीनता
- (B) केवल लोकप्रिय नाम
- (C) भाषा, शिल्प, रदीफ-काफिया, बहर आ नव कथ्य सभ पर मजबूती
- (D) नियम-विहीन लेखन

४३. अनिलजीक कवितामे 'इजोतक पक्ष' आ 'अन्हारक विरोध' ककरा संग संवाद करैत अछि?

- (A) मूल्यहीनता
- (B) हिंसाक समर्थन
- (C) प्रेम, अहिंसा, सचेतता, सामाजिक आशा आ मानवीय मूल्य
- (D) अंधकारक उत्सव

४४. उत्तर-औपनिवेशिक रचनाकार लेल भगवानक अस्तित्व 'बुझौअलि' कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) विज्ञानक अनुपस्थिति
- (B) काव्यसँ असंबंधित तथ्य
- (C) आधुनिक विज्ञान, विश्वास, सृष्टि-सौंदर्य आ अस्तित्व-प्रश्नक तनाव
- (D) धर्मक सरल नकार मात्र

४५. सूर्य, चान, तरेगन, मेघ, फसल आदि बिम्ब संपादकीयमे कोन भाव पैदा करैत अछि?

- (A) खगोलशास्त्र परीक्षा
- (B) खेती-पंचांग
- (C) विज्ञान-विरोध
- (D) सृष्टि-सौंदर्यक सामने मनुष्यक अस्तित्व-आश्चर्य आ आध्यात्मिक प्रश्न

४६. अनिलजीक बालिका-केन्द्रित कविता बेरोजगार बालक प्रश्नसँ अलग किएक देखल गेल?

- (A) बालकक प्रश्न नहि
- (B) स्त्री-संवेदना बेकार
- (C) समाजमे बालिका जन्म, दहेज आ स्त्री-असुरक्षा विशेष शोक/संघर्षक कारण अछि
- (D) बालिका अनुपस्थित

४७. अनिलजीक गीतक 'संगीतबद्ध' होयबाक क्षमता साहित्यिक प्रसारमे किएक आवश्यक अछि?

- (A) गीत पाठकसँ आगाँ श्रोता, मंच, आ सामूहिक गायन धरि पहुँचैत अछि
- (B) श्रोता जरूरी नहि
- (C) गीत मौन रहय
- (D) संगीत गीतक शत्रु

४८. अनिलजीक रचना मे 'पढ़ब-लिखब-सिखब' सम्बन्ध किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) प्रतिभा अभ्यास बिना
- (B) लेखन निरंतर शिक्षण, अभ्यास आ आत्म-विकासक प्रक्रिया अछि
- (C) पढ़ब व्यर्थ
- (D) लेखन सीखब रोकेत

४९. अनिलजीक गजलमे रदीफक विविधता पाठकक अनुभव कोना बदलैत अछि?

- (A) प्रत्येक गजलमे अलग बोलचाल, ध्वनि, स्मृति आ भाव-रंग बनैत अछि
- (B) सभी गजल समान
- (C) रदीफ प्रभावहीन
- (D) भाषा जड़

५०. अनिलजीक रचनाक मूल्यांकनमे 'लोकप्रियता' मात्र किएक पर्याप्त नहि?

- (A) लोकप्रियता संग शिल्प, भाव, भाषा, लय आ विचारक कसौटी आवश्यक अछि
- (B) लोकप्रियता ही अंतिम प्रमाण
- (C) शिल्प न देखब
- (D) साहित्यिक पढ़ाई अनावश्यक

५१. अनिलजीक गजल-साधना मैथिली गजल-नवजागरणसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) बहर चर्चा बंद
- (B) गजल-नवजागरण असंगत
- (C) बहर पर बहस, रदीफ-काफिया अनुशासन आ भाषा-सचेत प्रयोगक माध्यमे
- (D) मैथिली गजल अनुपस्थित

५२. अनिलजीक बाल कविता, गजल, गीत आ एकांकी एक संग पढ़ला सँ की निष्कर्ष निकलैत अछि?

- (A) ओ बहु-विधात्मक रचनाकार छथि, मुदा लयात्मक कवि-स्वर हुनकर केन्द्र अछि
- (B) कविता अनुपस्थित
- (C) ओ एक विधा तक सीमित
- (D) गद्य सब किछु

५३. अनिलजीक आत्मकथा मे 'नोकरीमे रहलहुँ, सेवानिवृत्तिक बादो लिखि रहल छी' कथन की सिद्ध करैत अछि?

- (A) सेवानिवृत्ति बाद मौन
- (B) लेखन जीवन-स्थिति सँ स्वतंत्र, निरंतर साधना अछि
- (C) लेखन बाल्यावस्था तक
- (D) लेखन केवल नौकरी-काल

५४. अनिलजीक पत्राचार खंडक अध्ययन छात्र लेल किएक उपयोगी अछि?

- (A) पत्र साहित्यिक दस्तावेज नहि
- (B) एहिसँ साहित्यिक युग, संवाद, प्रकाशन-संस्कृति आ लेखकक आत्मीयता बुझाईत अछि
- (C) पत्र केवल निजी रहस्य
- (D) पत्र पढ़ब बेकार

५५. अनिलजीक समालोचना खंडमे दूसर लेखकक समीक्षा हुनकर कौन रूप देखबैत अछि?

- (A) समालोचना निषिद्ध
- (B) दूसर लेखक असंबंधित
- (C) रचनाकारक संग आलोचक आ पाठकक रूप
- (D) ओ केवल बालकवि

५६. 'प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल' पढ़ैत समय सर्वोत्तम प्रश्न की होयबाक चाही?

- (A) लेखकक नाम मात्र
- (B) साहित्यकारक विचारधारा गजल-शिल्प आ कथ्य मे केना उतरैत वा टूटैत अछि
- (C) शीर्षकक क्रमांक की
- (D) पृष्ठ कतेक

५७. अनिलजीक विशेषांकमे आत्मकथा-संस्मरण खंड बड़का किएक अछि?

- (A) लेखकक साहित्यिक यात्रा, बाल्यस्वभाव, लेखन-आनंद, गीत-गजल यात्रा आ संबंध-संसार बुझाबय लेल
- (B) रचना कम छल
- (C) खाली स्थान भरबाक लेल
- (D) स्मृति बेकार

५८. अनिलजीक भाषा-चेतना मे मैथिली घर-आँगनक उपस्थिति कोन रूपमे अछि?

- (A) गीत, अडना, लोक-संस्कार, बोलचाल आ मातृभाषिक आत्मीयता
- (B) भाषा अनाथ
- (C) घर-आँगन असाहित्यिक
- (D) लोक-संस्कार अनुपस्थित

५९. अनिलजीक 'आँखिमे चित्र हो मैथिली केर' शीर्षक आत्मकथाक कोन भाव दैत अछि?

- (A) आत्मकथा नहि
- (B) चित्रकला मात्र
- (C) भाषा अदृश्य
- (D) मैथिली भाषा-संस्कृतिक दृश्य, स्मृति आ आत्मपहिचानक चित्रात्मक उपस्थिति

६०. 'एकटा छलाह ननू कका' सन संस्मरणक साहित्यिक महत्त्व की अछि?

- (A) व्यक्ति-स्मृति मार्फत समाज, संबंध आ जीवन-मानक चित्रण
- (B) कका असंबंधित
- (C) स्मृति असाहित्यिक
- (D) संस्मरण निरर्थक

६१. अनिलजीक रचनामे प्रेम आ हिंसा-विरोधक घोषणा विद्यार्थी कोना पढ़य?

- (A) शब्द-सज्जा
- (B) राजनीति मात्र
- (C) भावुकता मात्र
- (D) केवल भावुक नारा नहि, बल्कि कविताक नैतिक-मानवीय आधार

६२. गजलमे रदीफ-काफिया आ गीतमे लय—दुनूक साझा गुण की अछि?

- (A) श्रव्य अनुशासन जे भाव केँ स्मरणीय आ प्रभावी बनबैत अछि
- (B) दुनू छंद-विरोधी
- (C) दुनू गद्य मात्र
- (D) दुनू अलग-अलग असंबंधित

६३. अनिलजीक रचनाक आलोचनामे पुरान बनाम नव पीढ़ी विवाद केँ कोना समझब उचित अछि?

- (A) पुरान सदैव गलत
- (B) बहस असंभव
- (C) नव सदैव गलत
- (D) सरल पीढ़ी-विरोध नहि, बल्कि गेयता, भाव, छंद आ आधुनिक अभिव्यक्तिक जटिल बहस

६४. 'गीत गंगा' आ 'गजल गंगा' नामक आवृत्ति लेखकक काव्य-विश्वमे 'गंगा' प्रतीकक कोन अर्थ दे सकैत अछि?

- (A) संग्रह असंबंधित
- (B) भूगोल सूची मात्र
- (C) प्रवाह, पवित्रता, निरंतरता आ गीत/गजल-धाराक व्यापकता
- (D) प्रवाह-विरोध

६५. अनिलजीक विशेषांकमे प्रश्न संख्या अधिक किएक रखल गेल?

- (A) किएकि एहि मे आत्मकथा, गीत-गजल, समीक्षाएँ, एकांकी, पत्राचार, बाल-कविता आ व्यापक संपादकीय बहस अछि
- (B) किएकि प्रश्न दोहरायब अछि
- (C) किएकि पृष्ठ गिनबाक अछि
- (D) किएकि क्रमांक पूछबाक अछि

उत्तरमाला — अध्याय १४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) अनिलजीक गीत, गजल, आत्मकथा-संस्मरण, समीक्षा, एकांकी, पत्राचार आ बाल-कविताक बहुआयामी मूल्यांकन — ई लेखक-विशेषांक एक विधा पर सीमित नहि; रचनाकारक विकास, शिल्प, व्यक्तित्व आ संवाद सभ समेटैत अछि।
२. (D) हुनकर साहित्यिक आत्मा पद्य, गीत, गजल आ लयात्मक अभिव्यक्तिमे केंद्रित अछि — गद्य-समीक्षा रहितो हुनकर प्रमुख पहचान कवि रूपमे देखल गेल अछि।
३. (A) गेयता केँ पुरानपन नहि, पद्यक लयात्मक ऊर्जाक रूपमे बुझबाक चाही — संपादकीय पुरान-नव संघर्षक सरलीकरण सँ बचैत गेयता आ भावक सम्बन्ध पर विचार करैत अछि।
४. (B) जीवनक लय, सस्वर पाठ, गायन, स्मरणीयता आ लोकगीत-संस्कारक कारण — अनिलजी गीतकेँ जीवन-लय आ स्त्रीगणक मुख सँ सुनल परम्परागत गीत-संस्कारसँ जोड़ैत छथि।
५. (C) लेखन पेशा वा मजबूरी नहि, जीवन-सत्य आ आनंदक स्थायी संस्कार अछि — अनिलजी लेखनकेँ जीवनभरि चलयवला सत्य, घोषणा आ आनंद मानैत छथि।
६. (C) कविता केँ नैतिक पक्षधरता—प्रेम, इजोत, अहिंसा—सँ जोड़ैत अछि — लेखन हुनका लेल सामाजिक-नैतिक घोषणा सेहो अछि।
७. (A) लयमय गीत-संस्कारसँ गजल-शिल्पक अनुशासन धरि क्रमिक विस्तार — अनिलजीक रचना-यात्रा गीतक गेयता आ गजलक संरचनात्मक अनुशासन दुनू मे विकसित होइत अछि।
८. (A) पहिने झंझट लगैत, बादमे सरल वार्णिक/अरबी बहर द्वारा गजलकेँ शिल्प-संयम दैत अछि — संपादकीय देखबैत अछि जे चुनौती स्वीकार कऽ अनिलजी बहरक अनुशासनमे गजल लिखैत छथि।
९. (D) प्रतिभा आलोचनात्मक ललकार स्वीकार करि शिल्प-सुधार करि सकैत अछि — अनिलजी बादमे बहर आधारित गजल रचलनि; ई आत्म-संशोधनक उदाहरण अछि।
१०. (A) गजल लेल रदीफ-काफिया संरचनात्मक आधार जकाँ आवश्यक अछि — दोहा-सदृश पंक्ति गजलक शिल्पीय आधारक महत्त्व सरल प्रतीक सँ बतबैत अछि।
११. (C) बहुत विविध, बोलचाल-आधारित आ नूतन रदीफद्वारा गजलकेँ जीवंत बनब — संपादकीय मे रदीफक लंबी सूची हुनकर प्रयोगशीलता देखबैत अछि।
१२. (D) बोलचाल, भाव, संवाद आ लोकलयक शब्द गजलमे रदीफ बनि सकैत अछि — अनिलजी रदीफ केँ जीवित भाषा सँ चुनि मैथिली गजलकेँ स्वाभाविक बनबैत छथि।
१३. (B) स्वाभाविक आवेग आ शिल्प-सचेतताक बीच अंतर देखेबाक लेल — संपादकीय कहैत अछि जे रदीफ-काफियाक प्रयोग लापरवाही नहि, रचनात्मक झोंकक परिणाम अछि।
१४. (D) मंचस्थ लोकप्रियताक आलोचना स्वीकार करैत, मुदा बादक शिल्पीय विकास केँ रेखांकित करैत — लेख आलोचना आ प्रशंसा दुनू केँ संतुलित रखैत अनिलजीक क्रमिक विकास देखबैत अछि।
१५. (B) लोकप्रिय प्रस्तुति पर्याप्त नहि; रचना केँ शिल्प, भाव आ भाषा पर सेहो खड़ा होयबाक चाही — संपादकीय मंचीय प्रभावक सीमा आ रचना-गुणक आवश्यकता पर विचार करैत अछि।
१६. (D) एहि मे अनिलजीक गजल-शिल्प, बहर, रदीफ-काफिया आ विचारक तीक्ष्णता देखाइत अछि — गजल गंगा हुनकर गीतसँ गजल धरि यात्राक महत्त्वपूर्ण पड़ाव अछि।
१७. (D) किएकि गीत-संग्रह अनिलजीक गीतमयता, लोकलय, भाव-धारा आ कवि-स्वर बुझबाक आधार अछि — विभिन्न आलोचक गीत-गंगा केँ अलग-अलग दृष्टिसँ परखैत छथि।
१८. (D) मैथिल अडना, घरेलू-सांस्कृतिक भावभूमि आ गीतात्मक निकटता — शीर्षक घरे-आँगनक सांस्कृतिक संसार केँ गीतात्मक संवेदना सँ जोड़ैत अछि।

१९. (B) सीमा, पारगमन, स्मृति, जीवन-यात्रा आ दीर्घ काव्यात्मक दृष्टि — दीर्घ कविताक शीर्षक जीवनक एक पार सँ दोसर पारक रूपक बना सकैत अछि।
२०. (B) बालिका-आगमन, दहेज आ सामाजिक यथार्थक विरुद्ध आशा आ प्रतिरोधक स्वर — ‘मम्मी तों चिन्ता जुनि कर’ सन कविता स्त्री-अनुभव आ भविष्यक प्रतिरोध खोलैत अछि।
२१. (D) बालिका-स्वर सामाजिक कुप्रथा विरुद्ध आत्मसम्मानक घोषणा बनैत अछि — ई कविता नारी चेतना केँ रोदन नहि, साहस आ विकल्पक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।
२२. (B) दुःखक बावजूद आत्मविश्वास आ वास्तविकता सँ लड़बाक रस्ता खोजब — आँसू मात्र नहि; कविता सामाजिक यथार्थक सामना करबाक ऊर्जा खोजैत अछि।
२३. (D) ओ लय, सरलता, बाल-मन आ शिक्षात्मक-संवेदनात्मक भाषाक क्षमता देखबैत अछि — बाल कविता लेखकक भाषा केँ सरल, स्मरणीय आ बाल-उन्मुख बनबैत अछि।
२४. (D) बाल-पाठक लेल मैथिलीमे लयात्मक, सहज, संस्कारात्मक साहित्य उपलब्ध करब — विदेह परंपरा बाल-साहित्य केँ भाषा-संरक्षणक महत्त्वपूर्ण माध्यम मानैत अछि।
२५. (A) आनंद, सत्य, संस्कार, घोषणा आ जीवन-क्रमक रूपमे लेखन — अनिलजी लेखनकेँ बहु-आनंद, निरंतर अभ्यास आ जीवनक सत्य मानैत छथि।
२६. (B) लेखनक सृजन-सुख आ पाठक/श्रोता-संपर्कक सामुदायिक आनंद — लेखन पूरा भेलासँ लऽ लोक द्वारा पढ़ल-सुनल जाए धरि आनंदक विस्तार अछि।
२७. (D) लेखन अनिलजीक स्थायी जीवन-मूल्य अछि, समयानुसार बदलयवला दिखावा नहि — ई कथन लेखनक स्थायित्व आ आत्मिक गंभीरता रेखांकित करैत अछि।
२८. (C) लोक-जीवनक विविध संस्कार, अवसर आ लय गीत-लेखनक प्रारंभिक स्रोत बनैत अछि — अनिलजी नेनपनसँ अवसर-विशेष गीत सुनैत आएल, जे हुनकर गीत-रुचि बनौलक।
२९. (C) लयबद्ध गेय पाठ स्मृति आ सामूहिक पुनरावृत्ति केँ आसान बनबैत अछि — गीत गाएल आ दोहराएल जा सकैत अछि; एहिसँ ओकर सामाजिक जीवन लंबा होइत अछि।
३०. (B) लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धता आ गजल-रचनाक शिल्प/भावमे असंगति पर प्रश्न — शीर्षक साहित्यकारक घोषित विचार आ वास्तविक गजल-रचना बीचक दूरी पर विचार करैत अछि।
३१. (D) ओ समकालीन गजल-प्रयोगक आलोचनात्मक पठन करैत छथि — अनिलजी स्वयं गजलकार होइत समकालीन प्रयोग पर विचार करैत छथि।
३२. (B) कवि-गजलकारक संग नाट्य-संवाद आ मंचीय संरचनाक क्षमता — एकांकी लेखकक विधागत विस्तारक प्रमाण अछि।
३३. (A) लेखकक संवादशीलता, साहित्यिक सम्बन्ध आ युगीन साहित्यिक परिवेशक दस्तावेज — पत्राचार लेखकीय व्यक्तित्वक सामाजिक-साहित्यिक नेटवर्क देखबैत अछि।
३४. (D) सृजन-यात्राक उपलब्धि आ हानि, स्मृति आ समयक आलोचनात्मक लेखा-जोखा — शीर्षक जीवन-साहित्यक हिसाब-पुस्तिका नहि, अनुभवक विचारशील पुनर्पाठ अछि।
३५. (A) जखन रदीफ-काफिया आ बहरक अनुशासनमे सामाजिक/नैतिक कथ्य कसि जाइत अछि — संपादकीय अनुसार बादक गजल सभमे रदीफ-काफिया नूतनता आ विचारक तीक्ष्णता विशेष रूपे देखाइत अछि।
३६. (A) सृजनक सीमापर ध्यान खींचि कविक आत्म-संशोधन आ शिल्प-साधना बढ़बैत अछि — सरसक आलोचना बाद अनिलजीक बहर-आधारित पुनर्लेखन विकासक उदाहरण अछि।
३७. (A) एहि सँ गजलकेँ माप, अनुशासन आ श्रव्य-संतुलन भेटैत अछि — वार्णिक बहर मैथिली गजलकेँ व्यवहारिक छंदानुशासन दैत अछि।
३८. (C) रचना केँ मैथिली जीवन-लय, संवाद आ पाठकक अनुभवसँ जोड़ैत अछि — रदीफ-सूची आ गीत-संस्कार दुनू बतबैत अछि जे जीवित भाषा हुनकर काव्यक आधार अछि।
३९. (B) गजल-संग्रहक शिल्प, भाव आ मैथिली गजल परंपरामे स्थानक आलोचनात्मक विवेचन — विशेषांकमे अलग समीक्षकक उपस्थिति बहुवाचक आलोचना-संवाद बनबैत अछि।
४०. (A) एके संग्रह पर अनेक दृष्टि लेखकक गीत-संसारक बहुस्तरीयता देखबैत अछि — बहु-आलोचना रचनाक स्वीकार्यता आ विवेचन-सम्भावना बढ़बैत अछि।
४१. (A) संग्रहक भीतर कवि-व्यक्तित्व, गीत-धारा आ भाव-संरचना खोजब — आलोचना कृति मार्फत रचनाकारक स्वर चिन्हैत अछि।

४२. (C) भाषा, शिल्प, रदीफ-काफिया, बहर आ नव कथ्य सभ पर मजबूती — सशक्त हस्ताक्षर कहब तखन सार्थक जखन रचनात्मक कौशलक आधार देखाएल जाए।
४३. (C) प्रेम, अहिंसा, सचेतता, सामाजिक आशा आ मानवीय मूल्य — ई नैतिक घोषणाएँ हुनकर गीत-गजल संसारक अंतर्धारा बनैत अछि।
४४. (C) आधुनिक विज्ञान, विश्वास, सृष्टि-सौंदर्य आ अस्तित्व-प्रश्नक तनाव — संपादकीय ई प्रश्नकें दर्शन, विज्ञान आ कविताक बीचक गूढ़ उलझन बनबैत अछि।
४५. (D) सृष्टि-सौंदर्यक सामने मनुष्यक अस्तित्व-आश्चर्य आ आध्यात्मिक प्रश्न — प्रकृति-बिम्ब कविता आ दर्शन कें जोड़ि भगवान-प्रश्नक जटिलता देखबैत अछि।
४६. (C) समाजमे बालिका जन्म, दहेज आ स्त्री-असुरक्षा विशेष शोक/संघर्षक कारण अछि — संपादकीय नारी-कविताक सामाजिक पृष्ठभूमि स्त्रीक विशेष यथार्थमे देखैत अछि।
४७. (A) गीत पाठकसँ आगाँ श्रोता, मंच, आ सामूहिक गायन धरि पहुँचैत अछि — गीतक सामाजिक जीवन ओकर गेयता आ संगीत-सम्भावना सँ बढ़ैत अछि।
४८. (B) लेखन निरंतर शिक्षण, अभ्यास आ आत्म-विकासक प्रक्रिया अछि — ‘जकरा लिखबाक मोन होइ छै तकरा लिखबाक हिस्सक छै’—ई रचनात्मक विनम्रता अछि।
४९. (A) प्रत्येक गजलमे अलग बोलचाल, ध्वनि, स्मृति आ भाव-रंग बनैत अछि — रदीफ-विविधता गजल-संग्रह कें एकरस नहि रहए दैत अछि।
५०. (A) लोकप्रियता संग शिल्प, भाव, भाषा, लय आ विचारक कसौटी आवश्यक अछि — संपादकीय लोकप्रिय मंचीयता आ साहित्यिक गुणवत्ताक अलग कसौटी पर विचार करैत अछि।
५१. (C) बहर पर बहस, रदीफ-काफिया अनुशासन आ भाषा-सचेत प्रयोगक माध्यमे — संपादकीय गजल-नवजागरणक संदर्भमे अनिलजीक शिल्पीय विकास देखैत अछि।
५२. (A) ओ बहु-विधात्मक रचनाकार छथि, मुदा लयात्मक कवि-स्वर हुनकर केन्द्र अछि — विधा-विस्तारक बावजूद कवि-स्वर, लय आ गेयता प्रमुख सूत्र अछि।
५३. (B) लेखन जीवन-स्थिति सँ स्वतंत्र, निरंतर साधना अछि — लेखन हुनका लेल जीवनक प्रत्येक चरणमे चलयवला प्रक्रिया अछि।
५४. (B) एहिसँ साहित्यिक युग, संवाद, प्रकाशन-संस्कृति आ लेखकक आत्मीयता बुझाईत अछि — पत्राचार साहित्येतिहासक जीवित स्रोत बनि सकैत अछि।
५५. (C) रचनाकारक संग आलोचक आ पाठकक रूप — लेखक अपन समयक रचनासँ आलोचनात्मक संवाद करैत छथि।
५६. (B) साहित्यकारक विचारधारा गजल-शिल्प आ कथ्य मे केना उतरैत वा टूटैत अछि — ई लेख सामाजिक प्रतिबद्धता आ विधागत अभिव्यक्तिक संबंध पर विचार करबैत अछि।
५७. (A) लेखकक साहित्यिक यात्रा, बाल्यस्वभाव, लेखन-आनंद, गीत-गजल यात्रा आ संबंध-संसार बुझाबय लेल — लेखक-विशेषांकमे जीवन-संदर्भ रचनाक अर्थ खोलैत अछि।
५८. (A) गीत, अडना, लोक-संस्कार, बोलचाल आ मातृभाषिक आत्मीयता — हुनकर काव्यलोक मैथिली घर-समाजक लयमे साँस लैत अछि।
५९. (D) मैथिली भाषा-संस्कृतिक दृश्य, स्मृति आ आत्मपहिचानक चित्रात्मक उपस्थिति — शीर्षक आत्मकथा कें मातृभाषा-दृष्टि सँ जोड़ैत अछि।
६०. (A) व्यक्ति-स्मृति मार्फत समाज, संबंध आ जीवन-मानक चित्रण — संस्मरण लेखकक आत्मीय सामाजिक संसारक झलक दैत अछि।
६१. (D) केवल भावुक नारा नहि, बल्कि कविताक नैतिक-मानवीय आधार — घोषणा रचना-दृष्टि कें मूल्यपरक बनबैत अछि।
६२. (A) श्रव्य अनुशासन जे भाव कें स्मरणीय आ प्रभावी बनबैत अछि — अनिलजीक गीत-संस्कार गजल-अनुशासनमे रूपांतरित भऽ सकैत अछि।
६३. (D) सरल पीढ़ी-विरोध नहि, बल्कि गेयता, भाव, छंद आ आधुनिक अभिव्यक्तिक जटिल बहस — संपादकीय पीढ़ीगत झगड़ाक आड़मे छिपल मूल काव्य-प्रश्न उठबैत अछि।
६४. (C) प्रवाह, पवित्रता, निरंतरता आ गीत/गजल-धाराक व्यापकता — गंगा-प्रतीक काव्यधारा, लोकविश्वास आ भाव-प्रवाहक संकेत अछि।
६५. (A) किएकि एहि मे आत्मकथा, गीत-गजल, समीक्षाएँ, एकांकी, पत्राचार, बाल-कविता आ व्यापक संपादकीय बहस अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक घनत्व आ विधागत विस्तार पर आधारित अछि।

अध्याय १५ : विदेह सम्मान विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. विदेह सम्मान विशेषांकक मूल उद्देश्य की बुझाईत अछि?

- (A) केवल एक लेखकक जीवनी
- (B) केवल सरकारी सम्मानक पुनरावृत्ति
- (C) साहित्य, भाषा, पत्रकारिता, कला, संगीत-नाटक आ सामाजिक-सार्वजनिक काजक वैकल्पिक अभिलेखन आ सम्मान
- (D) केवल पुरस्कार-सूची बनायब

२. 'समानान्तर साहित्य अकादेमी' नामक आशय की अछि?

- (A) मुख्यधारा संस्थानसँ अलग मैथिली-संस्कृतिक स्वतंत्र सम्मान-दृष्टि विकसित करब
- (B) केवल दिल्ली केन्द्रित व्यवस्था
- (C) सरकारी अकादेमीक प्रतिलिपि मात्र
- (D) पुरस्कारक विरोध

३. विदेह सम्मानमे साहित्यक संग कला, संगीत, नाटक, पत्रकारिता आदिक समावेश किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) साहित्यक महत्व घटबैत अछि
- (B) कला केँ साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (C) प्रश्न संख्या बढ़ेबाक उपाय
- (D) मैथिली संस्कृति केँ बहुविध जीवित परम्परा मानि ओकर सम्पूर्ण रचनात्मकता केँ स्वीकार करैत अछि

४. विदेह सम्मानक वैकल्पिकता कोन साहित्यिक लोकतंत्रक संकेत दैत अछि?

- (A) प्रतिष्ठित केन्द्रसँ बाहरक रचनाकार, कलाकार आ लोक-प्रतिभाक पहचान
- (B) भाषा-विमुखता
- (C) पुरस्कार-विरोधी दृष्टि
- (D) केवल प्रसिद्ध लोकक पुनः सम्मान

५. फेलो पुरस्कारक 'समग्र योगदान' श्रेणी किएक अलग महत्त्व रखैत अछि?

- (A) केवल पदक वितरण
- (B) केवल उमेरक सम्मान
- (C) एक पृष्ठक सूचना
- (D) एकल पुस्तक नहि, जीवन-भरिक साहित्यिक-सांस्कृतिक योगदानक स्वीकृति दैत अछि

६. मूल, बाल, युवा आ अनुवाद पुरस्कारक विभाजनक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यक विखंडन
- (B) अनावश्यक वर्गीकरण
- (C) केवल नाम बढ़ेबाक तरीका
- (D) भिन्न पीढ़ी, विधा आ साहित्यिक आवश्यकताक संतुलित प्रतिनिधित्व

७. बाल साहित्य पुरस्कार विदेह सम्मानमे किएक आवश्यक अछि?

- (A) भाषाक भविष्य बाल-पाठक आ बाल-रचनाक संस्कारसँ बनैत अछि
- (B) केवल मनोरंजन लेल
- (C) बाल साहित्य गौण अछि
- (D) बाल-पाठकक जरूरत नहि

८. युवा पुरस्कारक सांस्कृतिक भूमिका की अछि?

- (A) परम्परा तोड़बाक भय
- (B) युवा लेखनक अवमूल्यन
- (C) केवल वरिष्ठ साहित्यकारक सम्मान
- (D) नव पीढ़ीक रचनात्मक ऊर्जा केँ वैधता आ सार्वजनिक पहचान देब

९. अनुवाद पुरस्कार मैथिली साहित्य लेल किएक आवश्यक अछि?

- (A) भाषिक शुद्धता नष्ट करैत अछि
- (B) अनुवाद असाहित्यिक अछि
- (C) केवल विदेशीकरण
- (D) दूसर भाषाक श्रेष्ठ कृतिकें मैथिली पाठकसँ जोड़ि भाषाक अभिव्यक्ति-क्षेत्र बढ़बैत अछि

१०. विदेह सम्मानमे नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला जोड़बाक अर्थ की अछि?

- (A) केवल मंचीय मजाक
- (B) मैथिली सांस्कृतिक जीवनक गैर-पुस्तकीय रचनात्मकता केँ सेहो साहित्यिक समाजमे मान्यता
- (C) साहित्य विरोध
- (D) कला-सूची मात्र

११. गाम-स्तरक कलाकार आ शिल्पकारक नाम अंकित करब कोन प्रकारक अभिलेखन अछि?

- (A) गैर-साहित्यिक विवरण
- (B) लोक-सांस्कृतिक जीवित धारक लोकक ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण
- (C) कला-इतिहाससँ असंबंधित
- (D) केवल स्थानीय सूचना

१२. सम्मान-सूचीमे पिता/गाम/उमेर सन जानकारीक सांस्कृतिक उपयोग की भऽ सकैत अछि?

- (A) लोकप्रतिभाक सामाजिक पृष्ठभूमि आ सांस्कृतिक भूगोलक पहचान
- (B) केवल औपचारिकता
- (C) साहित्यिक हानि
- (D) प्रश्नक उत्तर याद करब

१३. 'कसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति' सन श्रेणी विदेह सम्मानक दृष्टि कोना विस्तृत करैत अछि?

- (A) लोकजीवनक नकार
- (B) कृषि साहित्यसँ अलग अछि
- (C) साहित्य-कला सँ आगू बढ़ि जीवन-पद्धति आ श्रम-संस्कृति केँ सम्मानित करैत अछि
- (D) सम्मानक सीमा घटबैत अछि

१४. विदेह सम्मान विशेषांककेँ केवल 'पुरस्कार सूची' मानब किएक अपर्याप्त अछि?

- (A) सूची मात्र पर्याप्त अछि
- (B) सांस्कृतिक संदर्भ गौण
- (C) विचारक आवश्यकता नहि
- (D) कारण ई मैथिली समाजक सांस्कृतिक प्राथमिकता, वैकल्पिक संस्था-निर्माण आ अभिलेखीय चेतनाक दस्तावेज अछि

१५. सम्मान आ अभिलेखनक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) सम्मान अभिलेखन हटबैत अछि
- (B) सम्मान तत्काल स्वीकृति दैत अछि, अभिलेखन भविष्यक स्मृति बचबैत अछि
- (C) दुनू असंबंधित
- (D) अभिलेखन केवल सरकारी काज

१६. साहित्य, पत्रकारिता आ भाषा केँ एक संग राखब किएक सार्थक अछि?

- (A) पत्रकारिता असाहित्यिक
- (B) साहित्य अकेले पर्याप्त
- (C) तीनू मैथिली सार्वजनिक जीवनक विचार, अभिव्यक्ति आ प्रसारक आधार अछि
- (D) भाषा स्थिर वस्तु

१७. लोक-कला आ ललित-कला सम्मानक संयुक्त उपस्थिति कोन दृष्टि दैत अछि?

- (A) मिथिला कलामे परंपरागत लोक रूप आ आधुनिक कलात्मक अभिव्यक्ति दुनूक मान्यता
- (B) ललित कला बेकार
- (C) दुनूकें अलग करबाक आग्रह
- (D) लोककला हीन अछि

१८. संगीत-नाटक अकादेमी समानान्तर सम्मानक विचार मैथिली मंचक लेल की संकेत दैत अछि?

- (A) संगीत भाषा-विहीन
- (B) मंचक कोनो साहित्यिक अर्थ नहि
- (C) मैथिली रंग-संगीत परम्परा केँ स्वतंत्र संस्थागत मूल्यांकन चाही
- (D) नाटक केवल मनोरंजन

१९. सम्मानमे स्त्री कलाकारक उपस्थिति कोन प्रश्न खोलैत अछि?

- (A) नाम मात्रे पर्याप्त
- (B) केवल पुरुष-केन्द्रित इतिहास
- (C) स्त्री-संवेदना अप्रासंगिक
- (D) मैथिली सांस्कृतिक कर्ममे स्त्री प्रतिभाक दृश्यता आ पहचान

२०. युवा आयुक अभिनय/नृत्य सम्मान मैथिली संस्कृतिक भविष्यक लेल की बतबैत अछि?

- (A) कला केवल वृद्धक क्षेत्र
- (B) युवा प्रतिभा अस्थिर
- (C) कला-संस्कार बाल/युवा अवस्थासँ शुरू भऽ सामुदायिक निरन्तरता बनबैत अछि
- (D) प्रशिक्षणक जरूरत नहि

२१. अनुवाद पुरस्कारमे बंगला, मराठी, हिंदी, कोंकणी कृतिक उल्लेखक व्यापक अर्थ की अछि?

- (A) अनुवाद दोसर भाषाक गुलामी
- (B) भारतीय भाषा संवाद अनावश्यक
- (C) मैथिली अलग-थलग अछि
- (D) मैथिली साहित्य भारतीय भाषिक-संवादक सक्रिय सहभागी अछि

२२. पुरस्कारमे कथा, कविता, नाटक, गजल, उपन्यास, बाल-निबंध आदि विधाक उपस्थिति की दर्शबैत अछि?

- (A) मैथिली साहित्यक विधागत बहुलता आ विकासशीलता
- (B) केवल कविता प्रधानता
- (C) विधाक अभाव
- (D) साहित्यक संकुचन

२३. 'वैकल्पिक साहित्य अकादेमी'क प्रतिष्ठा किएक बनैत अछि?

- (A) लगातार, पारदर्शी आ बहुविध श्रेणी द्वारा भाषिक समाजक भरोसा अर्जित करबाक कारण
- (B) केवल नामकरण
- (C) सरकारी आदेश
- (D) एक बेरक घोषणा

२४. विदेह सम्मान विशेषांकमे सामाजिक-सार्वजनिक काजक उल्लेख साहित्यक सीमा कोना बदलैत अछि?

- (A) कर्मक स्मृति बेकार
- (B) जन-सेवा असाहित्यिक
- (C) साहित्य समाजसँ अलग
- (D) साहित्यिक समाज केँ सामाजिक कर्म, जन-सेवा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि

२५. सम्मानक माध्यमे विदेह ई-पत्रिका कोन संस्थागत भूमिका निभबैत अछि?

- (A) केवल मनोरंजन वेबसाइट
- (B) ई-पत्रिका मात्र प्रकाशन नहि, सांस्कृतिक मंच, अभिलेखागार आ मूल्यांकन-व्यवस्था बनैत अछि
- (C) केवल खबर-पत्र
- (D) केवल डाउनलोड लिंक

२६. डिजिटल ई-पत्रिकाक द्वारा सम्मान अभिलेखनक खास लाभ की अछि?

- (A) लोकक पहुँच घटैत अछि
- (B) डिजिटल माध्यम अस्थायी मात्र
- (C) दस्तावेज व्यापक, सुलभ, खोजनीय आ दीर्घकालिक स्मृति रूपमे सुरक्षित रहैत अछि
- (D) अभिलेख छिपि जाइत अछि

२७. 'सम्मान' आ 'पुरस्कार' मे उच्चतर सांस्कृतिक अर्थक भेद कोना देखल जा सकैत अछि?

- (A) दुनू केवल धनराशि
- (B) पुरस्कार उपलब्धि पर केन्द्रित, सम्मान व्यक्तित्व/परम्परा/समुदायक मान्यता सेहो दैत अछि
- (C) पुरस्कार बिना संस्कृति
- (D) सम्मान निरर्थक

२८. विदेह सम्मानक पाठक लेल तैयारी कएला पर कोन प्रकारक प्रश्न उपयोगी होयत?

- (A) कौन पृष्ठ पर नाम अछि
- (B) श्रेणी, उद्देश्य, वैकल्पिकता, सांस्कृतिक अर्थ आ विधागत विस्तार पर अवधारणात्मक प्रश्न
- (C) फॉन्ट आकार की अछि
- (D) क्रमांक कतेक अछि

२९. समानान्तर सम्मानक निर्माण मैथिली साहित्यक आत्मनिर्भरता कोना बढ़बैत अछि?

- (A) स्वमूल्यांकनक विरोध
- (B) बाहरी मान्यता पर निर्भरता
- (C) भाषिक निष्क्रियता
- (D) मैथिली समाज अपन मूल्यांकन-मानक स्वयं गढ़ैत अछि

३०. सम्मान-संस्कृति मे नैतिक सावधानी की होयबाक चाही?

- (A) पक्षपात स्वाभाविक
- (B) साहित्यिक कसौटी नहि चाही
- (C) सम्मान रचना-कर्म, योगदान आ सांस्कृतिक मूल्य पर आधारित हो, निजी पक्षपात पर नहि
- (D) योगदान गौण

३१. विदेह सम्मानक बहु-क्षेत्रीय स्वरूप मैथिली अध्ययन लेल कोन शोध-द्वार खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक समाजशास्त्र, कला-इतिहास, लोकसंस्कृति, डिजिटल अभिलेख आ संस्था-अध्ययन
- (B) समाजशास्त्र अप्रासंगिक
- (C) शोध असंभव
- (D) केवल नाम-स्मरण

३२. गाम-आधारित शिल्पकारक सम्मान शहरी-केंद्रित सांस्कृतिक दृष्टि पर की प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) रचनात्मकता शहर वा विश्वविद्यालय तक सीमित नहि, लोक-समुदायमे सेहो जीवित अछि
- (B) गाममे कला नहि
- (C) लोककाज असंगत
- (D) शहर मात्र संस्कृति

३३. पुरस्कार-वर्षक क्रमिकता किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) क्रमांकक खेल
- (B) केवल कैलेंडर सूचना
- (C) साहित्यसँ संबंध नहि
- (D) ओ सम्मान-प्रक्रियाक निरंतरता आ संस्थागत स्मृति देखबैत अछि

३४. विदेह सम्मानमे भाषा सम्मान अलग रूपमे किएक उभरैत अछि?

- (A) साहित्य भाषा बिना संभव
- (B) भाषा गौण अछि
- (C) भाषा केवल व्याकरण
- (D) भाषा केवल माध्यम नहि, साहित्य-संस्कृतिक आधारभूत पहचान अछि

३५. विदेह सम्मानक प्रश्नावली बनबैत समय पृष्ठ/क्रम-सूची प्रश्न किएक टारब चाही?

- (A) पृष्ठ याद करब पर्याप्त
- (B) किएकि परीक्षा-जोग ज्ञान सम्मानक सांस्कृतिक अर्थ, विधा-विस्तार आ संस्थागत भूमिका बुझब अछि
- (C) विचारक जरूरत नहि
- (D) क्रमांक साहित्यक मूल

३६. पुरस्कारमे 'मूल' आ 'अनुवाद' दुनूक समान उपस्थिति कोन संतुलन बनबैत अछि?

- (A) स्वरचित साहित्य आ अंतर-भाषिक संवाद दुनूकें महत्व
- (B) अनुवाद मूलक शत्रु
- (C) भाषा संवाद बन्द
- (D) मूल साहित्य गौण

३७. विदेह सम्मान विशेषांक मैथिली ई-पत्रिका आन्दोलनक कोन आयाम देखबैत अछि?

- (A) प्रकाशनक सीमा तय
- (B) डिजिटल साहित्य असंगत
- (C) ई-पत्रिका साहित्य प्रकाशित करबाक संग संस्थागत सांस्कृतिक कार्य सेहो करि सकैत अछि
- (D) ई-पत्रिका केवल क्षणिक ब्लॉग

३८. सम्मानक सूचीमे 'पत्रकारिता'क उपस्थिति भाषा-आन्दोलन लेल किएक जरूरी अछि?

- (A) पत्रकारिता भाषा-सार्वजनिकता, विमर्श आ जन-संपर्कक माध्यम अछि
- (B) पत्रकारिता साहित्य-विरोधी
- (C) समाचारक कोनो मूल्य नहि
- (D) भाषा निजी वस्तु

३९. लोकनाट्य, अभिनय आ हास्य-अभिनयक सम्मान मैथिली रंगपरंपराक कोन पहलू रेखांकित करैत अछि?

- (A) रंगमंचक गंभीर, हास्य, लोक-प्रदर्शन आ सामुदायिक मनोरंजन-संस्कार
- (B) हास्य साहित्य नहि
- (C) अभिनय गौण
- (D) रंगमंच मृत विधा

४०. हारमोनियम, ढोलक आदि वाद्यक सम्मानक व्यापक अर्थ की अछि?

- (A) संगीत केवल शब्द
- (B) वाद्य असंगत
- (C) गीत-संगीत केवल गायकक नहि, वादकक कौशल आ सामूहिक रचना पर निर्भर अछि
- (D) वादक अदृश्य रहथि

४१. मृत्तिका-कला, काष्ठ-कला, वस्तुकला सम्मान मिथिला संस्कृतिक कोन भौतिक पक्ष बचबैत अछि?

- (A) शिल्पक स्मृति आवश्यक नहि
- (B) केवल बाजारू वस्तु
- (C) भौतिक कला असाहित्यिक
- (D) हाथक कौशल, पदार्थ-ज्ञान, उपयोगिता आ सौंदर्यक लोकपरम्परा

४२. विदेह सम्मानक अंतर्धारा कोन अछि?

- (A) कला-कर्म विस्मृत हो
- (B) सम्मान बाहरी मान्यता पर छोड़ब
- (C) मैथिली समाज अपन रचनात्मक श्रम केँ स्वयं पहिचानय, दर्ज करय आ पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाबय
- (D) भाषा-समाज निष्क्रिय रहय

४३. सम्मान-विशेषांकमे प्रश्न-संख्या ३०-४० सँ अधिक किएक उचित अछि?

- (A) किएकि नाम दोहराएब अछि
- (B) किएकि पृष्ठ बेसी अछि मात्र
- (C) किएकि क्रम याद करब अछि
- (D) कारण ई एक विषय नहि, अनेक श्रेणी, विधा, कलाकार, साहित्यकार आ सांस्कृतिक संस्थाक संयुक्त दस्तावेज अछि

४४. विदेह सम्मानक अध्ययनसँ मैथिली साहित्यक विद्यार्थी की सीखि सकैत अछि?

- (A) केवल कंठस्थ सूची
- (B) सम्मान अप्रासंगिक
- (C) साहित्यिक संस्था-निर्माण, पुरस्कार-राजनीति, लोक-संस्कृति आ डिजिटल अभिलेखनक सम्बन्ध
- (D) साहित्यक कोई सामाजिक आधार नहि

४५. समानान्तर सम्मान मैथिली अस्मिताक निर्माणमे कोना योगदान दैत अछि?

- (A) अस्मिताक नकार
- (B) अन्य भाषा पर निर्भरता
- (C) लोकस्मृतिक विस्मरण
- (D) मैथिली भाषा-संस्कृतिक उपलब्धि केँ सार्वजनिक, दस्तावेजित आ गौरवपूर्ण बनबैत अछि

४६. विदेह सम्मान विशेषांकमे उच्च-स्तरीय प्रश्नक आदर्श दिशा की होयबाक चाही?

- (A) सिर्फ वर्ष-स्मरण
- (B) सम्मानक नीतिगत, सांस्कृतिक, विधागत, भाषिक आ अभिलेखीय अर्थक परीक्षण
- (C) कौन नाम कतय छपल
- (D) कतेक लाइनक सूची

४७. पुरस्कार-संस्कृति यदि अभिलेखनसँ नहि जुड़ल हो तखन की खतरा अछि?

- (A) अभिलेखनक जरूरत नहि
- (B) विस्मृति लाभदायक
- (C) योगदान जल्दी विस्मृत भऽ जाइत अछि आ सांस्कृतिक इतिहास अपूर्ण रहि जाइत अछि
- (D) इतिहास स्वतः बनैत अछि

४८. विदेह सम्मान विशेषांकक समग्र साहित्यिक संदेश की कहल जा सकैत अछि?

- (A) मैथिली रचनात्मकता बहुकेन्द्रिक, लोक-आधारित, जीवित आ स्व-मूल्यांकनक्षम अछि
- (B) लोक-संस्कृति गौण अछि
- (C) सम्मान केवल रस्म अछि
- (D) मैथिली रचनात्मकता सीमित अछि

१. (C) साहित्य, भाषा, पत्रकारिता, कला, संगीत-नाटक आ सामाजिक-सार्वजनिक काजक वैकल्पिक अभिलेखन आ सम्मान — ई विशेषांक सम्मानकें अभिलेखन, मूल्यांकन आ वैकल्पिक सांस्कृतिक इतिहास बनएबाक साधन रूपमे देखबैत अछि।
२. (A) मुख्यधारा संस्थानसँ अलग मैथिली-सांस्कृतिक स्वतंत्र सम्मान-दृष्टि विकसित करब — समानान्तर शब्द वैकल्पिक, लोक-आधारित आ भाषिक-सांस्कृतिक स्वायत्तता कें सूचित करैत अछि।
३. (D) मैथिली संस्कृति कें बहुविध जीवित परम्परा मानि ओकर सम्पूर्ण रचनात्मकता कें स्वीकार करैत अछि — मिथिला-संस्कृति केवल लिखित पाठ नहि; अभिनय, नृत्य, संगीत, चित्र, शिल्प आ लोककाज सभ मिलि सांस्कृतिक संसार बनबैत अछि।
४. (A) प्रतिष्ठित केन्द्रसँ बाहरक रचनाकार, कलाकार आ लोक-प्रतिभाक पहचान — सम्मानक वास्तविक लोकतंत्र तखन बनैत अछि जखन गाम, लोककला, युवा, बाल-साहित्य आ अनुवाद सभकें स्थान भेटैत अछि।
५. (D) एकल पुस्तक नहि, जीवन-भरिक साहित्यिक-सांस्कृतिक योगदानक स्वीकृति दैत अछि — समग्र योगदान श्रेणी लेखकक दीर्घकालिक भूमिका आ परंपरा-निर्माण कें स्वीकार करैत अछि।
६. (D) भिन्न पीढ़ी, विधा आ साहित्यिक आवश्यकताक संतुलित प्रतिनिधित्व — ई विभाजन साहित्य-व्यवस्था कें बहुस्तरीय बनबैत अछि—मुख्यधारा, बाल पाठक, युवा स्वर आ अनुवादक सेतु सभकें जगह दैत अछि।
७. (A) भाषाक भविष्य बाल-पाठक आ बाल-रचनाक संस्कारसँ बनैत अछि — बाल साहित्य भाषा-संरक्षण, पाठक-निर्माण आ सांस्कृतिक स्मृति लेल आधारभूत क्षेत्र अछि।
८. (D) नव पीढ़ीक रचनात्मक ऊर्जा कें वैधता आ सार्वजनिक पहचान देब — युवा सम्मान साहित्यक भविष्यक संभावनाकें संस्थागत स्वीकृति दैत अछि।
९. (D) दूसर भाषाक श्रेष्ठ कृतिकें मैथिली पाठकसँ जोड़ि भाषाक अभिव्यक्ति-क्षेत्र बढ़बैत अछि — अनुवाद मैथिली कें अंतर-भारतीय साहित्यिक संवादमे सक्रिय बनबैत अछि।
१०. (B) मैथिली सांस्कृतिक जीवनक गैर-पुस्तकीय रचनात्मकता कें सेहो साहित्यिक समाजमे मान्यता — विदेह सम्मान संस्कृतिकें पन्ना तक सीमित नहि रखैत, प्रदर्शन आ दृश्य-कला तक विस्तार करैत अछि।
११. (B) लोक-सांस्कृतिक जीवित धारक लोकक ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण — लोक कलाकारक नाम लिखल जाएब भविष्यक शोध लेल अमूल्य प्रमाण बनैत अछि।
१२. (A) लोकप्रतिभाक सामाजिक पृष्ठभूमि आ सांस्कृतिक भूगोलक पहचान — एहन विवरण कला-कर्मकें सामुदायिक, पारिवारिक आ भौगोलिक संदर्भ दैत अछि।
१३. (C) साहित्य-कला सँ आगू बढ़ि जीवन-पद्धति आ श्रम-सांस्कृति कें सम्मानित करैत अछि — ई श्रेणी देखबैत अछि जे मिथिला संस्कृति खेत, श्रम, आत्मनिर्भरता आ लोकज्ञानसँ बनैत अछि।
१४. (D) कारण ई मैथिली समाजक सांस्कृतिक प्राथमिकता, वैकल्पिक संस्था-निर्माण आ अभिलेखीय चेतनाक दस्तावेज अछि — प्रश्न उच्च-स्तरक होएबाक लेल सूची पछाड़ि ओकर सांस्कृतिक अर्थ बुझब आवश्यक अछि।
१५. (B) सम्मान तत्काल स्वीकृति दैत अछि, अभिलेखन भविष्यक स्मृति बचबैत अछि — विदेह सम्मान पुरस्कारक संग-संग सांस्कृतिक स्मृति-संग्रह सेहो करैत अछि।
१६. (C) तीनू मैथिली सार्वजनिक जीवनक विचार, अभिव्यक्ति आ प्रसारक आधार अछि — भाषा माध्यम अछि, साहित्य सर्जना अछि आ पत्रकारिता सार्वजनिक संवाद; तीनू परस्पर निर्भर अछि।
१७. (A) मिथिला कलामे परंपरागत लोक रूप आ आधुनिक कलात्मक अभिव्यक्ति दुनूक मान्यता — विदेह सम्मान लोकपरंपरा आ सृजनशील नवोन्मेषक बीच पुल बनबैत अछि।
१८. (C) मैथिली रंग-संगीत परम्परा कें स्वतंत्र संस्थागत मूल्यांकन चाही — नाटक, गीत आ संगीत भाषा-सांस्कृतिक श्रव्य-दृश्य रूप अछि, जे सम्मानक योग्य अछि।
१९. (D) मैथिली सांस्कृतिक कर्ममे स्त्री प्रतिभाक दृश्यता आ पहचान — युवा स्त्री कलाकारक उल्लेख साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहासमे स्त्री-अंशक दस्तावेजीकरण अछि।

२०. (C) कला-संस्कार बाल/युवा अवस्थासँ शुरू भऽ सामुदायिक निरन्तरता बनबैत अछि — युवा कलाकारक मान्यता परम्पराकेँ अगिला पीढ़ी धरि लऽ जाएबक साधन अछि।
२१. (D) मैथिली साहित्य भारतीय भाषिक-संवादक सक्रिय सहभागी अछि — भिन्न भाषासँ अनुवाद मैथिली पाठकक साहित्यिक क्षितिज विस्तृत करैत अछि।
२२. (A) मैथिली साहित्यिक विधागत बहुलता आ विकासशीलता — अनेक विधा सम्मानित होएब मैथिली साहित्यक आंतरिक विविधता प्रमाणित करैत अछि।
२३. (A) लगातार, पारदर्शी आ बहुविध श्रेणी द्वारा भाषिक समाजक भरोसा अर्जित करबाक कारण — संस्था काजसँ बनैत अछि; क्रमिक सम्मान आ अभिलेखन वैकल्पिक प्रतिष्ठा बनबैत अछि।
२४. (D) साहित्यिक समाज केँ सामाजिक कर्म, जन-सेवा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि — मैथिली सार्वजनिक जीवनमे साहित्य आ समाजक सम्बन्ध गाढ़ अछि।
२५. (B) ई-पत्रिका मात्र प्रकाशन नहि, सांस्कृतिक मंच, अभिलेखागार आ मूल्यांकन-व्यवस्था बनैत अछि — विदेह ई-पत्रिका डिजिटल माध्यमसँ मैथिली संस्थागत स्मृति निर्मित करैत अछि।
२६. (C) दस्तावेज व्यापक, सुलभ, खोजनीय आ दीर्घकालिक स्मृति रूपमे सुरक्षित रहैत अछि — ई-पत्रिका सम्मानक सूचना सीमित सभागारसँ निकालि वैश्विक मैथिली पाठक धरि पहुँचबैत अछि।
२७. (B) पुरस्कार उपलब्धि पर केन्द्रित, सम्मान व्यक्तित्व/परम्परा/समुदायक मान्यता सेहो दैत अछि — विदेह सम्मानमे व्यक्ति, विधा, समाज आ परम्परा सभक स्वीकार निहित अछि।
२८. (B) श्रेणी, उद्देश्य, वैकल्पिकता, सांस्कृतिक अर्थ आ विधागत विस्तार पर अवधारणात्मक प्रश्न — उच्च-स्तरक क्विज तथ्यक संग अर्थ-निर्माण पर बल दैत अछि।
२९. (D) मैथिली समाज अपन मूल्यांकन-मानक स्वयं गढ़ैत अछि — स्वतंत्र सम्मान-व्यवस्था भाषिक समुदायक आत्मविश्वास बढ़बैत अछि।
३०. (C) सम्मान रचना-कर्म, योगदान आ सांस्कृतिक मूल्य पर आधारित हो, निजी पक्षपात पर नहि — सम्मानक विश्वासनीयता ओकर नैतिक आधार पर निर्भर करैत अछि।
३१. (A) साहित्यिक समाजशास्त्र, कला-इतिहास, लोकसंस्कृति, डिजिटल अभिलेख आ संस्था-अध्ययन — एहन दस्तावेज भविष्यक शोधार्थी लेल बहुविषयी स्रोत बनैत अछि।
३२. (A) रचनात्मकता शहर वा विश्वविद्यालय तक सीमित नहि, लोक-समुदायमे सेहो जीवित अछि — लोककला आ शिल्प मिथिलाक सांस्कृतिक मेरुदण्ड अछि।
३३. (D) ओ सम्मान-प्रक्रियाक निरंतरता आ संस्थागत स्मृति देखबैत अछि — वर्ष दर वर्ष सम्मान चलब संस्था-निर्माणक प्रमाण अछि।
३४. (D) भाषा केवल माध्यम नहि, साहित्य-संस्कृतिक आधारभूत पहचान अछि — मैथिली भाषा-बचाव आ भाषा-विस्तार बिना साहित्यिक विकास अधूरा अछि।
३५. (B) किएकि परीक्षा-जोग ज्ञान सम्मानक सांस्कृतिक अर्थ, विधा-विस्तार आ संस्थागत भूमिका बुझब अछि — उपयोगी क्विज स्मृति नहि, आलोचनात्मक समझ बढ़बैत अछि।
३६. (A) स्वरचित साहित्य आ अंतर-भाषिक संवाद दुनूकेँ महत्व — मैथिली साहित्यक विकास स्वकीय सृजन आ अनूदित संवाद दुनूसँ होइत अछि।
३७. (C) ई-पत्रिका साहित्य प्रकाशित करबाक संग संस्थागत सांस्कृतिक कार्य सेहो करि सकैत अछि — विदेह डिजिटल मंचकेँ सक्रिय सांस्कृतिक संस्था बनबैत अछि।
३८. (A) पत्रकारिता भाषा-सार्वजनिकता, विमर्श आ जन-संपर्कक माध्यम अछि — भाषा सार्वजनिक क्षेत्रमे पत्रकारिता द्वारा जीवित रहैत अछि।
३९. (A) रंगमंचक गंभीर, हास्य, लोक-प्रदर्शन आ सामुदायिक मनोरंजन-संस्कार — हास्य-अभिनय सेहो लोकजीवनक आलोचना आ आनंदक महत्वपूर्ण रूप अछि।
४०. (C) गीत-संगीत केवल गायकक नहि, वादकक कौशल आ सामूहिक रचना पर निर्भर अछि — लोक-संगीतमे वाद्यकार सांस्कृतिक प्रस्तुति केँ जीवित बनबैत छथि।
४१. (D) हाथक कौशल, पदार्थ-ज्ञान, उपयोगिता आ सौंदर्यक लोकपरम्परा — शिल्प मिथिलाक देहधारी संस्कृति अछि—माटि, काठ, आकार आ उपयोगक सौंदर्य।

४३. (C) मैथिली समाज अपन रचनात्मक श्रम केँ स्वयं पहिचानय, दर्ज करय आ पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाबय — सम्मानक मूल अर्थ स्वाभिमान, स्मृति आ सांस्कृतिक निरंतरता अछि।
४३. (D) कारण ई एक विषय नहि, अनेक श्रेणी, विधा, कलाकार, साहित्यकार आ सांस्कृतिक संस्थाक संयुक्त दस्तावेज अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक विस्तार आ विचार-घनत्व पर आधारित होयबाक चाही।
४४. (C) साहित्यिक संस्था-निर्माण, पुरस्कार-राजनीति, लोक-संस्कृति आ डिजिटल अभिलेखनक सम्बन्ध — एहि विशेषांकमे साहित्य आ समाजक संस्था-गत संरचना देखाइत अछि।
४५. (D) मैथिली भाषा-संस्कृतिक उपलब्धि केँ सार्वजनिक, दस्तावेजित आ गौरवपूर्ण बनबैत अछि — सम्मान सांस्कृतिक आत्म-सम्मानक सार्वजनिक विधि अछि।
४६. (B) सम्मानक नीतिगत, सांस्कृतिक, विधागत, भाषिक आ अभिलेखीय अर्थक परीक्षण — विद्यार्थीक विवेक बढ़ेबाक लेल प्रश्न अर्थ, प्रसंग आ विश्लेषणक होयबाक चाही।
४७. (C) योगदान जल्दी विस्मृत भऽ जाइत अछि आ सांस्कृतिक इतिहास अपूर्ण रहि जाइत अछि — विदेहक प्रयास सम्मान केँ टिकाऊ सांस्कृतिक स्मृतिमे बदलैत अछि।
४८. (A) मैथिली रचनात्मकता बहुकेन्द्रिक, लोक-आधारित, जीवित आ स्व-मूल्यांकनक्षम अछि — विशेषांक मैथिली सांस्कृतिक जगत केँ विस्तृत, जनाधारित आ आत्मविश्वासी रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय १६ : मैथिली सी.डी. अल्बम गीत-संगीत विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. मैथिली सी.डी. अल्बम गीत-संगीत विशेषांकक मूल केन्द्र की अछि?

- (A) केवल पुरस्कार-सूची
- (B) मैथिली गीत-संगीत, लोकगीत, सी.डी./डी.वी.डी. प्रयोग, विवाह गीत, सुन्दरकाण्ड एलबम आ बाल सी.डी. अभावक समग्र चर्चा
- (C) केवल एक गायकक जीवनी
- (D) केवल फिल्म समीक्षा

२. संपादकीयमे मैथिली सी.डी./अल्बम विशेषांकक प्रस्तुति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) केवल विज्ञापन
- (B) मात्र डाउनलोड सूचना
- (C) परम्परागत गीत-संगीत आ उपलब्ध बाल-गीत/नाटक आदि सी.डी. अल्बमक संकलन-समीक्षा बनैत अछि
- (D) संगीतक नकार

३. दिनेश यादवक 'नेपाल मे मैथिली गीत-संगीतक अवस्था' शीर्षक कोन व्यापक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) केवल भारतक चर्चा
- (B) सीमा-पार मैथिली सांस्कृतिक जीवनमे गीत-संगीतक स्थिति, चुनौती आ संभावना
- (C) नेपालमे मैथिली अनुपस्थिति
- (D) गीत-संगीत असंबद्ध

४. मैथिली गीत-संगीतक 'अवस्था' पर चर्चा किएक केवल कलात्मक नहि, सामाजिक सेहो अछि?

- (A) गीत-संगीत भाषा-प्रयोग, समुदाय, बाजार, मंच, मीडिया आ पहचानसँ जुड़ल अछि
- (B) भाषा गौण
- (C) समाजसँ संबंध नहि
- (D) संगीत केवल निजी शौक

५. प्रदीप पुष्पक 'सिनेहिया' शीर्षक गीत-समीक्षा कोन संवेदनात्मक केन्द्रक ओर संकेत करैत अछि?

- (A) वाद्य-विवरण मात्र
- (B) केवल तकनीकी सूची
- (C) प्रेम, टीस, स्मृति आ कठोर जीवनानुभवक गीतात्मक अभिव्यक्ति
- (D) गीतक अर्थ नकार

६. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क 'वन्दनाक स्वरूप' लेख संगीत-विशेषांकमे किएक उपयुक्त अछि?

- (A) स्वर अप्रासंगिक
- (B) भक्ति, स्तुति, स्वर, लय आ सांस्कृतिक आराधनाक गीतात्मक रूप बुझबैत अछि
- (C) वन्दना संगीतसँ अलग
- (D) भक्ति नकार

७. चन्द्रेशक 'अरिपन'क उपस्थिति गीत-संगीत विशेषांकमे कोन सांस्कृतिक विस्तार दैत अछि?

- (A) गीत-संगीतक संग मिथिलाक दृश्य-संस्कार, मांगलिकता आ प्रतीक-संसार जोड़ैत अछि
- (B) गीतसँ कोई संबंध नहि
- (C) अरिपन केवल सजावट
- (D) दृश्य-कला असंगत

८. इरा मल्लिकक शारदा सिन्हाक 'विवाह गीत' पर लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) स्त्री-स्वर अनुपस्थिति
- (B) विवाह गीत असाहित्यिक
- (C) विवाह-गीतक लोकपरम्परा, स्त्री-स्वर आ लोकप्रिय गायनक पुल देखबैत अछि
- (D) लोकगीतक मूल्य नहि

९. विवाह गीत मैथिली संस्कृतिमे कोन भूमिका निभबैत अछि?

- (A) केवल पंडितक पाठ
- (B) भाषा-विहीन ध्वनि
- (C) संस्कार, स्त्री-समुदाय, पारिवारिक स्मृति, हास्य-वेदना आ लोकभाषाक सामूहिक मंच
- (D) केवल मनोरंजन

१०. मनीष झा बौआभाइक 'वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसेँ' शीर्षकक महत्त्व की अछि?

- (A) समकालीन गीत-संगीतक आलोचनात्मक निजी दृष्टि आ समय-बोध
- (B) पुरातन सूची मात्र
- (C) संगीतक इतिहास नकार
- (D) लेखकक नाम-स्मरण

११. वर्तमान मैथिली गीत-संगीतक समीक्षा करत समय कोन कसौटी आवश्यक अछि?

- (A) केवल धुन तेज हो
- (B) केवल वीडियो चमकदार
- (C) भाषा, लय, भाव, लोक-संबंध, रचना-गुण, प्रस्तुति आ बाजारी दबावक संतुलन
- (D) भाषा-कथ्य अप्रासंगिक

१२. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रो. चण्डेश्वर झा केर सी.डी./डी.वी.डी. प्रयोग पर चर्चा कोन संक्रमण देखबैत अछि?

- (A) रिकॉर्डिंग असंगत
- (B) प्रयोगक कोनो अर्थ नहि
- (C) लोकगीत/अकादमिक परम्परा सँ डिजिटल रिकॉर्डिंग माध्यम धरि ज्ञान-संरक्षणक बदलाव
- (D) लोकगीत केवल मौखिक रहय

१३. सी.डी./डी.वी.डी. प्रयोग लोकगीत-अध्ययन लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) केवल लिखित पाठ पर्याप्त
- (B) स्वर, धुन, लय, उच्चारण, प्रस्तुति आ प्रसंगक श्रव्य-दृश्य अभिलेखन संभव करैत अछि
- (C) धुनक महत्त्व नहि
- (D) रिकॉर्डिंग शोध रोकेत अछि

१४. गजेन्द्र ठाकुरक 'मैथिली सी.डी. एलबम' लेखक केन्द्रीय प्रयोजन की अछि?

- (A) केवल व्यापारिक विज्ञापन
- (B) सी.डी.क नकार
- (C) एक गायकक जीवनी
- (D) मैथिली रेकर्डेड गीत-संगीत सामग्रीक संकलन, मूल्यांकन आ सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण

१५. जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा महाकवि चन्दा झा कृत रामायणक सुन्दरकाण्ड एलबम पर लेखन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) एलबमक कोई अर्थ नहि
- (B) क्लासिक साहित्य संगीतसँ अलग
- (C) क्लासिक मैथिली काव्य, रामायण परम्परा आ आधुनिक ऑडियो एलबमक संगम देखबैत अछि
- (D) सुन्दरकाण्ड अप्रासंगिक

१६. महाकवि चन्दा झाक सुन्दरकाण्डक एलबम मैथिली पाठक/श्रोताक लेल कोन अवसर दैत अछि?

- (A) काव्यक नाश
- (B) काव्यकें श्रवणीय, गेय आ सामूहिक पाठक रूपमे पुनः अनुभव करबाक अवसर
- (C) केवल मौन पठन
- (D) भाषासँ दूरी

१७. बाल सी.डी. अल्बमक 'सर्वथा अभाव' पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी कोन संकट देखबैत अछि?

- (A) बाल-पाठक/बाल-श्रोताक लेल मैथिली श्रव्य-सामग्रीक कमी भाषा-संस्कारक बाधा अछि
- (B) बाल सामग्री अनावश्यक
- (C) बच्चा मैथिली न सीखय
- (D) सी.डी. केवल वयस्क लेल

१८. बाल सी.डी. अभावक प्रश्न भाषा-संरक्षणसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) बालक सुनि नहि सकैत
- (B) बच्चा कानसँ भाषा, लय, उच्चारण आ सांस्कृतिक शब्दावली ग्रहण करैत अछि
- (C) भाषा केवल पुस्तकसँ सीखल जाए
- (D) गीतक प्रभाव नहि

१९. मैथिली गीत-संगीत विशेषांकमे ऑडियो/वीडियो/पोथी/चित्रकला/फोटो डाउनलोड आर्काइवक उल्लेख कोन डिजिटल दृष्टि दैत अछि?

- (A) केवल तकनीकी सूचना
- (B) आर्काइव अनावश्यक
- (C) साहित्यक अंत
- (D) सांस्कृतिक सामग्रीक बहु-माध्यमीय डिजिटल अभिलेख आ सार्वजनिक पहुँच

२०. गीत-संगीतक सी.डी. अल्बम युगक अध्ययन आज किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई मौखिक परम्परा सँ डिजिटल स्ट्रीमिंग युगक बीचक सांस्कृतिक संक्रमणक दस्तावेज अछि
- (B) इतिहासक अर्थ नहि
- (C) माध्यम बदललासँ गीत समाप्त
- (D) सी.डी. पुरान तें बेकार

२१. मैथिली गीतमे भाषा-शुद्धि आ स्वाभाविकता किएक जरूरी अछि?

- (A) धुन सब किछु अछि
- (B) शब्द हटाएब चाही
- (C) गीत लोकप्रिय माध्यम होयबाक कारण गलत/अस्वाभाविक भाषा व्यापक रूपे फैलि सकैत अछि
- (D) गीतमे भाषा महत्त्वहीन

२२. लोकगीतकें रेकर्ड करब आ मंचीय/स्टूडियो प्रस्तुति बनएबमे मुख्य चुनौती की अछि?

- (A) भाषा बदलि देब
- (B) धुन हटाएब
- (C) मूल प्रसंग, सामूहिकता आ स्वाभाविक लय कें कृत्रिमता सँ बचा कऽ प्रस्तुत करब
- (D) लोकगायक अप्रासंगिक

२३. विवाह गीतक रेकर्डिङ रूपमे स्त्री-समुदायक भूमिका किएक विचारणीय अछि?

- (A) समुदाय असंगत
- (B) विवाह गीत पुरुषक एकल पाठ
- (C) मूल विवाह गीत प्रायः स्त्रीगणक सामूहिक मुख-संस्कृतिसँ उपजल अछि
- (D) स्त्री-स्वरक जरूरत नहि

२४. मैथिली गीत-संगीतक वर्तमान अवस्थाक आलोचना मे बाजारक प्रश्न किएक उठैत अछि?

- (A) बाजार सदैव श्रेष्ठ
- (B) बाजारक कोई प्रभाव नहि
- (C) बाजार लोकप्रियता बढ़बैत अछि, मुदा भाषा, शब्द, भाव आ लोक-संस्कृतिक सरलीकरण/विकृति सेहो कऽ सकैत अछि
- (D) साहित्यिक कसौटी चाही नहि

२५. गीतक 'टीस' किएक महत्त्वपूर्ण सौन्दर्य-अनुभव अछि?

- (A) दुख गीतमे निषिद्ध
- (B) टीस केवल कमजोरी
- (C) दुख, प्रेम, विरह आ स्मृति केँ संक्षिप्त ध्वनि-लयमे तीव्र बनबैत अछि
- (D) भावनारहित गीत श्रेष्ठ

२६. वन्दना गीतक संरचना मे कोन तत्व सामान्यतः आवश्यक होइत अछि?

- (A) आवाहन, स्तुति, विनय, लयात्मकता आ सामूहिक गेयता
- (B) निरर्थक शोर
- (C) लयक अभाव
- (D) भाषा-विहीन धुन

२७. अरिपन, विवाह गीत आ वन्दनाक संयुक्तता मिथिलाक कोन सांस्कृतिक रूप देखबैत अछि?

- (A) संगीतक अंत
- (B) केवल सजावट
- (C) तीनू असंबंधित
- (D) दृश्य प्रतीक, श्रव्य परम्परा आ संस्कारक समन्वित लोक-संसार

२८. मैथिली गीत-संगीतक नेपाल-भारत संदर्भक अध्ययन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) साझा संस्कृति नहि
- (B) सीमा पार गीत असंगत
- (C) मैथिली सांस्कृतिक क्षेत्र राजनीतिक सीमा सँ व्यापक अछि
- (D) नेपालक मैथिली अलग विषय नहि

२९. सी.डी. अल्बमक संकलन भविष्यक शोधार्थी लेल कोन सामग्री दैत अछि?

- (A) गायक, गीत, धुन, विषय, माध्यम, समय आ श्रोता-संस्कृतिक प्राथमिक अभिलेख
- (B) गीत असंग्रहणीय
- (C) रिकॉर्डिंग क्षणिक
- (D) शोधक कोई उपयोग नहि

३०. मैथिली गीत-संगीतमे बाल सामग्रीक अभाव कतेक गंभीर अछि?

- (A) बालगीत गौण
- (B) बालक भाषा न सीखय
- (C) अभाव लाभकारी
- (D) ई भाषा-संस्कार, बाल-मनोरंजन आ मातृभाषा-अधिग्रहण तीनूकेँ कमजोर करैत अछि

३१. गीत-संगीत विशेषांकमे साहित्यकारक लेखन आ कलाकारक प्रस्तुति एक संग किएक अछि?

- (A) गीत केवल कविता
- (B) लेखन आ गायन असंबंधित
- (C) गीत साहित्यिक पाठ आ संगीतात्मक प्रस्तुति दुनू होइत अछि
- (D) गीत केवल धुन

३२. मैथिली सी.डी. अल्बमक आलोचना करत समय केवल लोकप्रियता किएक पर्याप्त नहि?

- (A) लोकप्रियता सब किछु
- (B) गुण अप्रासंगिक
- (C) भाषा न देखब
- (D) लोकप्रियता संग भाषा, शिल्प, सांस्कृतिक प्रामाणिकता आ संगीत-गुण सेहो देखबाक चाही

३३. लोकगीतक रेकॉर्डिंगमे उच्चारणक महत्त्व किएक अछि?

- (A) कुनू भाषा चलेत
- (B) उच्चारणक असर नहि
- (C) उच्चारण क्षेत्रीय पहचान, भाषिक शुद्धता आ गीतक भाव-सत्य बचबैत अछि
- (D) शब्द गौण

३४. शारदा सिन्हाजीक विवाह गीतक चर्चा मैथिली गीतक लोकप्रिय प्रसार पर की संकेत दैत अछि?

- (A) लोकगीत उच्च गुणवत्ता गायन द्वारा क्षेत्रीय सीमा पार श्रोता तक पहुँचि सकैत अछि
- (B) लोकप्रियता असंभव
- (C) लोकगीत सीमित रहय
- (D) विवाह गीत निजी मात्र

३५. सुन्दरकाण्ड एलबमक माध्यमे धार्मिक काव्यक पुनर्प्रस्तुति कतेक उपयोगी अछि?

- (A) क्लासिक चुप रहय
- (B) श्रव्य-भक्ति, काव्य-स्मरण, सामूहिक पाठ आ क्लासिकक पुनर्जीवन लेल
- (C) एलबम बेकार
- (D) धर्मगीत असाहित्यिक

३६. मैथिली गीत-संगीतक डिजिटल अभिलेखनमे कॉपी/लेखकीय अधिकारक प्रश्न किएक उठैत अछि?

- (A) अधिकार अप्रासंगिक
- (B) रेकॉर्डेड सामग्रीक प्रसार संग सर्जक, गायक, संगीतकार आ समुदायकें उचित मान्यता चाही
- (C) लोकगीतक कोई धारक नहि
- (D) नाम हटाएब ठीक

३७. गीत-संगीत विशेषांकमे समीक्षा-लेखकक निजी 'नजरि' किएक उपयोगी अछि?

- (A) संगीतक वर्तमान स्थिति पर अनुभवजन्य, आलोचनात्मक आ समय-सापेक्ष दृष्टि भेटैत अछि
- (B) निजी दृष्टि निषिद्ध
- (C) केवल सरकारी रिपोर्ट
- (D) अनुभव महत्त्वहीन

३८. मैथिली गीत-संगीतमे लोक आ आधुनिक माध्यमक सम्बन्ध कोना होएबाक चाही?

- (A) दुनू असंभव
- (B) माध्यम आधुनिक हो, मुदा भाषा, लोकलय आ सांस्कृतिक आत्मा संरक्षित रहय
- (C) आधुनिकता लेल लोक हटाओ
- (D) लोक लेल रिकॉर्डिंग हटाओ

३९. गीत-संगीत विशेषांकक प्रश्नावलीमे कतेक प्रकारक विषय समेटल जाएब चाही?

- (A) लोकगीत, विवाह गीत, वन्दना, एल्बम, बाल-सामग्री, डिजिटल माध्यम, आलोचना आ भाषा-संरक्षण
- (B) केवल पृष्ठ संख्या
- (C) केवल वर्ष-स्मरण
- (D) केवल नाम-सूची

४०. सी.डी. युगक समाप्ति बाद सेहो एहि विशेषांकक महत्त्व किएक रहत?

- (A) इतिहास बेकार
- (B) गीतक स्मृति नहि
- (C) माध्यम पुरान भेल तें मूल्य समाप्त
- (D) ई मैथिली संगीतक एक ऐतिहासिक माध्यम-अवधि केँ दर्ज करैत अछि

४१. मैथिली गीत-संगीतमे बाल सी.डी. निर्माणक आदर्श दिशा की होयबाक चाही?

- (A) लयहीन पाठ
- (B) कठिन भाषा
- (C) सहज भाषा, शुद्ध उच्चारण, रोचक लय, बाल-मन, लोक-संस्कार आ शिक्षात्मक संवेदना
- (D) वयस्क विषय

४२. गीत-संगीत विशेषांकमे 'पुरान अंक आ ऑडियो/वीडियो/पोथी' आर्काइवक सूचना मैथिली आंदोलनक कोन रूप दैत अछि?

- (A) भाषिक अलगाव
- (B) केवल तकनीकी सजावट
- (C) आर्काइवक नकार
- (D) डिजिटल सामुदायिक ज्ञान-साझाकरण आ सांस्कृतिक संसाधन-संग्रह

४३. मैथिली गीत-संगीतक आलोचना मे 'लोकप्रिय' आ 'लोक' मे भेद किएक आवश्यक अछि?

- (A) लोक असंगत
- (B) दुनू पूर्ण समान
- (C) लोकप्रिय बाजारमे चलि सकैत अछि, मुदा लोक समुदाय-स्मृति आ परम्परासँ उपजैत अछि
- (D) लोकप्रियता ही संस्कृति

४४. सी.डी./डी.वी.डी. माध्यमक प्रयोग प्रो. चण्डेश्वर झा सन लोकगीत-संरक्षणमे की शिक्षा दैत अछि?

- (A) विद्वान आ कलाकार आधुनिक माध्यम अपनाकऽ लोक-संस्कृति बचा आ प्रसारित कऽ सकैत छथि
- (B) लोकगीत लिखित रहय
- (C) संरक्षण असंभव
- (D) विद्वान माध्यम न अपनाबथि

४५. मैथिली गीत-संगीत विशेषांकमे स्त्री-स्वरक प्रमुख क्षेत्र कोन देखाइत अछि?

- (A) केवल पुरुष मंच
- (B) गृह-संस्कार असाहित्यिक
- (C) विवाह गीत, लोकसंस्कार, वन्दना आ पारिवारिक-सांस्कृतिक स्मृति
- (D) स्त्री-स्वर अनुपस्थित

४६. गीत-संगीत विशेषांकक आधार पर मैथिली सांस्कृतिक नीति लेल कोन सुझाव बनैत अछि?

- (A) बाल-अल्बम निर्माण, लोकगीत अभिलेखन, गुणवत्तापूर्ण रेकर्डिंग, भाषा-शुद्धि आ डिजिटल आर्काइव विस्तार
- (B) रेकर्डिंग रोकू
- (C) लोकगीत विसरू
- (D) बालसामग्री छोड़ू

४७. मैथिली गीत-संगीतक प्रश्न-संख्या ३०-४० सँ बढ़ायब किएक उचित अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब
- (B) किएकि प्रश्न स्थिर चाही
- (C) कारण अंकमे अनेक लेखक, अनेक विधा, संगीत-लेख, एल्बम-समीक्षा, बाल-सामग्री आ डिजिटल आर्काइवक प्रश्न अछि
- (D) किएकि नाम दोहराएब

४८. गीत-संगीत विशेषांकक समग्र संदेश की अछि?

- (A) मैथिली गीत-संगीत परम्परा, आधुनिक माध्यम, बाल-संस्कार आ डिजिटल अभिलेखनक संग जीवित रहि सकैत अछि
- (B) परम्परा आ आधुनिकता असंगत
- (C) मैथिली संगीत समाप्त
- (D) गीत भाषा-संरक्षणमे बेकार

४९. उच्च-स्तरीय क्विजमे 'कौन लेख कतय' छोड़ि कोन बात पूछल जायत?

- (A) कौन पृष्ठ
- (B) कतेक उपशीर्षक
- (C) केवल क्रमांक
- (D) लेखकक तर्क, सांस्कृतिक अर्थ, गीत-रूप, माध्यम-परिवर्तन आ भाषा-संरक्षणक सम्बन्ध

५०. मैथिली गीत-संगीत विशेषांक आजक यूट्यूब/स्ट्रीमिंग युगमे कोन शिक्षा दैत अछि?

- (A) माध्यम बदलैत रहैत अछि, मुदा गुणवत्ता, भाषा, अभिलेखन आ बाल-संस्कारक प्रश्न स्थायी अछि
- (B) नव माध्यममे भाषा गौण
- (C) गुणक कसौटी खत्म
- (D) इतिहासक जरूरत नहि

उत्तरमाला — अध्याय १६ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) मैथिली गीत-संगीत, लोकगीत, सी.डी./डी.वी.डी. प्रयोग, विवाह गीत, सुन्दरकाण्ड एलबम आ बाल सी.डी. अभावक समग्र चर्चा — ई अंक गीत-संगीतक परम्परा आ डिजिटल/रेकॉर्डेड माध्यमक संक्रमण दुनूकें समेटैत अछि।
२. (C) परम्परागत गीत-संगीत आ उपलब्ध बाल-गीत/नाटक आदि सी.डी. अल्बमक संकलन-समीक्षा बनैत अछि — संपादकीय स्पष्ट करैत अछि जे उपलब्ध रेकॉर्डेड सामग्रीक संकलन द्वारा सांस्कृतिक अभिलेखन कएल गेल अछि।
३. (B) सीमा-पार मैथिली सांस्कृतिक जीवनमे गीत-संगीतक स्थिति, चुनौती आ संभावना — मैथिली भारत-नेपाल दुनू क्षेत्रक भाषा-संस्कृति अछि; गीत-संगीत ओकर साझा सांस्कृतिक सेतु अछि।
४. (A) गीत-संगीत भाषा-प्रयोग, समुदाय, बाजार, मंच, मीडिया आ पहचानसँ जुड़ल अछि — संगीतक स्थिति समाजक भाषा-चेतना आ सांस्कृतिक संरचनाक हाल बतबैत अछि।
५. (C) प्रेम, टीस, स्मृति आ कठोर जीवनानुभवक गीतात्मक अभिव्यक्ति — शीर्षकमे 'टीस' आ 'हृदय' भावनात्मक आ लोक-संवेदनात्मक गीतभूमि खोलैत अछि।
६. (B) भक्ति, स्तुति, स्वर, लय आ सांस्कृतिक आराधनाक गीतात्मक रूप बुझबैत अछि — वन्दना मैथिली गीत-संगीतमे धार्मिक-सांस्कृतिक लयक महत्वपूर्ण रूप अछि।
७. (A) गीत-संगीतक संग मिथिलाक दृश्य-संस्कार, मांगलिकता आ प्रतीक-संसार जोड़ैत अछि — मिथिलाक संस्कारमे गीत, अरिपन, विवाह, वन्दना आ लोक-रीति साथ-साथ चलैत अछि।
८. (C) विवाह-गीतक लोकपरम्परा, स्त्री-स्वर आ लोकप्रिय गायनक पुल देखबैत अछि — विवाह गीत मिथिलाक संस्कारगीत परंपराक केंद्र अछि; शारदा सिन्हाक गायन एकरा व्यापक श्रोता दैत अछि।
९. (C) संस्कार, स्त्री-समुदाय, पारिवारिक स्मृति, हास्य-वेदना आ लोकभाषाक सामूहिक मंच — विवाह गीत सामूहिक स्त्री-अनुभव आ संस्कार-स्मृतिक जीवित भंडार अछि।
१०. (A) समकालीन गीत-संगीतक आलोचनात्मक निजी दृष्टि आ समय-बोध — 'हमरा नजरिसँ' निजी अवलोकनक माध्यमे वर्तमान संगीत-संस्कृतिक मूल्यांकन करैत अछि।
११. (C) भाषा, लय, भाव, लोक-संबंध, रचना-गुण, प्रस्तुति आ बाजारी दबावक संतुलन — समकालीनता मात्र रिकॉर्डिंग नहि; साहित्यिक भाषा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्व सेहो चाही।
१२. (C) लोकगीत/अकादमिक परम्परा सँ डिजिटल रेकॉर्डिंग माध्यम धरि ज्ञान-संरक्षणक बदलाव — सी.डी./डी.वी.डी. माध्यम मौखिक परम्पराकें दस्तावेजी रूप देबाक साधन बनैत अछि।
१३. (B) स्वर, धुन, लय, उच्चारण, प्रस्तुति आ प्रसंगक श्रव्य-दृश्य अभिलेखन संभव करैत अछि — लोकगीत केवल शब्द नहि; ध्वनि, लय आ प्रस्तुति सँ ओकर पूरा अर्थ बनैत अछि।
१४. (D) मैथिली रेकॉर्डेड गीत-संगीत सामग्रीक संकलन, मूल्यांकन आ सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण — सी.डी. अल्बमक सूची/चर्चा मैथिली डिजिटल संगीत इतिहासक प्राथमिक स्रोत बनैत अछि।

१५. (C) क्लासिक मैथिली काव्य, रामायण परम्परा आ आधुनिक ऑडियो एलबमक संगम देखबैत अछि — एलबम पर चर्चा पुरान काव्य केँ नव माध्यम द्वारा जीवित करबाक प्रक्रिया रेखांकित करैत अछि।
१६. (B) काव्यकेँ श्रवणीय, गेय आ सामूहिक पाठक रूपमे पुनः अनुभव करबाक अवसर — ऑडियो एलबम काव्यकेँ आवाज, छन्द आ सामूहिक भक्ति-अनुभवसँ जोड़ैत अछि।
१७. (A) बाल-पाठक/बाल-श्रोताक लेल मैथिली श्रव्य-सामग्रीक कमी भाषा-संस्कारक बाधा अछि — भाषाक भविष्य लेल बाल-गीत, बाल-नाटक आ श्रव्य सामग्री अत्यन्त आवश्यक अछि।
१८. (B) बच्चा कानसँ भाषा, लय, उच्चारण आ सांस्कृतिक शब्दावली ग्रहण करैत अछि — श्रव्य सामग्री बाल-भाषा-अधिग्रहणक सहज साधन अछि।
१९. (D) सांस्कृतिक सामग्रीक बहु-माध्यमीय डिजिटल अभिलेख आ सार्वजनिक पहुँच — डिजिटल आर्काइव गीत, चित्र, पोथी, वीडियो सभकेँ एक ठाम सुरक्षित करैत अछि।
२०. (A) ई मौखिक परम्परा सँ डिजिटल स्ट्रीमिंग युगक बीचक सांस्कृतिक संक्रमणक दस्तावेज अछि — सी.डी. युग मैथिली संगीतक रिकॉर्डेड इतिहासमे महत्वपूर्ण मध्यावधि अछि।
२१. (C) गीत लोकप्रिय माध्यम होयबाक कारण गलत/अस्वाभाविक भाषा व्यापक रूपे फैलि सकैत अछि — लोकप्रिय गीत भाषा-मानक आ बोलचाल दुनू पर असर करैत अछि।
२२. (C) मूल प्रसंग, सामूहिकता आ स्वाभाविक लय केँ कृत्रिमता सँ बचा कऽ प्रस्तुत करब — रिकॉर्डिंग परम्परा सुरक्षित करैत अछि, मुदा ओकर जीवित प्रसंगक संवेदना बचेनाइ जरूरी अछि।
२३. (C) मूल विवाह गीत प्रायः स्त्रीगणक सामूहिक मुख-संस्कृतिसँ उपजल अछि — रेकॉर्डेड गायन लोकप्रिय होइतो मूल लोक-समुदायक स्मृति बुझब जरूरी अछि।
२४. (C) बाजार लोकप्रियता बढ़बैत अछि, मुदा भाषा, शब्द, भाव आ लोक-सांस्कृतिक सरलीकरण/विकृति सेहो कऽ सकैत अछि — समकालीन संगीतक मूल्यांकनमे बाजारी दबाव आ सांस्कृतिक गुणवत्ता दुनू देखय पड़ैत अछि।
२५. (C) दुख, प्रेम, विरह आ स्मृति केँ संक्षिप्त ध्वनि-लयमे तीव्र बनबैत अछि — लोकप्रिय गीतक असर ओकर भाव-तीव्रता आ स्मरणीय पंक्ति सँ बनैत अछि।
२६. (A) आवाहन, स्तुति, विनय, लयात्मकता आ सामूहिक गेयता — वन्दना धार्मिक-सांस्कृतिक प्रसंगमे गाएल जाएबला अनुशासित गीतरूप अछि।
२७. (D) दृश्य प्रतीक, श्रव्य परम्परा आ संस्कारक समन्वित लोक-संसार — मिथिलामे संस्कार केवल गीत नहि; रंग, रेखा, शब्द, स्वर आ रीति सभ मिलि बनैत अछि।
२८. (C) मैथिली सांस्कृतिक क्षेत्र राजनीतिक सीमा सँ व्यापक अछि — मैथिली गीत-संगीत मिथिला क्षेत्रक साझा पहचान बनबैत अछि।
२९. (A) गायक, गीत, धुन, विषय, माध्यम, समय आ श्रोता-सांस्कृतिक प्राथमिक अभिलेख — संकलित सी.डी. विवरण संगीत-इतिहास लिखबाक आधार बनि सकैत अछि।
३०. (D) ई भाषा-संस्कार, बाल-मनोरंजन आ मातृभाषा-अधिग्रहण तीनूकेँ कमजोर करैत अछि — बालगीत/बाल-नाटक नहि होएब अगिला पीढ़ीक मैथिली श्रव्य संसार केँ रिक्त करैत अछि।
३१. (C) गीत साहित्यिक पाठ आ संगीतात्मक प्रस्तुति दुनू होइत अछि — गीतमे शब्द, लय, धुन, स्वर आ प्रसंग एक-दोसर केँ पूरा करैत अछि।
३२. (D) लोकप्रियता संग भाषा, शिल्प, सांस्कृतिक प्रामाणिकता आ संगीत-गुण सेहो देखबाक चाही — लोकप्रिय गीत दीर्घकालिक सांस्कृतिक मूल्य राखत कि नहि, ई कसौटी आवश्यक अछि।
३३. (C) उच्चारण क्षेत्रीय पहचान, भाषिक शुद्धता आ गीतक भाव-सत्य बचबैत अछि — श्रव्य माध्यममे उच्चारण सीधे श्रोता तक भाषा-संस्कार पहुँचबैत अछि।
३४. (A) लोकगीत उच्च गुणवत्ता गायन द्वारा क्षेत्रीय सीमा पार श्रोता तक पहुँचि सकैत अछि — लोकगायनक शक्ति अछि जे पारिवारिक संस्कार गीत केँ सार्वजनिक सांस्कृतिक धरोहर बनाबय।
३५. (B) श्रव्य-भक्ति, काव्य-स्मरण, सामूहिक पाठ आ क्लासिक पुनर्जीवन लेल — ऐ तरहक एलबम ग्रंथक पाठ परम्परा केँ आवाज आ लय दैत अछि।
३६. (B) रेकॉर्डेड सामग्रीक प्रसार संग सर्जक, गायक, संगीतकार आ समुदायकेँ उचित मान्यता चाही — सांस्कृतिक संरक्षण नैतिक श्रेय आ अधिकारक संग जुड़ल होयबाक चाही।

३७. (A) संगीतक वर्तमान स्थिति पर अनुभवजन्य, आलोचनात्मक आ समय-सापेक्ष दृष्टि भेटैत अछि — संगीत-संस्कृति जीवित अनुभवसँ बुझल जाएत अछि; निजी दृष्टि आलोचनाकें मानवीय बनबैत अछि।
३८. (B) माध्यम आधुनिक हो, मुदा भाषा, लोकलय आ सांस्कृतिक आत्मा संरक्षित रहय — उचित संतुलन परम्पराकें नव श्रोता धरि पहुँचा सकैत अछि।
३९. (A) लोकगीत, विवाह गीत, वन्दना, एल्बम, बाल-सामग्री, डिजिटल माध्यम, आलोचना आ भाषा-संरक्षण — ई अंक बहु-लेखीय अछि, तँ प्रश्न-संख्या आ विषय-विस्तार दुनू बढ़ल चाही।
४०. (D) ई मैथिली संगीतक एक ऐतिहासिक माध्यम-अवधि कें दर्ज करैत अछि — सांस्कृतिक इतिहासमे पुरान माध्यम सेहो संक्रमण बुझबाक लेल जरूरी अछि।
४१. (C) सहज भाषा, शुद्ध उच्चारण, रोचक लय, बाल-मन, लोक-संस्कार आ शिक्षात्मक संवेदना — बाल सामग्री बालकक मनोविज्ञान आ मातृभाषा-संस्कार दुनू ध्यानमे राखि बनयबाक चाही।
४२. (D) डिजिटल सामुदायिक ज्ञान-साझाकरण आ सांस्कृतिक संसाधन-संग्रह — आर्काइव पाठक, श्रोता, शोधार्थी आ कलाकार सभकें साझा स्रोत दैत अछि।
४३. (C) लोकप्रिय बाजारमे चलि सकैत अछि, मुदा लोक समुदाय-स्मृति आ परम्परासँ उपजैत अछि — गंभीर समीक्षा गीतक बाजार-सफलता आ लोक-मूल दुनू अलग-अलग परखैत अछि।
४४. (A) विद्वान आ कलाकार आधुनिक माध्यम अपनाकऽ लोक-संस्कृति बचा आ प्रसारित कऽ सकैत छथि — माध्यम बदलेला परम्परा नष्ट नहि हो; सजग प्रयोगसँ ओ सुरक्षित भऽ सकैत अछि।
४५. (C) विवाह गीत, लोकसंस्कार, वन्दना आ पारिवारिक-सांस्कृतिक स्मृति — मिथिला गीतपरंपरामे स्त्री-गायनक केंद्रीय स्थान अछि।
४६. (A) बाल-एल्बम निर्माण, लोकगीत अभिलेखन, गुणवत्तापूर्ण रेकर्डिंग, भाषा-शुद्धि आ डिजिटल आर्काइव विस्तार — विशेषांक समस्या आ संभावना दुनू बतबैत अछि; नीति-स्तर पर संरक्षण आ नव-निर्माण जरूरी अछि।
४७. (C) कारण अंकमे अनेक लेखक, अनेक विधा, संगीत-लेख, एल्बम-समीक्षा, बाल-सामग्री आ डिजिटल आर्काइवक प्रश्न अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक बहुलता पर आधारित होयबाक चाही।
४८. (A) मैथिली गीत-संगीत परम्परा, आधुनिक माध्यम, बाल-संस्कार आ डिजिटल अभिलेखनक संग जीवित रहि सकैत अछि — ई अंक परम्परा आ माध्यम-परिवर्तनक बीच रचनात्मक पुल बनबैत अछि।
४९. (D) लेखकक तर्क, सांस्कृतिक अर्थ, गीत-रूप, माध्यम-परिवर्तन आ भाषा-संरक्षणक सम्बन्ध — यही प्रकारक प्रश्न विद्यार्थीकें सामग्रीक भीतरक विचार बुझाबैत अछि।
५०. (A) माध्यम बदलैत रहैत अछि, मुदा गुणवत्ता, भाषा, अभिलेखन आ बाल-संस्कारक प्रश्न स्थायी अछि — सी.डी. युगक बहस आज डिजिटल गीत-संस्कृति पर सेहो लागू होइत अछि।

अध्याय १७ : मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. मैथिली वेब-पत्रकारिताक मुख्य ऐतिहासिक महत्त्व की अछि?

- (A) केवल वेबसाइटक सूची बनायब
- (B) मुद्रित पत्रिका सँ बाहर डिजिटल माध्यममे मैथिली भाषाक सार्वजनिक उपस्थिति आ संवाद-विस्तार
- (C) पत्रकारिताक अंत घोषित करब
- (D) केवल मनोरंजन पोर्टल बनायब

२. ई-पत्रिका रूपमे विदेहक भूमिका कोन प्रकारक भाषा-आन्दोलनक उदाहरण अछि?

- (A) भाषा सँ असंबद्ध तकनीकी प्रयोग
- (B) केवल निजी ब्लॉग
- (C) कागज-विरोधी आन्दोलन
- (D) न्यून संसाधनमे निरंतर प्रकाशन, अभिलेखन आ पाठक-समुदाय निर्माण

३. वेब-पत्रकारितामे 'तात्कालिकता' आ 'अभिलेख' दुनू किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) समाचार तुरन्त पहुँचैत अछि आ सामग्री बादक शोध लेल सुरक्षित रहैत अछि
- (B) अभिलेखक पत्रकारितासँ सम्बन्ध नहि
- (C) केवल मुद्रित प्रति मान्य
- (D) तात्कालिकता सँ अभिलेख मिटि जाइत अछि

४. मैथिली ई-पत्रकारिताक सबसँ पैघ भाषिक चुनौती कोन अछि?

- (A) केवल फोटो लगायब
- (B) साहित्यिक सामग्री रोकब
- (C) देवनागरी यूनिकोड, टंकण, वर्तनी, खोजयोग्यता आ पाठकीय सुगमता
- (D) भाषा हटाकऽ अंग्रेजी करब

५. 'भाषा आ प्रौद्योगिकी' लेखनक मूल संकेत की अछि?

- (A) कुँजी-पटल अप्रासंगिक अछि
- (B) संगणक, छायांकन, कुँजी-पटल आ टंकण तकनीक भाषा-विस्तारक आधार बनि सकैत अछि
- (C) तकनीक भाषा-विरोधी अछि
- (D) भाषा केवल मौखिक रहय

६. मैथिली वेब-पत्रकारितामे यूनिकोडक महत्त्व किएक अछि?

- (A) ओ केवल सजावटी फॉन्ट अछि
- (B) ओ वेबपर बाधा अछि
- (C) ओ पाठकें मशीन-पठनीय, खोजयोग्य, कॉपीयोग्य आ दीर्घजीवी बनबैत अछि
- (D) ओ भाषा बदलि दैत अछि

७. वेब-पत्रकारिताक लोकतांत्रिक पक्ष की अछि?

- (A) प्रवासी, युवा, गाम-शहर आ सीमापार पाठक/लेखकक भागीदारी संभव करैत अछि
- (B) केवल संपादकक अधिकार
- (C) केवल राजधानीक आवाज
- (D) पाठक हटाएब

८. वेब-पत्रकारिता मे सम्पादकीय जिम्मेदारी किएक घटैत नहि, बल्कि बढ़ैत अछि?

- (A) ऑनलाइनमे संपादन न चाही
- (B) तेज प्रसारक कारण तथ्य-जांच, भाषा-संयम आ स्रोत-नैतिकता बेसी जरूरी होइत अछि
- (C) भ्रम फैलाब पत्रकारिता अछि
- (D) गति सत्यसँ ऊपर अछि

९. मैथिली वेब-पत्रकारिताक इतिहास लिखैत समय केवल वेबसाइटक नाम किएक पर्याप्त नहि?

- (A) विचार अप्रासंगिक अछि
- (B) पाठकक भूमिका नहि
- (C) नाम-सूची ही इतिहास अछि
- (D) मंचक विचार, सामग्री, भाषा-मानक, पाठक-समुदाय आ तकनीकी प्रयोग सभ देखय पड़ैत अछि

१०. ई-पत्रकारिता मैथिली साहित्यक प्रसारमे कोन विशेष सुविधा दैत अछि?

- (A) अनुवाद रोकब
- (B) कथा, कविता, समीक्षा, रिपोर्ट, अध्ययन-सामग्री आ अभिलेख एक साथ उपलब्ध करब
- (C) साहित्यकें हटायब
- (D) केवल विज्ञापन छापब

११. वेब माध्यममे पाठकक प्रतिक्रिया पारम्परिक पत्रिकासँ कोना अलग अछि?

- (A) समुदायक जरूरत नहि
- (B) पाठक मौन रहय
- (C) प्रतिक्रिया असंभव
- (D) ई तेज, बहु-दिशात्मक आ समुदाय-निर्माणकारी भऽ सकैत अछि

१२. मैथिली वेब-पत्रकारिता प्रवासी मैथिल लेल किएक जरूरी अछि?

- (A) ओ भौगोलिक दूरीक बावजूद भाषा, समाचार, साहित्य आ सांस्कृतिक स्मृति सँ जोड़ैत अछि
- (B) समाचारक जरूरत नहि
- (C) वेब केवल स्थानीय अछि
- (D) प्रवासीक मातृभाषासँ सम्बन्ध नहि

१३. पत्रकारितामे रिपोर्टक स्थान साहित्यिक पत्रिकामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) रिपोर्ट साहित्य-विरोधी अछि
- (B) केवल कविता चाही
- (C) समकालीन समाज, आयोजन, आन्दोलन आ लोक-जीवनक दस्तावेजीकरण करैत अछि
- (D) समकालीनता अनावश्यक

१४. वेब-पत्रकारिता आ परीक्षा-सामग्रीक संगति किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) शिक्षा आ पत्रकारिता असंबद्ध
- (B) विद्यार्थी पाठक नहि
- (C) परीक्षा-सामग्री भाषा घटबैत अछि
- (D) डिजिटल पत्रिका भाषा-अध्ययन, प्रतियोगी तैयारी आ साहित्य-संसाधनक सार्वजनिक मंच बनैत अछि

१५. मैथिली ई-पत्रकारितामे छायांकन/फोटो सामग्रीक भूमिका की अछि?

- (A) चित्र सँ पाठ समाप्त
- (B) घटना, व्यक्ति, लोककला आ सांस्कृतिक प्रसंगक दृश्य प्रमाण आ आकर्षण
- (C) फोटो सदैव असत्य
- (D) दृश्य सामग्री निषिद्ध

१६. डिजिटल मंच पर मैथिली वर्तनी-मानकीकरणक प्रश्न किएक उठैत अछि?

- (A) अव्यवस्था श्रेष्ठ
- (B) लिपि बदलब जरूरी
- (C) भिन्न लेखकक पाठकें खोजयोग्य, पठनीय आ शिक्षणोपयोगी बनएबाक लेल
- (D) मानकक जरूरत नहि

१७. मैथिली वेब-पत्रकारिता मे नेपाल-भारतक साझा मिथिला किएक प्रमुख पक्ष अछि?

- (A) नेपालक मैथिली असंगत
- (B) मैथिली भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्र राजनीतिक सीमा सँ बेसी व्यापक अछि
- (C) पत्रकारिता केवल राज्यक भीतर
- (D) सीमापार सामग्री हटय

१८. वेब-पत्रकारिता मे 'स्वयंसेवी श्रम' किएक महत्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि?

- (A) श्रमक कोई भूमिका नहि
- (B) केवल पूँजी पर्याप्त
- (C) संपादन स्वतः होइत अछि
- (D) भाषा-सेवा, संपादन, अपलोड, टंकण आ अभिलेखनक सतत सामुदायिक श्रम सँ मंच टिकैत अछि

१९. मैथिली वेब-पत्रकारिता मे तकनीकी बाधा दूर करबाक पहिल दिशा की होयबाक चाही?

- (A) कठिन फॉन्ट बढ़ायब
- (B) सरल टंकण, यूनिकोड, मोबाइल-पठनीयता आ खोज-सुविधा
- (C) पाठकें चित्र बना देब
- (D) मोबाइल रोकब

२०. वेब-पत्रकारिताक विश्वसनीयता कोन आधार पर बनैत अछि?

- (A) केवल वायरलता
- (B) अफवाहक गति
- (C) केवल शीर्षकक चमक
- (D) स्रोत-सत्यापन, नियमितता, संपादकीय नीति, भाषा-सावधानी आ अभिलेखीय पारदर्शिता

२१. मैथिली ई-पत्रकारिता मे ब्लॉग, पोर्टल आ ई-पत्रिकाक सम्बन्ध कोना बुझबाक चाही?

- (A) ब्लॉग साहित्य-विरोधी
- (B) ई-पत्रिका वेब नहि
- (C) तीनू पूर्ण एके अछि
- (D) तीनू डिजिटल प्रकाशनक अलग-अलग रूप छथि, मुदा भाषा-प्रसारक साझा उद्देश्य राखि सकैत छथि

२२. विदेह सन ई-पत्रिका मे धारावाहिक उपन्यास/नाटकक प्रकाशन वेबक कोन क्षमता देखबैत अछि?

- (A) धारावाहिकता असंभव
- (B) साहित्य समाप्त
- (C) दीर्घ पाठकें क्रमशः प्रकाशित कऽ पाठक-सम्बन्ध बनएबाक क्षमता
- (D) वेब केवल छोट समाचार लेल

२३. वेब-पत्रकारिता मे लोककला आ हस्तशिल्प रिपोर्टक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यक संग सामाजिक-आर्थिक संस्कृति आ जीवित शिल्पपर ध्यान
- (B) केवल राजनीति समाचार
- (C) शिल्प पत्रकारितासँ बाहर
- (D) लोककला गौण

२४. ऑनलाइन मैथिली सामग्रीक दीर्घजीवन लेल कोन सावधानी आवश्यक अछि?

- (A) फाइल एक बेर डालि छोड़ि देब
- (B) लिंक टूटब स्वाभाविक मानब
- (C) बैकअप, स्थायी URL, यूनिकोड पाठ, metadata आ नियमित संरक्षण
- (D) चित्र पाठ पर्याप्त

२५. वेब-पत्रकारिता मे विज्ञापन/आर्थिक मॉडलक प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) निरंतरता, स्वतंत्रता आ गुणवत्ता टिकाबय लेल संसाधन चाही
- (B) संसाधनक जरूरत नहि
- (C) पत्रकारिता स्वतः चलैत अछि
- (D) आर्थिक प्रश्न अनैतिक

२६. मैथिली वेब-पत्रकारिताक आलोचना मे 'क्लिक' सँ आगाँ कोन कसौटी चाही?

- (A) भाषा अप्रासंगिक
- (B) क्लिक ही गुणवत्ता
- (C) वायरलता ही साहित्य
- (D) सामग्रीक गहराई, भाषा, तथ्य, अभिलेख, समुदाय-निर्माण आ सांस्कृतिक उपयोगिता

२७. वेब-पत्रकारिता भाषा-शिक्षणक अनौपचारिक पाठशाला कोना बनैत अछि?

- (A) नियमित पाठ, शब्द, शैली, वर्तनी आ बहुविध सामग्रीसँ पाठक भाषा सीखैत अछि
- (B) सामग्रीक कोई भूमिका नहि
- (C) पत्रकारिता सँ भाषा सीखल नहि जाए
- (D) वर्तनीक असर नहि

२८. मैथिली वेब-पत्रकारितामे स्त्री, युवा आ नव-लेखकक अवसर किएक बढ़ैत अछि?

- (A) नव-लेखक निषिद्ध
- (B) केवल स्थापित लेखकक मंच
- (C) युवा पाठक नहि
- (D) डिजिटल मंच प्रवेश-बाधा घटा कऽ विविध स्वरकें प्रकाशित करैत अछि

२९. वेब-पत्रकारिता मे टिप्पणी-क्षेत्रक लाभ आ जोखिम की अछि?

- (A) जोखिम नहि
- (B) संवाद बढ़ैत अछि, मुदा असत्य, असभ्यता आ अविश्वसनीय सूचना सँ सावधानी चाही
- (C) टिप्पणी सदैव सत्य
- (D) संवाद बेकार

३०. मैथिली वेब-पत्रकारिताक अध्ययनमे 'पहिल ई-पत्रिका' सन दावाक जाँच कोना होयबाक चाही?

- (A) तिथि, नियमितता, उपलब्ध अंक, संपादकीय स्वरूप आ अभिलेखीय प्रमाणक आधार पर
- (B) केवल दावा मानि लेब
- (C) तिथि अप्रासंगिक
- (D) अभिलेखक जरूरत नहि

३१. वेब-पत्रकारिता मे भाषा-तकनीकक अन्तर्सम्बन्ध किएक नीतिगत विषय अछि?

- (A) नीति सँ भाषा नहि बदलैत
- (B) कुँजी-पटल, फॉन्ट, OCR, खोज, मोबाइल आ संग्रहण बिना मातृभाषा डिजिटल सार्वजनिकता सीमित रहैत अछि
- (C) डिजिटल सार्वजनिकता अनावश्यक
- (D) तकनीक निजी विषय मात्र

३२. ई-पत्रकारिता मुद्रित पत्रिका केँ समाप्त नहि, बल्कि कोना विस्तार दैत अछि?

- (A) संपादन हटबैत अछि
- (B) मुद्रित परम्पराक संपादकीयता केँ त्वरित, वैश्विक, खोजयोग्य आ संवादात्मक रूप दैत अछि
- (C) वैश्विकता रोकैत अछि
- (D) मुद्रितक शत्रु मात्र

३३. मैथिली वेब-पत्रकारितामे 'साहित्य आ आन्दोलन' शीर्षकक अर्थ की अछि?

- (A) भाषा-अधिकार अप्रासंगिक
- (B) साहित्यिक प्रकाशनकेँ भाषा-अधिकार, सांस्कृतिक चेतना आ सामुदायिक क्रिया सँ जोड़ब
- (C) केवल मनोरंजन
- (D) साहित्य आंदोलनसँ अलग

३४. वेब माध्यममे संपादकक भूमिका कोना बदलैत अछि?

- (A) तकनीक अलग लोकक काम
- (B) संपादकक जरूरत नहि
- (C) संपादक लेखक, तकनीकी संयोजक, अभिलेखपाल, समुदाय-संयोजक आ तथ्य-जाँचकर्ता बनैत अछि
- (D) केवल प्रिंट संपादन

३५. मैथिली वेब-पत्रकारिता पर उच्च-स्तर प्रश्न केहन होयबाक चाही?

- (A) केवल लिंक याद करब
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) केवल क्रमांक
- (D) माध्यम, भाषा, तकनीक, संपादकीयता, लोकतंत्र, अभिलेख आ पाठक-सांस्कृतिक सम्बन्ध पर

३६. वेब-पत्रकारिताक भविष्य लेल मैथिलीमे कोन संसाधन प्राथमिक अछि?

- (A) डिजिटल शब्दकोश, टंकण-उपकरण, पाठ-संग्रह, समाचार-मानक, प्रशिक्षण आ अभिलेख
- (B) भाषा-प्रशिक्षण बेकार
- (C) संसाधन हटायब
- (D) केवल सोशल मीडिया

३७. ई-पत्रकारिता मे सामाजिक रिपोर्ट आ साहित्यिक रचना एक संग रहब किएक उचित अछि?

- (A) भाषा-समुदायक अनुभव साहित्य, समाचार, संस्कार, राजनीति आ लोकजीवनक सम्मिलित रूप अछि
- (B) रिपोर्ट हटू
- (C) समाजक प्रश्न नहि
- (D) साहित्य अलग टापू

३८. मैथिली वेब-पत्रकारिताक समग्र संदेश की मानल जा सकैत अछि?

- (A) डिजिटल माध्यम मातृभाषाकेँ वैश्विक, अभिलेखीय, संवादात्मक आ नवपीढ़ी-सुलभ बना सकैत अछि
- (B) मातृभाषा ऑनलाइन असंभव
- (C) वेबक कोई सांस्कृतिक उपयोग नहि
- (D) डिजिटल माध्यम भाषा नष्ट करैत अछि मात्र

३९. वेब-पत्रकारिताक इतिहासमे निरंतरता किएक प्रथम कसौटी अछि?

- (A) एक बेर प्रकाशित करब पर्याप्त
- (B) एक-दू पोस्ट नहि, बल्कि नियमित अंक आ दीर्घकालिक संपादकीय श्रम संस्थान बनबैत अछि
- (C) इतिहास क्षणिकता सँ बनैत अछि
- (D) नियमितता महत्त्वहीन

४०. मैथिली वेब-पत्रकारिता 'भाषा-आन्दोलन' तखन कहल जा सकैत अछि जखन—

- (A) ओ मातृभाषा छोड़य
- (B) ओ केवल निजी संग्रह रहय
- (C) ओ संवाद रोकय
- (D) ओ पाठक, लेखक, विद्यार्थी, प्रवासी, शोधार्थी आ सांस्कृतिक कर्मी सभकेँ जोड़ि भाषा-प्रयोग बढ़बैत अछि

१. (B) मुद्रित पत्रिका सँ बाहर डिजिटल माध्यममे मैथिली भाषाक सार्वजनिक उपस्थिति आ संवाद-विस्तार — वेब-पत्रकारिता भाषाकें स्थान, गति, संग्रहण आ वैश्विक पहुँच दैत अछि।
२. (D) न्यून संसाधनमे निरंतर प्रकाशन, अभिलेखन आ पाठक-समुदाय निर्माण — ई-पत्रिका डिजिटल मंचकें भाषिक-सांस्कृतिक आन्दोलनक साधन बनबैत अछि।
३. (A) समाचार तुरन्त पहुँचैत अछि आ सामग्री बादक शोध लेल सुरक्षित रहैत अछि — डिजिटल माध्यम वर्तमान संवाद आ दीर्घकालिक स्मृति दुनूक पुल अछि।
४. (C) देवनागरी यूनिकोड, टंकण, वर्तनी, खोजयोग्यता आ पाठकीय सुगमता — वेबमे भाषा तखन टिकैत अछि जखन ओकर लिपि, फॉन्ट, खोज आ टंकण सहज हो।
५. (B) संगणक, छायांकन, कुँजी-पटल आ टंकण तकनीक भाषा-विस्तारक आधार बनि सकैत अछि — डिजिटल युगमे मातृभाषाक विकास तकनीकी अवसरचना सँ जुड़ल अछि।
६. (C) ओ पाठकें मशीन-पठनीय, खोजयोग्य, कॉपीयोग्य आ दीर्घजीवी बनबैत अछि — यूनिकोड बिना सामग्री चित्र-जकाँ रहि जाइत अछि; यूनिकोडसँ पाठ जीवित डिजिटल डेटा बनैत अछि।
७. (A) प्रवासी, युवा, गाम-शहर आ सीमापार पाठक/लेखकक भागीदारी संभव करैत अछि — इंटरनेट प्रकाशनक केन्द्रीयता तोड़ि बहु-स्वरक जगह बनबैत अछि।
८. (B) तेज प्रसारक कारण तथ्य-जांच, भाषा-संयम आ स्रोत-नैतिकता बेसी जरूरी होइत अछि — डिजिटल गति जिम्मेदारीक विकल्प नहि; ई जिम्मेदारीकें तीव्र बनबैत अछि।
९. (D) मंचक विचार, सामग्री, भाषा-मानक, पाठक-समुदाय आ तकनीकी प्रयोग सभ देख्य पड़ैत अछि — इतिहास माध्यमक सामाजिक-सांस्कृतिक असर सेहो परखैत अछि।
१०. (B) कथा, कविता, समीक्षा, रिपोर्ट, अध्ययन-सामग्री आ अभिलेख एक साथ उपलब्ध करब — डिजिटल पत्रिका विधा-विविधता कें एक मंच पर जोड़ि सकैत अछि।
११. (D) ई तेज, बहु-दिशात्मक आ समुदाय-निर्माणकारी भऽ सकैत अछि — वेब पाठककें केवल उपभोक्ता नहि, संवादक सहभागी बनबैत अछि।
१२. (A) ओ भौगोलिक दूरीक बावजूद भाषा, समाचार, साहित्य आ सांस्कृतिक स्मृति सँ जोड़ैत अछि — डिजिटल मंच प्रवासी समुदायकें मातृभाषिक सार्वजनिकता दैत अछि।
१३. (C) समकालीन समाज, आयोजन, आन्दोलन आ लोक-जीवनक दस्तावेजीकरण करैत अछि — रिपोर्ट साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहासक ताजा साक्ष्य बनि सकैत अछि।
१४. (D) डिजिटल पत्रिका भाषा-अध्ययन, प्रतियोगी तैयारी आ साहित्य-संसाधनक सार्वजनिक मंच बनैत अछि — भाषा-आन्दोलनमे शिक्षण-संसाधन सेहो महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सेवा अछि।
१५. (B) घटना, व्यक्ति, लोककला आ सांस्कृतिक प्रसंगक दृश्य प्रमाण आ आकर्षण — वेब दृश्य आ पाठ दुनूकें जोड़ि समृद्ध प्रस्तुति देइत अछि।
१६. (C) भिन्न लेखकक पाठकें खोजयोग्य, पठनीय आ शिक्षणोपयोगी बनएबाक लेल — सुगम पढ़ाई आ खोज लेल वर्तनीक न्यूनतम अनुशासन जरूरी अछि।
१७. (B) मैथिली भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्र राजनीतिक सीमा सँ बेसी व्यापक अछि — वेब सीमा-पार संवादकें सहज बनबैत अछि।
१८. (D) भाषा-सेवा, संपादन, अपलोड, टंकण आ अभिलेखनक सतत सामुदायिक श्रम सँ मंच टिकैत अछि — लघुभाषा डिजिटल मंच प्रायः समर्पित सामुदायिक श्रम पर निर्भर रहैत अछि।
१९. (B) सरल टंकण, यूनिकोड, मोबाइल-पठनीयता आ खोज-सुविधा — पाठक तक पहुँचनाइ भाषिक सेवा अछि; तकनीक ओहि सेवाक साधन अछि।
२०. (D) स्रोत-सत्यापन, नियमितता, संपादकीय नीति, भाषा-सावधानी आ अभिलेखीय पारदर्शिता — डिजिटल पत्रकारिता विश्वसनीय तखन होइत अछि जखन गति संग सत्य आ अनुशासन रह्य।
२१. (D) तीनू डिजिटल प्रकाशनक अलग-अलग रूप छथि, मुदा भाषा-प्रसारक साझा उद्देश्य राखि सकैत छथि — डिजिटल लोकक्षेत्र अनेक रूपसँ बनैत अछि; तुलना कार्य, सम्पादन आ स्थायित्व पर होयबाक चाही।

२२. (C) दीर्घ पाठकें क्रमशः प्रकाशित कऽ पाठक-सम्बन्ध बनाएबाक क्षमता — वेब पत्रिका मुद्रित परम्पराक धारावाहिकता कें डिजिटल रूप दैत अछि।
२३. (A) साहित्यक संग सामाजिक-आर्थिक संस्कृति आ जीवित शिल्पपर ध्यान — भाषा-पत्रकारिता व्यापक संस्कृति कें समेटलासँ जन-जीवनक दस्तावेज बनैत अछि।
२४. (C) बैकअप, स्थायी URL, यूनिकोड पाठ, metadata आ नियमित संरक्षण — डिजिटल सामग्री सेहो नष्ट भऽ सकैत अछि; संरक्षण नीति जरूरी अछि।
२५. (A) निरंतरता, स्वतंत्रता आ गुणवत्ता टिकाबय लेल संसाधन चाही — भाषाई मंचक आर्थिक स्थिरता ओकर दीर्घकालिक प्रभावसँ जुड़ल अछि।
२६. (D) सामग्रीक गहराई, भाषा, तथ्य, अभिलेख, समुदाय-निर्माण आ सांस्कृतिक उपयोगिता — गंभीर मूल्यांकन लोकप्रियता सँ बेसी सांस्कृतिक प्रभाव देखैत अछि।
२७. (A) नियमित पाठ, शब्द, शैली, वर्तनी आ बहुविध सामग्रीसँ पाठक भाषा सीखैत अछि — पठन-संसर्ग मातृभाषा अभ्यासक महत्वपूर्ण माध्यम अछि।
२८. (D) डिजिटल मंच प्रवेश-बाधा घटा कऽ विविध स्वरूपकें प्रकाशित करैत अछि — वेब प्रकाशनक लोकतांत्रिकता नव रचनाशीलता कें प्रोत्साहित करैत अछि।
२९. (B) संवाद बढ़ैत अछि, मुदा असत्य, असभ्यता आ अविश्वसनीय सूचना सँ सावधानी चाही — खुला मंचक संग संयमित संचालन आवश्यक अछि।
३०. (A) तिथि, नियमितता, उपलब्ध अंक, संपादकीय स्वरूप आ अभिलेखीय प्रमाणक आधार पर — इतिहासलेखनमे प्रमाणित डिजिटल अभिलेख जरूरी अछि।
३१. (B) कुँजी-पटल, फॉन्ट, OCR, खोज, मोबाइल आ संग्रहण बिना मातृभाषा डिजिटल सार्वजनिकता सीमित रहैत अछि — भाषा-सुरक्षा आज तकनीकी अवसंरचना सँ गहिर रूपे जुड़ल अछि।
३२. (B) मुद्रित परम्पराक संपादकीयता कें त्वरित, वैश्विक, खोजयोग्य आ संवादात्मक रूप दैत अछि — डिजिटल माध्यम रूप बदलैत अछि, मूल भाषा-संवादकें नष्ट नहि करैत।
३३. (B) साहित्यिक प्रकाशनकें भाषा-अधिकार, सांस्कृतिक चेतना आ सामुदायिक क्रिया सँ जोड़ब — मैथिली पत्रिका केवल पाठ-संग्रह नहि; ओ भाषा आन्दोलनक मंच बनि सकैत अछि।
३४. (C) संपादक लेखक, तकनीकी संयोजक, अभिलेखपाल, समुदाय-संयोजक आ तथ्य-जाँचकर्ता बनैत अछि — डिजिटल पत्रिका संपादनक क्षेत्र बढ़ा दैत अछि।
३५. (D) माध्यम, भाषा, तकनीक, संपादकीयता, लोकतंत्र, अभिलेख आ पाठक-संस्कृतिक सम्बन्ध पर — उच्च-स्तर प्रश्न विचार-सम्बन्ध आ ऐतिहासिक अर्थ बुझबैत अछि।
३६. (A) डिजिटल शब्दकोश, टंकण-उपकरण, पाठ-संग्रह, समाचार-मानक, प्रशिक्षण आ अभिलेख — भाषा-विकास लेल उपकरण, प्रशिक्षण आ सामग्री तीनू जरूरी अछि।
३७. (A) भाषा-समुदायक अनुभव साहित्य, समाचार, संस्कार, राजनीति आ लोकजीवनक सम्मिलित रूप अछि — मैथिली सार्वजनिकता बहु-विध सामग्री सँ बनैत अछि।
३८. (A) डिजिटल माध्यम मातृभाषाकें वैश्विक, अभिलेखीय, संवादात्मक आ नवपीढ़ी-सुलभ बना सकैत अछि — सजग प्रयोगसँ वेब भाषा-संरक्षण आ भाषा-विस्तारक महत्वपूर्ण साधन बनैत अछि।
३९. (B) एक-दू पोस्ट नहि, बल्कि नियमित अंक आ दीर्घकालिक संपादकीय श्रम संस्थान बनबैत अछि — भाषाई डिजिटल संस्था निरंतरता सँ विश्वसनीयता पबैत अछि।
४०. (D) ओ पाठक, लेखक, विद्यार्थी, प्रवासी, शोधार्थी आ सांस्कृतिक कर्मी सभकें जोड़ि भाषा-प्रयोग बढ़बैत अछि — आन्दोलनक अर्थ सामुदायिक सक्रियता आ भाषा-प्रयोगक विस्तार अछि।

अध्याय १८ : मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२ — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. बीहनि कथा/विहनि कथा नाममे 'बीहनि' संकेत की दैत अछि?

- (A) पृष्ठ-सूची
- (B) लम्बा उपन्यास
- (C) संक्षिप्त आकारमे बीज-जकाँ सघन कथ्य आ तीव्र प्रभाव
- (D) कविताक छन्द मात्र

२. बीहनि कथाक उपादेयता आजुक समयमे किएक बढ़ल अछि?

- (A) तेज जीवन-गति मे छोट, मारक, विचारोत्तेजक गद्यरूप पाठक तक तुरन्त पहुँचैत अछि
- (B) लम्बा पाठ असंभव तँ साहित्य समाप्त
- (C) छोट रूप गम्भीर नहि
- (D) केवल मनोरंजन लेल

३. बीहनि कथा आ सामान्य चुटकुला मे मूल अन्तर की अछि?

- (A) चुटकुला बेसी साहित्यिक
- (B) दुनू एके चीज
- (C) बीहनि कथा मे कथ्य, संकेत, सामाजिक अर्थ आ कलात्मक संरचना रहैत अछि
- (D) बीहनि कथा केवल पंचलाइन

४. सफल बीहनि कथाक अन्त केहन होयबाक चाही?

- (A) बहुत लम्बा उपदेश
- (B) कुनू निष्कर्ष नहि
- (C) अचानक असंबद्ध
- (D) अनपेक्षित होइतो कथ्यसँ स्वाभाविक, अर्थ-उद्घाटक आ स्मरणीय

५. बीहनि कथामे शीर्षकक भूमिका किएक बेसी महत्वपूर्ण अछि?

- (A) शीर्षक अनावश्यक
- (B) शीर्षक कथा सँ अलग
- (C) शीर्षक केवल क्रमांक
- (D) छोट आकारमे शीर्षक स्वयं अर्थक अतिरिक्त परत आ संकेत बनि जाइत अछि

६. आभा झाक 'बीहनि कथाक आजुक परिप्रेक्ष्यमे उपादेयता' लेखक मुख्य प्रश्न की बुझाइत अछि?

- (A) केवल लेखक-सूची
- (B) लघु गद्यरूपक वर्तमान सामाजिक-साहित्यिक उपयोगिता
- (C) पुरस्कार-विवरण
- (D) कथा गिनती

७. बीहनि कथा मे कथानकक लघुता किएक कमजोरी नहि?

- (A) लघुता सदैव असफल
- (B) कथानक छोट तँ साहित्य नहि
- (C) छोट कथानक सघन संकेत, चरित्र-रेखा आ भाव-झटका सँ प्रभावी बनैत अछि
- (D) केवल विस्तार साहित्य

८. 'बीछक डंक' सन शीर्षक बीहनि कथाक सौन्दर्य कोना बनबैत अछि?

- (A) लम्बी व्याख्या जरूरी
- (B) छोट प्रतीक द्वारा तीव्र चोट, व्यंग्य आ स्मरणीय असरक संकेत
- (C) सामाजिक अर्थ नहि
- (D) शीर्षक केवल कीट-विज्ञान

९. बीहनि कथाक भाषा केहन होयबाक चाही?

- (A) भारी शब्दाडम्बर
- (B) सहज, सटीक, अर्थ-सघन, अनावश्यक विस्तारसँ मुक्त
- (C) अस्पष्टता मात्र
- (D) लम्बा वर्णन

१०. बीहनि कथा मे सामाजिक व्यंग्य किएक प्रभावी होइत अछि?

- (A) समाजक प्रश्न न उठय
- (B) व्यंग्य निषिद्ध
- (C) छोट प्रसंगमे व्यवस्था, पाखण्ड, गरीबी, सत्ता वा पारिवारिक विरोधाभास तीव्र रूपे खुलैत अछि
- (D) केवल प्रेम-कथा होय

११. सुभाष कुमार कामतक बहु-कथा उपस्थिति अंकक कोन गुण देखबैत अछि?

- (A) केवल नाम-आवृत्ति
- (B) साहित्यिक अर्थ नहि
- (C) एकर प्रश्न नहि बनय
- (D) एक लेखकक विविध कथ्य-प्रयोग आ बीहनि कथा-लेखनक सक्रियता

१२. अनेक लेखकक अनेक बीहनि कथा एक विशेषांकमे रहबाक कारण प्रश्न-संख्या किएक बढ़य चाही?

- (A) प्रत्येक कथा/लेख अलग कथ्य, शिल्प, सामाजिक प्रसंग आ सौन्दर्य-बिन्दु दैत अछि
- (B) सामग्रीक फर्क नहि
- (C) प्रश्न स्थिर ३० हो
- (D) केवल सूची पूछू

१३. बीहनि कथाक चरित्र-निर्माण लघु आकारमे कोना होइत अछि?

- (A) विस्तृत जीवनी जरूरी
- (B) एक संवाद, एक संकेत, एक क्रिया वा एक स्थिति सँ चरित्रक सार उभरैत अछि
- (C) चरित्र असंभव
- (D) नाम मात्र पर्याप्त

१४. 'घर' शीर्षक बीहनि कथा मे सम्भावित गहनता कोन प्रकारक हो सकैत अछि?

- (A) कथा शीर्षक असंगत
- (B) घरकें सुरक्षा, स्मृति, विडम्बना, विस्थापन वा संबंधक प्रतीक बनायब
- (C) घर केवल मकान
- (D) प्रतीकक भूमिका नहि

१५. 'बड़दक घंटी' जकाँ लोक-प्रतीक बीहनि कथामे की करैत अछि?

- (A) लोकजीवनक वस्तुकेँ सामाजिक संकेत, व्यंग्य वा नैतिक प्रश्नमे बदलैत अछि
- (B) प्रतीक असंभव
- (C) लोक-वस्तु साहित्य नहि
- (D) केवल पशु-वर्णन

१६. बीहनि कथामे संवादक आदर्श प्रयोग की अछि?

- (A) संवाद हटायब
- (B) केवल वर्णन
- (C) कम शब्दमे चरित्र, टकराव आ कथ्य खोलि देब
- (D) लम्बा भाषण

१७. बीहनि कथा आ संस्मरणात्मक लघु गद्य मे मूल भेद की अछि?

- (A) संस्मरण सदैव कथा
- (B) रचना-शिल्प अप्रासंगिक
- (C) बीहनि कथा काल्पनिक/रचनात्मक संरचना द्वारा निर्णायक अर्थ-क्षण गढ़ैत अछि
- (D) दुनू पूर्ण समान

१८. लघुकथा मे 'उपदेश' किएक सावधानीसँ बरतबाक चाही?

- (A) अत्यधिक उपदेश कथात्मक प्रभाव घटा कऽ रचनाकेँ भाषण बना दैत अछि
- (B) उपदेश ही कथा
- (C) कथा बिना प्रवचन असंभव
- (D) पाठक सोचय नहि

१९. बीहनि कथाक पाठकीय असर कखन बेसी होइत अछि?

- (A) जखन केवल नाम-सूची हो
- (B) जखन विस्तार अनंत हो
- (C) जखन कथ्य अस्पष्ट रहय
- (D) जखन छोट घटना जीवनक पैघ सच उधारि देत

२०. बीहनि कथा मे स्त्री-अनुभवक प्रस्तुति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) घर साहित्य नहि
- (B) घर, श्रम, संबंध, हिंसा, स्वाभिमान आ सामाजिक मर्यादाक तीव्र अनुभव छोट रूपमे व्यक्त होइत अछि
- (C) स्त्री-अनुभव गौण
- (D) लघुकथा मे समाज नहि

२१. 'के समाहरत इ गृह थीक भार!' सन शीर्षक कोन सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) गृहस्थी, श्रम-वितरण, स्त्री-भार आ पारिवारिक जिम्मेदारीक प्रश्न
- (B) साहित्यिक अर्थ नहि
- (C) प्रश्न अनैतिक
- (D) केवल घरक सजावट

२२. बीहनि कथाक सम्पादनमे अनावश्यक वाक्य हटायब किएक जरूरी अछि?

- (A) लम्बाई बढ़ेनाइ लक्ष्य
- (B) दोहराव श्रेष्ठ
- (C) संपादनक जरूरत नहि
- (D) हर अतिरिक्त वाक्य कथा-धार, तनाव आ प्रभाव केँ ढीला कऽ सकैत अछि

२३. बीहनि कथामे समय-संपीडन कोना देखाइत अछि?

- (A) केवल तिथि बतायब
- (B) कथा हमेशा एक दिन
- (C) समयक भूमिका नहि
- (D) अल्प क्षणमे अतीत, वर्तमान आ भविष्यक संकेत समेटल जा सकैत अछि

२४. बीहनि कथाक आलोचना करत समय कोन कसौटी जरूरी अछि?

- (A) केवल लेखकक नाम
- (B) केवल क्रमांक
- (C) केवल शब्द-संख्या
- (D) कथ्य-सघनता, शिल्प, भाषा, अन्त, प्रतीक, सामाजिक अर्थ आ मौलिकता

२५. बीहनि कथा मे ग्रामीण जीवनक प्रस्तुति कोना सफल होइत अछि?

- (A) लोकभाषा, व्यवहार, वस्तु-संकेत आ सामाजिक सम्बन्धक सटीक चित्रणसँ
- (B) गामक नाम लिखल मात्र
- (C) कृत्रिम भाषा
- (D) लोकजीवन हटायब

२६. बीहनि कथा मे शहरी/आधुनिक विसंगति कतेक उपयोगी विषय अछि?

- (A) शहर साहित्य नहि
- (B) केवल पुरान विषय
- (C) लघु रूप मोबाइल, बाजार, नौकरशाही, अकेलापन आ संबंध-विच्छेदक तीव्र चित्र दे सकैत अछि
- (D) आधुनिकता कथा-विरोधी

२७. बीहनि कथा मे बाल-स्वर वा बाल-दृष्टि किएक असरदार भऽ सकैत अछि?

- (A) बालक सोचैत नहि
- (B) बालकक सरल दृष्टि समाजक पाखण्ड केँ बेसी तीव्रता सँ उघारि सकैत अछि
- (C) बाल-दृष्टि असाहित्यिक
- (D) केवल वयस्क पात्र

२८. 'भाव' शीर्षक बीहनि कथा लेल कोन साहित्यिक सावधानी अपेक्षित अछि?

- (A) केवल उपदेश
- (B) भावुक विस्तार
- (C) कथा बिना प्रसंग
- (D) भावुकता नहि, भावक सघन रूपांतरण कथात्मक क्षणमे

२९. बीहनि कथा मे व्यंजना किएक केंद्रीय अछि?

- (A) छिपल अर्थ नहि
- (B) सब किछु स्पष्ट उपदेश
- (C) जे नहि कहल गेल, ओहि सँ पाठकक भीतर अर्थ-विस्तार होइत अछि
- (D) व्यंजना कविता मात्र

३०. बीहनि कथा आ कविता मे निकटता कतय अछि?

- (A) कथा मे बिंब नहि
- (B) दुनूमे संक्षिप्तता, बिंब, व्यंजना आ शब्द-सघनता महत्त्वपूर्ण अछि
- (C) कविता कथाविहीन तें श्रेष्ठ
- (D) दुनू समान विधा

३१. बीहनि कथामे 'एकता' जकाँ शीर्षक कोन तरहक कथ्य खोलि सकैत अछि?

- (A) केवल शब्दार्थ
- (B) सामाजिक एकता, पारिवारिक विडम्बना, राजनीतिक नारा वा मानवीय सम्बन्धक परीक्षा
- (C) कोई बहुअर्थ नहि
- (D) शीर्षक कथा नहि

३२. बीहनि कथाक संग्रह पढ़ैत समय पाठककेँ कोन पद्धति अपनाबक चाही?

- (A) अर्थ न खोजब
- (B) प्रत्येक कथाक शीर्षक, अन्त, प्रतीक आ मौन अर्थ पर ठहरि विचार करब
- (C) तेजी सँ नाम गिनब
- (D) केवल लेखक याद करब

३३. लघुकथा मे 'पात्रक नाम' कतेक जरूरी अछि?

- (A) नाम बिना कथा असंभव
- (B) जरूरत अनुसार; अनेक बेर नामक बदला स्थिति वा भूमिका पैघ अर्थ दैत अछि
- (C) नाम ही चरित्र
- (D) स्थितिक अर्थ नहि

३४. बीहनि कथा मे नैतिक द्वंद्व कोना बनैत अछि?

- (A) छोट परिस्थिति मे पात्रक निर्णय समाजक मूल्यक प्रश्न बना दैत अछि
- (B) द्वंद्व नहि होय
- (C) केवल घटनाक्रम
- (D) नैतिकता अप्रासंगिक

३५. बीहनि कथा विशेषांक-२ मे अनेक लेखिका/लेखकक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) बहु-लेखकता भ्रम
- (B) विधाक सामुदायिक प्रयोग, स्त्री-पुरुष स्वर आ विविध सामाजिक अनुभव सामने अबैत अछि
- (C) विविधता नुकसान
- (D) एक लेखक पर्याप्त

३६. बीहनि कथामे हास्य आ करुणा एक संग कतेक संभव अछि?

- (A) दुनू असंभव
- (B) छोट प्रसंगमे हास्यक भीतर करुणा सामाजिक सच प्रकट भऽ सकैत अछि
- (C) हास्य केवल हल्का
- (D) करुणा केवल लम्बा उपन्यास

३७. बीहनि कथा मे 'मौन' कतेक महत्त्वपूर्ण शिल्प-तत्व अछि?

- (A) अनकहल बात पाठकसँ अर्थ पूरा करबैत अछि
- (B) सब बोलि देब जरूरी
- (C) मौन शून्य अछि
- (D) मौन केवल नाटकमे

३८. बीहनि कथाक डिजिटल प्रकाशन किएक अनुकूल अछि?

- (A) डिजिटलमे लघुकथा चलि नहि सकैत
- (B) मोबाइल साहित्य-विरोधी
- (C) छोट आकार मोबाइल-पठन, साझा करब, त्वरित प्रतिक्रिया आ संग्रहण लेल उपयुक्त अछि
- (D) साझा करब हानिकारक

३९. बीहनि कथा मे स्थानीय मैथिली शब्दक प्रयोग किएक उपयोगी अछि?

- (A) लोकभाषा अशुद्ध
- (B) स्थानीय शब्द हटय
- (C) ओ सामाजिक परिवेश, बोलचाल, हास्य, व्यंग्य आ सांस्कृतिक प्रामाणिकता दैत अछि
- (D) सर्वत्र कृत्रिम भाषा

४०. कथा 'हरायल गाम' जकाँ शीर्षक समकालीन कौन चिन्ता उठबैत अछि?

- (A) आधुनिकता सदैव सरल
- (B) गामक भूगोल मात्र
- (C) गामक सांस्कृतिक परिवर्तन, विस्थापन, स्मृति आ आधुनिकीकरणक पीड़ा
- (D) कथा-संकेत नहि

४१. बीहनि कथा मे पितृसत्ता वा घरेलू सत्ता कोना व्यक्त भऽ सकैत अछि?

- (A) छोट संवाद, कामक बँटवारा, निर्णय वा चुप्पीक माध्यमे
- (B) लघुकथा मे पितृसत्ता असंभव
- (C) घरेलू सत्ता विषय नहि
- (D) केवल सार्वजनिक राजनीति

४२. बीहनि कथाक 'मारकता' किएक केवल अन्तिम वाक्य पर निर्भर नहि?

- (A) शीर्षक अप्रासंगिक
- (B) अन्तिम वाक्य ही सब किछु
- (C) बीच भाग बेकार
- (D) पूरा संरचना, पूर्व-संकेत, भाषा आ प्रतीक मिलि प्रभाव रचैत अछि

४३. लघुकथा मे पुनर्पाठ किएक आवश्यक अछि?

- (A) पहिल पढ़ाइमे घटना, दोसरमे संकेत आ तेसरमे सामाजिक अर्थ खुलैत अछि
- (B) एक बेर पढ़ि समाप्त
- (C) पुनर्पाठ समय-नाश
- (D) गहराई नहि

४४. बीहनि कथा मे 'समापन' आ 'समाधान' मे भेद की अछि?

- (A) दुनू समान
- (B) हर कथा मे समाधान जरूरी
- (C) प्रश्न खुलल रहब दोष
- (D) समापन कथा रोकैत अछि; समाधान आवश्यक नहि, प्रश्न खुलल रहि सकैत अछि

४५. बीहनि कथा विशेषांक मे कथाक संख्या अधिक होएब प्रश्न-निर्माणमे कोन मांग रखैत अछि?

- (A) स्थिर ३०-४० नहि, बल्कि विषय-विविधता अनुसार अधिक प्रश्न
- (B) समृद्ध अंकमे सेहो कम प्रश्न
- (C) हर अंक बराबर प्रश्न
- (D) केवल नाम पूछू

४६. बीहनि कथा मे वर्ग-चेतना कोना व्यक्त भऽ सकैत अछि?

- (A) वर्ग-सवाल साहित्य नहि
- (B) कथा मे समाज नहि
- (C) दैनिक श्रम, अभाव, मालिक-नौकर सम्बन्ध, प्रशासनिक उपेक्षा वा संसाधन-असमानता सँ
- (D) गरीबी मात्र आँकड़ा

४७. बीहनि कथाक प्रशिक्षण लेल विद्यार्थीकें कोन अभ्यास देबाक चाही?

- (A) एक घटना चुनि अनावश्यक विवरण हटाकऽ तीव्र अन्त आ प्रतीकात्मक शीर्षक बनायब
- (B) केवल लेखक याद करायब
- (C) शीर्षक हटायब
- (D) लम्बा निबन्ध लिखायब

४८. बीहनि कथा मे मिथिला-परिवेशक संकेत किएक जरूरी हो सकैत अछि?

- (A) स्थानिक जीवन, भाषा, संस्कार आ सामाजिक संबंध कथा केँ सांस्कृतिक देह दैत अछि
- (B) सर्वत्र एके भाषा
- (C) मिथिला असंगत
- (D) स्थानिकता दोष

४९. बीहनि कथाक श्रेष्ठता कोन बातसँ नापल नहि जाएत?

- (A) कथ्य-सघनता सँ
- (B) भाषिक सटीकता सँ
- (C) केवल शब्द-संख्या वा लेखकक प्रसिद्धि सँ
- (D) कलात्मक प्रभाव सँ

५०. बीहनि कथा मे 'द्विस्ट' कखन दोष बनैत अछि?

- (A) कथा बिना छलावा नहि
- (B) हर द्विस्ट श्रेष्ठ
- (C) जखन ओ कथ्यसँ असंबद्ध वा कृत्रिम चौक बने
- (D) स्वाभाविकता अप्रासंगिक

५१. बीहनि कथा विशेषांक-२क समग्र साहित्यिक संकेत की अछि?

- (A) केवल अनुवादक रूप
- (B) मात्र मनोरंजन
- (C) विधा समाप्त
- (D) मैथिलीमे लघुकथा सक्रिय, बहु-स्वरीय, सामाजिक-संवेदनशील आ प्रयोगशील विधा रूपमे विकसित भऽ रहल अछि

५२. उच्च-स्तरीय बीहनि कथा क्विजमे कोन प्रकारक प्रश्न टालबाक चाही?

- (A) शिल्प-प्रश्न
- (B) भाषा-संरचना
- (C) सामाजिक अर्थ
- (D) कौन कथा कतेक नम्बर पर अछि, कौन पृष्ठ पर अछि, वा केवल नाम-सूची

५३. बीहनि कथा पाठकक भीतर 'अस्वस्थ चुप्पी' किएक छोड़ि सकैत अछि?

- (A) छोट रूप असरहीन
- (B) रचना छोट होइतो ओकर सामाजिक सत्य पाठकक मनमे देर धरि अटक रहैत अछि
- (C) कथा तुरंत विसराय
- (D) चुप्पी दोष

५४. बीहनि कथा मे लोक-हास्यक प्रयोग सामाजिक आलोचना कोना बनैत अछि?

- (A) हास्य अर्थहीन
- (B) लोक-हास्य असाहित्यिक
- (C) हँसीक आवरणमे सत्ता, पाखण्ड, गरीबी वा व्यवहारिक मूर्खता उजागर होइत अछि
- (D) आलोचना केवल निबंधमे

५५. बीहनि कथा आ पत्रकारिता मे निकटता कतय देखाइत अछि?

- (A) कथा तथ्य-सूची मात्र
- (B) पत्रकारिता काल्पनिक
- (C) दुनू समकालीन जीवनक छोटी घटना सँ पैघ अर्थ निकालि सकैत अछि
- (D) दुनू असंबंधित

५६. बीहनि कथामे भाषा-संयम आ भाव-संयम एक संग किएक चाही?

- (A) भावुकता ही साहित्य
- (B) अतिशयोक्ति श्रेष्ठ
- (C) जतेक लम्बा ओतेक नीक
- (D) बहुत शब्द वा बहुत भावुकता दुनू संक्षिप्त प्रभाव केँ कमजोर करैत अछि

५७. बीहनि कथा विशेषांकक प्रश्न-संख्या ३०-४० सँ अधिक किएक उचित अछि?

- (A) कारण एहि अंकमे सिद्धान्त-लेखक संग अनेक रचनाकार आ अनेक कथा-संवेदना समाहित अछि
- (B) केवल परम्परा लेल
- (C) प्रश्न गिनतीक खेल लेल
- (D) यांत्रिक समानता लेल

उत्तरमाला — अध्याय १८ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) संक्षिप्त आकारमे बीज-जकाँ सघन कथ्य आ तीव्र प्रभाव — बीहनि कथा छोट होइतो बीजक तरह विचार, व्यंग्य आ संकेत सँ भरल रहैत अछि।
२. (A) तेज जीवन-गति मे छोट, मारक, विचारोत्तेजक गद्यरूप पाठक तक तुरन्त पहुँचैत अछि — संक्षिप्तता आधुनिक पाठकक समय-संवेदना संग मेल खाइत अछि, मुदा गहराई बनेनाइ चुनौती अछि।
३. (C) बीहनि कथा मे कथ्य, संकेत, सामाजिक अर्थ आ कलात्मक संरचना रहैत अछि — बीहनि कथा हँसी वा झटका तक सीमित नहि; ओ जीवन-दृष्टि दैत अछि।
४. (D) अनपेक्षित होइतो कथ्यसँ स्वाभाविक, अर्थ-उद्घाटक आ स्मरणीय — अन्त पाठकक भीतर विचारक प्रतिध्वनि छोड़ैत अछि।
५. (D) छोट आकारमे शीर्षक स्वयं अर्थक अतिरिक्त परत आ संकेत बनि जाइत अछि — बीहनि कथामे हर शब्द महत्त्वपूर्ण; शीर्षक सेहो कथ्यक हिस्सा बनैत अछि।
६. (B) लघु गद्यरूपक वर्तमान सामाजिक-साहित्यिक उपयोगिता — लेख बीहनि कथाकें समय, समाज आ पाठकीयता सँ जोड़ि देखैत अछि।
७. (C) छोट कथानक सघन संकेत, चरित्र-रेखा आ भाव-झटका सँ प्रभावी बनैत अछि — लघुता शर्त अछि, सीमा नहि; शिल्पक कसौटी सघनता अछि।
८. (B) छोट प्रतीक द्वारा तीव्र चोट, व्यंग्य आ स्मरणीय असरक संकेत — बीहनि कथाक नाम पाठककें भाव-तैयारी आ अर्थ-संकेत दैत अछि।
९. (B) सहज, सटीक, अर्थ-सघन, अनावश्यक विस्तारसँ मुक्त — बीहनि कथामे शब्द बचत आ अर्थ-संपन्नता एकसंग जरूरी अछि।
१०. (C) छोट प्रसंगमे व्यवस्था, पाखण्ड, गरीबी, सत्ता वा पारिवारिक विरोधाभास तीव्र रूपे खुलैत अछि — लघु रूप विसंगतिपर तेज प्रकाश डालि सकैत अछि।
११. (D) एक लेखकक विविध कथ्य-प्रयोग आ बीहनि कथा-लेखनक सक्रियता — एकाधिक कथा लेखकक विषय-विस्तार आ शैली बुझबाक अवसर दैत अछि।
१२. (A) प्रत्येक कथा/लेख अलग कथ्य, शिल्प, सामाजिक प्रसंग आ सौन्दर्य-बिन्दु दैत अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक बहुलता पर आधारित होयबाक चाही।
१३. (B) एक संवाद, एक संकेत, एक क्रिया वा एक स्थिति सँ चरित्रक सार उभरैत अछि — लघुकथा मे चरित्रक पूर्ण जीवन नहि, निर्णायक क्षण देखाओल जाइत अछि।
१४. (B) घरकें सुरक्षा, स्मृति, विडम्बना, विस्थापन वा संबंधक प्रतीक बनायब — बीहनि कथामे सामान्य शब्द सेहो बहुअर्थी प्रतीक बनि सकैत अछि।
१५. (A) लोकजीवनक वस्तुकें सामाजिक संकेत, व्यंग्य वा नैतिक प्रश्नमे बदलैत अछि — लघु कथा लोक-प्रतीकसँ अर्थक गहराई पबैत अछि।
१६. (C) कम शब्दमे चरित्र, टकराव आ कथ्य खोलि देब — संवाद बीहनि कथामे कथ्य-संपीडनक प्रभावी उपकरण अछि।
१७. (C) बीहनि कथा काल्पनिक/रचनात्मक संरचना द्वारा निर्णायक अर्थ-क्षण गढ़ैत अछि — बीहनि कथा अनुभवसँ उपजि सकैत अछि, मुदा ओकर कलात्मक संरचना अलग होइत अछि।
१८. (A) अत्यधिक उपदेश कथात्मक प्रभाव घटा कऽ रचनाकें भाषण बना दैत अछि — सफल बीहनि कथा पाठककें सोचबैत अछि, केवल निर्देश नहि दैत।
१९. (D) जखन छोट घटना जीवनक पैघ सच उघारि दैत — लघु घटना पैघ सामाजिक वा मानवीय अर्थ खोलि सकैत अछि।
२०. (B) घर, श्रम, संबंध, हिंसा, स्वाभिमान आ सामाजिक मर्यादाक तीव्र अनुभव छोट रूपमे व्यक्त होइत अछि — अनेक बीहनि कथा घरेलू जीवनक भीतरक सत्ता-संबंध खोलि सकैत अछि।
२१. (A) गृहस्थी, श्रम-वितरण, स्त्री-भार आ पारिवारिक जिम्मेदारीक प्रश्न — शीर्षक गृहस्थीकें सामाजिक-लैंगिक विमर्शक विषय बनबैत अछि।
२२. (D) हर अतिरिक्त वाक्य कथा-धार, तनाव आ प्रभाव कें ढीला कऽ सकैत अछि — लघुकथा लेखनमे काट-छाँट रचनात्मक अनुशासन अछि।

२३. (D) अल्प क्षणमे अतीत, वर्तमान आ भविष्यक संकेत समेटल जा सकैत अछि — लघु रूप संकेतक सहारे व्यापक काल-अनुभव रचैत अछि।
२४. (D) कथ्य-सघनता, शिल्प, भाषा, अन्त, प्रतीक, सामाजिक अर्थ आ मौलिकता — गंभीर मूल्यांकन रूप आ अर्थ दुनू देखैत अछि।
२५. (A) लोकभाषा, व्यवहार, वस्तु-संकेत आ सामाजिक सम्बन्धक सटीक चित्रणसँ — ग्रामीण कथा प्रामाणिक तखन लगैत अछि जखन भाषा आ जीवन-दृष्टि स्वाभाविक हो।
२६. (C) लघु रूप मोबाइल, बाजार, नौकरशाही, अकेलापन आ संबंध-विच्छेदक तीव्र चित्र दे सकैत अछि — बीहनि कथा समकालीन विडम्बना पकड़बामे सक्षम अछि।
२७. (B) बालकक सरल दृष्टि समाजक पाखण्ड केँ बेसी तीव्रता सँ उघारि सकैत अछि — लघुकथा मे बाल-नजरि अक्सर नैतिक झटका पैदा करैत अछि।
२८. (D) भावुकता नहि, भावक सघन रूपांतरण कथात्मक क्षणमे — भाव केन्द्रित कथा तखन सफल जखन कथात्मक स्थिति भावकेँ मूर्त करय।
२९. (C) जे नहि कहल गेल, ओहि सँ पाठकक भीतर अर्थ-विस्तार होइत अछि — लघुरूपक शक्ति संकेत आ मौनमे निहित रहैत अछि।
३०. (B) दुनूमे संक्षिप्तता, बिंब, व्यंजना आ शब्द-सघनता महत्त्वपूर्ण अछि — बीहनि कथा गद्य होइतो कवितासदृश संपीडन अपना सकैत अछि।
३१. (B) सामाजिक एकता, पारिवारिक विडम्बना, राजनीतिक नारा वा मानवीय सम्बन्धक परीक्षा — लघु शीर्षक अनेक दिशामे अर्थ खोलि सकैत अछि।
३२. (B) प्रत्येक कथाक शीर्षक, अन्त, प्रतीक आ मौन अर्थ पर ठहरि विचार करब — लघुकथा छोट होइतो धीमे पढ़ाइ चाहैत अछि।
३३. (B) जरूरत अनुसार; अनेक बेर नामक बदला स्थिति वा भूमिका पैघ अर्थ दैत अछि — लघु रूपमे पात्रक पहचान संकेतात्मक सेहो भऽ सकैत अछि।
३४. (A) छोट परिस्थिति मे पात्रक निर्णय समाजक मूल्यक प्रश्न बना दैत अछि — लघु घटना नैतिक जटिलता केँ तीव्र रूपे उपस्थित करैत अछि।
३५. (B) विधाक सामुदायिक प्रयोग, स्त्री-पुरुष स्वर आ विविध सामाजिक अनुभव सामने अबैत अछि — विविध रचनाकार विधाक विस्तार देखबैत छथि।
३६. (B) छोट प्रसंगमे हास्यक भीतर करुण सामाजिक सच प्रकट भऽ सकैत अछि — लघुकथा मे विपरीत भावक टकराव बेसी असरदार भऽ सकैत अछि।
३७. (A) अनकहल बात पाठकसँ अर्थ पूरा करबैत अछि — लघु कथामे मौन पाठकक सक्रिय भागीदारी बनबैत अछि।
३८. (C) छोट आकार मोबाइल-पठन, साझा करब, त्वरित प्रतिक्रिया आ संग्रहण लेल उपयुक्त अछि — लघु गद्य डिजिटल पाठकीय आदतक संग मेल खाइत अछि।
३९. (C) ओ सामाजिक परिवेश, बोलचाल, हास्य, व्यंग्य आ सांस्कृतिक प्रामाणिकता दैत अछि — मातृभाषाक लघुकथा स्थानीय शब्द सँ जीवंत बनैत अछि।
४०. (C) गामक सांस्कृतिक परिवर्तन, विस्थापन, स्मृति आ आधुनिकीकरणक पीड़ा — शीर्षक गामकेँ भौगोलिक नहि, सांस्कृतिक-स्मृतिगत प्रश्न बनबैत अछि।
४१. (A) छोट संवाद, कामक बँटवारा, निर्णय वा चुप्पीक माध्यमे — घरक सूक्ष्म घटना समाजक सत्ता-संबंध उघारि सकैत अछि।
४२. (D) पूरा संरचना, पूर्व-संकेत, भाषा आ प्रतीक मिलि प्रभाव रचैत अछि — अन्त शक्तिशाली तखन होइत अछि जखन पूरा कथा ओकर तैयारी करैत अछि।
४३. (A) पहिल पढ़ाइमे घटना, दोसरमे संकेत आ तेसरमे सामाजिक अर्थ खुलैत अछि — छोट रचना कई बेर पढ़लासँ अर्थक नुआ परत खुलैत अछि।
४४. (D) समापन कथा रोकैत अछि; समाधान आवश्यक नहि, प्रश्न खुलल रहि सकैत अछि — अनेक लघुकथा पाठककेँ असुविधाजनक प्रश्नक संग छोड़ि दैत अछि।
४५. (A) स्थिर ३०-४० नहि, बल्कि विषय-विविधता अनुसार अधिक प्रश्न — सामग्री-समृद्ध अंक गतिशील प्रश्न-संख्या चाहैत अछि।
४६. (C) दैनिक श्रम, अभाव, मालिक-नौकर सम्बन्ध, प्रशासनिक उपेक्षा वा संसाधन-असमानता सँ — छोट कथा वर्गीय विसंगति तेज रूपे दिखा सकैत अछि।
४७. (A) एक घटना चुनि अनावश्यक विवरण हटाकऽ तीव्र अन्त आ प्रतीकात्मक शीर्षक बनायब — लेखन-अभ्यास लघुता, काट-छाँट आ व्यंजना सिखबैत अछि।
४८. (A) स्थानिक जीवन, भाषा, संस्कार आ सामाजिक संबंध कथा केँ सांस्कृतिक देह दैत अछि — स्थानीय परिवेश रचनाकेँ प्रामाणिकता आ विशिष्टता दैत अछि।
४९. (C) केवल शब्द-संख्या वा लेखकक प्रसिद्धि सँ — छोट होएब मात्र लघुकथा नहि; प्रभाव आ शिल्पक कसौटी जरूरी अछि।
५०. (C) जखन ओ कथ्यसँ असंबद्ध वा कृत्रिम चौक बने — चौक प्रभावी तखन अछि जखन पूर्व संकेत आ कथ्य संग जुड़ल रहय।

५१. (D) मैथिलीमे लघुकथा सक्रिय, बहु-स्वरीय, सामाजिक-संवेदनशील आ प्रयोगशील विधा रूपमे विकसित भऽ रहल अछि — अनेक लेखकक सहभागिता विधाक जीवंतता प्रमाणित करैत अछि।
५२. (D) कौन कथा कतेक नम्बर पर अछि, कौन पृष्ठ पर अछि, वा केवल नाम-सूची — उद्देश्य साहित्यिक समझ जाँचब अछि, यांत्रिक स्मरण नहि।
५३. (B) रचना छोट होइतो ओकर सामाजिक सत्य पाठकक मनमे देर धरि अटकि रहैत अछि — सफल लघुकथा प्रत्यक्ष उपदेश नहि, आन्तरिक बेचैनी छोड़ैत अछि।
५४. (C) हँसीक आवरणमे सत्ता, पाखण्ड, गरीबी वा व्यवहारिक मूर्खता उजागर होइत अछि — लोक-हास्य अक्सर तीखा सामाजिक विवेक राखैत अछि।
५५. (C) दुनू समकालीन जीवनक छोटी घटना सँ पैघ अर्थ निकालि सकैत अछि — लघुकथा समाचार-सदृश घटना सँ भी मानवीय अर्थ बना सकैत अछि।
५६. (D) बहुत शब्द वा बहुत भावुकता दुनू संक्षिप्त प्रभाव केँ कमजोर करैत अछि — संयम लघुकथा केँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।
५७. (A) कारण एहि अंकमे सिद्धान्त-लेखक संग अनेक रचनाकार आ अनेक कथा-संवेदना समाहित अछि — प्रश्न-संख्या सामग्रीक समृद्धि अनुसार बदलय चाही।

अध्याय १९ : रामलोचन ठाकुर विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. रामलोचन ठाकुर विशेषांकमे हुनका 'प्रगतिशील' आ 'परम्परागत' दुनू रूपमे देखबाक कारण की अछि?

- (A) ओ केवल पुरान शैलीक कवि छथि
- (B) हुनकर रचना लोक-माटि, भाषा-परम्परा आ सामाजिक प्रतिरोधकें एक संग जोड़ैत अछि
- (C) ओ केवल अनुवादक छथि
- (D) हुनकर काव्य राजनीति सँ दूर अछि

२. हुनकर साहित्यिक नाम 'अग्रदूत' काव्य-दृष्टिसँ की संकेत करैत अछि?

- (A) केवल छद्मनामक खेल
- (B) मार्ग खोलयबला, आंदोलनकारी आ चेतना जगाबयबला रचनाकारक छवि
- (C) परम्परा-विरोधी अस्वीकार मात्र
- (D) केवल रंगमंचीय पहचान

३. रामलोचन ठाकुरक काव्य-संसारमे 'माटि-पानि' कोन मूल्यक प्रतीक अछि?

- (A) भौतिक भूगोल मात्र
- (B) मिथिलाक लोकजीवन, कृषि-संस्कृति, मातृभाषा आ जन-सम्बन्ध
- (C) केवल प्राकृतिक दृश्य
- (D) देश छोड़बाक आग्रह

४. 'प्रतिरोधी साहित्यकार' कहला सँ रामलोचन ठाकुरक कोन पक्ष उभरैत अछि?

- (A) सत्ता, अन्याय, सामाजिक जड़ता आ मौनक विरोध
- (B) केवल छन्द प्रयोग
- (C) केवल व्यक्तिगत प्रेम
- (D) साहित्यसँ समाज अलग राखब

५. रामलोचन ठाकुरक अनुवाद-कर्मक साहित्यिक महत्त्व की अछि?

- (A) मूल रचना खत्म करब
- (B) मैथिलीमे विश्व/भारतीय साहित्यिक अनुभवक प्रवेश आ भाषाक अभिव्यक्ति-क्षमता विस्तार
- (C) केवल भाषा-अभ्यास
- (D) अनुवादकें गौण मानब

६. रंगमंचसँ जुड़ल रामलोचन ठाकुरक काज मैथिली साहित्य लेल किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) रंगमंच साहित्यसँ असंबद्ध अछि
- (B) नाटक/अभिनय भाषाकें देह, आवाज आ सामुदायिक दृश्यता दैत अछि
- (C) केवल मनोरंजन करैत अछि
- (D) कविताक विरोध करैत अछि

७. 'एहन जड़िआयल समाजमे महिला कोना उतरतीह मैथिली रंगमंचपर' शीर्षकक मूल सामाजिक प्रश्न की अछि?

- (A) महिलाक रंगमंचीय भागीदारीक बाधा आ पितृसत्तात्मक संकोच
- (B) केवल पोशाकक प्रश्न
- (C) मंच-सज्जा
- (D) पुरुष कलाकारक संख्या

८. रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़बाक समय केवल भावुकता किएक पर्याप्त नहि?

- (A) कवितामे विचार, समाज, भाषा, प्रतीक आ ऐतिहासिक संघर्ष सेहो पढ़य पड़ैत अछि
- (B) भावना साहित्यविरोधी अछि
- (C) कविता केवल नारा अछि
- (D) समीक्षा अनावश्यक अछि

९. 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' सन शीर्षक हुनकर काव्य-दृष्टिमे की संकेत करैत अछि?

- (A) प्रश्न सँ बचबाक प्रवृत्ति
- (B) समाज, सत्ता आ जीवनक असुविधाजनक प्रश्नक सामने ठाढ़ होयबाक साहस
- (C) उत्तरक अभावक उत्सव
- (D) केवल रहस्यकथा

१०. रामलोचन ठाकुरक लोककथा-संकलन/संपादनक महत्व की अछि?

- (A) लोकस्मृतिक संरक्षण आ आधुनिक पाठक लेल मौखिक परम्पराक पुनर्पाठ
- (B) लोककथा अप्रासंगिक करब
- (C) केवल बाल-मनोरंजन
- (D) मूल कथा बदलि देब

११. 'एकटा खाँटी मैथिल' कहबाक अर्थ संकीर्णता नहि, बल्कि की भऽ सकैत अछि?

- (A) भाषा, लोक, माटि आ जनजीवनसँ सच्चा सम्बन्ध
- (B) दूसर संस्कृतिक अस्वीकार
- (C) केवल जातीय गौरव
- (D) शहरी जीवनक विरोध

१२. रामलोचन ठाकुरक कवितामे लोकभाषाक प्रयोगक प्रमुख प्रभाव की होइत अछि?

- (A) कविता कठिन बनैत अछि
- (B) कविता जन-संवादक निकट आबैत अछि आ कृत्रिमता घटैत अछि
- (C) भाषा असाहित्यिक भऽ जाइत अछि
- (D) अर्थ अस्पष्ट होइत अछि

१३. 'मशाल लेने चलैत अग्रदूत' रूपक हुनकर व्यक्तित्वकेँ कोना व्याख्यायित करैत अछि?

- (A) अंधकारमे राह देखाबयबला साहित्य-सैनिक
- (B) केवल आयोजक
- (C) केवल संपादक
- (D) दर्शक मात्र

१४. 'काव्य-युद्ध' सन अभिव्यक्ति रामलोचन ठाकुरक साहित्यक कोन स्वरूप उजागर करैत अछि?

- (A) भाषा-सजावट मात्र
- (B) अन्याय, उपेक्षा आ जड़ता विरुद्ध काव्यक संघर्षशील भूमिका
- (C) हिंसा-प्रचार
- (D) कविताक खेल

१५. रामलोचन ठाकुरक लेखनमे 'जन' किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) ओ दरबारी कविता लिखैत छथि
- (B) हुनकर रचना आम लोकक दुःख, स्वप्न, भाषा आ संघर्ष सँ ऊर्जा पबैत अछि
- (C) जनक उल्लेख संयोग अछि
- (D) जनक स्वर अनुपस्थित अछि

१६. हुनकर जीवनक कोलकाता-परिसर मैथिली साहित्यक संदर्भमे की देखबैत अछि?

- (A) मातृभाषा केवल जन्मस्थलमे टिकैत अछि
- (B) प्रवासी मैथिल सेहो भाषा-सृजन, आंदोलन आ संस्था-निर्माणमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकैत छथि
- (C) प्रवास साहित्य-विरोधी अछि
- (D) शहर मैथिली समाप्त करैत अछि

१७. 'गीतकार रामलोचन ठाकुर' शीर्षक हुनकर काव्यक कोन पक्षपर बल दैत अछि?

- (A) लय, गेयता, जन-संवाद आ भाव-संप्रेषण
- (B) गद्यक अभाव
- (C) संगीतसँ दूरी
- (D) केवल छन्दहीनता

१८. हुनकर काव्य-समीक्षामे 'अपूर्णता' शब्दक सृजनात्मक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) कवि असफल छथि
- (B) महान रचनाकारक सम्पूर्ण मूल्यांकन कठिन अछि, कारण हुनकर संसार व्यापक अछि
- (C) समीक्षा छोड़ि देब
- (D) कविता अधूरी अछि मात्र

१९. रामलोचन ठाकुरक 'आंदोलन' सम्बन्धी छवि साहित्यक सामाजिक दायित्वक कोन पाठ दैत अछि?

- (A) लेखक केवल निजी भाव लिखय
- (B) लेखक भाषा, समाज आ सांस्कृतिक अधिकारक प्रश्नमे सहभागी भऽ सकैत अछि
- (C) आन्दोलन साहित्यक शत्रु अछि
- (D) लेखकक समाजसँ संबंध नहि

२०. मैथिली रंगमंचमे रामलोचन ठाकुरक रुचि हुनकर बहुविध रचनाकार रूपकें कोना प्रमाणित करैत अछि?

- (A) ओ केवल पाठक छलाह
- (B) कविता, नाटक, अनुवाद, संपादन, लोककथा आ आंदोलनक बीच हुनकर सक्रियता पसारल छल
- (C) ओ केवल गीतकार छलाह
- (D) रंगमंच गौण छल

२१. 'देशक नाम छलै सोन चिड़ैया' सन शीर्षक हुनकर आलोचनात्मक देश-दृष्टि किएक मानल जा सकैत अछि?

- (A) ई अतीत-गौरव आ वर्तमान-विसंगतिक बीच प्रश्न उठबैत अछि
- (B) केवल बालगीत
- (C) देशक चर्चा नहि
- (D) स्मृति निष्प्रयोजन

२२. 'बेताल कथा' सन व्यंग्य-लेखनक मुख्य उपयोग की अछि?

- (A) हँसैत-हँसैत सामाजिक विकृति उजागर करब
- (B) केवल डर उत्पन्न करब
- (C) लोककथा हटायब
- (D) भाषा-शुद्धि मात्र

२३. 'फाँस' आ 'जादूगर' जेहन अनुवाद-नाटक हुनकर नाट्य-चेतना केना बढ़बैत अछि?

- (A) अनुवाद मंचक प्रयोग आ विषय-विस्तारक अवसर दैत अछि
- (B) नाटक अनुवादयोग्य नहि
- (C) मंचक जरूरत घटैत अछि
- (D) दर्शक हटैत अछि

२४. 'पद्मा नदीक माँझी'क अनुवाद मैथिली पाठक लेल किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) नदी-जनजीवन आ भारतीय भाषिक साहित्यक अनुभव मैथिलीमे उपलब्ध होइत अछि
- (B) उपन्यासक स्थान नहि
- (C) अनुवादसँ भाषा घटैत अछि
- (D) मैथिली पाठकक जरूरत नहि

२५. हुनकर कविता-संसारक मूल्यांकनमे 'सत्यक एकपेरिया' रूपक की बुझबैत अछि?

- (A) सत्य सरल राजपथ अछि
- (B) सत्य कठिन, असुविधाजनक आ जोखिमपूर्ण मार्ग अछि
- (C) सत्यक महत्व नहि
- (D) कवि असत्यक पक्षधर

२६. रामलोचन ठाकुरक आलोचक सभ किएक हुनका अनेक दृष्टिसँ पढ़ैत छथि?

- (A) हुनकर साहित्य एकरैखिक नहि, बल्कि कविता, गीत, लोककथा, अनुवाद, रंगमंच, समाज आ आंदोलन सँ बनल अछि
- (B) समीक्षक भ्रमित छथि
- (C) लेखक गौण छथि
- (D) केवल जन्मवृत्त उपलब्ध अछि

२७. हुनकर रचनामे 'देसील बयना'क आग्रह कोन साहित्यिक मूल्य स्थापित करैत अछि?

- (A) स्थानीय बोली-बानीक आत्मविश्वास आ जन-निकट अभिव्यक्ति
- (B) विदेशी शब्दक निषेध मात्र
- (C) साहित्यिक सीमितीकरण
- (D) केवल हास्य

२८. 'अपूरबा' सन कृति-नाम हुनकर काव्यक कोन भावभूमि संकेत करैत अछि?

- (A) सामान्यता
- (B) अद्वितीय, विरल आ भावात्मक अनुभवक खोज
- (C) केवल पात्रक नाम
- (D) शुद्ध इतिहास

२९. 'ताल-बैताल' पर संवेदनाक सीढ़ी कहला सँ की अर्थ निकलैत अछि?

- (A) संगीतक गलती
- (B) अव्यवस्था भीतर मानवीय संवेदना खोजबाक प्रक्रिया
- (C) कविताक अस्वीकार
- (D) लयक समाप्ति

३०. मैथिली साहित्य इतिहासमे रामलोचन ठाकुरक स्थान केवल कृतिसूचीसँ किएक नहि बुझल जा सकैत?

- (A) कृतिसूची बेकार अछि
- (B) हुनकर संस्थागत, आंदोलनकारी, भाषिक आ जन-सांस्कृतिक योगदान सेहो देखय पड़ैत अछि
- (C) लेखकक जीवन अप्रासंगिक
- (D) कृति कम अछि

३१. हुनकर लेखनमे 'भाषा-सांस्कृतिक आस्था' आ 'नव-निर्माण' कोना एक संग अछि?

- (A) आस्था अतीतमे बन्द करैत अछि
- (B) मातृभाषाक जड़ि सँ नवा सामाजिक-सांस्कृतिक भविष्य बनबैत अछि
- (C) नव-निर्माण भाषा छोड़ैत अछि
- (D) दुनू विरोधी अछि

३२. 'मैथिली सेवी कवि' कहला सँ लेखकक कोन भूमिका स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कवि केवल निजी प्रतिष्ठा लेल लिखैत अछि
- (B) कविता भाषा-सेवा, लोक-सेवा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक साधन बनैत अछि
- (C) कविता सेवा नहि
- (D) भाषा गौण अछि

३३. रामलोचन ठाकुरक कविता 'विरोध आ अनुरोध' दुनू किएक राखैत अछि?

- (A) विरोध मात्र नकारात्मक अछि
- (B) अन्याय विरुद्ध विरोध आ बेहतर समाज लेल नैतिक अनुरोध—दूनों परिवर्तनकारी शक्ति छथि
- (C) अनुरोध कमजोरी अछि
- (D) कवितामे संवाद नहि

३४. हुनकर साहित्यिक आलोचनामे 'व्यक्तित्व' आ 'कृतित्व' अलग-अलग न राखि एक संग किएक देखल जाइत अछि?

- (A) जीवन आ लेखनक संघर्ष, भाषा-सेवा आ आंदोलन परस्पर जुड़ल छल
- (B) व्यक्तित्व अप्रासंगिक
- (C) कृति अप्रासंगिक
- (D) दूनों असंबद्ध

३५. रामलोचन ठाकुरक कवितामे 'मौन' किएक समस्या बनैत अछि?

- (A) मौन सदैव श्रेष्ठ
- (B) मौन अन्याय, उपेक्षा आ अनुत्तरित प्रश्नक सह-अपराधी बनि सकैत अछि
- (C) मौनक अर्थ नहि
- (D) कविता मौन चाहैत अछि

३६. हुनकर लेखनमे 'गाम' आ 'शहर'क सम्बन्ध केना देखल जा सकैत अछि?

- (A) दुनू पूर्ण विरोधी
- (B) गामक स्मृति आ शहरक संघर्ष मिलि प्रवासी मैथिल चेतना बनबैत अछि
- (C) शहरमे भाषा नहि
- (D) गाम अप्रासंगिक

३७. 'आजुक कविता'क संपादन जेहन कार्य कवि-समाज लेल की करैत अछि?

- (A) केवल अपन कविता छापैत अछि
- (B) समकालीन स्वरकेँ मंच दैत अछि आ साहित्यिक परिदृश्यक संरचना करैत अछि
- (C) संपादन गौण अछि
- (D) कविता बंद करैत अछि

३८. रामलोचन ठाकुरक रचनात्मकता मे 'संकलन' किएक महत्वपूर्ण विधा अछि?

- (A) संकलन मौलिक नहि
- (B) संकलन भाषा-संस्कृतिक सामग्रीकेँ बचाबैत, व्यवस्थित करैत आ सार्वजनिक बनबैत अछि
- (C) संकलन बेकार
- (D) संकलन केवल सूची

३९. हुनकर रचना पर 'काव्य-वितान' शब्द किएक उपयुक्त अछि?

- (A) केवल एक कविता
- (B) विषय, शैली, गीत, प्रतिरोध, लोकधर्मी संवेदना आ अनुवादक फैलाव
- (C) काव्यक अभाव
- (D) केवल नाटक

४०. रामलोचन ठाकुरक 'प्रश्नधर्मी' कविता पाठकसँ की अपेक्षा करैत अछि?

- (A) मौन स्वीकृति
- (B) सोच, असहमति, आत्मपरीक्षण आ सामाजिक भागीदारी
- (C) केवल कंठस्थ
- (D) मनोरंजन मात्र

४१. हुनकर रचनामे 'लोक' काव्य-विषय मात्र नहि, बल्कि की अछि?

- (A) स्रोत, भाषा, संवेदना, संघर्ष आ पाठक-समुदाय
- (B) सजावटी पृष्ठभूमि
- (C) केवल पुराना कथा
- (D) लोकक महत्व नहि

४२. रामलोचन ठाकुरक साहित्यिक उच्च-स्तरीय प्रश्न कोन प्रकारक होयबाक चाही?

- (A) कते पृष्ठ पर लेख अछि
- (B) कृति, विचार, भाषा, समाज, प्रतिरोध, अनुवाद, रंगमंच आ लोक-संस्कृतिक सम्बन्ध पर
- (C) केवल क्रमांक
- (D) केवल जन्मवर्ष

४३. 'माति परक लोक' शीर्षकक साहित्यिक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) धरतीसँ कटि गेल लोक
- (B) माटि सँ जुड़ल लोक-चरित्र आ सामाजिक यथार्थ
- (C) केवल भूगोल
- (D) मिट्टीक विज्ञान

४४. रामलोचन ठाकुरक कविता मे 'जनपक्षधरता' कोना प्रकट होइत अछि?

- (A) उच्चवर्गीय मौन
- (B) शोषित, उपेक्षित आ सामान्य लोकक पीड़ा आ स्वप्नक पक्ष ग्रहणमे
- (C) समाजसँ दूरीमे
- (D) केवल अलंकारमे

४५. हुनकर काव्य-संसारमे 'हास्य/व्यंग्य' आ 'करुणा' एक संग किएक सम्भव अछि?

- (A) व्यंग्य करुणा-विरोधी अछि
- (B) व्यंग्य सामाजिक रोग देखबैत अछि, करुणा मनुष्यक पीड़ा सँ जोड़ैत अछि
- (C) दुनू असंगत
- (D) हास्य मात्र हल्कापन

४६. रामलोचन ठाकुरक 'भाषिक स्वाभिमान'क सही अर्थ की अछि?

- (A) आन भाषाक घृणा
- (B) मैथिलीमे आधुनिक, गंभीर, अनुवादित आ लोकधर्मी सभ प्रकारक लेखन सम्भव मानब
- (C) भाषा सीमित राखब
- (D) केवल बोली-विवाद

४७. 'कवि श्री रामलोचन ठाकुर जी' पर लिखल संस्मरणात्मक आलेख सभक सामूहिक मूल्य की अछि?

- (A) केवल श्रद्धा-वाक्य
- (B) व्यक्तित्व, रचनाशीलता, सामाजिक सम्बन्ध आ साहित्यिक प्रभावक बहु-दृष्टि दस्तावेज
- (C) समीक्षा हटबैत अछि
- (D) कोनो ऐतिहासिक मूल्य नहि

४८. हुनकर काव्यक पाठमे 'अस्मिता'क प्रश्न केना उठैत अछि?

- (A) भाषा, क्षेत्र, वर्ग, लोक आ सांस्कृतिक अधिकारक आत्मस्वरूपक रूपमे
- (B) केवल निजी नाम
- (C) अस्मिता अप्रासंगिक
- (D) केवल जातीय अहंकार

४९. रामलोचन ठाकुरक साहित्यक समीक्षा मे 'संघर्ष' शब्द किएक बार-बार उपयुक्त होइत अछि?

- (A) हुनकर लेखन व्यक्तिगत सुविधा मात्र छल
- (B) जीवन, भाषा, समाज, मंच आ साहित्य सभ क्षेत्रमे संघर्षशील उपस्थिति रहल
- (C) संघर्षक अभाव छल
- (D) कविता संघर्ष-विरोधी

५०. हुनकर अनुवादक रूप मैथिली साहित्यक 'खिड़की' किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) ओ बाहरी साहित्यिक संसारक हवा मैथिली पाठकधरि अनैत अछि
- (B) ओ मूल लेखन रोकैत अछि
- (C) अनुवाद बंद दरवाजा अछि
- (D) भाषा मिश्रित करैत अछि मात्र

५१. रंगमंच, कविता आ आंदोलनक संगति रामलोचन ठाकुरक सन्दर्भमे की सिखबैत अछि?

- (A) विधा सभ अलग-अलग किला अछि
- (B) साहित्य सामाजिक क्रिया, प्रदर्शन, भाषिक जागरण आ विचारक संयुक्त क्षेत्र अछि
- (C) आन्दोलन मंचक विरोधी
- (D) कविता निजी रहय

५२. रामलोचन ठाकुरक बाल्य/प्रारम्भिक संस्कृत-शिक्षा हुनकर भाषिक संस्कारमे कोन भूमिका निभा सकैत अछि?

- (A) भाषा-संवेदना, छन्द, परम्परा आ शास्त्रीय पृष्ठभूमिक आधार
- (B) साहित्यसँ दूरी
- (C) केवल प्रशासनिक लाभ
- (D) लोकभाषाक विरोध

५३. हुनकर कृति-संसारमे कविता, व्यंग्य, नाटक, आलेख, लोककथा आ अनुवादक उपस्थितिसँ की निष्कर्ष निकलैत अछि?

- (A) विधा-दरिद्रता
- (B) विधा-विस्तार आ सतत प्रयोगशीलता
- (C) केवल संयोग
- (D) लेखनक अभाव

५४. 'रामलोचन हमर प्रेरणा' सन लेख शीर्षक रचनाकारक सामाजिक असरक कोन पक्ष खोलैत अछि?

- (A) कृति पढ़ल नहि गेल
- (B) ओ समकालीन लेखक/पाठक लेल नैतिक-साहित्यिक प्रेरणा बनलाह
- (C) प्रेरणा व्यक्तिगत भ्रम
- (D) साहित्यक असर नहि

५५. रामलोचन ठाकुरक साहित्यक 'लोकतांत्रिक' पक्ष की मानल जा सकैत अछि?

- (A) केवल विशिष्ट पाठक लेल लेखन
- (B) जनभाषा, लोककथा, रंगमंच आ जनपक्षधर प्रश्नक माध्यमे व्यापक समुदाय सँ सम्बन्ध
- (C) लोकसँ दूरी
- (D) केवल दरबारी काव्य

५६. हुनकर मूल्यांकनमे 'कवि' आ 'सेवी' शब्दक मेल कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) कला आ सेवा विरोधी
- (B) कला मातृभाषा, समाज आ लोकस्मृति सेवा बनि सकैत अछि
- (C) सेवा साहित्य घटबैत अछि
- (D) कवि केवल सौंदर्यकर्मी

५७. रामलोचन ठाकुरक सन्दर्भमे 'साहित्यिक उत्तरदायित्व'क उत्तम परिभाषा की अछि?

- (A) लोकप्रियता मात्र
- (B) भाषा, लोक, सत्य, प्रतिरोध आ सांस्कृतिक स्मृति प्रति जवाबदेही
- (C) पुरस्कार-प्राप्ति
- (D) निजी प्रसिद्धि

५८. हुनकर कविता मे 'स्वर' किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) स्वर केवल ध्वनि
- (B) स्वर सामाजिक पक्षधरता, काव्य-लय आ व्यक्तित्वक पहचान दैत अछि
- (C) स्वरक अर्थ नहि
- (D) मौन श्रेष्ठ

५९. 'रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा' पर विवेचना हुनकर साहित्यिक कोन आयामकेँ प्रमुख बनबैत अछि?

- (A) मौखिक परम्परा, लोक-स्मृति आ कथात्मक संस्कृति
- (B) केवल आधुनिकता
- (C) लोककथा समाप्त
- (D) कवितासँ असंबंध

६०. हुनकर काव्यमे 'असहमति' साहित्यिक गुण किएक अछि?

- (A) असहमति अव्यवस्था मात्र
- (B) असहमति समाजक गलत स्वीकृतिसँ मुक्ति आ नवा सोचक शुरुआत बनैत अछि
- (C) कविता हमेशा सहमति दे
- (D) असहमति असाहित्यिक

६१. 'कवि-पति विद्यापति मतिमान' सन संपादन-सहभागिता हुनकर परम्परा-चेतनाक कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) आधुनिक कवि परम्परा सँ कटि गेल
- (B) आधुनिकता आ मध्यकालीन/परम्परागत मैथिली धरोहरक संवाद
- (C) परम्परा बेकार
- (D) विद्यापति अप्रासंगिक

६२. रामलोचन ठाकुरक साहित्यिक 'मूल स्वर' की कहल जा सकैत अछि?

- (A) जनपक्षधर प्रतिरोध, भाषा-प्रेम आ लोक-संस्कृति सँ जुड़ल चेतना
- (B) दरबारी प्रशंसा
- (C) सामाजिक तटस्थता
- (D) केवल निजी मनोरंजन

६३. हुनकर कृति-संसारमे 'स्मृति' कोन तरहें काम करैत अछि?

- (A) केवल अतीत-रोमांस
- (B) भाषा, लोक, संघर्ष आ अनुभवक ऐतिहासिक चेतना बनि
- (C) स्मृति अप्रासंगिक
- (D) वर्तमानक विरोध

६४. रामलोचन ठाकुरक बहु-नाम/छद्मनामक सृजनात्मक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) पहचान छिपाब मात्र
- (B) विविध रचनात्मक भूमिकाक प्रयोग आ विभिन्न स्वरसँ संवाद
- (C) असंगति
- (D) लेखनक अभाव

६५. हुनकर साहित्य पढ़ते समय विद्यार्थीकें कोन दृष्टि अपनाबय चाही?

- (A) कृतिनाम रटब मात्र
- (B) कृति, सामाजिक प्रसंग, भाषा-रूप, प्रतिरोध, लोकस्मृति आ विधा-विविधता मिलाकऽ पढ़ब
- (C) केवल जन्मतिथि
- (D) केवल पृष्ठ-सूची

६६. रामलोचन ठाकुर विशेषांकक बहुल आलेख-रचना रचनाकारक कोन स्थिति प्रमाणित करैत अछि?

- (A) हुनकर प्रभाव सीमित छल
- (B) हुनका पर सामूहिक आलोचनात्मक, संस्मरणात्मक आ साहित्यिक संवादक आवश्यकता अनुभव भेल
- (C) विशेषांक यांत्रिक अछि
- (D) रचनाकार अप्रसिद्ध

६७. रामलोचन ठाकुरक साहित्यक 'भविष्यगामी' पक्ष की अछि?

- (A) केवल अतीत-प्रेम
- (B) भाषा-संरक्षणक संग नवा सामाजिक चेतना आ नव-निर्माणक आग्रह
- (C) आधुनिकता-विरोध
- (D) भविष्यसँ असंबंध

६८. 'सच्चा कवि' कहला सँ रामलोचन ठाकुरक कोन विशेषता प्रमुख होइत अछि?

- (A) शब्द-सजावट मात्र
- (B) जीवन-सत्य, जन-पीड़ा आ भाषा-निष्ठा प्रति ईमानदारी
- (C) केवल छन्द-कुशलता
- (D) विषयहीन सौंदर्य

६९. हुनकर रचनानामे मिथिला केवल भूगोल नहि, की अछि?

- (A) सांस्कृतिक स्मृति, भाषा, लोकजीवन, संघर्ष आ आत्मपहचानक विस्तृत क्षेत्र
- (B) केवल नक्शा
- (C) केवल गाँवक नाम
- (D) साहित्यसँ असंबद्ध

७०. रामलोचन ठाकुरक आलोचना मे 'अग्रदूत' छवि किएक टिकैत अछि?

- (A) ओ केवल अतीतकें दोहरबैत छथि
- (B) ओ साहित्य, रंगमंच, अनुवाद आ भाषा-आन्दोलनमे राह बनाबयबला रचनाकार छथि
- (C) ओ मौन दर्शक छथि
- (D) ओ विधा-विरोधी छथि

७१. समग्र रूपे रामलोचन ठाकुर विशेषांक विद्यार्थीकें की सिखबैत अछि?

- (A) साहित्यक अर्थ केवल कृति-सूची
- (B) एक रचनाकारकें जीवन, भाषा, समाज, विधा, आलोचना आ स्मृति सभ स्तरपर पढ़बाक पद्धति
- (C) विशेषांक पढ़ब बेकार
- (D) केवल भावुक श्रद्धांजलि

उत्तरमाला — अध्याय १९ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) हुनकर रचना लोक-माटि, भाषा-परम्परा आ सामाजिक प्रतिरोधकें एक संग जोड़ैत अछि — रामलोचन ठाकुरक मूल्यांकनमे लोक-संस्कार आ प्रतिरोधी चेतना एक संग देखाइत अछि।

२. (B) मार्ग खोलयबला, आंदोलनकारी आ चेतना जगाबयबला रचनाकारक छवि — 'अग्रदूत' नाम हुनकर अगुआ, मशालधारी आ चेतनामुखी व्यक्तित्वक संकेत करैत अछि।

३. (B) मिथिलाक लोकजीवन, कृषि-संस्कृति, मातृभाषा आ जन-सम्बन्ध — माटि-पानि हुनकर कवितामे भूगोलसँ बेसी लोकस्मृति आ सांस्कृतिक जड़िक प्रतीक अछि।
४. (A) सत्ता, अन्याय, सामाजिक जड़ता आ मौनक विरोध — प्रतिरोधी साहित्य अन्यायपर प्रश्न उठबैत अछि आ पाठककेँ सजग बनबैत अछि।
५. (B) मैथिलीमे विश्व/भारतीय साहित्यिक अनुभवक प्रवेश आ भाषाक अभिव्यक्ति-क्षमता विस्तार — अनुवाद मैथिलीकेँ नव विषय, शैली आ नाट्य-काव्यक क्षेत्र दैत अछि।
६. (B) नाटक/अभिनय भाषाकेँ देह, आवाज आ सामुदायिक दृश्यता दैत अछि — रंगमंच मातृभाषाकेँ सार्वजनिक प्रदर्शन आ संवादक जीवित माध्यम बनबैत अछि।
७. (A) महिलाक रंगमंचीय भागीदारीक बाधा आ पितृसत्तात्मक संकोच — ई प्रश्न रंगमंचमे स्त्री-अधिकार, सामाजिक स्वीकृति आ सांस्कृतिक परिवर्तनक प्रश्न अछि।
८. (A) कवितामे विचार, समाज, भाषा, प्रतीक आ ऐतिहासिक संघर्ष सेहो पढ़य पड़ैत अछि — हुनकर कविता भावना आ वैचारिक प्रतिरोध दुनू सँ बनैत अछि।
९. (B) समाज, सत्ता आ जीवनक असुविधाजनक प्रश्नक सामने ठाढ़ होयबाक साहस — प्रश्नाकुलता प्रतिरोधी काव्यक एक प्रमुख ऊर्जा अछि।
१०. (A) लोकस्मृतिक संरक्षण आ आधुनिक पाठक लेल मौखिक परम्पराक पुनर्पाठ — लोककथा भाषाक सामूहिक स्मृति अछि; ओकर संग्रह सांस्कृतिक संरक्षण अछि।
११. (A) भाषा, लोक, माटि आ जनजीवनसँ सच्चा सम्बन्ध — खाँटीपन एतय मातृभूमि आ मातृभाषासँ ईमानदार जुड़ावक अर्थमे अछि।
१२. (B) कविता जन-संवादक निकट आबैत अछि आ कृत्रिमता घटैत अछि — लोकभाषा हुनकर कविताकेँ जन-स्वर आ सांस्कृतिक जीवंतता दैत अछि।
१३. (A) अंधकारमे राह देखाबयबला साहित्य-सैनिक — मशाल रूपक सामाजिक-सांस्कृतिक अन्धारमे प्रकाश आ दिशा दैत व्यक्तित्वक संकेत करैत अछि।
१४. (B) अन्याय, उपेक्षा आ जड़ता विरुद्ध काव्यक संघर्षशील भूमिका — काव्य-युद्ध साहित्यक नैतिक संघर्षक प्रतीक अछि।
१५. (B) हुनकर रचना आम लोकक दुःख, स्वप्न, भाषा आ संघर्ष सँ ऊर्जा पबैत अछि — हुनकर साहित्यक मूल संवेदना जनजीवनक जमीन सँ उठैत अछि।
१६. (B) प्रवासी मैथिल सेहो भाषा-सृजन, आंदोलन आ संस्था-निर्माणमे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकैत छथि — कोलकाता परिसर हुनकर माध्यमे प्रवासी मैथिली चेतनाक सक्रियता देखबैत अछि।
१७. (A) लय, गेयता, जन-संवाद आ भाव-संप्रेषण — गीत हुनकर रचनामे भाव आ लोक-लयक सेतु बनैत अछि।
१८. (B) महान रचनाकारक सम्पूर्ण मूल्यांकन कठिन अछि, कारण हुनकर संसार व्यापक अछि — अपूर्णता एतय आलोचकक विनम्रता आ रचनाकारक व्यापकता दुनूकेँ सूचित करैत अछि।
१९. (B) लेखक भाषा, समाज आ सांस्कृतिक अधिकारक प्रश्नमे सहभागी भऽ सकैत अछि — हुनकर जीवन लेखन आ भाषा-आन्दोलनक परस्पर सम्बन्ध देखबैत अछि।
२०. (B) कविता, नाटक, अनुवाद, संपादन, लोककथा आ आंदोलनक बीच हुनकर सक्रियता पसारल छल — बहुविधता हुनकर रचनात्मक व्यक्तित्वक मुख्य विशेषता अछि।
२१. (A) ई अतीत-गौरव आ वर्तमान-विसंगतिक बीच प्रश्न उठबैत अछि — शीर्षक अतीतक मिथक आ वर्तमान सामाजिक प्रश्नक बीच तनाव बनबैत अछि।
२२. (A) हँसैत-हँसैत सामाजिक विकृति उजागर करब — व्यंग्य समाजक विसंगति पर प्रहारक प्रभावी माध्यम अछि।
२३. (A) अनुवाद मंचक प्रयोग आ विषय-विस्तारक अवसर दैत अछि — अनुवाद नाटक मैथिली रंगमंचकेँ नवा शिल्प, कथा आ संवाद दैत अछि।
२४. (A) नदी-जनजीवन आ भारतीय भाषिक साहित्यक अनुभव मैथिलीमे उपलब्ध होइत अछि — एहन अनुवाद मैथिलीकेँ भारतीय साहित्यक व्यापक संवादमे राखैत अछि।
२५. (B) सत्य कठिन, असुविधाजनक आ जोखिमपूर्ण मार्ग अछि — एकपेरिया मार्ग सत्यक कठिन, नैतिक आ संघर्षशील पथक प्रतीक अछि।
२६. (A) हुनकर साहित्य एकरैखिक नहि, बल्कि कविता, गीत, लोककथा, अनुवाद, रंगमंच, समाज आ आंदोलन सँ बनल अछि — बहुआयामी लेखन बहुआयामी आलोचना माँगैत अछि।
२७. (A) स्थानीय बोली-बानीक आत्मविश्वास आ जन-निकट अभिव्यक्ति — देसील बयना भाषाकेँ लोक-सत्य आ स्वाभाविकता सँ जोड़ैत अछि।
२८. (B) अद्वितीय, विरल आ भावात्मक अनुभवक खोज — शीर्षक अनोखापन आ गहन भाव-जगतक संकेत करैत अछि।
२९. (B) अव्यवस्था भीतर मानवीय संवेदना खोजबाक प्रक्रिया — ताल-बेतालक द्वंद्व जीवनक असंतुलनमे संवेदनाक खोज बनि सकैत अछि।

३०. (B) हुनकर संस्थागत, आंदोलनकारी, भाषिक आ जन-सांस्कृतिक योगदान सेहो देखय पड़ैत अछि — रचनाकारक प्रभाव कृति-सूची सँ आगाँ सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यमे सेहो रहैत अछि।
३१. (B) मातृभाषाक जड़ि सँ नवा सामाजिक-सांस्कृतिक भविष्य बनबैत अछि — आस्था जड़ता नहि; ओ नव-निर्माणक आधार भऽ सकैत अछि।
३२. (B) कविता भाषा-सेवा, लोक-सेवा आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक साधन बनैत अछि — रामलोचन ठाकुरक कवित्व मातृभाषा-सेवा सँ जुड़ल अछि।
३३. (B) अन्याय विरुद्ध विरोध आ बेहतर समाज लेल नैतिक अनुरोध—दूनू परिवर्तनकारी शक्ति छथि — हुनकर कविता प्रतिरोधक संग मानवीय पुकार सेहो राखैत अछि।
३४. (A) जीवन आ लेखनक संघर्ष, भाषा-सेवा आ आंदोलन परस्पर जुड़ल छल — हुनकर जीवनक सक्रियता हुनकर लेखनक अर्थ खोलैत अछि।
३५. (B) मौन अन्याय, उपेक्षा आ अनुत्तरित प्रश्नक सह-अपराधी बनि सकैत अछि — प्रतिरोधी साहित्य मौनक राजनीति पर प्रश्न उठबैत अछि।
३६. (B) गामक स्मृति आ शहरक संघर्ष मिलि प्रवासी मैथिल चेतना बनबैत अछि — प्रवासी जीवन मातृभूमिक स्मृति आ शहरक अनुभवकें जोड़ैत अछि।
३७. (B) समकालीन स्वरकें मंच दैत अछि आ साहित्यिक परिदृश्यक संरचना करैत अछि — संपादकीय कार्य साहित्यिक पीढ़ी आ प्रवृत्ति निर्माणमे सहायक अछि।
३८. (B) संकलन भाषा-सांस्कृतिक सामग्रीकें बचाबैत, व्यवस्थित करैत आ सार्वजनिक बनबैत अछि — संकलन सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षणक गंभीर कार्य अछि।
३९. (B) विषय, शैली, गीत, प्रतिरोध, लोकधर्मी संवेदना आ अनुवादक फैलाव — वितान शब्द हुनकर काव्य-संसारक व्यापकता देखबैत अछि।
४०. (B) सोच, असहमति, आत्मपरीक्षण आ सामाजिक भागीदारी — प्रश्नधर्मी कविता पाठककें सक्रिय नैतिक चेतनामे बदलैत अछि।
४१. (A) स्रोत, भाषा, संवेदना, संघर्ष आ पाठक-समुदाय — लोक हुनकर साहित्यक आधारभूत ऊर्जा अछि।
४२. (B) कृति, विचार, भाषा, समाज, प्रतिरोध, अनुवाद, रंगमंच आ लोक-सांस्कृतिक सम्बन्ध पर — उच्च प्रश्न अर्थ-संबंध आ साहित्यिक दृष्टि पूछैत अछि, यांत्रिक तथ्य नहि।
४३. (B) माटि सँ जुड़ल लोक-चरित्र आ सामाजिक यथार्थ — माटि परक लोक जीवनक वास्तविकता आ लोक-संस्कारक प्रतिनिधि अछि।
४४. (B) शोषित, उपेक्षित आ सामान्य लोकक पीड़ा आ स्वप्नक पक्ष ग्रहणमे — जनपक्षधरता अन्यायक विरोध आ लोकक पक्षधर संवेदना अछि।
४५. (B) व्यंग्य सामाजिक रोग देखबैत अछि, करुणा मनुष्यक पीड़ा सँ जोड़ैत अछि — गंभीर व्यंग्य मानवीय करुणासँ ऊर्जा पबैत अछि।
४६. (B) मैथिलीमे आधुनिक, गंभीर, अनुवादित आ लोकधर्मी सभ प्रकारक लेखन सम्भव मानब — भाषिक स्वाभिमान अपन भाषाक अभिव्यक्ति-क्षमतापर विश्वास अछि।
४७. (B) व्यक्तित्व, रचनाशीलता, सामाजिक सम्बन्ध आ साहित्यिक प्रभावक बहु-दृष्टि दस्तावेज — बहु-लेखकीय स्मरण रचनाकारक जीवित प्रभावक सामाजिक अभिलेख बनैत अछि।
४८. (A) भाषा, क्षेत्र, वर्ग, लोक आ सांस्कृतिक अधिकारक आत्मस्वरूपक रूपमे — अस्मिता एतय भाषा-सांस्कृतिक स्वाभिमान आ समाजक आवाजक प्रश्न अछि।
४९. (B) जीवन, भाषा, समाज, मंच आ साहित्य सभ क्षेत्रमे संघर्षशील उपस्थिति रहल — संघर्ष हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्वक साझा धुरी अछि।
५०. (A) ओ बाहरी साहित्यिक संसारक हवा मैथिली पाठकधरि अनैत अछि — अनुवाद साहित्यिक संवादक खिड़की खोलैत अछि।
५१. (B) साहित्य सामाजिक क्रिया, प्रदर्शन, भाषिक जागरण आ विचारक संयुक्त क्षेत्र अछि — हुनकर कार्य विधा-सीमा तोड़ि साहित्यकें सार्वजनिक क्रियामे बदलैत अछि।
५२. (A) भाषा-संवेदना, छन्द, परम्परा आ शास्त्रीय पृष्ठभूमिक आधार — संस्कृत-शिक्षा आ लोक-मैथिली अनुभवक संयोग हुनकर भाषिक संसार समृद्ध करैत अछि।
५३. (B) विधा-विस्तार आ सतत प्रयोगशीलता — हुनकर रचनात्मकता विधा-विविधता आ प्रयोगशीलता सँ चिन्हित अछि।
५४. (B) ओ समकालीन लेखक/पाठक लेल नैतिक-साहित्यिक प्रेरणा बनलाह — प्रेरणा रचनाकारक जीवित सांस्कृतिक प्रभावक प्रमाण अछि।
५५. (B) जनभाषा, लोककथा, रंगमंच आ जनपक्षधर प्रश्नक माध्यमे व्यापक समुदाय सँ सम्बन्ध — लोकतांत्रिक साहित्य लोक-भाषा आ लोक-प्रश्नकें प्रतिष्ठा दैत अछि।
५६. (B) कला मातृभाषा, समाज आ लोकस्मृति सेवा बनि सकैत अछि — हुनकर कवित्व सेवा-भावक संग जुड़ल अछि।

५७. (B) भाषा, लोक, सत्य, प्रतिरोध आ सांस्कृतिक स्मृति प्रति जवाबदेही — उत्तरदायित्व रचना केँ समाज आ भाषा प्रति नैतिक बनबैत अछि।
५८. (B) स्वर सामाजिक पक्षधरता, काव्य-लय आ व्यक्तित्वक पहचान दैत अछि — स्वर रचनाकारक वैचारिक आ सौंदर्यात्मक पहचान अछि।
५९. (A) मौखिक परम्परा, लोक-स्मृति आ कथात्मक संस्कृति — लोककथा हुनकर साहित्यिक सेवाक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयाम अछि।
६०. (B) असहमति समाजक गलत स्वीकृतिसँ मुक्ति आ नवा सोचक शुरुआत बनैत अछि — प्रतिरोधी साहित्य असहमतिक नैतिक शक्ति सँ बनैत अछि।
६१. (B) आधुनिकता आ मध्यकालीन/परम्परागत मैथिली धरोहरक संवाद — परम्परा-संपादन नव पीढ़ीकेँ धरोहरसँ जोड़ैत अछि।
६२. (A) जनपक्षधर प्रतिरोध, भाषा-प्रेम आ लोक-संस्कृति सँ जुड़ल चेतना — हुनकर साहित्यक धुरी भाषा-प्रेम, लोकधर्मिता आ प्रतिरोध अछि।
६३. (B) भाषा, लोक, संघर्ष आ अनुभवक ऐतिहासिक चेतना बनि — स्मृति हुनकर साहित्यमे अतीत आ वर्तमानक बीच संवाद करबैत अछि।
६४. (B) विविध रचनात्मक भूमिकाक प्रयोग आ विभिन्न स्वरसँ संवाद — छद्मनाम साहित्यिक प्रयोग आ वैचारिक/शैलीगत भूमिकाक संकेत भऽ सकैत अछि।
६५. (B) कृति, सामाजिक प्रसंग, भाषा-रूप, प्रतिरोध, लोकस्मृति आ विधा-विविधता मिलाकऽ पढ़ब — समग्र पठन उच्च परीक्षा आ गंभीर साहित्य-अध्ययन लेल आवश्यक अछि।
६६. (B) हुनका पर सामूहिक आलोचनात्मक, संस्मरणात्मक आ साहित्यिक संवादक आवश्यकता अनुभव भेल — बहु-आलेखीय विशेषांक रचनाकारक व्यापक प्रभावक प्रमाण अछि।
६७. (B) भाषा-संरक्षणक संग नवा सामाजिक चेतना आ नव-निर्माणक आग्रह — हुनकर साहित्य परम्परा सँ ऊर्जा लऽ भविष्यक सांस्कृतिक निर्माणक बात करैत अछि।
६८. (B) जीवन-सत्य, जन-पीड़ा आ भाषा-निष्ठा प्रति ईमानदारी — सच्चा कवि जीवन आ समाजक सत्यसँ मुँह नहि मोड़ैत।
६९. (A) सांस्कृतिक स्मृति, भाषा, लोकजीवन, संघर्ष आ आत्मपहचानक विस्तृत क्षेत्र — मिथिला हुनकर लेखनमे जीवित सांस्कृतिक संसार अछि।
७०. (B) ओ साहित्य, रंगमंच, अनुवाद आ भाषा-आन्दोलनमे राह बनाबयबला रचनाकार छथि — अग्रदूत छवि हुनकर अगुआ भूमिकाक उपयुक्त बिंब अछि।
७१. (B) एक रचनाकारकेँ जीवन, भाषा, समाज, विधा, आलोचना आ स्मृति सभ स्तरपर पढ़बाक पद्धति — एहन विशेषांक रचनाकार-अध्ययनक बहुस्तरीय मॉडल प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय २० : रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांकक मुख्य स्वर की अछि?

- (A) केवल सूचना-सूची
- (B) स्मरण, कृतज्ञता, साहित्यिक मूल्यांकन आ सामूहिक शोकक संयोजन
- (C) साहित्य-विरोध
- (D) केवल परीक्षा-सामग्री

२. श्रद्धांजलि लेख सभक साहित्यिक महत्त्व किएक अछि?

- (A) ओ केवल भावुकता अछि
- (B) ओ रचनाकारक जीवन, सम्बन्ध, प्रेरणा आ प्रभावक बहु-स्वरीय दस्तावेज बनैत अछि
- (C) ओ समीक्षा रोकेत अछि
- (D) ओ अप्रासंगिक अछि

३. 'से छथि रामलोचन' सन शीर्षक रचनाकारक कोन छवि गढ़ैत अछि?

- (A) अदृश्य व्यक्ति
- (B) सरल, स्मरणीय, नैतिक आ साहित्यिक उपस्थिति जे व्यक्ति सँ प्रतीक बनि जाइत अछि
- (C) केवल प्रशासनिक परिचय
- (D) केवल आलोचक

४. 'श्रद्धेय रामलोचन ठाकुरकें स्मरण करैत' शीर्षकमे 'स्मरण'क सही साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) स्मरण केवल अतीतमे रहब
- (B) स्मरणक माध्यमे योगदान, मूल्य आ अपूर्ण कार्यक पुनर्पाठ
- (C) भूलि जेबाक प्रक्रिया
- (D) सूची बनायब

५. 'राम लोचन हमर प्रेरणा' सँ साहित्यिक गुरु-परम्पराक कोन पक्ष उजागर होइत अछि?

- (A) प्रेरणा असंभव
- (B) रचनाकार अपन कर्म आ व्यक्तित्वसँ अगिला पीढ़ीकें दिशा दैत छथि
- (C) साहित्य व्यक्तिगत द्वीप अछि
- (D) गुरुता केवल औपचारिक पद

६. श्रद्धांजलि विशेषांकमे 'झिझिरकोना'क सन्दर्भ रामलोचन ठाकुरक कोन पक्ष सूचित करैत अछि?

- (A) साहित्यिक समुदाय, स्मृति-स्थान आ आत्मीय सम्बन्धक गहराई
- (B) केवल स्थान-सूची
- (C) रचनाहीन प्रसंग
- (D) भाषासँ असंबन्ध

७. आशीष अनचिन्हारक स्मरण-सन्दर्भमे 'अनचिन्हार लेल रामलोचन' किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) रचनाकारक प्रभाव अनौपचारिक साहित्यिक सम्बन्धमे सेहो फैलैत अछि
- (B) नाम मात्र महत्त्वपूर्ण
- (C) स्मरण निरर्थक
- (D) रामलोचनक भूमिका नहि

८. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क टिप्पणीमे रामलोचनक पारिवारिक/शैक्षिक प्रसंग किएक गंभीर प्रश्न बनैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत जीवन साहित्यसँ असंबद्ध
- (B) स्त्री-शिक्षा, वैवाहिक सम्बन्ध आ सामाजिक जिम्मेदारीक प्रश्न रचनाकारक जीवन-समीक्षा सँ जुड़ैत अछि
- (C) केवल गपशप
- (D) शिक्षाक महत्त्व नहि

९. श्रद्धांजलि लेखमें मृत्यु-स्मरणक साथ 'कृतित्व' पर जोर किएक जरूरी अछि?

- (A) शोकक समय साहित्य नहि
- (B) रचनाकारक स्थायी उपस्थिति ओकर कृति, विचार आ भाषा-सेवा सँ बनैत अछि
- (C) जीवनक चर्चा अनावश्यक
- (D) केवल तारीख महत्त्वपूर्ण

१०. रामलोचन ठाकुरक खोज/अनुपस्थिति संबंधी स्मरण पाठकमें कोन भाव जगबैत अछि?

- (A) निरपेक्ष सूचना
- (B) व्यथा, असुरक्षा, मानवीय असहायता आ रचनाकारक प्रति सामूहिक जिम्मेदारी
- (C) हास्य
- (D) उदासीनता

११. श्रद्धांजलि विशेषांकक गद्य-खंडक समावेशन किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) विशेषांक केवल शोक तक सीमित नहि, समकालीन रचनात्मकता आ साहित्यिक प्रवाह सेहो समेटैत अछि
- (B) गद्य अप्रासंगिक
- (C) कथा हटबाक चाही
- (D) स्मरण आ गद्य विरोधी

१२. 'आँखिमे चित्र हो मैथिलीकेर' आत्मकथात्मक सामग्रीक साहित्यिक मूल्य की अछि?

- (A) आत्मकथा निजी सूचना मात्र
- (B) लेखक-जीवन, समाज, विवाह, शिक्षा, भाषा-भावना आ समयक दस्तावेज
- (C) साहित्य नहि
- (D) केवल गीत-संग्रह

१३. अनिलक आत्मकथामे विवाह-संबंधी आत्म-जवाबदेहीक भाव किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) दोषारोपणक आग्रह
- (B) व्यक्ति अपन निर्णयक नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करैत अछि
- (C) जिम्मेदारी अप्रासंगिक
- (D) विवाहक चर्चा साहित्यमे नहि

१४. 'कलपना-गगनमे मधुवन सजा रहल छी' गीत-प्रसंग आत्मकथामे की करैत अछि?

- (A) गद्यक प्रवाह रोकेत अछि
- (B) दुःख, आशा, जीवन-संघर्ष आ भावात्मक आत्म-संयमक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि
- (C) केवल सजावट
- (D) गीत अप्रासंगिक

१५. आत्मकथामे शास्त्र-वाक्य 'विवाह, जन्म आ मृत्यु'क उल्लेखक प्रभाव की अछि?

- (A) अंधविश्वास प्रचार
- (B) व्यक्तिगत संकटकेँ सांस्कृतिक ज्ञान आ धैर्यक ढाँचा मे बुझबाक प्रयास
- (C) साहित्य विरोध
- (D) जिम्मेदारी समाप्त

१६. आत्मकथात्मक प्रसंगमे 'जे भेटल अछि' पर ध्यान देबाक भाव कोन जीवन-दृष्टि दैत अछि?

- (A) निराशा
- (B) कृतज्ञता, आत्म-संयम आ सकारात्मक कर्म-दृष्टि
- (C) भागना
- (D) संघर्ष छोड़ब

१७. स्त्री-शिक्षा पर उठल प्रश्न श्रद्धांजलि विशेषांकके कोना गंभीर बनबैत अछि?

- (A) श्रद्धांजलि मे प्रश्न निषिद्ध
- (B) स्मरणक भीतर सामाजिक आत्मालोचना आ लैंगिक न्यायक प्रश्न प्रवेश करैत अछि
- (C) ई विषय गौण
- (D) स्त्री-शिक्षा निजी मामला मात्र

१८. 'आधुनिक विश्वकथाक बाट पर जाइत—बीहनि कथा' लेख शीर्षक कथाविधाक कोन संकेत दैत अछि?

- (A) बीहनि कथा स्थानीय रहि विश्व-दृष्टि सँ संवाद करि सकैत अछि
- (B) बीहनि कथा समाप्त
- (C) विश्वकथा असंबंध
- (D) केवल आकार छोट

१९. 'बीहनि कथा-रंग' शीर्षकमे 'रंग' शब्दक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) केवल रंगद्रव्य
- (B) लघुकथाक विविध संवेदना, शिल्प, व्यंग्य, मोड़ आ भाव-छटा
- (C) चित्रकला मात्र
- (D) कथाक अभाव

२०. 'पानक बरैव' सन कथा-शीर्षक लोकजीवनक कोन साहित्यिक उपयोग देखबैत अछि?

- (A) साधारण वस्तु/प्रसंगसँ सामाजिक अर्थ निकालबाक क्षमता
- (B) केवल वस्तु-विज्ञान
- (C) कथा-अयोग्य विषय
- (D) भाषा-विरोध

२१. श्रद्धांजलि अंकमे स्त्री कोना-खंडक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) स्त्री स्वर गौण नहि; विशेषांकमे बहु-स्वरता आ स्त्री-अनुभवक स्थान बनैत अछि
- (B) स्त्री लेखन हटबाक चाही
- (C) केवल पुरुष स्मरण पर्याप्त
- (D) स्त्री कोना सजावट

२२. 'उम्मीद' शीर्षक स्त्री कोना मे कोन वैचारिक संकेत दैत अछि?

- (A) निराशा मात्र
- (B) स्त्री-अनुभवमे आशा, प्रतिरोध आ भविष्य-दृष्टि
- (C) केवल भावुकता
- (D) सामाजिक अर्थ नहि

२३. 'सखी' शीर्षक मैथिली स्त्री लेखनमे कोन सांस्कृतिक सम्बन्ध जगबैत अछि?

- (A) सखी केवल पात्र
- (B) स्त्री-संवाद, आत्मीयता, साझे पीड़ा आ आत्मबलक परम्परा
- (C) सखी अप्रासंगिक
- (D) केवल बाल-साहित्य

२४. 'रौद' बीहनि कथा-शीर्षकमे प्रतीकात्मकता कोन प्रकारक होय सकैत अछि?

- (A) केवल मौसम
- (B) प्रकाश, ताप, कठोर यथार्थ अथवा खुलासाक संकेत
- (C) प्रतीक नहि
- (D) हास्य मात्र

२५. 'जय माँ अम्बे' सन शीर्षक स्त्री-संवेदना मे किएक बहुअर्थी भऽ सकैत अछि?

- (A) देवी-परम्परा, स्त्री-शक्ति आ सामाजिक विडम्बना तीनू पर पाठ सम्भव
- (B) केवल पूजा-सूची
- (C) कथा असंभव
- (D) स्त्री-संबंध नहि

२६. श्रद्धांजलि विशेषांकमे परीक्षा-सामग्रीक आरम्भिक खंड आ साहित्यिक खंडक सह-अस्तित्व की देखबैत अछि?

- (A) विदेहक ई-लर्निङ्ग, साहित्य, पत्रकारिता आ सांस्कृतिक सेवा एक मंच पर जोड़बाक नीति
- (B) साहित्य समाप्त
- (C) शिक्षा अलग रहय
- (D) विशेषांक असंगत

२७. रामलोचन ठाकुरक श्रद्धांजलि विशेषांक पाठकक रचनाकारक मृत्यु पछि कोन जिम्मेदारी याद करबैत अछि?

- (A) कृति भूलि जाएब
- (B) कृति पढ़ब, विचार बचाएब, स्मृति सँ सीखब आ भाषा-सेवा जारी राखब
- (C) केवल शोक मनायब
- (D) आलोचना छोड़ब

२८. श्रद्धांजलि लेखनमे आलोचनात्मक प्रश्न उठेनाइ असम्मान किएक नहि?

- (A) कारण गंभीर स्मरण रचनाकार आ समाज दुनूक ईमानदारी सँ देखैत अछि
- (B) प्रश्न सदैव अपमान
- (C) स्मरणमे विचार निषिद्ध
- (D) आलोचना बंद

२९. रामलोचन ठाकुरक साहित्यिक उपस्थिति 'युग-युग धरि चर्चा'मे रहबाक आधार की अछि?

- (A) केवल मृत्यु-प्रसंग
- (B) भाषा, कविता, अनुवाद, रंगमंच, लोककथा आ जन-संवेदना मे देल योगदान
- (C) केवल निजी लोकप्रियता
- (D) कोनो कृति नहि

३०. श्रद्धांजलि विशेषांकक बहु-लेखकीय संरचना किएक उचित अछि?

- (A) एकटा लेखक पर्याप्त
- (B) भिन्न-भिन्न अनुभव रचनाकारक बहुआयामी व्यक्तित्वकें उजागर करैत अछि
- (C) बहु-स्वर भ्रम अछि
- (D) संस्मरण बेकार

३१. 'राम लोचन ठाकुर' पर अनिलक स्मरणमे असहायता आ जिज्ञासा का साहित्यिक काम करैत अछि?

- (A) घटना कें मानवीय त्रासदी आ जीवनक अनिश्चितताक रूपमे अनुभूत करबैत अछि
- (B) सूचना छिपबैत अछि
- (C) दर्शकता बढ़बैत अछि
- (D) साहित्यक काम नहि

३२. आत्मकथा मे परिवार, सासुर, पठन-परीक्षा आ गीतक मिश्रण जीवनक कोन चित्र बनबैत अछि?

- (A) केवल अव्यवस्था
- (B) युवा जीवनक सामाजिक दबाव, शिक्षा, भाव, दायित्व आ रचनात्मकता संग-संग चलैत अछि
- (C) शिक्षा गौण
- (D) गीत अलग

३३. 'पूर्ण विराम नै' वाली चिट्ठी-प्रसंग भाषा-अध्ययनक कोन सूक्ष्म पक्ष देखबैत अछि?

- (A) मात्र हँसी
- (B) साक्षरता, विरामचिह्न, अभिव्यक्ति आ संप्रेषणक सम्बन्ध
- (C) भाषा बेकार
- (D) पत्र-लेखनक अंत

३४. आत्मकथामे सासुरक गीत सभमे 'शब्द सुधार'क इच्छा लेखकक कोन दृष्टि दैत अछि?

- (A) लोकगीतक विरोध
- (B) लोकधुनक प्रेम संग भाषिक-सौंदर्य आ अर्थ-संशोधनक रचनात्मक चाह
- (C) गीत हटायब
- (D) लोकसंगीत बेकार

३५. 'बर-कन्या एके गाड़ीके दू पहिया' रूपक वैवाहिक सम्बन्धक कोन नैतिक अर्थ दैत अछि?

- (A) एकतरफा नियंत्रण
- (B) सहभागिता, संतुलन आ परस्पर निर्भरता
- (C) केवल हास्य
- (D) स्त्री गौण

३६. श्रद्धांजलि विशेषांकमे बीहनि कथा आ स्त्री लेखनक साथ रामलोचन स्मरणक सह-अस्तित्व क्या बतबैत अछि?

- (A) पत्रिका जीवित साहित्यिक प्रवाहकें शोकक बीच सेहो जारी राखैत अछि
- (B) स्मरण बाधित अछि
- (C) रचनात्मकता अनावश्यक
- (D) खंड हटबाक चाही

३७. श्रद्धांजलि अंकक पाठक लेल 'स्मृति' किएक सक्रिय प्रक्रिया अछि?

- (A) स्मृति निष्क्रिय संग्रह
- (B) स्मृति सँ मूल्य, प्रेरणा, आलोचना आ भाषा-कार्यक दिशा बनैत अछि
- (C) स्मृति भूलब
- (D) स्मृति तथ्य-सूची मात्र

३८. रामलोचन ठाकुरक प्रति अनेक लेखकक आत्मीय संबोधन साहित्यिक समुदायक कोन रूप देखबैत अछि?

- (A) वैयक्तिकता मात्र
- (B) भाषा-समुदायमे संबंध, संवाद, ऋण, प्रेरणा आ आलोचनाक जीवित नेटवर्क
- (C) समुदाय नहि
- (D) संबोधन गौण

३९. श्रद्धांजलि विशेषांकक उच्च-स्तरीय प्रश्न कोन प्रकारक होयबाक चाही?

- (A) कते पृष्ठ पर लेख अछि
- (B) स्मृति, कृतित्व, सामाजिक प्रश्न, आत्मकथा, स्त्री-स्वर, बीहनि कथा आ साहित्यिक समुदायक सम्बन्ध पर
- (C) क्रमांक याद करब
- (D) केवल तिथि

४०. अनिलक आत्मकथात्मक अंशमे 'समस्या समाधान खुद ताकब' भाव किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) परनिर्भरता
- (B) आत्मनिर्णय, जिम्मेदारी आ जीवन-संघर्षक परिपक्वता
- (C) समस्या छोड़ब
- (D) भाग्यवाद

४१. 'मोनक बात शब्दमे बान्हबाक प्रयास' लेखकक रचनात्मक प्रक्रिया की बतबैत अछि?

- (A) भावनाक अभिव्यक्त करबाक संघर्ष आ काव्यक जन्म
- (B) शब्द अनावश्यक
- (C) भावना छिपायब
- (D) साहित्यक विरोध

४२. श्रद्धांजलि विशेषांक मे गद्यक विविधता—आत्मकथा, आलोचना, कथा—किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) एकरूपता बेहतर
- (B) ई मैथिली गद्यक बहुरूपता आ पत्रिकाक व्यापक साहित्यिक दृष्टि देखबैत अछि
- (C) गद्य गौण
- (D) विविधता भ्रम

४३. रामलोचन ठाकुरक स्मरणमे 'कृतज्ञता' आ 'बेचैनी' एक संग किएक उपस्थित अछि?

- (A) दुनू विरोधी
- (B) योगदानक ऋण आ अपूर्ण/दुखद अंतक पीड़ा—दूनों स्मरणमे स्वाभाविक अछि
- (C) कृतज्ञता असंभव
- (D) बेचैनी साहित्यविरोधी

४४. श्रद्धांजलि विशेषांक मैथिली साहित्यक अभिलेखीय संस्कृतिक लेल किएक उपयोगी अछि?

- (A) ई अनेक लेख, स्मरण, रचना आ प्रसंग एक जगह सुरक्षित करैत अछि
- (B) अभिलेखक जरूरत नहि
- (C) ऑनलाइन सामग्री मूल्यहीन
- (D) स्मरण निजी रहय

४५. रामलोचन ठाकुरक स्मरण विद्यार्थीकें साहित्य-पठनमे कोन सावधानी सिखबैत अछि?

- (A) केवल नाम रटब
- (B) रचनाकारक जीवन, कृति, सामाजिक प्रसंग आ आलोचनात्मक स्मरण मिलाकऽ पढ़ब
- (C) स्मरण न पढ़ब
- (D) कृति-सूची पर्याप्त

४६. समग्र रूपे 19_2 श्रद्धांजलि विशेषांकक संदेश की मानल जा सकैत अछि?

- (A) लेखक मरला पर साहित्य समाप्त
- (B) रचनाकार कृति, स्मृति, प्रेरणा, प्रश्न आ भाषा-समुदायमे जीवित रहैत छथि
- (C) स्मरण बेकार
- (D) साहित्य केवल वर्तमान

४७. स्मरणक संग रचनात्मक खंड राखब पत्रिका-संपादनक कोन नीति देखबैत अछि?

- (A) केवल शोक-प्रदर्शन
- (B) व्यक्ति-स्मृति आ चालू साहित्यिक जीवनक संतुलन
- (C) रचना रोकब
- (D) संपादनक अभाव

४८. श्रद्धांजलि विशेषांकमे 'मंतव्य पठाउ' सन आह्वानक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) पाठक निष्क्रिय नहि, संवादक सहभागी बनि सकैत छथि
- (B) मंतव्य निषिद्ध
- (C) पत्रिका बंद
- (D) पाठकक भूमिका नहि

४९. रामलोचन ठाकुरक स्मृति पर आधारित प्रश्नमे पृष्ठ-संख्या किएक टारबाक चाही?

- (A) पृष्ठ-संख्या गलत होइत अछि मात्र
- (B) साहित्यिक समझ रचनाकारक विचार, प्रभाव, विधा आ संवेदना पर आधारित होयबाक चाही
- (C) तथ्य अनावश्यक
- (D) स्मरण पढ़ब नहि

५०. 19_2 केँ 19_1 सँ अलग पढ़बाक कारण की अछि?

- (A) दुनू एकदम समान अछि
- (B) 19_1 मुख्य विशेषांकक आलोचनात्मक/कृतित्व-केंद्रित रूप, 19_2 श्रद्धांजलि, स्मरण आ रचनात्मक निरंतरताक रूप प्रस्तुत करैत अछि
- (C) 19_2 असंबंधित अछि
- (D) 19_1 मे स्मृति नहि

५१. रामलोचन ठाकुरक श्रद्धांजलि पाठककेँ मातृभाषा साहित्यकारक प्रति कोन नैतिक भाव सिखबैत अछि?

- (A) उपेक्षा
- (B) स्मरण, अध्ययन, आलोचना, संरक्षण आ अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाबयक जिम्मेदारी
- (C) केवल शोक
- (D) मौन

५२. श्रद्धांजलि विशेषांकक साहित्यिक सफलता कोन कसौटी पर आँकल जा सकैत अछि?

- (A) कते फोटो अछि
- (B) ओ रचनाकारक स्मृति केँ विचार, रचना, सामाजिक प्रश्न आ पाठकीय संवादमे बदलि सकैत अछि कि नहि
- (C) पृष्ठ अधिक अछि कि नहि
- (D) क्रमांक सही अछि कि नहि

उत्तरमाला — अध्याय २० (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) स्मरण, कृतज्ञता, साहित्यिक मूल्यांकन आ सामूहिक शोकक संयोजन — श्रद्धांजलि विशेषांक स्मृति आ आलोचनाकेँ एक साथ राखैत अछि।

२. (B) ओ रचनाकारक जीवन, सम्बन्ध, प्रेरणा आ प्रभावक बहु-स्वरीय दस्तावेज बनैत अछि — संस्मरण रचनाकारक सामाजिक उपस्थिति आ प्रभावक प्रमाण दैत अछि।

३. (B) सरल, स्मरणीय, नैतिक आ साहित्यिक उपस्थिति जे व्यक्ति सँ प्रतीक बनि जाइत अछि — एहन शीर्षक व्यक्तित्वक सारगर्भित मानवीय छवि बनबैत अछि।

४. (B) स्मरणक माध्यमे योगदान, मूल्य आ अपूर्ण कार्यक पुनर्पाठ — साहित्यिक स्मरण वर्तमान आ भविष्य लेल अर्थ निकालैत अछि।

५. (B) रचनाकार अपन कर्म आ व्यक्तित्वसँ अगिला पीढ़ीकेँ दिशा दैत छथि — प्रेरणा साहित्यिक संस्कारक जीवित परम्परा अछि।

६. (A) साहित्यिक समुदाय, स्मृति-स्थान आ आत्मीय सम्बन्धक गहराई — स्थान/स्मृति रचनाकारक सामाजिक संसारक सांस्कृतिक अर्थ खोलैत अछि।

७. (A) रचनाकारक प्रभाव अनौपचारिक साहित्यिक सम्बन्धमे सेहो फैलैत अछि — साहित्यिक संबंध केवल कृतिसूची नहि; जीवन-स्पर्श आ प्रेरणा सेहो अछि।

८. (B) स्त्री-शिक्षा, वैवाहिक सम्बन्ध आ सामाजिक जिम्मेदारीक प्रश्न रचनाकारक जीवन-समीक्षा सँ जुड़ैत अछि — स्मरण आलोचनात्मक होय सकैत अछि—ओ सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि।

९. (B) रचनाकारक स्थायी उपस्थिति ओकर कृति, विचार आ भाषा-सेवा सँ बनैत अछि — शोककेँ साहित्यिक अर्थ कृतित्वक पुनर्पाठ सँ भेटैत अछि।

१०. (B) व्यथा, असुरक्षा, मानवीय असहायता आ रचनाकारक प्रति सामूहिक जिम्मेदारी — स्मरण मानवीय वेदना आ सामाजिक संवेदनाक दस्तावेज बनैत अछि।

११. (A) विशेषांक केवल शोक तक सीमित नहि, समकालीन रचनात्मकता आ साहित्यिक प्रवाह सेहो समेटैत अछि — विदेह विशेषांक स्मृति संग रचनात्मक निरंतरता सेहो राखैत अछि।

१२. (B) लेखक-जीवन, समाज, विवाह, शिक्षा, भाषा-भावना आ समयक दस्तावेज — आत्मकथा व्यक्तिगत अनुभवसँ सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास खोलैत अछि।
१३. (B) व्यक्ति अपन निर्णायक नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करैत अछि — आत्मकथा मनुष्यक आन्तरिक नैतिक संघर्षकेँ सामने अनैत अछि।
१४. (B) दुःख, आशा, जीवन-संघर्ष आ भावात्मक आत्म-संयमक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि — गीत आत्मकथा मे भावक गहनता आ लयात्मकता जोड़ैत अछि।
१५. (B) व्यक्तिगत संकटकेँ सांस्कृतिक ज्ञान आ धैर्यक ढाँचा मे बुझबाक प्रयास — एहिसँ लेखक जीवन-संकटकेँ परम्परागत विवेकक आलोकमे समझैत छथि।
१६. (B) कृतज्ञता, आत्म-संयम आ सकारात्मक कर्म-दृष्टि — ई भाव संकटमे संतुलन आ प्रयासक राह सुझबैत अछि।
१७. (B) स्मरणक भीतर सामाजिक आत्मालोचना आ लैंगिक न्यायक प्रश्न प्रवेश करैत अछि — सच्चा स्मरण समाजक असुविधाजनक प्रश्न सँ मुँह नहि मोड़ैत।
१८. (A) बीहनि कथा स्थानीय रहि विश्व-दृष्टि सँ संवाद करि सकैत अछि — बीहनि कथा संक्षिप्त रूपमे व्यापक मानवीय अनुभव व्यक्त करि सकैत अछि।
१९. (B) लघुकथाक विविध संवेदना, शिल्प, व्यंग्य, मोड़ आ भाव-छटा — रंग शब्द विधाक विविधता आ प्रभावक संकेत अछि।
२०. (A) साधारण वस्तु/प्रसंगसँ सामाजिक अर्थ निकालबाक क्षमता — लघुकथा साधारण जीवनक वस्तुमे गहन अर्थ खोजि सकैत अछि।
२१. (A) स्त्री स्वर गौण नहि; विशेषांकमे बहु-स्वरता आ स्त्री-अनुभवक स्थान बनैत अछि — स्त्री कोना रचनात्मक सार्वजनिकतामे स्त्रीस्वरक मान्यता दैत अछि।
२२. (B) स्त्री-अनुभवमे आशा, प्रतिरोध आ भविष्य-दृष्टि — उम्मीद स्त्री लेखनक जीवन-संरचनात्मक ऊर्जा होय सकैत अछि।
२३. (B) स्त्री-संवाद, आत्मीयता, साझे पीड़ा आ आत्मबलक परम्परा — सखी स्त्री अनुभवक संवादात्मक लोक-रूप अछि।
२४. (B) प्रकाश, ताप, कठोर यथार्थ अथवा खुलासाक संकेत — लघुकथाक शीर्षक कम शब्दमे बहुव्यंजना पैदा करैत अछि।
२५. (A) देवी-परम्परा, स्त्री-शक्ति आ सामाजिक विडम्बना तीनू पर पाठ सम्भव — धार्मिक प्रतीक स्त्री-अनुभवक आलोचनात्मक पाठ लेल सेहो खुलि सकैत अछि।
२६. (A) विदेहक ई-लर्निङ्ग, साहित्य, पत्रकारिता आ सांस्कृतिक सेवा एक मंच पर जोड़बाक नीति — विदेह मंच भाषा-शिक्षा आ साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रकाशन दुनूकेँ जोड़ैत अछि।
२७. (B) कृति पढ़ब, विचार बचाएब, स्मृति सँ सीखब आ भाषा-सेवा जारी राखब — सच्ची श्रद्धांजलि सक्रिय पठन आ सांस्कृतिक कर्ममे बदलैत अछि।
२८. (A) कारण गंभीर स्मरण रचनाकार आ समाज दुनूकेँ ईमानदारी सँ देखैत अछि — सम्मानक अर्थ अंध-प्रशंसा नहि; ईमानदार पुनर्पाठ सेहो अछि।
२९. (B) भाषा, कविता, अनुवाद, रंगमंच, लोककथा आ जन-संवेदना मे देल योगदान — स्थायित्व कृतित्व आ सांस्कृतिक प्रभाव सँ बनैत अछि।
३०. (B) भिन्न-भिन्न अनुभव रचनाकारक बहुआयामी व्यक्तित्वकेँ उजागर करैत अछि — बहु-स्वर स्मृति केँ लोकतांत्रिक आ समृद्ध बनबैत अछि।
३१. (A) घटना केँ मानवीय त्रासदी आ जीवनक अनिश्चितताक रूपमे अनुभूत करबैत अछि — स्मरण मनुष्यक सीमितता आ पीड़ाक अनुभूति जगबैत अछि।
३२. (B) युवा जीवनक सामाजिक दबाव, शिक्षा, भाव, दायित्व आ रचनात्मकता संग-संग चलैत अछि — एहन मिश्रण आत्मकथाकेँ जीवन-सत्यक निकट बनबैत अछि।
३३. (B) साक्षरता, विरामचिह्न, अभिव्यक्ति आ संप्रेषणक सम्बन्ध — विरामचिह्न सेहो भाषिक अर्थ-निर्माणक हिस्सा अछि।
३४. (B) लोकधुनक प्रेम संग भाषिक-सौंदर्य आ अर्थ-संशोधनक रचनात्मक चाह — ओ लोकगीत केँ अस्वीकार नहि, बल्कि संवेदनशील सुधारक दृष्टिसँ देखैत छथि।
३५. (B) सहभागिता, संतुलन आ परस्पर निर्भरता — रूपक वैवाहिक समानता आ सहयात्राक संकेत करैत अछि।
३६. (A) पत्रिका जीवित साहित्यिक प्रवाहकेँ शोकक बीच सेहो जारी राखैत अछि — साहित्यिक समुदाय शोकक साथ सृजनक निरंतरता सेहो राखैत अछि।
३७. (B) स्मृति सँ मूल्य, प्रेरणा, आलोचना आ भाषा-कार्यक दिशा बनैत अछि — सक्रिय स्मृति भविष्यक सांस्कृतिक कर्मक आधार बनैत अछि।
३८. (B) भाषा-समुदायमे संबंध, संवाद, ऋण, प्रेरणा आ आलोचनाक जीवित नेटवर्क — साहित्यिक समुदाय केवल प्रकाशन नहि, मानवीय सम्बन्धक जाल अछि।

३९. (B) स्मृति, कृतित्व, सामाजिक प्रश्न, आत्मकथा, स्त्री-स्वर, बीहनि कथा आ साहित्यिक समुदायक सम्बन्ध पर — उच्च प्रश्न विचार-संबंध आ रचनात्मक संरचना बुझबैत अछि।
४०. (B) आत्मनिर्णय, जिम्मेदारी आ जीवन-संघर्षक परिपक्वता — आत्मकथा मे एहन क्षण व्यक्तित्वक निर्माण देखबैत अछि।
४१. (A) भावनाकें अभिव्यक्त करबाक संघर्ष आ काव्यक जन्म — रचना प्रायः अनुभवकें भाषा देबाक प्रयाससँ जन्मैत अछि।
४२. (B) ई मैथिली गद्यक बहुरूपता आ पत्रिकाक व्यापक साहित्यिक दृष्टि देखबैत अछि — विविध गद्य विधा विशेषांककें व्यापक साहित्यिक दस्तावेज बनबैत अछि।
४३. (B) योगदानक ऋण आ अपूर्ण/दुखद अंतक पीड़ा—दू स्मरणमे स्वाभाविक अछि — सच्चा स्मरण भावनात्मक रूपे जटिल होइत अछि।
४४. (A) ई अनेक लेख, स्मरण, रचना आ प्रसंग एक जगह सुरक्षित करैत अछि — विशेषांक साहित्यिक इतिहास लेल अभिलेखीय स्रोत बनैत अछि।
४५. (B) रचनाकारक जीवन, कृति, सामाजिक प्रसंग आ आलोचनात्मक स्मरण मिलाकऽ पढ़ब — समग्र पठन रचनाकारक अर्थ खोलैत अछि।
४६. (B) रचनाकार कृति, स्मृति, प्रेरणा, प्रश्न आ भाषा-समुदायमे जीवित रहैत छथि — श्रद्धांजलि विशेषांक रचनाकारक सांस्कृतिक निरंतरता प्रमाणित करैत अछि।
४७. (B) व्यक्ति-स्मृति आ चालू साहित्यिक जीवनक संतुलन — संतुलित संपादन स्मृति आ सृजन दुनूकें स्थान दैत अछि।
४८. (A) पाठक निष्क्रिय नहि, संवादक सहभागी बनि सकैत छथि — ई-पत्रिका पाठककें सामुदायिक संवादमे शामिल करैत अछि।
४९. (B) साहित्यिक समझ रचनाकारक विचार, प्रभाव, विधा आ संवेदना पर आधारित होयबाक चाही — उच्च-स्तरीय प्रश्न अर्थ, संदर्भ आ मूल्यांकन पर केन्द्रित होइत अछि।
५०. (B) 19_1 मुख्य विशेषांकक आलोचनात्मक/कृतित्व-केंद्रित रूप, 19_2 श्रद्धांजलि, स्मरण आ रचनात्मक निरंतरताक रूप प्रस्तुत करैत अछि — दू भाग रचनाकार-अध्ययनक अलग-अलग किन्तु पूरक परिप्रेक्ष्य दैत अछि।
५१. (B) स्मरण, अध्ययन, आलोचना, संरक्षण आ अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाबयक जिम्मेदारी — मातृभाषा साहित्यकारक वास्तविक सम्मान सक्रिय संरक्षण आ पठन अछि।
५२. (B) ओ रचनाकारक स्मृति कें विचार, रचना, सामाजिक प्रश्न आ पाठकीय संवादमे बदलि सकैत अछि कि नहि — सफल श्रद्धांजलि भावनाकें अर्थपूर्ण साहित्यिक संवादमे बदलैत अछि।

अध्याय २१ : राजनन्दन लाल दास विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. राजनन्दन लाल दास विशेषांकक प्रश्न-संख्या सामान्य ३०-४० सँ बेसी किएक होयबाक चाही?

- (A) लेखक-विशेषांकमे अवधारणा नहि पूछल जा सकैत
- (B) एहि अंकमे केवल एकटा छोट लेख अछि
- (C) प्रश्न सदिखन १५ रहबाक चाही
- (D) ई लेखक-केंद्रित, संस्मरण-प्रधान आ बहु-लेखीय अंक अछि, जाहिमे संपादन, पत्रकारिता, नाटक, शिक्षा, भाषा-सेवा आ व्यक्तित्वक अनेक पक्ष अछि

२. राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्वक मुख्य स्वरूप कोन रूपमे उभरैत अछि?

- (A) केवल सरकारी कर्मचारी
- (B) केवल गीतकार
- (C) संपादक, मातृभाषा-सेवी, नाटककार, पत्रकारिता-संवर्धक आ सांस्कृतिक कर्मीक रूपमे
- (D) केवल प्रकाशक

३. कर्णामृत पत्रिकाक संदर्भमे राजनन्दन लाल दासक महत्त्व की अछि?

- (A) मैथिली पत्रकारिता आ नव-रचनाकारक प्रवेश लेल दीर्घकालिक मंच तैयार करब
- (B) केवल व्यापारिक पत्रिका चलायब
- (C) पत्रकारितासँ असंबंध
- (D) मैथिली लेखन रोकब

४. 'सशक्त सम्पादित व्यक्तित्व' पदबंधक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) व्यक्तित्वमे संपादकीय अनुशासन, चयन-बोध, जन-संपर्क आ भाषा-प्रतिबद्धताक समन्वय
- (B) व्यक्तित्वक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि
- (C) व्यक्ति केवल संपादित पुस्तक छथि
- (D) संपादनक मतलब काट-छाँट मात्र

५. मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक आग्रह राजनन्दनजीक कोन दृष्टि देखबैत अछि?

- (A) शिक्षासँ उदासीनता
- (B) अंग्रेजी-विरोध मात्र
- (C) मातृभाषा-आधारित शिक्षा केँ सांस्कृतिक स्वाभिमान आ ज्ञानक स्वाभाविक आधार मानब
- (D) केवल निजी इच्छा

६. राजनन्दन लाल दासक 'अन्तिम इच्छा'क प्रसंगक शैक्षिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल भावुक प्रसंग
- (B) व्यक्तिगत लाभ
- (C) शिक्षा-विरोध
- (D) भाषा-सेवाक चरम रूपमे मातृभाषा-शिक्षा लेल दीर्घकालिक चिंता

७. 'कर्णामृत' सन पत्रिका नव रचनाकार लेल किएक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि?

- (A) भाषा-विकाससँ असंबद्ध
- (B) ओ पहिल प्रकाशन, पाठक-संपर्क आ साहित्यिक आत्मविश्वासक प्रवेश-द्वार बनैत अछि
- (C) केवल पुरान लेखक लेल
- (D) नव लेखकक प्रवेश रोकैत अछि

८. राजनन्दनजीक संपादकीय दृष्टिमे 'उदारता'क अर्थ की अछि?

- (A) केवल निजी पक्षधरता
- (B) पत्रकारितासँ दूरी
- (C) गुण-विवेकक अभाव
- (D) नव लेखन, विविध स्वर आ मैथिली-हितक लेल खुलल मंच

९. 'क्षीणकायामे असीम ऊर्जा' जकाँ मूल्यांकन कोन विरोधाभास खोलैत अछि?

- (A) शारीरिक सीमाक बावजूद सांस्कृतिक कर्ममे असाधारण सक्रियता
- (B) व्यक्तित्वक मूल्यांकन असंभव
- (C) लेखनमे श्रम नहि चाही
- (D) ऊर्जा केवल शारीरिक थिक

१०. राजनन्दन लाल दासक नाटक 'सांतो'क चर्चा विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई हुनकर क्रान्तिकारी चेतना, सामाजिक प्रश्न आ रंगमंचीय दृष्टिक संकेत दैत अछि
- (B) संपादक नाटक नहि लिखि सकैत
- (C) केवल मनोरंजन
- (D) नाटक साहित्य नहि

११. 'क्रान्तिकारी चेतना जगबैत' नाटकक अर्थ की होइत अछि?

- (A) हिंसा प्रचार करब
- (B) इतिहास-रहित कथानक
- (C) सिर्फ हास्य
- (D) रंगमंच मार्फत अन्याय, जड़ता वा सामाजिक विसंगति पर प्रश्न उठायब

१२. मैथिली पत्रकारितामे राजनन्दनक योगदानक मूल्यांकनमे कोन कसौटी जरूरी अछि?

- (A) दीर्घकालिकता, संपादकीय दृष्टि, भाषा-निष्ठा, नव लेखकक संवर्धन आ सामुदायिक पहुँच
- (B) केवल अंक-संख्या
- (C) केवल कागजक आकार
- (D) केवल विज्ञापन

१३. विशेषांकक संरचनामे जीवितकाल आ निधन-पश्चात प्राप्त लेखक भाषा भिन्न किएक भऽ सकैत अछि?

- (A) स्मृति-अंकमे विविधता नहि चाही
- (B) भाषा बदललासँ अंक असंगत
- (C) लेखकक भाव-स्थिति बदलैत अछि—पूर्व लेखमे परिचय/मूल्यांकन, पश्चात लेखमे स्मृति/श्रद्धांजलि अधिक होइत अछि
- (D) मृत्यु साहित्यिक संदर्भ नहि

१४. हस्तलिखित सामग्रीकेँ PDF रूपमे देबाक संपादकीय निर्णय की देखबैत अछि?

- (A) संसाधन-सीमाक बावजूद दस्तावेज बचा लेबाक अभिलेखीय प्रतिबद्धता
- (B) पाठकक अपमान
- (C) डिजिटल माध्यमक विरोध
- (D) साहित्य छिपायब

१५. राजनन्दनजी पर विशेषांक प्रकाशित करब 'तर्पण' किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) साहित्यिक मूल्यांकनक विरोध
- (B) केवल निजी संस्कार
- (C) कृतज्ञ स्मरणक माध्यमे लेखकक जीवन-कर्म केँ समुदाय समक्ष राखब
- (D) धार्मिक कर्म मात्र

१६. मातृभाषा-सेवी कहब राजनन्दन लाल दासक संबंधमे की सूचित करैत अछि?

- (A) केवल भाषण देब
- (B) मैथिली भाषा-साहित्यक सेवा केँ जीवन-कर्मक रूपमे स्वीकार करब
- (C) भाषा सँ दूरी
- (D) साहित्य-विरोध

१७. 'साहित्यकार-संपादक' युग्मक अर्थ की अछि?

- (A) संपादक रचनाकार नहि होइ सकैत
- (B) रचनात्मकता आ संपादकीय जिम्मेदारी एकहि व्यक्तित्वमे मिलब
- (C) दुनू भूमिका विरोधी
- (D) साहित्यकारकें समाजसँ मतलब नहि

१८. राजनन्दन लाल दासक संस्मरण सभ विशेषांकमे किएक जरूरी अछि?

- (A) केवल तिथि पर्याप्त
- (B) ओ निजी अनुभवक माध्यमे साहित्यिक व्यक्तित्वक मानवीय पक्ष उजागर करैत अछि
- (C) निजी अनुभव साहित्य नहि
- (D) संस्मरण बेकार

१९. 'माछक रस' सन संस्मरण शीर्षक कोन सांस्कृतिक संकेत दैत अछि?

- (A) शीर्षक बिना अर्थ
- (B) भोजन, लोक-संस्कार, आत्मीयता आ स्मृति द्वारा व्यक्ति-चित्रण
- (C) संस्मरणमे लोकजीवन वर्जित
- (D) भोजन साहित्यक विषय नहि

२०. राजनन्दनजीक 'मिथिला-मैथिली' संबंध कोन आधार पर बनैत अछि?

- (A) भाषा, पत्रकारिता, नाटक, शिक्षा आ सांस्कृतिक संगठनक संयुक्त प्रतिबद्धता
- (B) केवल जन्मस्थान
- (C) केवल सम्मान-सूची
- (D) केवल उपनाम

२१. 'मैथिल शिरोमणि' कहबक शैक्षिक सावधानी की अछि?

- (A) आलोचना असंभव
- (B) उपाधि मात्र कंठस्थ करब
- (C) कर्मक चर्चा नहि
- (D) उपाधि केँ ठोस कर्म—भाषा-सेवा, संपादन, नाटक, शिक्षा—सँ जोड़ि बुझब

२२. लेखक-विशेषांकमे परिवारजनक संस्मरणक महत्त्व की अछि?

- (A) घरेलू प्रसंग बेकार
- (B) परिवारक लेख साहित्य-विरोधी
- (C) घरेलू जीवन, स्वभाव, संघर्ष आ अप्रकाशित सांस्कृतिक संदर्भ उपलब्ध करब
- (D) केवल बाहरी आलोचक मान्य

२३. संपादक राजनन्दन लाल दासक 'उदारचेता' रूप किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) उदारता गुणवत्ता-विरोधी
- (B) संपादक केवल कठोर होय
- (C) विविधता दोष
- (D) भिन्न लेखक, नव स्वर आ विविध मत केँ मंच देबाक क्षमता

२४. राजनन्दनजीक काज 'कलमक सिपाही' किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) लेखन-संपादनक माध्यमे भाषा-संघर्ष आ सांस्कृतिक रक्षा करब
- (B) सैन्य अर्थ मात्र
- (C) कलमक उपयोग नहि
- (D) साहित्य संघर्ष-विहीन

२५. मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे कर्णामृतक भूमिका कोना देखल जाय?
- (A) केवल निजी डायरी
(B) क्षणिक विज्ञापन पत्र
(C) पत्रकारिता नहि
(D) दीर्घजीवी सामुदायिक पत्रिका जे भाषा-साहित्यिक निरंतर मंच बनल
२६. राजनन्दनजीक नाटक पर प्रश्न बनबैत समय कोन दृष्टि श्रेष्ठ अछि?
- (A) नाटकक अर्थ छोड़ब
(B) केवल लेखक नाम
(C) नाटकक कथ्य, सामाजिक चेतना, मंचीयता आ भाषा-प्रयोगक विश्लेषण
(D) केवल पृष्ठ पृष्ठब
२७. 'साहित्यिक जातिवादी सीमा तोड़लनि' कथन कोन मूल्य उभारैत अछि?
- (A) केवल निजी पक्ष
(B) जातिवादक समर्थन
(C) साहित्यिक विभाजन
(D) लेखन-संपादनमे जाति-संकीर्णता सँ ऊपर उठि प्रतिभा आ भाषा-हित केँ प्राथमिकता
२८. राजनन्दनजीक संपादनक सामाजिक अर्थ की अछि?
- (A) समाजसँ असंबंध
(B) मैथिली समाजमे संवाद, प्रकाशन-संस्कृति आ सामूहिक स्मृति निर्मित करब
(C) संपादन निजी शौक मात्र
(D) भाषा-समुदायक भूमिका नहि
२९. विशेषांकमे अनेक लेखकक लेख शामिल करबाक लाभ की अछि?
- (A) एक मत पर्याप्त
(B) विविधता भ्रम मात्र
(C) लेख घटबय योग्य
(D) एक व्यक्तित्वक विविध पक्ष अनेक दृष्टि सँ उभारैत अछि
३०. राजनन्दनजीक सम्मान-सूची प्रश्नक मुख्य लक्ष्य की होय?
- (A) सम्मानक नाम नहि, भाषा-सेवा केर सामाजिक मान्यता बुझब
(B) केवल वर्ष याद करब
(C) साहित्यिक अर्थ हटाब
(D) सम्मान अप्रासंगिक
३१. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'प्राथमिक शिक्षा' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?
- (A) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
(B) मातृभाषा मे शिक्षा बालकक बौद्धिक आ सांस्कृतिक विकास लेल स्वाभाविक आधार अछि
(C) केवल नाम-सूची
(D) केवल पृष्ठ-संख्या
३२. 'प्राथमिक शिक्षा' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकेँ कोना व्यापक बनबैत अछि?
- (A) केवल जीवनीक सजावट अछि
(B) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
(C) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
(D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि

३३. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'नव रचनाकार' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) केवल नाम-सूची
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (D) पत्रिका मंच नव लेखकक पहिल विश्वास आ पाठक-सम्पर्क बनबैत अछि

३४. 'नव रचनाकार' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (B) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (C) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि
- (D) केवल जीवनीक सजावट अछि

३५. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'संस्मरण' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) केवल नाम-सूची
- (B) संस्मरण मानवीय इतिहास आ साहित्यिक आत्मीयता जोड़ैत अछि
- (C) केवल पृष्ठ-संख्या
- (D) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण

३६. 'संस्मरण' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (B) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (C) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि

३७. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'नाटक' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या
- (B) नाटक सामाजिक चेतना केँ मंचीय रूपमे प्रस्तुत करैत अछि
- (C) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (D) केवल नाम-सूची

३८. 'नाटक' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (B) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि
- (C) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (D) कुनो वैचारिक अर्थ नहि

३९. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'पत्रकारिता' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) पत्रकारिता भाषा-समाजक सार्वजनिक संवाद रचैत अछि
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (D) केवल नाम-सूची

४०. 'पत्रकारिता' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (B) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि
- (C) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (D) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि

४१. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'संपादकीय श्रम' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) संपादन चयन, अनुशासन, दृष्टि आ समुदाय-निर्माणक काम अछि
- (D) केवल नाम-सूची

४२. 'संपादकीय श्रम' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (B) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (C) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि

४३. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'हस्तलिखित सामग्री' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) अभिलेखीय संरक्षण संसाधनक कमीमे सेहो स्मृति बचबैत अछि
- (B) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (C) केवल पृष्ठ-संख्या
- (D) केवल नाम-सूची

४४. 'हस्तलिखित सामग्री' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि
- (B) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (C) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (D) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि

४५. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'श्रद्धांजलि' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) केवल नाम-सूची
- (B) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (C) श्रद्धांजलि भावुकता मात्र नहि, कृतित्वक विवेकपूर्ण मूल्यांकन अछि
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या

४६. 'श्रद्धांजलि' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (B) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (C) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि

४७. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'उदारता' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) उदार संपादकीय दृष्टि विविध लेखक आ विचार केँ स्थान दैत अछि
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या
- (C) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण
- (D) केवल नाम-सूची

४८. 'उदारता' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकें कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि
- (B) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (C) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (D) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि

४९. राजनन्दन लाल दास विशेषांकमे 'मैथिली सेवा' सम्बन्धी प्रश्नक सही केन्द्र की होयबाक चाही?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या
- (B) केवल नाम-सूची
- (C) मैथिली सेवा भाषा, साहित्य, शिक्षा, पत्रकारिता आ संस्कृति सभमे सतत कर्म अछि
- (D) सन्दर्भहीन सामान्यीकरण

५०. 'मैथिली सेवा' राजनन्दनजीक व्यक्तित्वकेँ कोना व्यापक बनबैत अछि?

- (A) केवल जीवनीक सजावट अछि
- (B) हुनका साहित्यसँ अलग करैत अछि
- (C) कुनो वैचारिक अर्थ नहि
- (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय २१ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (D) ई लेखक-केंद्रित, संस्मरण-प्रधान आ बहु-लेखीय अंक अछि, जाहिमे संपादन, पत्रकारिता, नाटक, शिक्षा, भाषा-सेवा आ व्यक्तित्वक अनेक पक्ष अछि — सामग्रीक बहुलता आ लेखकक बहुआयामी योगदान प्रश्न-संख्या बढ़बैत अछि।
२. (C) संपादक, मातृभाषा-सेवी, नाटककार, पत्रकारिता-संवर्धक आ सांस्कृतिक कर्मीक रूपमे — विशेषांक हुनकर बहुविध साहित्य-सांस्कृतिक कर्म पर केन्द्रित अछि।
३. (A) मैथिली पत्रकारिता आ नव-रचनाकारक प्रवेश लेल दीर्घकालिक मंच तैयार करब — कर्णामृत हुनकर संपादकीय दृष्टि आ भाषा-सेवाक प्रमुख साधन छल।
४. (A) व्यक्तित्वमे संपादकीय अनुशासन, चयन-बोध, जन-संपर्क आ भाषा-प्रतिबद्धताक समन्वय — संपादन लेखकक दृष्टि, संस्कार आ सामुदायिक भूमिका केँ आकार दैत अछि।
५. (C) मातृभाषा-आधारित शिक्षा केँ सांस्कृतिक स्वाभिमान आ ज्ञानक स्वाभाविक आधार मानब — मातृभाषा शिक्षा भाषा-समाजक भविष्य सँ जुड़ल प्रश्न अछि।
६. (D) भाषा-सेवाक चरम रूपमे मातृभाषा-शिक्षा लेल दीर्घकालिक चिंता — एहि प्रसंगमे भाषा-आन्दोलन आ शिक्षा-दर्शन दुनू जुड़ल अछि।
७. (B) ओ पहिल प्रकाशन, पाठक-संपर्क आ साहित्यिक आत्मविश्वासक प्रवेश-द्वार बनैत अछि — पत्रिका-संस्कृति साहित्यिक पीढ़ी निर्माण करैत अछि।
८. (D) नव लेखन, विविध स्वर आ मैथिली-हितक लेल खुलल मंच — उदार संपादक भाषा-समुदायमे संवादक अवसर बढ़बैत अछि।
९. (A) शारीरिक सीमाक बावजूद सांस्कृतिक कर्ममे असाधारण सक्रियता — एहि पदबंधसँ कर्मठता आ आंतरिक शक्ति उभरैत अछि।
१०. (A) ई हुनकर क्रान्तिकारी चेतना, सामाजिक प्रश्न आ रंगमंचीय दृष्टिक संकेत दैत अछि — नाटक लेखकक सामाजिक हस्तक्षेपक मंच बनैत अछि।
११. (D) रंगमंच मार्फत अन्याय, जड़ता वा सामाजिक विसंगति पर प्रश्न उठायब — क्रान्तिकारी चेतना साहित्यिक जागरण आ सामाजिक आलोचना सँ जुड़ल अछि।
१२. (A) दीर्घकालिकता, संपादकीय दृष्टि, भाषा-निष्ठा, नव लेखकक संवर्धन आ सामुदायिक पहुँच — पत्रकारिता काजक मूल्य ओकर सांस्कृतिक प्रभाव सँ मापल जाय।
१३. (C) लेखकक भाव-स्थिति बदलैत अछि—पूर्व लेखमे परिचय/मूल्यांकन, पश्चात लेखमे स्मृति/श्रद्धांजलि अधिक होइत अछि — विशेषांकक संपादकीय नोट एहि भाव-परिवर्तनक सचेत संकेत दैत अछि।
१४. (A) संसाधन-सीमाक बावजूद दस्तावेज बचा लेबाक अभिलेखीय प्रतिबद्धता — अपूर्ण टंकणक बावजूद सामग्री सुरक्षित करब महत्वपूर्ण संपादकीय कर्म अछि।
१५. (C) कृतज्ञ स्मरणक माध्यमे लेखकक जीवन-कर्म केँ समुदाय समक्ष राखब — तर्पण शब्द स्मृति, ऋण-स्वीकार आ सम्मानक प्रतीक अछि।
१६. (B) मैथिली भाषा-साहित्यक सेवा केँ जीवन-कर्मक रूपमे स्वीकार करब — मातृभाषा-सेवा सतत लेखन, संपादन, प्रकाशन आ शिक्षाक कर्म अछि।
१७. (B) रचनात्मकता आ संपादकीय जिम्मेदारी एकहि व्यक्तित्वमे मिलब — राजनन्दनजीक रूपमे रचना आ संपादन परस्पर पूरक बनैत अछि।
१८. (B) ओ निजी अनुभवक माध्यमे साहित्यिक व्यक्तित्वक मानवीय पक्ष उजागर करैत अछि — संस्मरण साहित्यिक इतिहास केँ जीवंत बनबैत अछि।

२९. (B) भोजन, लोक-संस्कार, आत्मीयता आ स्मृति द्वारा व्यक्ति-चित्रण — लोक-स्वादसँ व्यक्ति आ समाजक आत्मीयता खुलैत अछि।
२०. (A) भाषा, पत्रकारिता, नाटक, शिक्षा आ सांस्कृतिक संगठनक संयुक्त प्रतिबद्धता — मिथिला-मैथिली संबंध सक्रिय सांस्कृतिक कर्ममे प्रकट होइत अछि।
२१. (D) उपाधि केँ ठोस कर्म—भाषा-सेवा, संपादन, नाटक, शिक्षा—सँ जोड़ि बुझब — सम्मान-सूचक पदक अर्थ ओकर कार्य-संदर्भमे स्पष्ट होइत अछि।
२२. (C) घरेलू जीवन, स्वभाव, संघर्ष आ अप्रकाशित सांस्कृतिक संदर्भ उपलब्ध करब — परिवारिक दृष्टि लेखकक निजी मानवीय रूप देखबैत अछि।
२३. (D) भिन्न लेखक, नव स्वर आ विविध मत केँ मंच देबाक क्षमता — उदारता भाषा-साहित्यक लोकतांत्रिक विस्तारक आधार अछि।
२४. (A) लेखन-संपादनक माध्यमे भाषा-संघर्ष आ सांस्कृतिक रक्षा करब — कलमक सिपाही रूपक साहित्यिक प्रतिबद्धता देखबैत अछि।
२५. (D) दीर्घजीवी सामुदायिक पत्रिका जे भाषा-साहित्यक निरंतर मंच बनल — लंबा प्रकाशन-क्रम साहित्यिक इतिहासक महत्वपूर्ण साक्ष्य अछि।
२६. (C) नाटकक कथ्य, सामाजिक चेतना, मंचीयता आ भाषा-प्रयोगक विश्लेषण — उच्च-स्तरीय प्रश्न नाटकक विचार आ शिल्प पर केन्द्रित हो।
२७. (D) लेखन-संपादनमे जाति-संकीर्णता सँ ऊपर उठि प्रतिभा आ भाषा-हित केँ प्राथमिकता — भाषा-साहित्यक विकास समावेशी दृष्टि सँ होइत अछि।
२८. (B) मैथिली समाजमे संवाद, प्रकाशन-संस्कृति आ सामूहिक स्मृति निर्मित करब — संपादन समुदाय निर्माणक सांस्कृतिक प्रक्रिया अछि।
२९. (D) एक व्यक्तित्वक विविध पक्ष अनेक दृष्टि सँ उभरैत अछि — बहु-स्वर विशेषांक केँ अधिक विश्वसनीय आ समृद्ध बनबैत अछि।
३०. (A) सम्मानक नाम नहि, भाषा-सेवा केर सामाजिक मान्यता बुझब — सम्मान समाजक सांस्कृतिक कृतज्ञता आ मान्यता सूचित करैत अछि।
३१. (B) मातृभाषा मे शिक्षा बालकक बौद्धिक आ सांस्कृतिक विकास लेल स्वाभाविक आधार अछि — प्राथमिक शिक्षाक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
३२. (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — प्राथमिक शिक्षाक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
३३. (D) पत्रिका मंच नव लेखकक पहिल विश्वास आ पाठक-सम्पर्क बनबैत अछि — नव रचनाकारक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
३४. (C) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — नव रचनाकारक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
३५. (B) संस्मरण मानवीय इतिहास आ साहित्यिक आत्मीयता जोड़ैत अछि — संस्मरणक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
३६. (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — संस्मरणक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
३७. (B) नाटक सामाजिक चेतना केँ मंचीय रूपमे प्रस्तुत करैत अछि — नाटकक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
३८. (B) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — नाटकक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
३९. (A) पत्रकारिता भाषा-समाजक सार्वजनिक संवाद रचैत अछि — पत्रकारिताक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
४०. (B) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — पत्रकारिताक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
४१. (C) संपादन चयन, अनुशासन, दृष्टि आ समुदाय-निर्माणक काम अछि — संपादकीय श्रमक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।
४२. (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — संपादकीय श्रमक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।
४३. (A) अभिलेखीय संरक्षण संसाधनक कमीमे सेहो स्मृति बचबैत अछि — हस्तलिखित सामग्रीक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।

४४. (A) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — हस्तलिखित सामग्रीक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।

४५. (C) श्रद्धांजलि भावुकता मात्र नहि, कृतित्वक विवेकपूर्ण मूल्यांकन अछि — श्रद्धांजलिक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।

४६. (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — श्रद्धांजलिक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।

४७. (A) उदार संपादकीय दृष्टि विविध लेखक आ विचार केँ स्थान दैत अछि — उदारताक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।

४८. (A) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — उदारताक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।

४९. (C) मैथिली सेवा भाषा, साहित्य, शिक्षा, पत्रकारिता आ संस्कृति सभमे सतत कर्म अछि — मैथिली सेवाक चर्चा विशेषांकमे राजनन्दनजीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म बुझबाक साधन अछि।

५०. (D) हुनकर योगदान केँ निजी रचनाकारसँ आगाँ बढ़ा कऽ भाषा-समुदायक कर्मयोगी रूपमे देखबैत अछि — मैथिली सेवाक माध्यमे व्यक्तित्वक सामुदायिक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय २२ : रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकक प्रश्न-संख्या सामान्य ३०-४० सँ अधिक किएक होएबाक चाही?

- (A) एहि अंकमे सामग्री अल्प अछि
- (B) ई लेखक-केंद्रित अंक अछि, जाहिमे गीत, गजल, आंदोलन, आलोचना, समीक्षा आ जनमानसक संबंध पर अनेक लेख अछि
- (C) लेखक-विशेषांकमे गहन प्रश्न नहि बनि सकैत
- (D) केवल तिथि-प्रश्न पर्याप्त अछि

२. रवीन्द्रनाथ ठाकुरक साहित्यिक व्यक्तित्वक मुख्य आधार कोन रूपमे उभरैत अछि?

- (A) केवल अनुवादक
- (B) केवल प्रशासक
- (C) केवल चित्रकार
- (D) गीत-शिल्प, मैथिली आन्दोलन, गजल-विवाद, समीक्षा आ जन-संवादसँ जुड़ल बहुआयामी रचनाकार

३. 'अतिवाद'क शिकार भेल रचनाकार कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) एक दिस अतिशय महिमामंडन आ दोसर दिस अनुचित अवमूल्यन—दुनू सँ संतुलित मूल्यांकन बाधित होइत अछि
- (B) लेखकक कृति पढ़बाक जरूरत नहि
- (C) केवल प्रशंसा करब
- (D) अतिवाद सदैव सही मूल्यांकन अछि

४. रवीन्द्रनाथ ठाकुरकें 'अभिनव विद्यापति' कहबाक प्रयासक आलोचनात्मक सावधानी की अछि?

- (A) स्वतंत्र मूल्यांकन असंभव
- (B) उपमा प्रेरक भऽ सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र कृतित्वकें आच्छादित नहि करबाक चाही
- (C) विद्यापति नाम लैतें आलोचना समाप्त
- (D) उपमा मात्रे अंतिम सत्य अछि

५. 'गीतक अप्रतिम शिल्पकार' पदबंध रवीन्द्रनाथजीक कोन क्षमता सूचित करैत अछि?

- (A) गीतमे लय, भाव, भाषा, संरचना आ संवेदना कें संतुलित करबाक दक्षता
- (B) भावना बिना भाषा पर्याप्त
- (C) शिल्पक गीतसँ सम्बन्ध नहि
- (D) गीत केवल तुकबन्दी अछि

६. मैथिली आन्दोलनक पाथेय कहब रवीन्द्रनाथजीक संबंधमे की सूचित करैत अछि?

- (A) पाथेयक अर्थ केवल भोजन
- (B) हुनकर लेखन आ व्यक्तित्व भाषा-आन्दोलनक प्रेरणा, दिशा आ ऊर्जा बनल
- (C) लेखनक सामाजिक अर्थ नहि
- (D) आन्दोलनसँ साहित्य अलग

७. 'सांचा सोनारकें नहि गढ़बाक कला होइछ' समीक्षा-शीर्षकक गजल-संदर्भमे अर्थ की अछि?

- (A) समीक्षा बेकार
- (B) सोनारक कथा मात्र
- (C) गजल-रचना मे शिल्प-संस्कार, कसौटी आ परिष्कारक अनिवार्यता
- (D) गजल बिना नियमक होइत अछि

८. 'लेखनी एक रंग अनेक' शीर्षक गजल-संकलनक संकेत की अछि?

- (A) लेखन असंगत
- (B) एकरूपता ही लक्ष्य
- (C) गजलमे रंग नहि
- (D) एक लेखक/लेखनीमे बहुविध भाव, लय, कथ्य आ गजल-रंगक संभावना

९. आधुनिक मैथिली गीतक 'सहज उन्नायक' कहबक अर्थ की अछि?

- (A) गीतक अंत करब
- (B) लोकभाषा हटाब
- (C) गीतक परम्परा केँ सहज भाषा, आधुनिक भावबोध आ जन-संवेदना संग विकसित करब
- (D) कठिनता मात्र श्रेष्ठता

१०. रवीन्द्रनाथजीक रचना आ जनमानसक उदासीनता विषयक लेख कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) महत्त्वपूर्ण रचनाकारक पाठकीय उपेक्षा, पुनर्पाठक आवश्यकता आ साहित्यिक स्मृति
- (B) रचनाकारक पाठक जरूरी नहि
- (C) उपेक्षा साहित्यिक विषय नहि
- (D) जनमानस सदिखन सजग रहैत अछि

११. गजल-समीक्षामे रदीफ-काफिया आ बहरक चर्चा किएक आवश्यक अछि?

- (A) केवल भाव काफी
- (B) गजलमे नियम नहि
- (C) गजलकेँ गजल बनाबै बला संरचनात्मक अनुशासन बुझबाक लेल
- (D) बहर अप्रासंगिक

१२. 'कथित गजल' पदबंध आलोचनामे कखन प्रयुक्त भऽ सकैत अछि?

- (A) जखन लेखक प्रसिद्ध हो
- (B) जखन गीत हो
- (C) जखन रचना गजल कहायल हो मुदा रदीफ, काफिया, मतला, बहर वा शेर-स्वातंत्र्यक कसौटी पूरा नहि करय
- (D) जखन गजल नीक हो

१३. मैथिलीमे गजल लिखल जा सकैत अछि कि नहि—एहि विवादक साहित्यिक उत्तर की अछि?

- (A) कसौटीक जरूरत नहि
- (B) मैथिलीमे गजल संभव अछि, मुदा ओकर शास्त्रीय-संरचनात्मक कसौटीक पालन आवश्यक अछि
- (C) केवल हिंदी-उर्दू मे गजल
- (D) मैथिलीमे गजल असंभव

१४. 'गजल मिथिलामे घर अपन बना लेने अछि' कथनक अर्थ की अछि?

- (A) गजल मैथिली साहित्यिक परिसरमे स्वीकृति, प्रयोग आ पाठक-सम्पर्क प्राप्त कऽ चुकल अछि
- (B) गजल बाहरी रहि गेल
- (C) मैथिली गजल नहि लिखल गेल
- (D) घर शब्द शाब्दिक अछि

१५. गजल-संकलनक समीक्षा मे मात्र संख्या गनब पर्याप्त किएक नहि?

- (A) समीक्षा नाम-सूची मात्र
- (B) गुणवत्ता अप्रासंगिक
- (C) संख्या ही साहित्यिक मूल्य अछि
- (D) संख्या संग शेरक गुणवत्ता, काफिया, रदीफ, बहर, कथ्य आ भाव-संयम जाँचब जरूरी अछि

१६. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे आलोचनात्मक लेखनक महत्त्व की अछि?

- (A) समीक्षा हटाबय योग्य
- (B) महिमामंडनक सन्तुलन, विधागत कसौटी आ रचनात्मक उपलब्धिक विवेकपूर्ण पहचान
- (C) आलोचना अपमान अछि
- (D) केवल श्रद्धांजलि पर्याप्त

१७. गीत आ गजल दुनूक चर्चा रवीन्द्रनाथजीक विशेषांकमे किएक सार्थक अछि?

- (A) गीत श्रेष्ठ तँ गजल हटाब
- (B) हुनकर कृतित्वक संगीतात्मक, लयात्मक आ संरचनात्मक विविधता देखबैत अछि
- (C) दुनू विधा असंबंधित
- (D) एक लेखकमे एक विधा मात्र होय

१८. 'जनमानसक उदासीनता' साहित्यिक इतिहासमे कोन चेतावनी दैत अछि?

- (A) यदि पाठक-समाज पुनर्पाठ नहि करत तँ महत्त्वपूर्ण साहित्य स्मृति सँ हटि सकैत अछि
- (B) उदासीनता साहित्यक लाभ
- (C) इतिहास स्वतः सुरक्षित
- (D) रचनाकारक पाठ जरूरी नहि

१९. मैथिली गजल सम्बन्धी वेबसाइट/ऑनलाइन विमर्शक भूमिका की अछि?

- (A) ऑनलाइन विमर्श असाहित्यिक
- (B) गजल-शास्त्र, पाठ, जाँच-पड़ताल आ विधागत संवादकें सार्वजनिक मंच देब
- (C) वेबसाइट भाषा नष्ट करैत अछि
- (D) गजल समीक्षा वर्जित

२०. गजलमे मतला अभावक आलोचना किएक उठैत अछि?

- (A) मतला अनावश्यक सदिखन
- (B) गजल केवल मुक्त कविता
- (C) मतला गजल-रचना मे रदीफ-काफियाक प्रारम्भिक अनुशासन स्थापित करैत अछि
- (D) काफिया न चाही

२१. एकहि गजलमे रदीफक पालन सभ शेरमे नहि होएब किएक दोष मानल जा सकैत अछि?

- (A) शेर स्वतंत्र तँ नियम नहि
- (B) रदीफ टूटब गुण
- (C) कारण रदीफ गजलकें ध्वनि-संरचना आ एकरूप लयात्मक पहचान दैत अछि
- (D) रदीफ केवल शीर्षक

२२. काफिया दोष गजल-मूल्यांकनमे किएक गंभीर अछि?

- (A) गजलमे ध्वनि नहि
- (B) काफिया टूटब आधुनिकता
- (C) काफिया केवल सजावट
- (D) काफिया गजलका ध्वनि-संबंध, अपेक्षा आ शिल्पक कसावट सँ जोड़ैत अछि

२३. 'गागरमे सागर' गजल सम्बन्धी कथनक अर्थ की अछि?

- (A) छोट शेरमे गहन अनुभव, भाव आ विचारक संक्षिप्त संधान
- (B) दीर्घ कथा ही गजल
- (C) शेरमे अर्थ कम होय
- (D) संक्षिप्तता दोष

२४. 'मनसँ मनक संचार-सेतु' रूपमे गजल कोना बुझल जाय?

- (A) गजल निजी अनुभूति कें पाठकक मन धरि लयात्मक-संक्षिप्त रूपमे पहुँचबैत अछि
- (B) मनक संबंध नहि
- (C) केवल तकनीक
- (D) गजल संवाद-विहीन

२५. मैथिली गजलक आलोचनामे भाव आ शास्त्रक संतुलन किएक आवश्यक अछि?

- (A) दुनू अप्रासंगिक
- (B) केवल भाव पर्याप्त
- (C) भाव बिना गजल निर्जीव आ शास्त्र बिना गजल असंरचित भऽ सकैत अछि
- (D) केवल नियम पर्याप्त

२६. रवीन्द्रनाथजीक गीत-लेखनक मूल्यांकनमे कोन पक्ष देखब आवश्यक अछि?

- (A) केवल शीर्षक
- (B) केवल पृष्ठ
- (C) केवल लेखकक नाम
- (D) भाषा-लालित्य, लय, भाव-गहनता, सांस्कृतिक प्रतीक आ जन-सम्बन्ध

२७. 'ररी नगरीमे शोर' जकाँ शीर्षक कोन सम्भावित साहित्यिक ऊर्जा दैत अछि?

- (A) स्थान, समाज, शोर, जन-जीवन आ विरोधाभासक प्रतीकात्मक प्रसंग खोलैत अछि
- (B) शीर्षकक अर्थ नहि
- (C) स्थान साहित्य नहि
- (D) केवल शोर प्रदूषण

२८. लेखक-विशेषांकमे प्रशंसा आ समालोचना दुनू किएक चाही?

- (A) कसौटीक जरूरत नहि
- (B) केवल प्रशंसा सत्य
- (C) रचनाकारक गरिमा बचैत अछि आ साहित्यिक कसौटी सेहो स्पष्ट होइत अछि
- (D) समालोचना अपमान

२९. रवीन्द्रनाथ ठाकुरक पाठकीय पुनर्स्थापन लेल कोन मार्ग जरूरी अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरण
- (B) पाठकक भागीदारी नहि
- (C) रचनाक पुनर्पाठ, आलोचनात्मक संपादन, डिजिटल उपलब्धता, शिक्षण आ चर्चा
- (D) रचना अप्रकाशित छोड़ब

३०. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'गीत-शिल्प' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) सन्दर्भहीन उत्तर
- (B) विषयक अर्थ छोड़ब
- (C) गीतमे लय, भाव, भाषा आ संरचनात्मक कसावट बुझब
- (D) केवल क्रमांक याद करब

३१. 'गीत-शिल्प' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (B) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि
- (C) केवल नामोल्लेख अछि
- (D) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि

३२. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'गजल-शास्त्र' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) रदीफ, काफिया, मतला, बहर आ शेर-स्वातंत्र्यक कसौटी बुझब
- (B) विषयक अर्थ छोड़ब
- (C) सन्दर्भहीन उत्तर
- (D) केवल क्रमांक याद करब

३३. 'गजल-शास्त्र' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (B) केवल नामोल्लेख अछि
- (C) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (D) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि

३४. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'मैथिली आन्दोलन' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) रचनाकारक भाषा-समाजक प्रति प्रेरक भूमिका देखब
- (B) केवल क्रमांक याद करब
- (C) सन्दर्भहीन उत्तर
- (D) विषयक अर्थ छोड़ब

३५. 'मैथिली आन्दोलन' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (B) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि
- (C) केवल नामोल्लेख अछि
- (D) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि

३६. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'जनमानसक उदासीनता' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) पाठकीय स्मृति आ पुनर्पाठक आवश्यकता बूझब
- (B) विषयक अर्थ छोड़ब
- (C) सन्दर्भहीन उत्तर
- (D) केवल क्रमांक याद करब

३७. 'जनमानसक उदासीनता' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि
- (B) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (C) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (D) केवल नामोल्लेख अछि

३८. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'अतिवाद' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) सन्दर्भहीन उत्तर
- (B) महिमामंडन आ अवमूल्यन दुनूसँ बचि संतुलित आलोचना करब
- (C) केवल क्रमांक याद करब
- (D) विषयक अर्थ छोड़ब

३९. 'अतिवाद' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (B) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (C) केवल नामोल्लेख अछि
- (D) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि

४०. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'डिजिटल विमर्श' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) विषयक अर्थ छोड़ब
- (B) सन्दर्भहीन उत्तर
- (C) ऑनलाइन मंच द्वारा विधागत बहस आ पाठ-प्रसार देखब
- (D) केवल क्रमांक याद करब

४१. 'डिजिटल विमर्श' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (B) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (C) केवल नामोल्लेख अछि
- (D) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि

४२. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'समीक्षा' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) सन्दर्भहीन उत्तर
- (B) विषयक अर्थ छोड़ब
- (C) प्रशंसा-सहित कसौटीपर आधारित विवेकपूर्ण मूल्यांकन करब
- (D) केवल क्रमांक याद करब

४३. 'समीक्षा' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि
- (B) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि
- (C) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (D) केवल नामोल्लेख अछि

४४. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विशेषांकमे 'भाषा-संस्कार' पर प्रश्नक सही लक्ष्य की अछि?

- (A) सन्दर्भहीन उत्तर
- (B) विषयक अर्थ छोड़ब
- (C) मैथिलीकेँ आधुनिक विधा अनुरूप शिल्पबद्ध करब
- (D) केवल क्रमांक याद करब

४५. 'भाषा-संस्कार' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूल्यांकनमे कोना सहायक अछि?

- (A) आलोचना सँ सम्बन्ध नहि
- (B) केवल नामोल्लेख अछि
- (C) ई मूल्यांकनकेँ असंबद्ध बनबैत अछि
- (D) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय २२ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) ई लेखक-केंद्रित अंक अछि, जाहिमे गीत, गजल, आंदोलन, आलोचना, समीक्षा आ जनमानसक संबंध पर अनेक लेख अछि — लेखक-विशेषांकमे बहुस्तरीय सामग्रीक कारण गतिशील प्रश्न-संख्या उचित अछि।

२. (D) गीत-शिल्प, मैथिली आन्दोलन, गजल-विवाद, समीक्षा आ जन-संवादसँ जुड़ल बहुआयामी रचनाकार — विशेषांक हुनका गीत, गजल, आलोचना आ आंदोलनक संदर्भमे देखैत अछि।

३. (A) एक दिस अतिशय महिमामंडन आ दोसर दिस अनुचित अवमूल्यन—दुनू सँ संतुलित मूल्यांकन बाधित होइत अछि — संतुलित आलोचना अतिशय प्रशंसा आ अतिशय नकार दुनूसँ बचेबाक चाही।

४. (B) उपमा प्रेरक भऽ सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र कृतित्वकेँ आच्छादित नहि करबाक चाही — महान परम्परा सँ जोड़ब उपयोगी अछि, मुदा रचनाकारक निजी स्वर बचब जरूरी।

५. (A) गीतमे लय, भाव, भाषा, संरचना आ संवेदना केँ संतुलित करबाक दक्षता — गीतकारक श्रेष्ठता भाव आ शिल्पक संयोजनमे अछि।

६. (B) हुनकर लेखन आ व्यक्तित्व भाषा-आन्दोलनक प्रेरणा, दिशा आ ऊर्जा बनल — रचनाकार भाषा-आन्दोलनक सांस्कृतिक संसाधन बनि सकैत अछि।

७. (C) गजल-रचना मे शिल्प-संस्कार, कसौटी आ परिष्कारक अनिवार्यता — गजल शिल्प धातु-कर्म जकाँ कसावट आ निर्माणक कला माँगैत अछि।

८. (D) एक लेखक/लेखनीमे बहुविध भाव, लय, कथ्य आ गजल-रंगक संभावना — संकलनक शीर्षक विविधता आ रचनात्मक फैलाव व्यक्त करैत अछि।

९. (C) गीतक परम्परा केँ सहज भाषा, आधुनिक भावबोध आ जन-संवेदना संग विकसित करब — उन्नायक ओ जे विधाकेँ नूतन ऊर्जा आ दिशा दैत अछि।

१०. (A) महत्त्वपूर्ण रचनाकारक पाठकीय उपेक्षा, पुनर्पाठक आवश्यकता आ साहित्यिक स्मृति — साहित्यिक समाजक जिम्मेदारी अछि जे महत्त्वपूर्ण कृतित्व केँ जीवित रखय।
११. (C) गजलकेँ गजल बनाबै बला संरचनात्मक अनुशासन बुझबाक लेल — गजल-शास्त्र बिना गजल-मूल्यांकन अधूरा रहैत अछि।
१२. (C) जखन रचना गजल कहायल हो मुदा रदीफ, काफिया, मतला, बहर वा शेर-स्वातंत्र्यक कसौटी पूरा नहि करय — आलोचना विधागत कसौटीक आधार पर निर्णय करैत अछि।
१३. (B) मैथिलीमे गजल संभव अछि, मुदा ओकर शास्त्रीय-संरचनात्मक कसौटीक पालन आवश्यक अछि — भाषा-विशेष मे विधा अपनाइत काल शिल्प आ भाषिक स्वभाव दुनू चाही।
१४. (A) गजल मैथिली साहित्यिक परिसरमे स्वीकृति, प्रयोग आ पाठक-सम्पर्क प्राप्त कऽ चुकल अछि — विधा जखन भाषिक समाजमे रचि-बसि जाइत अछि तखन ओ अपन घर बना लैत अछि।
१५. (D) संख्या संग शेरक गुणवत्ता, काफिया, रदीफ, बहर, कथ्य आ भाव-संयम जाँचब जरूरी अछि — गजल मूल्यांकन गुणात्मक आ संरचनात्मक दुनू होयबाक चाही।
१६. (B) महिमामंडनक सन्तुलन, विधागत कसौटी आ रचनात्मक उपलब्धिक विवेकपूर्ण पहचान — लेखक-विशेषांकमे आलोचना रचनाकारक सच्चा स्थान तय करैत अछि।
१७. (B) हुनकर कृतित्वक संगीतात्मक, लयात्मक आ संरचनात्मक विविधता देखबैत अछि — बहुविध लेखन रचनाकारक विस्तार सूचित करैत अछि।
१८. (A) यदि पाठक-समाज पुनर्पाठ नहि करत तँ महत्त्वपूर्ण साहित्य स्मृति सँ हटि सकैत अछि — साहित्यक जीवन पाठक-संवाद पर निर्भर अछि।
१९. (B) गजल-शास्त्र, पाठ, जाँच-पड़ताल आ विधागत संवादकेँ सार्वजनिक मंच देब — डिजिटल मंच आधुनिक साहित्यिक विमर्शक महत्त्वपूर्ण साधन बनल।
२०. (C) मतला गजल-रचना मे रदीफ-काफियाक प्रारम्भिक अनुशासन स्थापित करैत अछि — शास्त्रीय गजलमे मतला महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक भूमिका निभबैत अछि।
२१. (C) कारण रदीफ गजलकेँ ध्वनि-संरचना आ एकरूप लयात्मक पहचान दैत अछि — शेर स्वतंत्र होइत हुए सेहो गजल-संरचना केँ साझा अनुशासन चाही।
२२. (D) काफिया गजलका ध्वनि-संबंध, अपेक्षा आ शिल्पक कसावट सँ जोड़ैत अछि — काफिया गजल-शिल्पक केंद्रीय तत्व अछि।
२३. (A) छोट शेरमे गहन अनुभव, भाव आ विचारक संक्षिप्त संधान — गजल सघनता आ संकेतक विधा अछि।
२४. (A) गजल निजी अनुभूति केँ पाठकक मन धरि लयात्मक-संक्षिप्त रूपमे पहुँचबैत अछि — गजल भाव-संप्रेषणक सूक्ष्म माध्यम अछि।
२५. (C) भाव बिना गजल निर्जीव आ शास्त्र बिना गजल असंरचित भऽ सकैत अछि — श्रेष्ठ मूल्यांकन संवेदना आ संरचना दुनू देखबैत अछि।
२६. (D) भाषा-लालित्य, लय, भाव-गहनता, सांस्कृतिक प्रतीक आ जन-सम्बन्ध — गीतक सौंदर्य बहुस्तरीय शिल्प आ भावमे बनैत अछि।
२७. (A) स्थान, समाज, शोर, जन-जीवन आ विरोधाभासक प्रतीकात्मक प्रसंग खोलैत अछि — रचनात्मक शीर्षक सामाजिक-प्रतीकात्मक अर्थ बना सकैत अछि।
२८. (C) रचनाकारक गरिमा बचैत अछि आ साहित्यिक कसौटी सेहो स्पष्ट होइत अछि — संतुलन लेखकक सही साहित्यिक स्थान बनबैत अछि।
२९. (C) रचनाक पुनर्पाठ, आलोचनात्मक संपादन, डिजिटल उपलब्धता, शिक्षण आ चर्चा — उपेक्षित कृतित्व पुनर्पाठ आ संस्थागत प्रयत्न सँ जीवित होइत अछि।
३०. (C) गीतमे लय, भाव, भाषा आ संरचनात्मक कसावट बुझब — गीत-शिल्पक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
३१. (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — गीत-शिल्प रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
३२. (A) रदीफ, काफिया, मतला, बहर आ शेर-स्वातंत्र्यक कसौटी बुझब — गजल-शास्त्रक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
३३. (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — गजल-शास्त्र रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
३४. (A) रचनाकारक भाषा-समाजक प्रति प्रेरक भूमिका देखब — मैथिली आन्दोलनक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।

३५. (D) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — मैथिली आन्दोलन रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
३६. (A) पाठकीय स्मृति आ पुनर्पाठक आवश्यकता बूझब — जनमानसक उदासीनताक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
३७. (B) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — जनमानसक उदासीनता रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
३८. (B) महिमामंडन आ अवमूल्यन दुनूसँ बचि संतुलित आलोचना करब — अतिवादक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
३९. (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — अतिवाद रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
४०. (C) ऑनलाइन मंच द्वारा विधागत बहस आ पाठ-प्रसार देखब — डिजिटल विमर्शक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
४१. (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — डिजिटल विमर्श रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
४२. (C) प्रशंसा-सहित कसौटीपर आधारित विवेकपूर्ण मूल्यांकन करब — समीक्षाक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
४३. (A) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — समीक्षा रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।
४४. (C) मैथिलीकेँ आधुनिक विधा अनुरूप शिल्पबद्ध करब — भाषा-संस्कारक माध्यमे रवीन्द्रनाथजीक कृतित्वक व्यापक पक्ष खुलैत अछि।
४५. (D) ई हुनकर साहित्यिक योगदान केँ विधा, समाज, पाठक आ भाषा-संरचना सभसँ जोड़ि देखबैत अछि — भाषा-संस्कार रचनाकारक बहुआयामी पहचानक एक आवश्यक प्रवेश-बिन्दु अछि।

अध्याय २३ : केदारनाथ चौधरी विशेषांक — मैथिली प्रश्नोत्तरी

१. केदारनाथ चौधरी विशेषांकक मुख्य साहित्यिक उद्देश्य की अछि?

- (A) केवल फिल्म-इतिहास गिनब
- (B) केवल पुरस्कार-सूची बनायब
- (C) केदारनाथ चौधरीक उपन्यास, भाषा-दृष्टि, जन-जीवन आ उपेक्षित साहित्यिक अवदानक पुनर्मूल्यांकन
- (D) केवल जीवनी-सूचना देब

२. केदारनाथ चौधरीक कृतित्वमे प्रवासी अनुभवक महत्त्व की अछि?

- (A) प्रवास मैथिलीसँ विच्छेद करैत अछि
- (B) प्रवासी अनुभव साहित्यसँ असंबंधित
- (C) विदेश/महानगरक अनुभव हुनकर मिथिला-स्मृति आ मातृभाषा-चेतना केँ आर तीव्र करैत अछि
- (D) केवल आर्थिक तथ्य महत्त्वपूर्ण

३. 'ममता गाबय गीत' संदर्भ केदारनाथ चौधरीक सांस्कृतिक भूमिका कोना देखबैत अछि?

- (A) फिल्म साहित्यक विरोधी माध्यम अछि
- (B) एहि संदर्भक कोनो साहित्यिक अर्थ नहि
- (C) मैथिली सिनेमा आ साहित्य दुनू माध्यममे हुनकर संलग्नता भाषा-सेवाक व्यापक रूप देखबैत अछि
- (D) सिनेमा केवल मनोरंजन अछि

४. 'अंग्रेजिए पढ़ल लोक मैथिलीकेँ उबारि सकत' शीर्षकक केंद्रीय विडम्बना की अछि?

- (A) शिक्षा आ भाषा अलग-अलग क्षेत्र
- (B) अंग्रेजी शिक्षा मैथिली-विरोधी अछि
- (C) आधुनिक/विदेशी शिक्षा पाओल लोक सेहो मातृभाषाक उद्धारमे निर्णायक भूमिका निभा सकैत अछि
- (D) मातृभाषा केवल अशिक्षित लोकक विषय

५. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासक पुनर्पाठ किएक आवश्यक मानल गेल अछि?

- (A) मुख्यधारा द्वारा कम चर्चित रचनाक भीतर निहित समाज-दृष्टि, भाषा आ शिल्प केँ उजागर करबाक लेल
- (B) उपन्यासक पुनर्पाठ असंभव
- (C) पुनर्पाठ केवल पृष्ठ-सुधार
- (D) पुरान रचना बेकार होइत अछि

६. 'अबारा नहिन' पर अनेक आलेखक उपस्थिति की संकेत दैत अछि?

- (A) कृति कमजोर अछि
- (B) समीक्षा अनावश्यक अछि
- (C) एके बातक पुनरावृत्ति मात्र
- (D) कृति बहु-दृष्टि समीक्षा योग्य अछि आ ओकर सामाजिक-साहित्यिक प्रभाव व्यापक अछि

७. 'अयना' शीर्षकक आलोचना मे 'हास होइत सभ्यता-संस्कृति' कोन संकेत दैत अछि?

- (A) उपन्यास समाजक बदलैत मूल्य, संस्कार-क्षय आ आत्म-पहचानक संकटक दर्पण बनैत अछि
- (B) संस्कृति स्थिर रहैत अछि
- (C) अयना केवल वस्तु-वर्णन
- (D) सभ्यता प्रश्न असाहित्यिक

८. केदारनाथ चौधरीक 'चुम्बकीय लेखन' कहबाक आशय की बुझाईत अछि?

- (A) आलोचना अतिरंजना मात्र
- (B) चुम्बक विज्ञानक प्रश्न
- (C) हुनकर कथा-विन्यास पाठक केँ खींचि राखैत अछि आ पात्र/स्थितिमे भावात्मक आकर्षण बनबैत अछि
- (D) लेखनमे केवल चमत्कार

९. 'करार' उपन्यासक समीक्षा केदारनाथ चौधरीक कथा-संसारमे की जोड़ैत अछि?

- (A) समाजक प्रश्न नहि
- (B) करार केवल कानूनी शब्द
- (C) समीक्षा कृति नष्ट करैत अछि
- (D) सामाजिक सम्बन्ध, निर्णय, दायित्व आ मूल्य-संघर्षक विश्लेषणक द्वार खोलैत अछि

१०. 'हीना' पर प्रेमक अद्वैतक आख्यान कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) प्रेम कथ्य गौण अछि
- (B) कथा प्रेमकेँ सामाजिक, आध्यात्मिक आ मानवीय एकत्वक अनुभव रूपमे देखैत अछि
- (C) प्रेम केवल रोमांस अछि
- (D) अद्वैत दर्शनक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

११. 'चमेली रानी' शीर्षक केदारनाथ चौधरीक उपन्यास संसारमे कोन पक्ष खोलि सकैत अछि?

- (A) नारी-पात्र अप्रासंगिक
- (B) नारी-पात्र, लोक-जीवन, स्मृति आ सामाजिक सम्बन्धक संवेदनात्मक संसार
- (C) केवल फूलक नाम
- (D) शीर्षकक कोई अर्थ नहि

१२. केदारनाथ चौधरीक भाषा-प्रयोग पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) उपन्यासमे बोली निषिद्ध
- (B) उपन्यासकारक शक्ति कथ्य मात्र नहि, जीवित मैथिली शब्दावली आ बोलचालक संवेदना सेहो अछि
- (C) भाषा गौण अछि
- (D) कथ्य बिना भाषा सम्भव

१३. 'मैथिली साहित्यक कबीर' उपमा केदारनाथ चौधरीक कोन गुण पर संकेत करैत अछि?

- (A) छन्द-समानता मात्र
- (B) धार्मिक अनुकरण मात्र
- (C) निर्भीकता, लोकानुभव, रूढ़ि-विरोध आ सीधे सामाजिक हस्तक्षेप
- (D) कबीरक नाम स्मरण

१४. केदारनाथ चौधरीक साहित्यक पुनर्मूल्यांकनमे पारिवारिक संस्मरणक भूमिका की अछि?

- (A) केवल आलोचना पर्याप्त
- (B) परिवारक बात साहित्यसँ अलग
- (C) संस्मरण सदैव असत्य
- (D) रचनाकारक निजी जीवन, संस्कार आ संघर्षक मानवीय आधार प्रदान करैत अछि

१५. विशेषांकमे 'नव सामग्री' पर जोर किएक साहित्यिक रूपे महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) एहि सँ लेखक पर ताजा, बहु-दिशात्मक आ जीवित आलोचना तैयार होइत अछि
- (B) पुरान सामग्री सदैव श्रेष्ठ
- (C) संकलन पर्याप्त
- (D) नव लेखन जोखिमहीन

१६. विदेहक लेखक-विशेषांक अभिनंदनग्रंथ बनयसँ किएक बचब चाहैत अछि?

- (A) लेखकक सम्मान रोकबाक लेल
- (B) प्रशंसा संग आलोचना राखि रचनाकारक वास्तविक मूल्यांकन सम्भव करबाक लेल
- (C) आलोचना हटेबाक लेल
- (D) केवल औपचारिकता निभेबाक लेल

१७. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासमे 'सभ्यता-संस्कृतिक हास' प्रश्न किएक आवैत अछि?

- (A) हुनकर कथा समाजक बदलैत नैतिकता, पारिवारिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक विस्थापनक साक्षी बनैत अछि
- (B) सभ्यता स्थिर अछि
- (C) संस्कृति आलोचना असंगत
- (D) उपन्यास केवल प्रेमकथा

१८. 'अपरिचितसँ परिचितक यात्रा' शीर्षकक आलोचनात्मक अर्थ की अछि?

- (A) लेखक सदैव प्रसिद्ध रहलाह
- (B) उपेक्षित लेखकक रचना-लोक केँ पाठक धरि पहुँचा कऽ साहित्यिक पहचान बनायब
- (C) यात्रा-वृत्तांत मात्र
- (D) परिचयक जरूरत नहि

१९. केदारनाथ चौधरीक कथा-संसारमे मिथिलाक सामाजिक यथार्थ कोना प्रवेश करैत अछि?

- (A) पात्र, गाम-शहर, भाषा, प्रवास, परिवार आ मूल्य-संघर्षक माध्यमे
- (B) केवल सजावटी लोकचित्र
- (C) यथार्थक विरोध
- (D) समाजक अनुपस्थिति

२०. विशेषांकमे आलोचकक अनेक पीढ़ीक उपस्थिति किएक उपयोगी अछि?

- (A) केवल वरिष्ठक मत मान्य
- (B) युवा दृष्टि असंगत
- (C) एके लेखक पर पीढ़ीगत पाठ भिन्न दृष्टि, स्मृति आ मूल्यांकन दैत अछि
- (D) पीढ़ीगत संवाद अनावश्यक

२१. केदारनाथ चौधरीक साहित्यकेँ 'उपेक्षित' कहब कोन संस्थागत प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) साहित्य स्वतः प्रसिद्ध होइत अछि
- (B) मुख्यधारा चयन, अकादमिक उपेक्षा आ पाठकीय पहुँचक राजनीति पर प्रश्न
- (C) उपेक्षा असंभव
- (D) संस्था सदैव निष्पक्ष

२२. उपन्यासकारक मूल्यांकनमे कथा-सार पर्याप्त किएक नहि?

- (A) भाषा अप्रासंगिक
- (B) कथ्य संग शिल्प, भाषा, पात्र-विकास, सामाजिक दृष्टि आ वैचारिक तनाव देखबाक चाही
- (C) कथा-सार सब किछु
- (D) पात्र गौण

२३. केदारनाथ चौधरीक रचना-यात्रामे अर्थशास्त्र/प्रबंधन शिक्षा के संकेतात्मक महत्त्व की अछि?

- (A) केवल डिग्री-सूचना
- (B) समाज, लेन-देन, बाजार, प्रवास आ आधुनिक जीवनक संरचना केँ समझबाक पृष्ठभूमि
- (C) अर्थशास्त्रक कोई अर्थ नहि
- (D) शिक्षा साहित्यक विरोधी

२४. 'माहुर' जेकाँ शीर्षक कथा-व्याख्या मे कोन प्रकारक अर्थ सम्भव करैत अछि?

- (A) केवल दवाईक नाम
- (B) शीर्षक व्यर्थ
- (C) जीवन/समाजमे विष, पीड़ा, कटुता वा नैतिक संकटक रूपक
- (D) विषक साहित्यिक अर्थ नहि

२५. विदेह विशेषांकमे केदारनाथ चौधरी पर समीक्षा-संस्मरण-साक्ष्यक संयोजन किएक मूल्यवान अछि?

- (A) रचना मात्र काफी
- (B) संस्मरण हटेबाक चाही
- (C) ई रचनाकारक कृति, जीवन, प्रभाव आ पाठकीय ग्रहणशीलता केँ एक संग देखबैत अछि
- (D) साक्ष्य अनावश्यक

२६. 'मुख्य पात्रक गौण व्यथा' शीर्षक कोन आलोचनात्मक संकेत दैत अछि?

- (A) शीर्षक विरोधाभास मात्र
- (B) मुख्य पात्रक पीड़ा न होइत
- (C) गौणता बेकार
- (D) कथामे प्रमुख पात्रक दबा देल गेल पीड़ा वा उपेक्षित अनुभूति केँ केन्द्रमे आनब

२७. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासक संदर्भमे 'नारी-पात्र' पर विचार किएक आवश्यक अछि?

- (A) लैंगिक दृष्टि अनावश्यक
- (B) नारी पात्र गौण
- (C) हुनकर कथामे परिवार, प्रेम, समाज आ संस्कारक प्रश्न प्रायः नारी-अनुभवसँ जुड़ैत अछि
- (D) परिवार साहित्यिक विषय नहि

२८. लेखकक मातृभाषा-प्रेमक परीक्षण केवल भाषणसँ नहि, कोन चीजसँ होइत अछि?

- (A) घोषणा मात्र
- (B) रचना, प्रकाशन, फिल्म/पत्रिका निर्माण, आर्थिक-मानसिक जोखिम आ निरंतर सेवा सँ
- (C) नाम-स्मरण
- (D) पुरस्कार-संग्रह

२९. 'विदेह'क इंटरनेट/आर्काइव दृष्टि लेखक-विशेषांकमे की भूमिका निभबैत अछि?

- (A) आर्काइव केवल तकनीकी बात
- (B) इंटरनेट साहित्यिक शत्रु
- (C) उपेक्षित सामग्री केँ दीर्घकालिक, सार्वजनिक आ शोधयोग्य पहुँच प्रदान करैत अछि
- (D) विशेषांक क्षणिक

३०. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासमे गाम आ महानगरक सम्बन्ध कोना देखल जा सकैत अछि?

- (A) गामक साहित्यिक अर्थ नहि
- (B) दूरी, स्मृति, आर्थिक आकांक्षा, सांस्कृतिक तनाव आ भाषिक पहचानक द्वन्द्व रूपमे
- (C) महानगर मात्र सजावट
- (D) गाम-शहर असंबंधित

३१. 'अबारा नहिन' शीर्षकक साहित्यिक ऊर्जा किएक प्रभावी अछि?

- (A) शीर्षक शुष्क अछि
- (B) बोलचाल साहित्यविरोधी
- (C) शीर्षकक अर्थ नहि
- (D) एहि मे बोलचालक लय, निषेध, सामाजिक कटाक्ष आ पात्र-स्वरक तीव्रता अछि

३२. केदारनाथ चौधरीक साहित्यिक मूल्यांकनमे पुरस्कारक भूमिका कतेक होयबाक चाही?

- (A) पुरस्कार ही अंतिम सत्य
- (B) पुरस्कार अप्रासंगिक सदैव
- (C) पुरस्कार सहायक संकेत हो, मुदा रचना-पाठ आ आलोचना मुख्य आधार रहय
- (D) कृति पढ़ब जरूरी नहि

३३. 'केदारनाथ युग' कहबाक साहस कोन बात पर आधारित भऽ सकैत अछि?
- (A) केवल अतिशयोक्ति
(B) एक पुस्तक पर्याप्त
(C) मैथिली उपन्यासमे हुनकर निरंतर, अलग आ प्रभावी रचनात्मक योगदान
(D) युग शब्दक कोई अर्थ नहि
३४. केदारनाथ चौधरीक साहित्य आ मैथिली फिल्मक संयुक्त अध्ययन कोन लाभ दैत अछि?
- (A) फिल्म अलग, साहित्य अलग
(B) भाषा-संस्कृतिक बहुमाध्यमीय संघर्ष आ प्रसारक इतिहास बुझायल जा सकैत अछि
(C) संयुक्त अध्ययन भ्रम
(D) सांस्कृतिक माध्यम गौण
३५. विशेषांकक पाठक लेल सर्वोत्तम अध्ययन-रीति की होयबाक चाही?
- (A) जीवनी, कृति, समीक्षा, संस्मरण आ सामाजिक संदर्भ केँ जोड़ि तुलनात्मक पठन
(B) केवल अनुक्रम देखब
(C) केवल एक लेख पढ़ब
(D) केवल नाम याद करब
३६. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासक पात्र सभक सामाजिक महत्त्व की अछि?
- (A) पात्र केवल मनोरंजन
(B) ओ सभ मिथिला समाजक मूल्य, विघटन, आकांक्षा आ मनोवैज्ञानिक तनावक वाहक छथि
(C) पात्रक समाजसँ सम्बन्ध नहि
(D) कथानक पर्याप्त
३७. 'लालदाय' वा 'मधुबाला नहि नहि लालदाय' सन शीर्षकक आलोचनात्मक अर्थ की अछि?
- (A) लोक-पात्र अप्रासंगिक
(B) सिनेमा-नाम मात्र
(C) लोक/पात्रक मौलिकता केँ लोकप्रिय/बाहरी छवि सँ अलग चिन्हबाक आग्रह
(D) शीर्षक भ्रमपूर्ण
३८. केदारनाथ चौधरीक कथा-दृष्टिमे हास्य/कटाक्षक संभावित भूमिका की अछि?
- (A) कटाक्ष साहित्यविरोधी
(B) हास्य हलुक मात्र
(C) विसंगति छिपेबाक उपाय
(D) समाजक विसंगति केँ सरल भाषा मे तीक्ष्ण बनाकऽ प्रस्तुत करब
३९. मैथिली उपन्यासक इतिहासमे केदारनाथ चौधरी केँ राखबाक मुख्य आधार की होयबाक चाही?
- (A) केवल जन्मतिथि
(B) कृतिसंख्या, विषय-विस्तार, भाषा, सामाजिक दृष्टि आ पाठकीय प्रभावक समेकित मूल्यांकन
(C) केवल एक प्रसिद्ध पुस्तक
(D) केवल पुरस्कार
४०. 'अपरिचित साहित्यकारक नुकाएल गप' कोन आलोचनात्मक दायित्व सूचित करैत अछि?
- (A) गप छिपेने राखब
(B) नुकाएल सामग्री बेकार
(C) साहित्य इतिहासक छिपल प्रसंग, उपेक्षित कृति आ अनसुना अनुभव उजागर करब
(D) इतिहास केवल प्रसिद्ध लोकक

४१. केदारनाथ चौधरीक रचनामे आर्थिक संघर्षक संकेत किएक प्रासंगिक अछि?

- (A) आर्थिक जीवन सामाजिक सम्बन्ध, प्रवास, आकांक्षा आ नैतिक निर्णय केँ प्रभावित करैत अछि
- (B) अर्थशास्त्र साहित्यसँ अलग
- (C) धनक चर्चा निषिद्ध
- (D) संघर्षक अर्थ नहि

४२. केदारनाथ चौधरीक व्यक्तित्वक अध्ययनमे 'सादगी' आ 'दुस्साहस' एक संग किएक देखल जा सकैत अछि?

- (A) सादगी साहित्यसँ अलग
- (B) दुस्साहस नकारात्मक मात्र
- (C) भाषा-संस्कृतिक लेल शांत श्रम आ जोखिमपूर्ण पहल दुनू हुनकर कर्ममे मिलैत अछि
- (D) दुनू विरोधी अछि

४३. केदारनाथ चौधरी विशेषांकक 'अन्यान्य रचना' खण्डक उपस्थिति की बतबैत अछि?

- (A) अन्य रचना बेकार
- (B) विशेषांक केन्द्रित होइतो पत्रिका व्यापक समकालीन साहित्यिक प्रवाह सँ जुड़ल रहैत अछि
- (C) पत्रिका केवल एक लेखकक
- (D) विशेषांकक लक्ष्य भंग

४४. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासमे 'परिचित मिथिला' आ 'अपरिचित प्रश्न' कोना मिलैत अछि?

- (A) स्थानीय जीवनक भीतर छिपल आधुनिकता, प्रवास, लैंगिकता आ मूल्य-संकट उजागर होइत अछि
- (B) स्थानीयता संकीर्णता
- (C) आधुनिक प्रश्न नहि
- (D) मिथिला स्थिर तस्वीर

४५. लेखक-विशेषांकमे आलोचनात्मक असहमति किएक आवश्यक अछि?

- (A) असहमति अपमान अछि
- (B) केवल स्तुति चाही
- (C) ताहिसँ रचनाकारक वास्तविक सीमा आ शक्ति दुनू स्पष्ट होइत अछि
- (D) सीमा न देखब

४६. केदारनाथ चौधरीक साहित्यक अध्ययनमे 'लोकप्रियता' आ 'गुणवत्ता' के संबंध कोना परखब?

- (A) गुणवत्ता बिना पाठक
- (B) दुनूक कोई सम्बन्ध नहि
- (C) लोकप्रियता ही गुणवत्ता
- (D) पाठकीय पहुँच संग शिल्प, भाषा, विषयक गहनता आ दीर्घकालिक प्रभाव देखब

४७. 'इएह गूड़ खेने, कान छेदौने' सन शीर्षकक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) कहावत साहित्य नहि
- (B) लोककहावत/लोक-भाषा द्वारा सामाजिक अनुभव आ व्यंग्यक तीक्ष्ण प्रस्तुति
- (C) शीर्षक केवल हास्य
- (D) लोकभाषा अशुद्ध

४८. केदारनाथ चौधरीक उपन्यासक 'पुनर्पाठ' मैथिली पाठ्यक्रम लेल किएक उपयोगी अछि?

- (A) उपन्यास गौण
- (B) छात्रकेँ आधुनिक मैथिली उपन्यासक विविधता, उपेक्षित लेखक आ सामाजिक प्रश्न बुझाबैत अछि
- (C) पाठ्यक्रममे केवल प्राचीन साहित्य
- (D) उपेक्षित लेखक पढ़बाक नहि

४९. 'मातृभाषा'क प्रसंग केदारनाथ विशेषांकमे किएक बार-बार अर्थवान होइत अछि?

- (A) लेखन भाषा-विहीन
- (B) भाषा-संस्कार अनावश्यक
- (C) लेखकक जीवनक सांस्कृतिक निर्णय, पत्रिका/फिल्म/रचना सभ मातृभाषा-समर्पणसँ जुड़ल अछि
- (D) मातृभाषा निजी भावुकता मात्र

५०. केदारनाथ चौधरीक रचना मे 'समाजक अयना' रूपक किएक उपयुक्त अछि?

- (A) अयना केवल सजावट
- (B) उपन्यास समाजक सुंदरता मात्र नहि, ओकर दरार, विघटन आ नकाब सेहो देखबैत अछि
- (C) समाजक दरार न देखब
- (D) उपन्यास यथार्थ-विरोधी

५१. विशेषांक तैयार करबाक प्रक्रिया मे संकट आ समर्थनक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) केवल अंतिम पाठ महत्त्वपूर्ण
- (B) संकट छिपेबाक चाही
- (C) ई दिखबैत अछि जे साहित्यिक अभिलेखन सामुदायिक श्रम, असहमति आ बाधाक बीच बनैत अछि
- (D) प्रक्रिया अप्रासंगिक

५२. केदारनाथ चौधरीक आलोचना मे 'रचनाकारक जीवित प्रभाव' किएक देखबाक चाही?

- (A) कृति समाजसँ अलग
- (B) प्रभाव अप्रासंगिक
- (C) लेखकक कृति पाठक, परिवार, आलोचक, रंग/फिल्म-संस्कृति आ भाषा-समुदाय पर प्रभाव छोड़ैत अछि
- (D) लेखक मात्र निजी

५३. उपन्यासक सामाजिकता पर प्रश्न बनबैत समय कौन गलती नहि करबाक चाही?

- (A) भाषा पढ़ब
- (B) कथाकें केवल घटना-सार बनाकऽ शिल्प, भाषा आ विचार छोड़ि देब
- (C) पात्र पर ध्यान देब
- (D) संदर्भ जोड़ब

५४. केदारनाथ चौधरी विशेषांकमे 'जीबैत मुदा उपेक्षित' दृष्टि कोन मूल्य रखैत अछि?

- (A) जीवित लेखक पर लिखब निषिद्ध
- (B) उपेक्षा स्वाभाविक
- (C) रचनाकारक जीवनकालमे आलोचनात्मक मान्यता देबाक नैतिकता स्थापित करैत अछि
- (D) मृत्यु बाद मान्यता उचित

५५. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास अध्ययनमे 'मिथिला' केना बुझबाक चाही?

- (A) केवल नक्शा
- (B) केवल ग्रामीण दृश्य
- (C) केवल अतीत
- (D) भौगोलिक स्थान मात्र नहि, भाषा, स्मृति, प्रवास, संबंध आ सांस्कृतिक संघर्षक जीवित क्षेत्र

५६. 'हमरा सभक केदार बाबू' संबोधन कोन प्रकारक साहित्यिक निकटता बनबैत अछि?

- (A) रचनाकार केँ समुदाय, पाठक आ आत्मीय स्मृतिसँ जोड़ैत अछि
- (B) आलोचनासँ अलगाव
- (C) केवल सरकारी नाम
- (D) औपचारिक दूरी

५७. केदारनाथ चौधरीक कथा-संसारमे 'घर' के विषय कोना अर्थवान अछि?

- (A) घरक साहित्यिक अर्थ नहि
- (B) घर निजी मात्र
- (C) केवल भवन
- (D) घर परिवार, स्मृति, विस्थापन, स्त्री-अनुभव आ सांस्कृतिक पहचानक केन्द्र बनैत अछि

५८. विशेषांकक उच्च-स्तरीय प्रश्नमे कोन प्रकारक प्रश्न टारबाक चाही?

- (A) कोन लेख कोन पृष्ठ पर अछि अथवा अनुक्रम-संख्या कतेक अछि
- (B) भाषा-दृष्टि
- (C) शिल्पक विश्लेषण
- (D) विषयक व्याख्या

५९. केदारनाथ चौधरीक साहित्यिक मूल्यांकनमे 'कृति' आ 'कर्म' दुनू किएक देखब आवश्यक अछि?

- (A) कृति पढ़ब जरूरी नहि
- (B) व्यक्तित्व ही सब किछु
- (C) कर्म अप्रासंगिक
- (D) हुनकर रचना, फिल्म, भाषा-सेवा आ जीवन-निर्णय मिलि सांस्कृतिक व्यक्तित्व बनबैत अछि

६०. केदारनाथ चौधरी विशेषांकक प्रश्नावलीमे प्रश्न-संख्या किएक अधिक राखल गेल अछि?

- (A) स्थिर संख्या निभेबाक लेल
- (B) सरल नाम-स्मरण लेल
- (C) ई लेखक-समृद्ध, बहु-आलेखीय आ अनेक उपन्यास/समीक्षासँ युक्त अंक अछि
- (D) पृष्ठ बढ़ेबाक लेल

उत्तरमाला — अध्याय २३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) केदारनाथ चौधरीक उपन्यास, भाषा-दृष्टि, जन-जीवन आ उपेक्षित साहित्यिक अवदानक पुनर्मूल्यांकन — ई अंक केदारनाथ चौधरी केँ उपन्यासकार, निर्माता, भाषा-सेवी आ सामाजिक दृष्टिक रचनाकार रूपमे पुनः पढ़बाक प्रयास अछि।

२. (C) विदेश/महानगरक अनुभव हुनकर मिथिला-स्मृति आ मातृभाषा-चेतना केँ आर तीव्र करैत अछि — प्रवाससँ लेखक अपन भाषा, गाम आ समाज केँ नव दूरीसँ देखैत छथि; एहि दूरीमे आलोचना आ स्मृति दुनू जन्मैत अछि।

३. (C) मैथिली सिनेमा आ साहित्य दुनू माध्यममे हुनकर संलग्नता भाषा-सेवाक व्यापक रूप देखबैत अछि — मैथिली फिल्म निर्माणमे भागीदारी हुनका केवल लेखक नहि, बल्कि भाषा-संस्कृतिक कर्मयोगी रूपमे चिन्हित करैत अछि।

४. (C) आधुनिक/विदेशी शिक्षा पाओल लोक सेहो मातृभाषाक उद्धारमे निर्णायक भूमिका निभा सकैत अछि — शीर्षक आधुनिक शिक्षा आ मातृभाषा-समर्पणक सम्बन्धक जटिलता पर प्रश्न उठबैत अछि।

५. (A) मुख्यधारा द्वारा कम चर्चित रचनाक भीतर निहित समाज-दृष्टि, भाषा आ शिल्प केँ उजागर करबाक लेल — पुनर्पाठ उपेक्षित वा गलत समझल गेल लेखककेँ नव ऐतिहासिक आ आलोचनात्मक संदर्भ दैत अछि।

६. (D) कृति बहु-दृष्टि समीक्षा योग्य अछि आ ओकर सामाजिक-साहित्यिक प्रभाव व्यापक अछि — एक कृति पर अनेक दृष्टि साहित्यिक बहस, अर्थ-विस्तार आ पाठकीय सक्रियता केँ दर्शाबैत अछि।

७. (A) उपन्यास समाजक बदलैत मूल्य, संस्कार-क्षय आ आत्म-पहचानक संकटक दर्पण बनैत अछि — अयना रूपक समाजकेँ अपने चेहरा देखबाक आलोचनात्मक अवसर दैत अछि।

८. (C) हुनकर कथा-विन्यास पाठक केँ खींचि राखैत अछि आ पात्र/स्थितिमे भावात्मक आकर्षण बनबैत अछि — चुम्बकीयता कथा-ऊर्जा, भाषा-प्रवाह आ पात्र-संवेदना सँ बनैत अछि।

९. (D) सामाजिक सम्बन्ध, निर्णय, दायित्व आ मूल्य-संघर्षक विश्लेषणक द्वार खोलैत अछि — करार जेकाँ शीर्षक सम्बन्धक औपचारिकता आ जीवनक अनौपचारिक भाव-द्वन्द्व पर विचार करबैत अछि।

१०. (B) कथा प्रेमकेँ सामाजिक, आध्यात्मिक आ मानवीय एकत्वक अनुभव रूपमे देखैत अछि — अद्वैत शब्द प्रेमक द्वैत-भंग, आत्मीयता आ मानवीय समर्पणक संकेत दैत अछि।
११. (B) नारी-पात्र, लोक-जीवन, स्मृति आ सामाजिक सम्बन्धक संवेदनात्मक संसार — शीर्षक पात्र-केंद्रित कथा आ सामाजिक परिवेशक भाव-सूत्रक संकेत दैत अछि।
१२. (B) उपन्यासकारक शक्ति कथ्य मात्र नहि, जीवित मैथिली शब्दावली आ बोलचालक संवेदना सेहो अछि — भाषा समाजक स्मृति आ पात्रक जीवंतता केँ वहन करैत अछि।
१३. (C) निर्भीकता, लोकानुभव, रूढ़ि-विरोध आ सीधे सामाजिक हस्तक्षेप — कबीर-संकेत विद्रोही लोक-स्वर आ सामाजिक आलोचनाक ओर इशारा करैत अछि।
१४. (D) रचनाकारक निजी जीवन, संस्कार आ संघर्षक मानवीय आधार प्रदान करैत अछि — पारिवारिक स्मृति आलोचना केँ जीवनी-परिप्रेक्ष्य दैत अछि, मुदा ओकरा रचना-पाठसँ जोड़ब आवश्यक अछि।
१५. (A) एहि सँ लेखक पर ताजा, बहु-दिशात्मक आ जीवित आलोचना तैयार होइत अछि — नव सामग्री विशेषांक केँ अभिनंदनग्रंथ बनयसँ बचबैत अछि आ आलोचनात्मक जीवंतता दैत अछि।
१६. (B) प्रशंसा संग आलोचना राखि रचनाकारक वास्तविक मूल्यांकन सम्भव करबाक लेल — एकतरफा प्रशंसा लेखकक विकास आ पाठकक समझ दुनू केँ सीमित करैत अछि।
१७. (A) हुनकर कथा समाजक बदलैत नैतिकता, पारिवारिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक विस्थापनक साक्षी बनैत अछि — उपन्यास समाज-परिवर्तनक सूक्ष्म रजिस्टर होइत अछि।
१८. (B) उपेक्षित लेखकक रचना-लोक केँ पाठक धरि पहुँचा कऽ साहित्यिक पहचान बनायब — विशेषांक अपरिचित/कम-पढ़ल लेखककेँ सामूहिक पठनक माध्यमे परिचित बनबैत अछि।
१९. (A) पात्र, गाम-शहर, भाषा, प्रवास, परिवार आ मूल्य-संघर्षक माध्यमे — समाज कथा मे पात्रक व्यवहार, बोली, सम्बन्ध आ संघर्ष द्वारा उपस्थित होइत अछि।
२०. (C) एके लेखक पर पीढ़ीगत पाठ भिन्न दृष्टि, स्मृति आ मूल्यांकन दैत अछि — बहु-पीढ़ी आलोचना लेखकक स्थायी महत्व आ बदलैत ग्रहणशीलता देखबैत अछि।
२१. (B) मुख्यधारा चयन, अकादमिक उपेक्षा आ पाठकीय पहुँचक राजनीति पर प्रश्न — उपेक्षा व्यक्तिगत नहि; प्रकाशन, संस्था, समीक्षा आ पाठ्यक्रम सभसँ जुड़ल होइत अछि।
२२. (B) कथ्य संग शिल्प, भाषा, पात्र-विकास, सामाजिक दृष्टि आ वैचारिक तनाव देखबाक चाही — उच्च-स्तरक अध्ययन रचनाक बनावट आ प्रभाव दुनू पर विचार करैत अछि।
२३. (B) समाज, लेन-देन, बाजार, प्रवास आ आधुनिक जीवनक संरचना केँ समझबाक पृष्ठभूमि — लेखकक बौद्धिक पृष्ठभूमि ओकर कथात्मक दृष्टि केँ अप्रत्यक्ष रूपे प्रभावित कऽ सकैत अछि।
२४. (C) जीवन/समाजमे विष, पीड़ा, कटुता वा नैतिक संकटक रूपक — शीर्षक पाठककेँ रूपकात्मक संकेत दैत अछि; माहुर सामाजिक विषाक्तताक बिम्ब भऽ सकैत अछि।
२५. (C) ई रचनाकारक कृति, जीवन, प्रभाव आ पाठकीय ग्रहणशीलता केँ एक संग देखबैत अछि — लेखक-विशेषांक बहु-प्रकारक सामग्रीसँ समग्र चित्र बनबैत अछि।
२६. (D) कथामे प्रमुख पात्रक दबा देल गेल पीड़ा वा उपेक्षित अनुभूति केँ केन्द्रमे आनब — अच्छी आलोचना कथा मे छिपल पीड़ा, मौन आ उपपाठ केँ पहचानैत अछि।
२७. (C) हुनकर कथामे परिवार, प्रेम, समाज आ संस्कारक प्रश्न प्रायः नारी-अनुभवसँ जुड़ैत अछि — उपन्यासक सामाजिक यथार्थ स्त्री-अनुभव बिना अधूरा रहैत अछि।
२८. (B) रचना, प्रकाशन, फिल्म/पत्रिका निर्माण, आर्थिक-मानसिक जोखिम आ निरंतर सेवा सँ — भाषा-सेवा कर्मप्रधान अछि; केदारनाथ चौधरीक जीवनक प्रसंग एहि बातकेँ बल दैत अछि।
२९. (C) उपेक्षित सामग्री केँ दीर्घकालिक, सार्वजनिक आ शोधयोग्य पहुँच प्रदान करैत अछि — डिजिटल आर्काइव भविष्यक अध्ययन लेल सामग्री सुरक्षित रखैत अछि।

३०. (B) दूरी, स्मृति, आर्थिक आकांक्षा, सांस्कृतिक तनाव आ भाषिक पहचानक द्वन्द्व रूपमे — प्रवास/महानगर मैथिली साहित्यमे पहचान-संकट आ स्मृति-लेखनक महत्वपूर्ण कारण अछि।
३१. (D) एहि मे बोलचालक लय, निषेध, सामाजिक कटाक्ष आ पात्र-स्वरक तीव्रता अछि — लोकभाषीय शीर्षक कथा केँ जीवित स्वर दैत अछि।
३२. (C) पुरस्कार सहायक संकेत हो, मुदा रचना-पाठ आ आलोचना मुख्य आधार रहय — गंभीर अध्ययन सम्मानक सूचना सँ शुरू भऽ सकैत अछि, मुदा निर्णय रचनाक विश्लेषणपर निर्भर होइत अछि।
३३. (C) मैथिली उपन्यासमे हुनकर निरंतर, अलग आ प्रभावी रचनात्मक योगदान — युग-निर्धारण रचनात्मक मात्रा, गुणवत्ता, प्रभाव आ अलग प्रवृत्ति सँ जुड़ल होइत अछि।
३४. (B) भाषा-सांस्कृतिक बहुमाध्यमीय संघर्ष आ प्रसारक इतिहास बुझायल जा सकैत अछि — भाषा आंदोलनमे साहित्य, फिल्म, पत्रिका, मंच—सब माध्यम मिलि काज करैत अछि।
३५. (A) जीवनी, कृति, समीक्षा, संस्मरण आ सामाजिक संदर्भ केँ जोड़ि तुलनात्मक पठन — समग्र विशेषांक बहु-स्तरीय पठन माँगैत अछि।
३६. (B) ओ सभ मिथिला समाजक मूल्य, विघटन, आकांक्षा आ मनोवैज्ञानिक तनावक वाहक छथि — पात्रक माध्यमे लेखक समाजक जटिलता अनुभव करबैत छथि।
३७. (C) लोक/पात्रक मौलिकता केँ लोकप्रिय/बाहरी छवि सँ अलग चिन्हबाक आग्रह — ई शीर्षक बाहरी ग्लैमरक बदला स्थानीय पात्रक अपनी पहचान पर जोर दैत अछि।
३८. (D) समाजक विसंगति केँ सरल भाषा मे तीक्ष्ण बनाकऽ प्रस्तुत करब — हास्य आ व्यंग्य गंभीर सामाजिक आलोचनाक प्रभावी माध्यम होइत अछि।
३९. (B) कृतिसंख्या, विषय-विस्तार, भाषा, सामाजिक दृष्टि आ पाठकीय प्रभावक समेकित मूल्यांकन — इतिहास लेखनमे लेखकक पूरा रचना-संसार आ प्रभाव देखल जाइत अछि।
४०. (C) साहित्य इतिहासक छिपल प्रसंग, उपेक्षित कृति आ अनसुना अनुभव उजागर करब — आलोचना केवल स्थापित नामक पुनरावृत्ति नहि; छिपल धरोहर खोजब सेहो अछि।
४१. (A) आर्थिक जीवन सामाजिक सम्बन्ध, प्रवास, आकांक्षा आ नैतिक निर्णय केँ प्रभावित करैत अछि — उपन्यास आधुनिक जीवनक आर्थिक दबाव केँ कथात्मक रूप दे सकैत अछि।
४२. (C) भाषा-सांस्कृतिक लेल शांत श्रम आ जोखिमपूर्ण पहल दुनू हुनकर कर्ममे मिलैत अछि — सांस्कृतिक कर्म प्रायः विनम्रता आ जोखिमक संगम होइत अछि।
४३. (B) विशेषांक केन्द्रित होइतो पत्रिका व्यापक समकालीन साहित्यिक प्रवाह सँ जुड़ल रहैत अछि — ई-पत्रिका लेखक-विशेषांकक संग समकालीन रचना-संवाद सेहो जारी रखैत अछि।
४४. (A) स्थानीय जीवनक भीतर छिपल आधुनिकता, प्रवास, लैंगिकता आ मूल्य-संकट उजागर होइत अछि — स्थानीय साहित्य सार्वभौमिक प्रश्न केँ अपने समाजक भाषा मे उठबैत अछि।
४५. (C) ताहिसँ रचनाकारक वास्तविक सीमा आ शक्ति दुनू स्पष्ट होइत अछि — संतुलित मूल्यांकन प्रशंसा आ प्रश्न दुनू सँ बनैत अछि।
४६. (D) पाठकीय पहुँच संग शिल्प, भाषा, विषयक गहनता आ दीर्घकालिक प्रभाव देखब — साहित्यक मूल्य केवल बिक्री/प्रसिद्धि नहि, ओकर कलात्मक-सामाजिक टिकाउपन सेहो अछि।
४७. (B) लोककहावत/लोक-भाषा द्वारा सामाजिक अनुभव आ व्यंग्यक तीक्ष्ण प्रस्तुति — मैथिली आलोचना आ कथा लोकमुहावरा सँ अपन ऊर्जा लैत अछि।
४८. (B) छात्रकेँ आधुनिक मैथिली उपन्यासक विविधता, उपेक्षित लेखक आ सामाजिक प्रश्न बुझाबैत अछि — पाठ्यक्रम जँ व्यापक होएत तँ साहित्य इतिहासक संकुचित रूप टूटत।
४९. (C) लेखकक जीवनक सांस्कृतिक निर्णय, पत्रिका/फिल्म/रचना सभ मातृभाषा-समर्पणसँ जुड़ल अछि — मातृभाषा एहि अंकक केन्द्रीय नैतिक-सांस्कृतिक धुरी अछि।
५०. (B) उपन्यास समाजक सुंदरता मात्र नहि, ओकर दरार, विघटन आ नकाब सेहो देखबैत अछि — साहित्यिक अयना आलोचनात्मक होइत अछि; ओ असुविधाजनक सत्य सेहो देखबैत अछि।
५१. (C) ई दिखबैत अछि जे साहित्यिक अभिलेखन सामुदायिक श्रम, असहमति आ बाधाक बीच बनैत अछि — विशेषांक स्वयं साहित्य-सांस्कृतिक सामूहिक निर्माणक उदाहरण अछि।

५२. (C) लेखक कृति पाठक, परिवार, आलोचक, रंग/फिल्म-संस्कृति आ भाषा-समुदाय पर प्रभाव छोड़ैत अछि — रचना-पाठक सम्बन्ध साहित्यक सामाजिक जीवन बनबैत अछि।
५३. (B) कथाकेँ केवल घटना-सार बनाकऽ शिल्प, भाषा आ विचार छोड़ि देब — सही प्रश्न घटना-सारसँ आगू बढ़ि रचना-प्रक्रिया आ अवधारणा पर केन्द्रित होएबाक चाही।
५४. (C) रचनाकारक जीवनकालमे आलोचनात्मक मान्यता देबाक नैतिकता स्थापित करैत अछि — जीवित लेखक पर गंभीर विशेषांक साहित्यिक न्यायक सक्रिय रूप अछि।
५५. (D) भौगोलिक स्थान मात्र नहि, भाषा, स्मृति, प्रवास, संबंध आ सांस्कृतिक संघर्षक जीवित क्षेत्र — मिथिला साहित्य मे बहुस्तरीय सांस्कृतिक अनुभव बनि प्रकट होइत अछि।
५६. (A) रचनाकार केँ समुदाय, पाठक आ आत्मीय स्मृतिसँ जोड़ैत अछि — आत्मीय संबोधन लेखकक सामुदायिक स्थान बतबैत अछि, यद्यपि आलोचना संतुलित रहबाक चाही।
५७. (D) घर परिवार, स्मृति, विस्थापन, स्त्री-अनुभव आ सांस्कृतिक पहचानक केन्द्र बनैत अछि — उपन्यासमे घर सामाजिक संस्था आ भावनात्मक भूगोल दुनू अछि।
५८. (A) कोन लेख कोन पृष्ठ पर अछि अथवा अनुक्रम-संख्या कतेक अछि — उच्च-स्तरक प्रश्न अवधारणा, शिल्प, आलोचना आ साहित्यिक अर्थ पर आधारित होएबाक चाही।
५९. (D) हुनकर रचना, फिल्म, भाषा-सेवा आ जीवन-निर्णय मिलि सांस्कृतिक व्यक्तित्व बनबैत अछि — समग्र मूल्यांकनमे कृति-विश्लेषण प्राथमिक अछि, मुदा सांस्कृतिक कर्म ओकर संदर्भ बनबैत अछि।
६०. (C) ई लेखक-समृद्ध, बहु-आलेखीय आ अनेक उपन्यास/समीक्षासँ युक्त अंक अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक गहराई आ विविधता पर आधारित होएबाक चाही।

अध्याय २४ : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक — मैथिली प्रश्नोत्तरी

१. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांकक प्रमुख केन्द्र की अछि?

- (A) केवल जीवनी-सूचना
- (B) केवल अनुक्रम
- (C) मैथिली रंगमंच, नारी-सशक्तिकरण, अभिनय, साहित्यिक छवि आ सांस्कृतिक स्मृतिक समेकित मूल्यांकन
- (D) केवल पुरस्कार-सूची

२. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क मूल्यांकन कठिन किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) अभिनय क्षणिक कला अछि आ पुरान रंगमंचीय प्रस्तुति सभक पर्याप्त रेकर्डिंग उपलब्ध नहि होइत
- (B) लेखन असंभव
- (C) हुनकर काज महत्वहीन
- (D) रंगमंच साहित्य नहि

३. 'मैथिली रंग मंच के पितामही' उपाधि कोन सांस्कृतिक संकेत दैत अछि?

- (A) केवल उम्रक संकेत
- (B) औपचारिक संबोधन मात्र
- (C) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अग्रणी, पोषक आ मातृवत् रंगमंचीय भूमिका
- (D) रंगमंचसँ दूरी

४. 'रंगमंच मे राजा किओ नहि होइत छै' कथनक नाट्य-दर्शन की अछि?

- (A) निर्देशक अकेला रंगमंच
- (B) रंगमंच सामूहिक कला अछि; प्रत्येक कलाकार, तकनीशियन आ सहयोगी समान रूपे आवश्यक अछि
- (C) मुख्य अभिनेता सब किछु
- (D) दर्शक अप्रासंगिक

५. 'कला लेल वरिष्ठता नै दक्षता मापदंड छै' कथन कोन मूल्य स्थापित करैत अछि?

- (A) कला मे पद, उमेर वा प्रतिष्ठा नहि, कौशल, साधना आ प्रस्तुति-क्षमता निर्णायक अछि
- (B) कला मे अभ्यासक जरूरत नहि
- (C) दक्षता गौण
- (D) वरिष्ठता ही कला

६. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क नारी-सशक्तिकरण रूप किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) नारी भूमिका गौण
- (B) रंगमंच पुरुषक क्षेत्र मात्र
- (C) सशक्तिकरण असंगत
- (D) ओ मैथिली रंगमंचमे महिला उपस्थिति, अभिनय-स्वायत्तता आ सांस्कृतिक नेतृत्वक उदाहरण छथि

७. 'ममता'क साक्षात प्रतिमूर्ति कहबाक साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) ममता असाहित्यिक
- (B) अभिनय आ व्यक्तित्वमे मातृत्व, करुणा, आत्मीयता आ भाव-प्रामाणिकताक अनुभव
- (C) केवल फिल्मक नाम
- (D) भावक कोई अर्थ नहि

८. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर संस्मरणक बहुलता किएक स्वाभाविक अछि?

- (A) केवल आलोचना मान्य
- (B) रंगकर्मीक लोक प्रायः मंच-स्मृति, संबंध आ प्रत्यक्ष अनुभवक माध्यमे याद करैत अछि
- (C) संस्मरण बेकार
- (D) व्यक्तिगत अनुभव निषिद्ध

९. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क साहित्यिक छवि पर चर्चा किएक आवश्यक अछि?

- (A) साहित्यिक पक्ष असंगत
- (B) केवल मंच परखब
- (C) रंगमंचीय व्यक्तित्वक संग हुनकर लेखकीय/संस्मरणात्मक/रचनात्मक पक्ष सेहो बुझबाक लेल
- (D) रंगकर्मी लेखक नहि भऽ सकैत

१०. 'ओ दिन ओ पल' शीर्षक प्रेमलता मिश्रक स्मृति-लेखनमे की संकेत करैत अछि?

- (A) शीर्षकक अर्थ नहि
- (B) व्यक्तिगत अनुभव केँ सांस्कृतिक स्मृति आ रंगमंचीय इतिहासमे बदलबाक प्रक्रिया
- (C) स्मृति अविश्वसनीय सदैव
- (D) समय-सूची मात्र

११. विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृंखलामे प्रेमलता विशेषांक निकालबक महत्त्व की अछि?

- (A) जीवित/उपेक्षित रचनाकार-कर्मिक जीवनकालमे आलोचनात्मक मान्यता देबाक प्रयास
- (B) मृत्यु बाद सम्मान उचित
- (C) सजीव कलाकार पर विशेषांक असंभव
- (D) उपेक्षा जरूरी

१२. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अभिनयक मूल्यांकनमे रेकॉर्डिंगक अभाव कोन समस्या उत्पन्न करैत अछि?

- (A) प्रत्यक्ष प्रस्तुति, देह-भाषा, स्वर, विराम आ मंचीय ऊर्जाक पुनरावलोकन कठिन भऽ जाइत अछि
- (B) अभिनय लिखित पाठ मात्र
- (C) दर्शक स्मृति बेकार
- (D) रेकॉर्डिंगक जरूरत नहि

१३. नारी रंगकर्मी पर विशेषांक मैथिली रंगमंच इतिहासमे कोन कमी पूरा करैत अछि?

- (A) रंगमंच इतिहास पूर्ण अछि
- (B) नारी दृष्टि अनावश्यक
- (C) स्त्री योगदान अनुपस्थित मानब
- (D) स्त्री कलाकारक योगदान केँ अलग सँ अभिलेखित आ मूल्यांकित करैत अछि

१४. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क साक्षात्कारक शैक्षिक महत्त्व की अछि?

- (A) कलाकारक अपने अनुभव, विचार, संघर्ष आ कला-दृष्टि प्रत्यक्ष रूपे उपलब्ध करबैत अछि
- (B) साक्षात्कार मनोरंजन मात्र
- (C) कलाकारक मत महत्त्वहीन
- (D) केवल आलोचक बोले

१५. 'मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम स्तम्भ' कथन प्रेमलताजीकेँ कोन परिप्रेक्ष्य मे राखैत अछि?

- (A) रंगमंच विद्वत्ता नहि
- (B) विदुषी परम्परा असंगत
- (C) स्त्री-विद्वत्ता, संस्कृति, अभिनय, साहित्य आ सामाजिक प्रेरणाक दीर्घ परम्परा मे
- (D) केवल व्यक्तिगत प्रशंसा

१६. विशेषांकमे 'वर्तनी ओ मानकता' पर संपादकीय टिप्पणी कोन बृहत्तर प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) वर्तनीक कोई महत्त्व नहि
- (B) समावेशी प्रकाशन आ भाषा-मानकीकरणक बीच संतुलनक प्रश्न
- (C) केवल एक रूप मान्य
- (D) समावेशिता असंभव

१७. प्रेमलता विशेषांक अभिनंदनग्रंथ नहि बनय, एहि संपादकीय आग्रहक अर्थ की अछि?

- (A) सम्मान हटायब
- (B) केवल दोष खोजब
- (C) आलोचना निषिद्ध
- (D) प्रशंसा संग आलोचना, सीमा आ वास्तविक मूल्यांकन केँ स्थान देब

१८. प्रेमलता मिश्रक रंगमंचीय भूमिका केँ 'प्रेरणास्रोत' कहबाक आधार की अछि?

- (A) प्रेरणा असंगत
- (B) केवल नाम प्रसिद्ध
- (C) हुनकर मंच-साधना, स्त्री-भागीदारी, अभिनय-संस्कार आ अगिला पीढ़ी पर प्रभाव
- (D) मंचक प्रभाव नहि

१९. मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक आधुनिक इतिहास कम्मे दिनक कहलासँ की समस्या देखाइत अछि?

- (A) स्त्री-अभिनयक दस्तावेज, अवसर आ सामाजिक स्वीकार्यता सीमित रहल
- (B) महिला कलाकार नहि रहलथि
- (C) रंगमंच असाहित्यिक
- (D) इतिहासक कोई जरूरत नहि

२०. प्रेमलता मिश्रक व्यक्तित्व पर पारिवारिक संस्मरणक भूमिका की अछि?

- (A) संस्मरण हटेबाक चाही
- (B) केवल मंच पर्याप्त
- (C) परिवारक बात असंगत
- (D) कलाकारक निजी संवेदना, संस्कार, संबंध आ मनुष्य रूपकेँ सामने आनैत अछि

२१. 'मैथिल नारीक सांस्कृतिक-साहित्यिक स्वर' कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यसँ नारी अलग
- (B) प्रेमलता मिश्र स्त्री अनुभव, मंच, लेखन आ संस्कृति केँ आवाज दैत छथि
- (C) स्त्री-स्वर गौण
- (D) संस्कृति पुरुष-केंद्रित मात्र

२२. प्रेमलता मिश्रक मूल्यांकनमे 'दक्षता' पर जोर रंगमंचक कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) अभिनय सहज बिना अभ्यास
- (B) दक्षता केवल प्रमाणपत्र
- (C) अभिनय अभ्यास, अनुशासन, समय-बोध, संवाद, देह-भाषा आ मंच-सामूहिकता पर आधारित कला अछि
- (D) मंच पर अनुशासन नहि

२३. प्रेमलता विशेषांकमे अनेक लेखकक आवाज किएक उपयोगी अछि?

- (A) संस्मरणक जरूरत नहि
- (B) एक मत पर्याप्त
- (C) बहु-स्वर भ्रम
- (D) एक कलाकारक बहुआयामी प्रभाव—परिवार, मंच, साहित्य, समाज, पीढ़ी—सब दृष्टिसँ उजागर होइत अछि

२४. 'रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि' शीर्षक कोन सीमा तोड़ैत अछि?

- (A) साहित्य मंच-विरोधी
- (B) रंगमंच आ साहित्यकेँ अलग-अलग खाँचामे बाँटबाक प्रवृत्ति
- (C) छवि असंगत
- (D) रंगमंच लिखित नहि

२५. प्रेमलता मिश्रक विशेषांकमे स्त्री-शिक्षा/विदुषी परम्परा पर प्रश्न किएक उठैत अछि?

- (A) स्त्री केवल पात्र
- (B) शिक्षा रंगमंचसँ अलग
- (C) विदुषी प्रश्न अप्रासंगिक
- (D) कलाकारक सांस्कृतिक नेतृत्व स्त्री-बौद्धिकता आ सामाजिक भागीदारीसँ जुड़ल अछि

२६. प्रेमलता मिश्रक अभिनय-स्मृति केँ केवल भावुकता मानब किएक गलत अछि?

- (A) स्मृति सदैव झूठ
- (B) भावना असाहित्यिक
- (C) स्मृति थिएटर इतिहासक स्रोत होय सकैत अछि, जँ ओकर आलोचनात्मक उपयोग कएल जाए
- (D) इतिहास केवल सरकारी दस्तावेज

२७. 'मिथिलापुत्री' संबोधन प्रेमलताजीकेँ कोन सांस्कृतिक अर्थ दैत अछि?

- (A) संबोधन निरर्थक
- (B) ओ हुनका व्यक्तिगत कलाकारसँ आगू मिथिला-संस्कृतिक प्रतिनिधि स्त्री-स्वर बनबैत अछि
- (C) केवल जन्मस्थल सूचना
- (D) संस्कृति-संबंध नहि

२८. प्रेमलता विशेषांकमे संपादकीय संकट—लेख न आबब, सहयोगी चुप भऽ जाएब—किएक बताओल गेल अछि?

- (A) विशेषांक स्वतः बनैत अछि
- (B) प्रक्रिया छिपेबाक चाही
- (C) साहित्यिक अभिलेखनक श्रम, सामुदायिक सहयोगक कठिनाई आ संपादकीय ईमानदारी देखेबाक लेल
- (D) व्यक्तिगत शिकायत मात्र

२९. प्रेमलता मिश्रक योगदानकेँ फिल्म 'ममता...' / मंचीय ममता सँ जोड़ि देखब कोन लाभ दैत अछि?

- (A) मंच-सिनेमा अलगाव
- (B) मातृत्व, अभिनय, लोक-संवेदना आ मैथिली दृश्य-संस्कृतिक संगम बुझाईत अछि
- (C) ममता केवल निजी गुण
- (D) फिल्मक कोई संबंध नहि

३०. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क बहु-नाम/उपनाम 'प्रेम' साहित्यिक अर्थ किएक ग्रहण करैत अछि?

- (A) उपनाम निरर्थक
- (B) हुनकर सार्वजनिक छवि आत्मीयता, समर्पण, रंगमंच प्रेम आ सांस्कृतिक स्नेहसँ जुड़ल अछि
- (C) प्रेम विषय निषिद्ध
- (D) नामक अर्थ नहि

३१. रंगमंचक क्षणभंगुरता के कारण विशेषांकक दस्तावेजीकरण किएक जरूरी अछि?

- (A) इतिहास नहि बनय
- (B) क्षणभंगुरता मूल्य घटबैत अछि
- (C) जे प्रस्तुति विलीन भऽ गेल, ओकर स्मृति, लेख, फोटो, साक्षात्कार भविष्यक इतिहासक आधार बनैत अछि
- (D) दस्तावेज अनावश्यक

३२. प्रेमलता मिश्रक काज पर प्रश्न बनबैत समय कोन प्रकारक प्रश्न कमजोर मानल जाएत?

- (A) रंगमंच-दर्शन
- (B) नारी-सशक्तिकरण
- (C) केवल कोन लेख कोन पृष्ठ पर अछि वा अनुक्रम संख्या कतेक अछि
- (D) स्मृति-लेखन

३३. प्रेमलता विशेषांकक पाठनमे 'व्यक्ति' आ 'संस्था'क सम्बन्ध कोना बुझब?

- (A) समुदायक भूमिका नहि
- (B) संस्था अप्रासंगिक
- (C) व्यक्ति अकेला
- (D) व्यक्ति कलाकारक योगदान मैथिली रंगमंच, पत्रिका, परिवार आ सांस्कृतिक समुदायसँ मिलि संस्था-सदृश प्रभाव बनबैत अछि

३४. प्रेमलता मिश्रक संदर्भमे 'पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी' कथन किएक विचारणीय अछि?

- (A) ई आधुनिक मैथिली रंगमंचमे स्त्री उपस्थिति, नेतृत्व आ ऐतिहासिक अग्रगामिताक संकेत दैत अछि
- (B) इतिहासक कोई अर्थ नहि
- (C) सशक्त शब्द निरर्थक
- (D) स्त्री अभिनय गौण

३५. प्रेमलता मिश्रक लेखकीय/संस्मरणात्मक रचना 'ओ दिन ओ पल' किएक रंगमंच इतिहास लेल उपयोगी अछि?

- (A) व्यक्तिगत अनुभव हटाबय
- (B) मंच इतिहास केवल तिथि
- (C) ओ समय, संबंध, अनुभव आ मंच-संस्कृतिक अंदरूनी स्मृति उपलब्ध करबैत अछि
- (D) संस्मरण असाहित्यिक

३६. विशेषांकक समावेशी वर्तनी-दृष्टि पाठकसँ कोन अपेक्षा रखैत अछि?

- (A) सामग्री गौण
- (B) पाठक विविध लेखकीय रूप स्वीकार करैत अवधारणा, सामग्री आ अनुभव पर ध्यान देथि
- (C) केवल मानकता देखू
- (D) हर भिन्न रूप अस्वीकार

३७. प्रेमलता मिश्रक रंगमंचीय मूल्यांकनमे दर्शकक स्मृति किएक प्रासंगिक अछि?

- (A) स्मृति निषिद्ध
- (B) दर्शक असंगत
- (C) दर्शक मंचीय प्रभावक प्रत्यक्ष साक्षी होइत छथि
- (D) मंच केवल कलाकारक

३८. 'प्रेमलता बहिन' सन आत्मीय शीर्षक आलोचना मे कोन स्वर आनैत अछि?

- (A) केवल तथ्य-सूची
- (B) आत्मीयता निषिद्ध
- (C) सामुदायिक निकटता, स्नेह, साझा स्मृति आ मानवीय अनुभवक स्वर
- (D) औपचारिक दूरी

३९. प्रेमलता मिश्रक योगदानक शिक्षण-उपयोगिता की अछि?

- (A) मैथिली रंगमंच, स्त्री-अध्ययन, प्रदर्शन-कला आ सांस्कृतिक इतिहास पढ़ेबामे उदाहरण रूपे
- (B) शिक्षणमे उपयोग नहि
- (C) स्त्री-अध्ययन असंगत
- (D) रंगमंच पाठ्यक्रम बाहर

४०. प्रेमलता मिश्रक अभिनय पर 'वर्तमानमे ९०% मूल्यांकन संभव नहि' सन विचार कोन चेतावनी दैत अछि?

- (A) प्रदर्शन-कला केँ समय पर रिकॉर्ड, लिखित आ संग्रहित नहि केलासँ इतिहास खो जाइत अछि
- (B) संग्रहणक जरूरत नहि
- (C) रंगमंच क्षणिक तैं तुच्छ
- (D) मूल्यांकन असंभव तैं छोड़ू

४१. प्रेमलता विशेषांकमे आलोचना आ श्रद्धा दुनू साथे किएक चलैत अछि?
- (A) श्रद्धा आ आलोचना विरोधी
(B) केवल दोष
(C) केवल प्रशंसा
(D) कलाकारक प्रति सम्मान राखैत हुनकर काजक वास्तविक साहित्यिक-सांस्कृतिक मूल्यांकन करबाक लेल
४२. प्रेमलता मिश्रक बहुस्तरीय व्यक्तित्वक मूल्यांकनमे कोन गलती नहि होयबाक चाही?
- (A) हुनका केवल एक भूमिका—जैसे अभिनेत्री—धरि सीमित करि देब
(B) नारी नेतृत्व देखब
(C) साहित्यिक छवि देखब
(D) रंगकर्मी रूप देखब
४३. प्रेमलता मिश्रक विशेषांकमे 'नव सामग्री'क आग्रह किएक महत्वपूर्ण अछि?
- (A) केवल पुनर्प्रकाशन पर्याप्त
(B) पुरान स्तुतिपर निर्भर नहि रहि ताजा अनुभव, आलोचना आ पुनर्पाठ तैयार करबाक लेल
(C) समीक्षा बेकार
(D) नव लेखनक आवश्यकता नहि
४४. मैथिली रंगमंचक इतिहासमे प्रेमलता मिश्रक उदाहरण भविष्यक कलाकार केँ की सिखबैत अछि?
- (A) केवल प्रसिद्धि
(B) भाषा-विमुखता
(C) साधना, सामूहिकता, दक्षता, भाषा-निष्ठा आ स्त्री-साहसक महत्व
(D) मंच पर अनुशासनहीनता
४५. प्रेमलता मिश्रक नारी-सशक्तिकरणकेँ केवल 'स्त्री होएबाक तथ्य' धरि सीमित किएक नहि करब?
- (A) सशक्तिकरण हुनकर सक्रिय मंच-साधना, नेतृत्व, रचना, संघर्ष आ सांस्कृतिक प्रभावमे अछि
(B) कर्मक जरूरत नहि
(C) सशक्तिकरण केवल नारा
(D) लिंग-तथ्य ही पर्याप्त
४६. प्रेमलता विशेषांकमे 'रंगमंच' आ 'साहित्य'क अंतर्संबंध कोना समझल जाए?
- (A) दर्शक अनावश्यक
(B) मंच असाहित्यिक
(C) नाटक लिखित पाठ होएबासँ आगू मंच, देह, स्वर, भाव आ दर्शक-संवादमे पूर्ण होइत अछि
(D) नाटक केवल पुस्तक
४७. प्रेमलता मिश्रक स्मृति पर लिखल लेख सभक आलोचनात्मक उपयोग कोना करब?
- (A) जैसा लिखा वैसा अंतिम सत्य
(B) संस्मरणक भावुकता केँ संदर्भ, अन्य साक्ष्य आ रचनात्मक विश्लेषणसँ जोड़ि पढ़ब
(C) भावना हटायब
(D) संस्मरण न पढ़ब
४८. प्रेमलता मिश्रक विशेषांकक प्रश्न-संख्या किएक ३०-४० सँ अधिक राखल गेल अछि?
- (A) ई बहु-लेखीय, लेखक/कलाकार-केंद्रित, रंगमंच-नारी-साहित्य-स्मृति सभ समेटने समृद्ध अंक अछि
(B) सरल नाम-स्मरण लेल
(C) पृष्ठ-सूची बढ़ेबाक लेल
(D) स्थिर संख्या निभेबाक लेल

४९. प्रेमलता मिश्र पर आधारित उच्च-स्तरक प्रश्नक मुख्य कसौटी की होयबाक चाही?

- (A) अभिनय-दर्शन, नारी-स्वर, अभिलेखन, भाषा-संस्कृति आ आलोचनात्मक मूल्यांकन
- (B) जन्मतिथि-केंद्रित स्मरण
- (C) पृष्ठ-सूची
- (D) लेखक-क्रम

उत्तरमाला — अध्याय २४ (उत्तर औ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) मैथिली रंगमंच, नारी-सशक्तिकरण, अभिनय, साहित्यिक छवि आ सांस्कृतिक स्मृतिक समेकित मूल्यांकन — ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' के रंगकर्म, लेखिका, अभिनेत्री, प्रेरक व्यक्तित्व आ स्त्री-सांस्कृतिक स्वर रूपमे देखैत अछि।
२. (A) अभिनय क्षणिक कला अछि आ पुरान रंगमंचीय प्रस्तुति सभक पर्याप्त रेकर्डिंग उपलब्ध नहि होइत — रंगकर्म के मूल्यांकनमे स्मृति, साक्षात्कार, संस्मरण आ उपलब्ध रेकर्डिंग सभ महत्वपूर्ण साक्ष्य बनैत अछि।
३. (C) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अग्रणी, पोषक आ मातृवत् रंगमंचीय भूमिका — पितामही कहबाक अर्थ इतिहास, परम्परा आ पीढ़ीगत प्रेरणाक केन्द्र बनब अछि।
४. (B) रंगमंच सामूहिक कला अछि; प्रत्येक कलाकार, तकनीशियन आ सहयोगी समान रूपे आवश्यक अछि — रंगमंचक लोकतंत्र सामूहिक अनुशासन, पारस्परिक निर्भरता आ साझा श्रमसँ बनैत अछि।
५. (A) कला मे पद, उमेर वा प्रतिष्ठा नहि, कौशल, साधना आ प्रस्तुति-क्षमता निर्णायक अछि — ई कथन रंगमंचक पेशेवर नैतिकता आ गुणवत्ता-केंद्रित दृष्टि दर्शाबैत अछि।
६. (D) ओ मैथिली रंगमंचमे महिला उपस्थिति, अभिनय-स्वायत्तता आ सांस्कृतिक नेतृत्वक उदाहरण छथि — मैथिली आधुनिक रंगमंचमे स्त्रीक सक्रियता सामाजिक रुढ़िक विरुद्ध सांस्कृतिक हस्तक्षेप अछि।
७. (B) अभिनय आ व्यक्तित्वमे मातृत्व, करुणा, आत्मीयता आ भाव-प्रामाणिकताक अनुभव — प्रेमलता मिश्रक अभिनय स्मृति मे भावनात्मक सत्य आ मातृवत् संवेदना सँ जुड़ल अछि।
८. (B) रंगकर्मकेँ लोक प्रायः मंच-स्मृति, संबंध आ प्रत्यक्ष अनुभवक माध्यमे याद करैत अछि — अभिनयक दस्तावेज कम होइत तखन संस्मरण सांस्कृतिक साक्ष्य बनैत अछि।
९. (C) रंगमंचीय व्यक्तित्वक संग हुनकर लेखकीय/संस्मरणात्मक/रचनात्मक पक्ष सेहो बुझबाक लेल — एक कलाकारक पूर्ण मूल्यांकनमे ओकर बहुविध सृजनात्मक रूप शामिल होएबाक चाही।
१०. (B) व्यक्तिगत अनुभव केँ सांस्कृतिक स्मृति आ रंगमंचीय इतिहासमे बदलबाक प्रक्रिया — संस्मरण 'दिन' आ 'पल' केँ जीवित सांस्कृतिक दस्तावेज बना सकैत अछि।
११. (A) जीवित/उपेक्षित रचनाकार-कर्मिक जीवनकालमे आलोचनात्मक मान्यता देबाक प्रयास — ई साहित्यिक न्यायक सक्रिय रूप अछि—मान्यता देरि सँ नहि, समय पर।
१२. (A) प्रत्यक्ष प्रस्तुति, देह-भाषा, स्वर, विराम आ मंचीय ऊर्जाक पुनरावलोकन कठिन भऽ जाइत अछि — थिएटरक जीवित क्षण सुरक्षित नहि रहला पर आलोचक संस्मरण आ सीमित साक्ष्य पर निर्भर होइत अछि।
१३. (D) स्त्री कलाकारक योगदान केँ अलग सँ अभिलेखित आ मूल्यांकित करैत अछि — इतिहास अक्सर पुरुष-केंद्रित होइत अछि; स्त्री-कलाकारक दस्तावेजीकरण आवश्यक सुधार अछि।
१४. (A) कलाकारक अपने अनुभव, विचार, संघर्ष आ कला-दृष्टि प्रत्यक्ष रूपे उपलब्ध करबैत अछि — साक्षात्कार जीवनी आ आलोचना बीच प्रत्यक्ष आवाजक पुल बनैत अछि।
१५. (C) स्त्री-विद्वत्ता, संस्कृति, अभिनय, साहित्य आ सामाजिक प्रेरणाक दीर्घ परम्परा मे — एहि कथनसँ प्रेमलता मिश्रक भूमिका मिथिलाक व्यापक स्त्री-बौद्धिक परम्परा मे जुड़ैत अछि।
१६. (B) समावेशी प्रकाशन आ भाषा-मानकीकरणक बीच संतुलनक प्रश्न — मैथिलीमे विविध वर्तनी-प्रयोग अछि; संपादनकेँ सामग्री-संग्रह आ मानकता बीच निर्णय लेब पड़ैत अछि।

१७. (D) प्रशंसा संग आलोचना, सीमा आ वास्तविक मूल्यांकन केँ स्थान देब — गंभीर विशेषांक स्तुति-पुस्तिका नहि; ओ साहित्यिक-सांस्कृतिक मूल्यांकन होइत अछि।
१८. (C) हुनकर मंच-साधना, स्त्री-भागीदारी, अभिनय-संस्कार आ अगिला पीढ़ी पर प्रभाव — प्रेरणास्रोत ओ होइत छथि जे अपन काजसँ समुदायक नव लोक केँ दिशा दैत छथि।
१९. (A) स्त्री-अभिनयक दस्तावेज, अवसर आ सामाजिक स्वीकार्यता सीमित रहल — एहि कारण प्रेमलता मिश्रक भूमिका अग्रणी आ ऐतिहासिक बनैत अछि।
२०. (D) कलाकारक निजी संवेदना, संस्कार, संबंध आ मनुष्य रूपकेँ सामने आनैत अछि — रंगकर्मीकेँ पूर्ण रूपे बुझबाक लेल मंचक बाहरक मानवीय संसार सेहो देखबाक चाही।
२१. (B) प्रेमलता मिश्र स्त्री अनुभव, मंच, लेखन आ संस्कृति केँ आवाज दैत छथि — स्त्री-स्वर साहित्यिक आ रंगमंचीय दुनू माध्यममे प्रकट होइत अछि।
२२. (C) अभिनय अभ्यास, अनुशासन, समय-बोध, संवाद, देह-भाषा आ मंच-सामूहिकता पर आधारित कला अछि — थिएटरमे प्रतिभा संग कठोर अभ्यास आ टीम-निष्ठा जरूरी अछि।
२३. (D) एक कलाकारक बहुआयामी प्रभाव—परिवार, मंच, साहित्य, समाज, पीढ़ी—सब दृष्टिसँ उजागर होइत अछि — बहु-स्वर विशेषांक कलाकारक सामुदायिक प्रतिमा बनबैत अछि।
२४. (B) रंगमंच आ साहित्यकेँ अलग-अलग खाँचामे बाँटबाक प्रवृत्ति — कलाकार मंच पर पाठ केँ देह, स्वर आ अनुभवमे बदलैत छथि; ई साहित्यक विस्तार अछि।
२५. (D) कलाकारक सांस्कृतिक नेतृत्व स्त्री-बौद्धिकता आ सामाजिक भागीदारीसँ जुड़ल अछि — सशक्त स्त्री कलाकार ज्ञान, अभ्यास आ सामाजिक साहसक संगम होइत छथि।
२६. (C) स्मृति थिएटर इतिहासक स्रोत होय सकैत अछि, जँ ओकर आलोचनात्मक उपयोग कएल जाए — संस्मरणात्मक साक्ष्य केँ तुलना, संदर्भ आ आलोचना संग पढ़ल जाए तखन ओ महत्वपूर्ण स्रोत बनैत अछि।
२७. (B) ओ हुनका व्यक्तिगत कलाकारसँ आगू मिथिला-संस्कृतिक प्रतिनिधि स्त्री-स्वर बनबैत अछि — मिथिलापुत्री कहब सांस्कृतिक आत्मीयता, गौरव आ प्रतिनिधित्वक भाव जगबैत अछि।
२८. (C) साहित्यिक अभिलेखनक श्रम, सामुदायिक सहयोगक कठिनाई आ संपादकीय ईमानदारी देखेबाक लेल — विशेषांक बनब सामूहिक साहित्यिक श्रम होइत अछि, जकर कठिनाई बुझब जरूरी अछि।
२९. (B) मातृत्व, अभिनय, लोक-संवेदना आ मैथिली दृश्य-संस्कृतिक संगम बुझाइत अछि — मैथिली दृश्य माध्यममे स्त्री-अभिनय सांस्कृतिक स्मृति रचैत अछि।
३०. (B) हुनकर सार्वजनिक छवि आत्मीयता, समर्पण, रंगमंच प्रेम आ सांस्कृतिक स्नेहसँ जुड़ल अछि — उपनाम कखनो-कखनो व्यक्तित्वक सांस्कृतिक पाठ बनि जाइत अछि।
३१. (C) जे प्रस्तुति विलीन भऽ गेल, ओकर स्मृति, लेख, फोटो, साक्षात्कार भविष्यक इतिहासक आधार बनैत अछि — थिएटरक जीवित क्षणकेँ शब्द/चित्र/साक्षात्कार द्वारा बचाओल जा सकैत अछि।
३२. (C) केवल कोन लेख कोन पृष्ठ पर अछि वा अनुक्रम संख्या कतेक अछि — उच्च-स्तरक प्रश्न रचना/कला-दृष्टि आ सांस्कृतिक अर्थ पर आधारित होएबाक चाही।
३३. (D) व्यक्ति कलाकारक योगदान मैथिली रंगमंच, पत्रिका, परिवार आ सांस्कृतिक समुदायसँ मिलि संस्था-सदृश प्रभाव बनबैत अछि — सांस्कृतिक इतिहासमे व्यक्तित्व समुदाय-सहयोगसँ प्रभावशाली बनैत अछि।
३४. (A) ई आधुनिक मैथिली रंगमंचमे स्त्री उपस्थिति, नेतृत्व आ ऐतिहासिक अग्रगामिताक संकेत दैत अछि — एहन कथनक आलोचनात्मक परीक्षण सेहो आवश्यक अछि, मुदा ई हुनकर अग्रणी स्थान दर्शबैत अछि।
३५. (C) ओ समय, संबंध, अनुभव आ मंच-संस्कृतिक अंदरूनी स्मृति उपलब्ध करबैत अछि — कलाकारक आत्म-स्मृति कला इतिहासक जीवित स्रोत होइत अछि।
३६. (B) पाठक विविध लेखकीय रूप स्वीकार करैत अवधारणा, सामग्री आ अनुभव पर ध्यान देथि — समावेशिता आ मानकता बीच आलोचनात्मक संतुलन राखब आवश्यक अछि।
३७. (C) दर्शक मंचीय प्रभावक प्रत्यक्ष साक्षी होइत छथि — थिएटर दर्शक-कलाकारक जीवित संवादमे पूर्ण होइत अछि।

३८. (C) सामुदायिक निकटता, स्नेह, साझा स्मृति आ मानवीय अनुभवक स्वर — लेखक-विशेषांकमे आत्मीयता आ आलोचना दुनूक संतुलन चाही।
३९. (A) मैथिली रंगमंच, स्त्री-अध्ययन, प्रदर्शन-कला आ सांस्कृतिक इतिहास पढ़ेबामे उदाहरण रूपे — हुनकर काज बहुविषयी अध्ययन लेल सामग्री दैत अछि।
४०. (A) प्रदर्शन-कला केँ समय पर रिकॉर्ड, लिखित आ संग्रहित नहि केलासँ इतिहास खो जाइत अछि — ई कथन अभिलेखनक अत्यावश्यकता पर बल दैत अछि।
४१. (D) कलाकारक प्रति सम्मान राखैत हुनकर काजक वास्तविक साहित्यिक-सांस्कृतिक मूल्यांकन करबाक लेल — संतुलित विशेषांक भावनात्मक स्मृति आ विवेकपूर्ण आलोचना केँ जोड़ैत अछि।
४२. (A) हुनका केवल एक भूमिका—जैसे अभिनेत्री—धरि सीमित करि देब — ओ रंगकर्मी, लेखिका, स्मृति-धारक, प्रेरक स्त्री-व्यक्तित्व सभ रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही।
४३. (B) पुरान स्तुतिपर निर्भर नहि रहि ताजा अनुभव, आलोचना आ पुनर्पाठ तैयार करबाक लेल — नव सामग्री विशेषांक केँ जीवित साहित्यिक घटना बनबैत अछि।
४४. (C) साधना, सामूहिकता, दक्षता, भाषा-निष्ठा आ स्त्री-साहसक महत्व — हुनकर जीवन रंगकर्मी आ भाषा-कर्मी दुनूक लेल प्रेरक पाठ अछि।
४५. (A) सशक्तिकरण हुनकर सक्रिय मंच-साधना, नेतृत्व, रचना, संघर्ष आ सांस्कृतिक प्रभावमे अछि — सशक्तिकरण जीवन-कर्म आ संस्थागत प्रभावसँ सिद्ध होइत अछि।
४६. (C) नाटक लिखित पाठ होएबासँ आगू मंच, देह, स्वर, भाव आ दर्शक-संवादमे पूर्ण होइत अछि — रंगमंच साहित्यक प्रदर्शनात्मक विस्तार अछि।
४७. (B) संस्मरणक भावुकता केँ संदर्भ, अन्य साक्ष्य आ रचनात्मक विश्लेषणसँ जोड़ि पढ़ब — संस्मरण स्रोत अछि, अंतिम निर्णय नहि; ओकर विवेकपूर्ण पाठ जरूरी अछि।
४८. (A) ई बहु-लेखीय, लेखक/कलाकार-केंद्रित, रंगमंच-नारी-साहित्य-स्मृति सभ समेटने समृद्ध अंक अछि — प्रश्न-संख्या सामग्रीक घनत्व आ विषय-विस्तार अनुसार गतिशील राखल गेल अछि।
४९. (A) अभिनय-दर्शन, नारी-स्वर, अभिलेखन, भाषा-संस्कृति आ आलोचनात्मक मूल्यांकन — ऐ तरहक क्विज परीक्षार्थी केँ अवधारणा आ साहित्यिक विवेक दुनू अभ्यास करबैत अछि।

अध्याय २५ : शरदिन्दु चौधरी विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मैथिली साहित्यिक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवक' कहबाक मुख्य आशय की अछि?

- (A) भाषा आ साहित्यिक कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) हुनकर साधना केवल रचना-लेखन नहि, भाषा-चेतना, भाषिक अनुशासन आ मैथिली अस्मिताक सेवा सँ जुड़ल अछि
- (C) ओ साहित्यसँ अलग रहथि
- (D) सेवा शब्द केवल प्रशंसा अछि

२. शरदिन्दु चौधरीक व्यक्तित्वक अध्ययनमे 'सिद्धांतप्रियता' किएक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि?

- (A) कारण हुनकर साहित्यिक-सामाजिक व्यवहारमे स्पष्ट मूल्य-बोध, दृढ़ता आ बौद्धिक ईमानदारी देखाइत अछि
- (B) ई केवल निजी स्वभावक वर्णन अछि
- (C) साहित्यकार लेल मूल्य-बोध गौण अछि
- (D) सिद्धांतप्रियता केवल जिद अछि

३. 'विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर' शरदिन्दुजीक रचनात्मक छविमे कोन तत्व जोड़ैत अछि?

- (A) सामाजिक असंगति, भाषिक विकृति आ साहित्यिक अन्यायक विरुद्ध आलोचनात्मक साहस
- (B) केवल भावुक स्मरण
- (C) केवल हास्य-विनोद
- (D) प्रतिरोधक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि

४. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्यिक विशेषता की रूपमे बुझल जा सकैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत अनुभवक भीतर समय, समाज, भाषा आ व्यंग्यक बहुपरत चित्र उभरैत अछि
- (B) संस्मरणमे समाज नहि रहैत
- (C) संस्मरण केवल निजी डायरी अछि
- (D) ई केवल तिथि-सूची अछि

५. 'जँ हम जनितहुँ' जेकाँ संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्यक मूल शक्ति की अछि?

- (A) कथ्यहीन हँसी
- (B) भाषिक प्रयोगक अभाव
- (C) केवल मनोरंजन
- (D) हास्यक माध्यमे आत्मदृष्टि, सामाजिक विसंगति आ व्यवहारिक विडम्बनाकें उजागर करब

६. शरदिन्दुजीक तीन व्यंग्य संग्रहक अध्ययनमे उच्च-स्तरीय प्रश्न कोन स्तरक होएबाक चाही?

- (A) व्यंग्यक शिल्प, पात्र, भाषा, सामाजिक लक्ष्य आ नैतिक दृष्टि पर
- (B) केवल शीर्षक याद करब
- (C) केवल पृष्ठ संख्या
- (D) केवल संग्रहक क्रम

७. 'कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन' जेकाँ शीर्षक शरदिन्दुजीक आलोचनात्मक स्वरूप किएक खोलैत अछि?

- (A) ई केवल भाषणात्मक शीर्षक अछि
- (B) कथ्य आ तथ्य समानार्थी अछि
- (C) सत्यक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि
- (D) एहि मे साहित्यिक कथ्य, तथ्यक प्रमाणिकता आ सत्यक नैतिक आग्रहक त्रिकोण बनैत अछि

८. 'समय-साल'क संपादन-संपादकीय प्रसंगमे शरदिन्दुजीक भूमिका किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ओ संपादनकें वैचारिक अनुशासन, भाषिक सजगता आ साहित्यिक बहसक मंच बनबैत छथि
- (B) पत्रिका-संस्कृति गौण अछि
- (C) संपादकीयमे विचार नहि
- (D) संपादन केवल छपाइ अछि

९. शरदिन्दु चौधरीकें 'खॉटी मैथिलीस्ट' कहबाक सांस्कृतिक अर्थ की?

- (A) केवल क्षेत्रीय अहंकार
- (B) मैथिलीस्ट साहित्यसँ असंबद्ध
- (C) केवल उपनाम
- (D) मैथिली भाषा, संस्कृति, स्वाभिमान आ व्यवहारिक प्रयोगक प्रति गहीर प्रतिबद्धता

१०. शरदिन्दुजी पर बहु-लेखकीय विशेषांक किएक आवश्यक अछि?

- (A) बहु-लेख भ्रम पैदा करैत अछि
- (B) हुनकर व्यक्तित्वक भाषा-सेवा, संपादन, संस्मरण, व्यंग्य, सिद्धांतप्रियता आ मानवीयता अनेक दृष्टिसँ खुलैत अछि
- (C) विशेषांक केवल श्रद्धांजलि अछि
- (D) एक लेख पर्याप्त छल

११. शरदिन्दुजीक साहित्यिक छविमे 'मधुरता आ दृढ़ता'क संग-साथ की सूचित करैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत विनय आ वैचारिक अडिगता दुनूक संतुलन
- (B) दृढ़ता असाहित्यिक
- (C) दुनू विरोधी तें असंभव
- (D) मधुरता आलोचना रोकैत अछि

१२. शरदिन्दुजीक हास्य-व्यंग्य कें केवल हँसी तक सीमित करब किएक गलत होयत?

- (A) किएकि ओकर भीतर सामाजिक आलोचना, भाषा-संवेदना आ नैतिक प्रतिरोधक गूढ़ अर्थ अछि
- (B) हँसी आ विचार साथ नहि चलैत
- (C) व्यंग्यक लक्ष्य नहि होइत
- (D) हास्य सदैव हलुक होइत अछि

१३. शरदिन्दु चौधरीक अध्ययनमे साक्षात्कार सामग्रीक उपयोग कोना करबाक चाही?

- (A) केवल तिथि पूछब
- (B) साक्षात्कार साहित्य नहि
- (C) हुनकर आत्म-दृष्टि, भाषा-दृष्टि, संपादन-समझ आ साहित्यिक मूल्य-बोध बुझबाक स्रोत रूपमे
- (D) केवल प्रश्नकर्ताक नाम याद करब

१४. 'शरदिन्दु चौधरी हेबाक माने' जेकाँ शीर्षक उच्चस्तरीय प्रश्न लेल किएक उपयुक्त अछि?

- (A) नाम जानल पर्याप्त अछि
- (B) व्यक्तित्वक अध्ययन असंभव अछि
- (C) ई केवल भावात्मक शीर्षक अछि
- (D) ई नामक पछाँक व्यक्तित्व, प्रवृत्ति, मूल्य आ साहित्यिक भूमिका पर विचार करएबाक आग्रह करैत अछि

१५. शरदिन्दुजीक संस्मरणात्मक लेखनमे भाषा किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) अनुवादसँ सभ समान भऽ जाएत
- (B) संस्मरणमे शैली नहि
- (C) किएकि स्मृति, हास्य, चरित्र-चित्रण आ सामाजिक संकेत सभ मैथिली अभिव्यक्तिक सूक्ष्मतासँ बनैत अछि
- (D) भाषा केवल माध्यम अछि

१६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषा-सेवा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

१७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सिद्धांतप्रियता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

१८. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'संपादकीय विवेक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

१९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'संस्मरणात्मक हास्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

२०. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'व्यंग्यक सामाजिक लक्ष्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

२१. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मैथिलीस्ट चेतना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२२. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'प्रतिरोधी स्वर' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

२३. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मधुरता आ दृढ़ता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषिक अनुशासन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'साहित्यिक सत्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'कथ्य-तथ्य-सत्य सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

२७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे ‘पत्रिका-संस्कृति’ पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजोक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

२८. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सामुदायिक स्मृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
(D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

२९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषाविद् छवि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३०. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'खाँटी मैथिली व्यवहार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

३९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'व्यक्ति आ कृति सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

३२. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'संस्मरणक शिल्प' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३३. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'हास्य-व्यंग्यक नैतिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

३४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सामाजिक विसंगति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'रचनात्मक ईमानदारी' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

३६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'बहु-लेखीय मूल्यांकन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
(B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(D) किएकि पष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषिक अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

३८. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सम्पादनक वैचारिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
(D) किएकि पष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'साहित्यिक दृढ़ता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

४०. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मिथिला समाजक पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
(C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

४१. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'लोक-भाषा आ मानकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

४२. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'शिक्षक-सदृश प्रेरणा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

४३. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'नव-पाठक निर्माण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सांस्कृतिक प्रतिबद्धता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

४५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'आलोचनात्मक आत्मीयता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

४६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'व्यंग्य संग्रहक तुलनात्मक अध्ययन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

४७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'साहित्यिक विरासत' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४८. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'समकालीन प्रासंगिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

४९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'लेखकक नैतिक छवि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

५०. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'अनुशासन आ असहमति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि

५१. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मैथिली आन्दोलन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

५२. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'स्मृति आ इतिहास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

५३. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'आत्मीय संस्मरण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

५४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषा बनाम साहित्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

५५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'साहित्यिक समुदाय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'गंभीरता आ विनोद' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि

५७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'उच्च-स्तरीय प्रश्न निर्माण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

५८. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'अध्ययनक शोधार्थी उपयोगिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५९. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'लेखकीय स्वाभिमान' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

६०. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'संवाद आ मतभेद' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

६१. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'मूल्याधारित आलोचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

६२. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'संपादकीय परम्परा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

६३. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'रचना-पाठक सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (C) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

६४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'भाषिक लोकतंत्र' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि

६५. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'सांस्कृतिक अभिलेखन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि

६६. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'लेखकक बहुआयामी मूल्यांकन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि

६७. शरदिन्दु चौधरी विशेषांकमे 'श्रद्धा आ विवेक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि नाम-दोहराव पर्याप्त अछि

उत्तरमाला — अध्याय २५ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) हुनकर साधना केवल रचना-लेखन नहि, भाषा-चेतना, भाषिक अनुशासन आ मैथिली अस्मिताक सेवा सँ जुड़ल अछि — एहि अभिव्यक्तिमे शरदिन्दुजीक योगदानकें व्यापक भाषा-सेवाक रूपमे पढ़ल गेल अछि, केवल लेखकक रूपमे नहि।
२. (A) कारण हुनकर साहित्यिक-सामाजिक व्यवहारमे स्पष्ट मूल्य-बोध, दृढ़ता आ बौद्धिक ईमानदारी देखाइत अछि — सिद्धांतप्रियता व्यक्ति आ कृति दुनूक विश्वसनीयता आ नैतिक स्वर समझबामे मदति करैत अछि।
३. (A) सामाजिक असंगति, भाषिक विकृति आ साहित्यिक अन्यायक विरुद्ध आलोचनात्मक साहस — प्रतिरोधक स्वर लेखक कें सक्रिय सामाजिक-बौद्धिक हस्तक्षेपकारी बनबैत अछि।
४. (A) व्यक्तिगत अनुभवक भीतर समय, समाज, भाषा आ व्यंग्यक बहुपरत चित्र उभरैत अछि — संस्मरण जखन स्मृति कें सामाजिक अर्थ दैत अछि, तखन ओ साहित्यिक दस्तावेज बनैत अछि।
५. (D) हास्यक माध्यमे आत्मदृष्टि, सामाजिक विसंगति आ व्यवहारिक विडम्बनाकें उजागर करब — हास्य-व्यंग्य गम्भीर आलोचना कें सहज आ प्रभावी रूप दैत अछि।
६. (A) व्यंग्यक शिल्प, पात्र, भाषा, सामाजिक लक्ष्य आ नैतिक दृष्टि पर — व्यंग्यक परीक्षा केवल शीर्षक-स्मरण नहि, ओकर सामाजिक-कलात्मक प्रक्रिया बुझब अछि।
७. (D) एहि मे साहित्यिक कथ्य, तथ्यक प्रमाणिकता आ सत्यक नैतिक आग्रहक त्रिकोण बनैत अछि — एहि त्रयी द्वारा लेखकक विवेकशील आ मूल्य-केंद्रित दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
८. (A) ओ संपादनकें वैचारिक अनुशासन, भाषिक सजगता आ साहित्यिक बहसक मंच बनबैत छथि — पत्रिका-संपादन भाषा आन्दोलन आ साहित्यिक समुदाय निर्माणक महत्वपूर्ण साधन अछि।
९. (D) मैथिली भाषा, संस्कृति, स्वाभिमान आ व्यवहारिक प्रयोगक प्रति गहिरा प्रतिबद्धता — खाँटी मैथिलीस्ट शब्द भाषिक निष्ठा आ सांस्कृतिक क्रियाशीलता सूचित करैत अछि।
१०. (B) हुनकर व्यक्तित्वक भाषा-सेवा, संपादन, संस्मरण, व्यंग्य, सिद्धांतप्रियता आ मानवीयता अनेक दृष्टिसँ खुलैत अछि — बहु-दृष्टि लेखकक जटिल योगदानक अधिक संतुलित चित्र प्रस्तुत करैत अछि।
११. (A) व्यक्तिगत विनय आ वैचारिक अडिगता दुनूक संतुलन — साहित्यिक व्यक्तित्वमे व्यवहारिक सौजन्य आ सिद्धांतक दृढ़ता एक संग रहि सकैत अछि।
१२. (A) किएकि ओकर भीतर सामाजिक आलोचना, भाषा-संवेदना आ नैतिक प्रतिरोधक गूढ़ अर्थ अछि — उच्चस्तरीय व्यंग्य पाठककें हँसाबैत अछि, मुदा साथहि सोचय लेल बाध्य करैत अछि।

૧૩. (C) હુનકર આત્મ-દૃષ્ટિ, ભાષા-દૃષ્ટિ, સંપાદન-સમઝ આ સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ બુઝાબાક સ્રોત રૂપમે — સાક્ષાત્કાર લેખકક અપન બૌદ્ધિક આવાજ દૈત અછિ, જે આલોચના લેલ મહત્વપૂર્ણ સ્રોત અછિ।

१४. (D) ई नामक पछाँक व्यक्तित्व, प्रवृत्ति, मूल्य आ साहित्यिक भूमिका पर विचार करएबाक आग्रह करैत अछि — एहन शीर्षक विद्यार्थीकें व्यक्ति आ साहित्यक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।

१५. (C) किएिक स्मृति, हास्य, चरित्र-चित्रण आ सामाजिक संकेत सभ मैथिली अभिव्यक्तिक सूक्ष्मतासँ बनैत अछि — संस्मरणक प्रभाव कथ्य जेकाँ शैली आ भाषिक स्वभाव पर सेहो निर्भर करैत अछि।

१६. (B) किएकिए ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘भाषा-सेवा’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आग बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

१७. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘सिद्धांतप्रियता’
जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

१८. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘संपादकीय विवेक’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आग बढ़ा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

૧૧. (B) કિઁકિ ઈ વિષય શરદિન્દુજીક ભાષા-દૃષ્ટિ, સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ આ સામાજિક-સાંસ્કૃતિક યોગદાનક ગહરાઈ બુઝાંબૈત અછિ — ‘સંસ્મરણાત્મક હાસ્ય’ જૈકાં પ્રશ્ન વિદ્યાર્થીકેં તથ્ય-સ્મરણસં આગ બઢા કડ લેખકક વિચાર, શિલ્પ આ સાંસ્કૃતિક ભમિકાક વિશ્લેષણ કરબૈત અછિ।

२०. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘व्यंग्यक सामाजिक लक्ष्य’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीक तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

२१. (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘मैथिलीस्ट चेतना’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

૨૨. (C) કિઁકિ ઈ વિષય શરદિન્દુજીક ભાષા-દૃષ્ટિ, સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ આ સામાજિક-સાંસ્કૃતિક યોગદાનક ગહરાઈ બુઝાંબૈત અછિ — ‘પ્રતિરોધી સ્વર’ જેકાં પ્રશ્ન વિદ્યાર્થીકેં તથ્ય-સ્મરણસં આગુ બઢા કડ લેખકક વિચાર, શિલ્પ આ સાંસ્કૃતિક ભૂમિકાક વિશ્લેષણ કરબૈત અછિ।

२३. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि — ‘मधुरता आ दृढता’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आग बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

૨૪. (B) કિઁકિ ઈ વિષય શરદિન્દુજીક ઢાષા-દૃષ્ટિ, સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ આ સામાજિક-સાંસ્કૃતિક યોગદાનક ગઢરાઈ બુઝાબૈત અછિ — ‘ઢાષિક અન્નશાસન’ જેકાં પ્રશ્ન વિદ્યાર્થીકેં તથ્ય-સ્મરણસં આગ બઢા કઽ લેખકક વિચાર, શિલ્પ આ સાંસ્કૃતિક ઢમિકાક વિશ્લેષણ કરબૈત અછિ।

२५. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि — ‘साहित्यिक सत्य’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

२६. (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘कथ-तथ-सत्य सम्बन्ध’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

२७. (A) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘पत्रिका-संस्कृति’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकें तथ्य-स्मरणसँ आगु बढा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

२८. (C) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘सामुदायिक स्मृति’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगु बढ़ा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

२९. (B) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराई बुझबैत अछि — ‘भाषाविद् छवि’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

३०. (D) किएकि ई विषय शरदिन्दुजीक भाषा-दृष्टि, साहित्यिक मूल्य-बोध आ सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानक गहराइ बुझबैत अछि — ‘खाँटी मैथिली व्यवहार’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीक तथ्य-स्मरणसँ आग बढ़ा कऽ लेखकक विचार, शिल्प आ सांस्कृतिक भूमिकाक विश्लेषण करबैत अछि।

૩૧. (C) કિઁકિ ઈ વિષય શરદિન્દુજીક ભાષા-દૃષ્ટિ, સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ આ સામાજિક-સાંસ્કૃતિક યોગદાનક ગઠરાઈ બુઝાંબૈત અછિ — ‘વ્યક્તિ આ કૃતિ સમ્બન્ધ’ જેકાં પ્રશ્ન વિદ્યાર્થીકેં તથ્ય-સ્મરણસં આગ બઢા કડ લેખકક વિચાર, શિલ્પ આ સાંસ્કૃતિક ભૂમિકાક વિશ્લેષણ કરબૈત અછિ।

૩૨. (A) કિઁકિ ઈ વિષય શરદિન્દુજીક ભાષા-દૃષ્ટિ, સાહિત્યિક મૂલ્ય-બોધ આ સામાજિક-સાંસ્કૃતિક યોગદાનક ગઢરાઈ બુઝાબૈત અછિ — ‘સંસ્મરણક શિલ્પ’ જેકાં પ્રશ્ન વિદ્યાર્થિકેં તથ્ય-સ્મરણસં આગ બઢા કડ લેખકક વિચાર, શિલ્પ આ સાંસ્કૃતિક ભમિકાક વિશ્લેષણ કરબૈત અછિ।

[illegible]

अध्याय २६ : कला विमर्श विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. कला विमर्श विशेषांकमे कला आस्वादन आ कला समीक्षा केँ अलग-अलग मुदा सम्बद्ध किएक मानल गेल अछि?

- (A) आस्वादन संवेदनात्मक अनुभव दैत अछि, समीक्षा ओकर रूप, अर्थ, संदर्भ आ मूल्यक विवेकपूर्ण विश्लेषण करैत अछि
- (B) समीक्षा कला-विरोधी अछि
- (C) आस्वादनमे संवेदना नहि
- (D) दुनू पूर्णतः एक समान अछि

२. मोहनजोदड़ोक 'नर्तकी' मूर्ति पर प्रश्न उठाएब कला-समीक्षाक कोन गुण देखबैत अछि?

- (A) इतिहासक पोथी सदैव अंतिम सत्य अछि
- (B) मूर्ति पर प्रश्न उठाएब निषिद्ध अछि
- (C) नामकरण समीक्षा नहि
- (D) परम्परागत नामकरणक लैंगिक पूर्वाग्रह आ दृश्य-प्रमाणक आलोचनात्मक परीक्षण

३. खजुराहो, गीतगोविन्द, कामसूत्र आ लोककला प्रसंग कला-विमर्शमे किएक आबैत अछि?

- (A) कला आ संस्कृति असंबद्ध अछि
- (B) केवल विवाद बढ़ाएबाक लेल
- (C) भारतीय कला-संस्कृतिमे काम, सौंदर्य, प्रतीक आ धर्म-संस्कृति बीच जटिल सम्बन्ध देखएबाक लेल
- (D) काम-विमर्श सदैव अश्लीलता अछि

४. 'कलाकृति मे अश्लीलता' विषयक उच्चस्तरीय प्रश्न कोन बात पर केन्द्रित होएबाक चाही?

- (A) अश्लीलता, सौंदर्य, संदर्भ, दृष्टि, देह-राजनीति आ दर्शक-मानसक सम्बन्ध पर
- (B) केवल चित्रक नाम
- (C) केवल कलाकारक क्रम
- (D) केवल निषेध

५. आधुनिक चित्रकलाक अध्ययनमे 'परिवेश' शब्दक अर्थ की?

- (A) समय, समाज, तकनीक, बाजार, अनुभव आ सौंदर्य-बोधक बदलैत संदर्भ
- (B) केवल कलाकारक पता
- (C) केवल चित्रक फ्रेम
- (D) केवल रंगक दाम

६. संजू दासक कलाकृति आ कुमार पवनक 'पड़ठ'क संग सम्बन्धक अध्ययन किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) चित्र केवल सजावट अछि
- (B) पाठक चित्र नहि देखैत
- (C) कथा-पाठ आ दृश्य-कला बीच परस्पर अर्थ-विस्तार देखएबाक लेल
- (D) कथा आ चित्रक सम्बन्ध नहि

७. कला-समीक्षामे कलाकारक शैली आ तकनीक पर प्रश्न किएक जरूरी अछि?

- (A) तकनीक अप्रासंगिक अछि
- (B) शैली केवल सजावट अछि
- (C) ई बतबैत अछि जे कलाकार विषयकेँ कोन माध्यम, संरचना, रेखा, रंग आ रूप-भाषासँ व्यक्त करैत अछि
- (D) विषय मात्र पर्याप्त अछि

८. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक लोककला प्रसंग कला-विमर्शमे कोन बात सामने अनैत अछि?

- (A) केवल शहरी कलाकार महत्वपूर्ण
- (B) लोककला कला नहि
- (C) गुमनाम कलाकारक अध्ययन असंभव
- (D) गुमनाम/लोक कलाकारक ज्ञान, कौशल, परम्परा आ संस्थागत उपेक्षाक प्रश्न

९. मिथिला चित्रकला — नेपाल प्रसंग पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) नेपाल प्रसंग असंबद्ध
- (B) मिथिला कलाक भौगोलिक, सांस्कृतिक आ सीमा-पार विस्तार बुझबाक लेल
- (C) मिथिला कला केवल एक जिला धरि सीमित
- (D) चित्रकला भाषासँ अलग

१०. श्वेता झा चौधरीक परिचय जेकाँ कलाकार-परिचय विशेषांकमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) कलाकारक जीवन अप्रासंगिक
- (B) केवल चित्र देखब पर्याप्त
- (C) कलाकारक जीवन-प्रसंग, प्रशिक्षण, दृष्टि, शैली आ सांस्कृतिक योगदानक संदर्भ दैत अछि
- (D) परिचय असाहित्यिक अछि

११. कला विमर्शमे 'दर्शक'क भूमिका किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) कलाक अर्थ कलाकार, कृति आ दर्शकक संवादमे सक्रिय रूपेँ बनैत अछि
- (B) चित्रक अर्थ स्थिर अछि
- (C) दर्शकक अनुभव गलत अछि
- (D) दर्शक निष्क्रिय अछि

१२. कला-विमर्श विशेषांकक प्रश्न-संख्या ३०-४० सँ बेसी किएक उचित अछि?

- (A) क्रमांक अधिक अछि
- (B) केवल पृष्ठ बेसी अछि
- (C) समान प्रश्न-संख्या अनिवार्य अछि
- (D) किएकि अंकमे सिद्धान्त, चित्रकला, अश्लीलता-विमर्श, लोककला, कलाकार-परिचय, कथा-चित्र सम्बन्ध आ मिथिला-नेपाल प्रसंग अनेक स्तर पर अछि

१३. 'कला आस्वादन'मे भाव आ बौद्धिकता दुनू किएक चाही?

- (A) भाव पर्याप्त अछि
- (B) बुद्धि कलाक शत्रु अछि
- (C) भाव कला सँ जोड़ैत अछि आ बौद्धिकता ओकर रूप-संदर्भ-मूल्य बुझबैत अछि
- (D) कला बुझबाक वस्तु नहि

१४. देह, नग्नता आ सौंदर्य पर कला-विमर्शमे प्रश्न किएक संवेदनशील अछि?

- (A) इतिहास अप्रासंगिक
- (B) देहक प्रश्न कला नहि
- (C) नग्नता सदैव अश्लीलता
- (D) एहिमे कला, नैतिकता, लैंगिक दृष्टि, इतिहास आ सामाजिक पूर्वाग्रह सब एक संग जुड़ैत अछि

१५. कला-विमर्शमे 'लोककला विश्वविद्यालय' जेकाँ अभिव्यक्ति कोन बात सूचित करैत अछि?

- (A) लोक कलाकारक अनुभवजन्य ज्ञान, परम्परा आ अनौपचारिक शिक्षण-प्रणालीक महत्त्व
- (B) लोककला अशिक्षित अछि
- (C) विश्वविद्यालय शब्द मात्र मजाक
- (D) ज्ञान केवल संस्थानमे होइत अछि

१६. कला विमर्श विशेषांकमे 'कला आस्वादन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

१७. कला विमर्श विशेषांकमे 'कला समीक्षा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

१८. कला विमर्श विशेषांकमे 'आधुनिक चित्रकला' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

१९. कला विमर्श विशेषांकमे 'अश्लीलता-विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि

२०. कला विमर्श विशेषांकमे 'देह आ सौंदर्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

२१. कला विमर्श विशेषांकमे 'मोहनजोदड़ो मूर्ति-पाठ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

२२. कला विमर्श विशेषांकमे 'खजुराहो व्याख्या' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

२३. कला विमर्श विशेषांकमे 'कामसूत्र आ कला' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

२४. कला विमर्श विशेषांकमे 'संजू दासक चित्र-भाषा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

(A) કિઁકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબ અછિ
(B) કિઁકિ ઈં વિષય કલાક રૂપ, અર્થ, સન્દર્ભ, દર્શક-દૃષ્ટિ આ સાંસ્કૃતિક આલોચનાક ગહરાડિ બુઝાબૈત અછિ
(C) કિઁકિ કલાકારક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અછિ
(D) કિઁકિ ઈં કેવલ અનુક્રમક બિંદુ અછિ

(A) किएकिए पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(B) किएकिए कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकिए ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(D) किएकिए ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि

(A) किएकल कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकल ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(C) किएकल पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(D) किएकल ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि

(A) કિઁકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબ અછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય કલાક રૂપ, અર્થ, સન્દર્ભ, દર્શક-દૃષ્ટિ આ સાંસ્કૃતિક આલોચનાક ગહરાઈ બુઝાબૈત અછિ
(C) કિઁકિ કલાકારક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અછિ
(D) કિઁકિ ઈ કેવલ અનુક્રમક બિંદુ અછિ

(A) કિઁકિ ઈ કેવલ અનુક્રમક બિંદુ અછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય કલારૂપ, અર્થ, સન્દર્ભ, દર્શક-દૃષ્ટિ આ સાંસ્કૃતિક આલોચનાક ગઠરાઈ બુઝબૈત અછિ
(C) કિઁકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબ અછિ
(D) કિઁકિ કલારૂપક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અછિ

(A) કિંકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબ અછિ
(B) કિંકિ ઈ વિષય કલાક રૂપ, અર્થ, સન્દર્ભ, દર્શક-દૃષ્ટિ આ સાંસ્કૃતિક આલોચનાક ગહરાઈ બુઝાબૈત અછિ
(C) કિંકિ ઈ કેવલ અનુક્રમક બિંદુ અછિ
(D) કિંકિ કલાકારક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અછિ

(A) किएक पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(B) किएक ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(C) किएक कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएक ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बढ़ाबैत अछि

(A) કિઁકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબ અછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય કલાક રુપ, અર્થ, સન્દર્ભ, દર્શક-દૃષ્ટિ આ સાંસ્કૃતિક આલોચનાક ગહરાઈ બુઝાબૈત અછિ
(C) કિઁકિ કલાકારક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અછિ
(D) કિઁકિ ઈ કેવલ અનુક્રમક બિંદુ અછિ

३३. कला विमर्श विशेषांकमे 'दर्शकक भूमिका' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि

३४. कला विमर्श विशेषांकमे 'लैंगिक पूर्वाग्रह' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(B) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि

३५. कला विमर्श विशेषांकमे 'गुमनाम कलाकार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

३६. कला विमर्श विशेषांकमे 'रंग-रेखा-संरचना' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि

३७. कला विमर्श विशेषांकमे 'कथा आ चित्र सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएिक ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(B) किएिक पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(C) किएिक ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
(D) किएिक कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

३८. कला विमर्श विशेषांकमे 'सांस्कृतिक प्रतीक' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराई बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

३९. कला विमर्श विशेषांकमे 'धर्म आ सौंदर्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

४०. कला विमर्श विशेषांकमे 'लोकस्मृति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
(D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

४१. कला विमर्श विशेषांकमे 'कला इतिहास' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

४२. कला विमर्श विशेषांकमे 'पुरातत्व आ व्याख्या' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि

४३. कला विमर्श विशेषांकमे 'संस्थागत उपेक्षा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

४४. कला विमर्श विशेषांकमे 'ग्रामीण कला-जगत' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

४५. कला विमर्श विशेषांकमे 'समीक्षात्मक दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

४६. कला विमर्श विशेषांकमे 'दृश्य-साक्षरता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

४७. कला विमर्श विशेषांकमे 'सांस्कृतिक भूगोल' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

४८. कला विमर्श विशेषांकमे 'मिथिला-नेपाल साझापन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

४९. कला विमर्श विशेषांकमे 'स्त्री-प्रतिनिधित्व' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

५०. कला विमर्श विशेषांकमे 'कलाकृति आ संदर्भ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

५१. कला विमर्श विशेषांकमे 'चित्रकला आ साहित्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

५२. कला विमर्श विशेषांकमे 'सौंदर्य बनाम नैतिकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

५३. कला विमर्श विशेषांकमे 'कला-शिक्षा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि

५४. कला विमर्श विशेषांकमे 'लोक आ आधुनिकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

५५. कला विमर्श विशेषांकमे 'अभिलेखन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (D) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि

५६. कला विमर्श विशेषांकमे 'शोधार्थी उपयोगिता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

६५. कला विमर्श विशेषांकमे 'कलाक स्वतंत्रता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

६६. कला विमर्श विशेषांकमे 'उच्च-स्तरीय प्रश्न निर्माण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय मानल जाए?

- (A) किएकि ई विषय कलाक रूप, अर्थ, सन्दर्भ, दर्शक-दृष्टि आ सांस्कृतिक आलोचनाक गहराइ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक बिंदु अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि कलाकारक नाम मात्र पर्याप्त अछि

उत्तरमाला — अध्याय २६ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) आस्वादन संवेदनात्मक अनुभव दैत अछि, समीक्षा ओकर रूप, अर्थ, संदर्भ आ मूल्यक विवेकपूर्ण विश्लेषण करैत अछि — कला केँ केवल देखब पर्याप्त नहि; ओकर सौंदर्य, सन्दर्भ आ विचार सेहो बुझबाक आवश्यकता अछि।
२. (D) परम्परागत नामकरणक लैंगिक पूर्वाग्रह आ दृश्य-प्रमाणक आलोचनात्मक परीक्षण — कला-समीक्षा स्थापित व्याख्याकेँ सेहो प्रमाण, दृष्टि आ पूर्वाग्रहक आधार पर परखैत अछि।
३. (C) भारतीय कला-संस्कृतिमे काम, सौंदर्य, प्रतीक आ धर्म-संस्कृति बीच जटिल सम्बन्ध देखएबाक लेल — कला-विमर्श रूपक, प्रतीक, इतिहास आ सामाजिक नैतिकताक सम्बन्ध खोलैत अछि।
४. (A) अश्लीलता, सौंदर्य, संदर्भ, दृष्टि, देह-राजनीति आ दर्शक-मानसक सम्बन्ध पर — अश्लीलताक निर्णय सरल नैतिक घोषणा नहि, सन्दर्भित सौंदर्य-विवेकक प्रश्न अछि।
५. (A) समय, समाज, तकनीक, बाजार, अनुभव आ सौंदर्य-बोधक बदलैत संदर्भ — आधुनिकता कलाक रूप आ अर्थ दुनूक बदलैत संदर्भ निर्मित करैत अछि।
६. (C) कथा-पाठ आ दृश्य-कला बीच परस्पर अर्थ-विस्तार देखएबाक लेल — चित्रांकन पाठककेँ कथा-संसारक दृश्य-संकेत दैत अछि आ पाठक अनुभव केँ विस्तार करैत अछि।
७. (C) ई बतबैत अछि जे कलाकार विषयकेँ कोन माध्यम, संरचना, रेखा, रंग आ रूप-भाषासँ व्यक्त करैत अछि — कला मे कथ्य आ रूप अलग नहि; शैली-तकनीक अर्थनिर्माणक अंग अछि।
८. (D) गुमनाम/लोक कलाकारक ज्ञान, कौशल, परम्परा आ संस्थागत उपेक्षाक प्रश्न — लोककला समाजक सामूहिक सौंदर्य-बोध आ कौशल-संपदाक अभिलेख अछि।
९. (B) मिथिला कलाक भौगोलिक, सांस्कृतिक आ सीमा-पार विस्तार बुझबाक लेल — मिथिला संस्कृति भारत-नेपालक साझा भू-सांस्कृतिक क्षेत्रमे विकसित अछि।
१०. (C) कलाकारक जीवन-प्रसंग, प्रशिक्षण, दृष्टि, शैली आ सांस्कृतिक योगदानक संदर्भ दैत अछि — कलाकार-परिचय कला-पाठक पृष्ठभूमि बनबैत अछि, मुदा ओकरा आलोचनात्मक ढंगसँ पढ़बाक चाही।
११. (A) कलाक अर्थ कलाकार, कृति आ दर्शकक संवादमे सक्रिय रूपेँ बनैत अछि — आस्वादन दर्शकक सांस्कृतिक तैयारी, संवेदना आ प्रश्नक क्षमता पर निर्भर करैत अछि।
१२. (D) किएकि अंकमे सिद्धान्त, चित्रकला, अश्लीलता-विमर्श, लोककला, कलाकार-परिचय, कथा-चित्र सम्बन्ध आ मिथिला-नेपाल प्रसंग अनेक स्तर पर अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक गहराइ, विषय-विविधता आ शोध-मूल्य पर आधारित होएबाक चाही।
१३. (C) भाव कला सँ जोड़ैत अछि आ बौद्धिकता ओकर रूप-संदर्भ-मूल्य बुझबैत अछि — संतुलित आस्वादन संवेदना आ विवेक दुनू पर टिकैत अछि।
१४. (D) एहिमे कला, नैतिकता, लैंगिक दृष्टि, इतिहास आ सामाजिक पूर्वाग्रह सब एक संग जुड़ैत अछि — कला-समीक्षा देह-प्रतिनिधित्वकेँ सन्दर्भ सहित पढ़ैत अछि।

[illegible]

अध्याय २७ : रचनाकार अशोक विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. रचनाकार अशोककें केवल 'कथाकार' कहि देब किएक अधूरा मूल्यांकन होयत?

- (A) किएकि ओ कथा नहि लिखलथि
- (B) किएकि कविता साहित्य नहि
- (C) किएकि विशेषांकमे हुनका कवि, कथाकार आ कथेतर गद्यक लेखक—तीनू रूपमे पढ़बाक आग्रह अछि
- (D) किएकि गद्य आ पद्य अलग लेखकक होइत अछि

२. 'चक्रव्यूह'क महाभारत-आधारित कविता सभकें लोकगीत/लोकगाथा सँ जोड़ि पढ़बाक अर्थ की?

- (A) लोकगीतमे साहित्यिक मूल्य नहि
- (B) महाभारत केवल शास्त्रीय ग्रन्थ रहैत अछि
- (C) महाकाव्यक पात्र आ प्रसंग लोक-संवेदना, लोक-धुनि आ सामूहिक स्मृति मे पुनर्जीवित होइत अछि
- (D) कविता आ लोकगाथा असंबद्ध अछि

३. प्रेमचन्द आ फिराकक उल्लेख अशोकक मूल्यांकनमे कोन आलोचनात्मक काम करैत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरण करबैत अछि
- (B) अशोकसँ सम्बन्ध नहि
- (C) हिन्दी-उर्दू सन्दर्भ मैथिलीमे अनुपयोगी अछि
- (D) लेखन-संख्या, प्रिय रचना, लोकसंगीत आ कथा-मूल्य पर तुलनात्मक मानदंड बनबैत अछि

४. अशोकक 'कम लिखब' पर आलोचनात्मक टिप्पणीक मूल आशय की?

- (A) लेखन-संख्या मात्रे मूल्य अछि
- (B) पाठकक भूमिका नहि
- (C) कम लिखब सदैव श्रेष्ठता अछि
- (D) रचनाकारक पहचान मात्र आत्म-घोषणा नहि, दीर्घ साधना, रचना-संपदा आ पाठकीय परीक्षा सँ बनैत अछि

५. 'कथेतर गद्य' शब्द अशोकक अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) निबन्ध, प्रबन्ध, समालोचना आ वैचारिक लेखनकें कथा-पद्य सँ अलग मुदा रचनात्मक श्रेणीमे राखैत अछि
- (B) गद्य साहित्य नहि
- (C) केवल कथा पढ़ब पर्याप्त अछि
- (D) कथेतर मतलब असाहित्य

६. 'त्रिकोण' सामूहिक कथा-संग्रहक प्रसंग अशोकक कथा-लेखनक इतिहासमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) कथा-संग्रहमे लेखक-पहचान नहि बनैत
- (B) त्रिकोण केवल ज्यामिति अछि
- (C) एहि सँ अशोकक आरम्भिक कथा-उपस्थिति, समकालीन लेखक-संगति आ नव कथा-परिवेशक संकेत भेटैत अछि
- (D) सामूहिक संग्रह अप्रासंगिक अछि

७. 'गामक नामकरण: एक परिशीलन' जेकाँ लेख अशोकक कथेतर गद्यक कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) मिथिलाक भू-सांस्कृतिक इतिहास, लोकस्मृति आ नाम-परम्पराक शोधपरक रुचि
- (B) लेख केवल सूचना-सूची अछि
- (C) गामक नाम साहित्यिक विषय नहि
- (D) नामकरणमे इतिहास नहि

८. रचनाकार अशोकक मूल्यांकनमे 'लोक' किएक केंद्रीय श्रेणी अछि?

- (A) लोक आधुनिक साहित्यक विरोधी अछि
- (B) किएकि लोकगीत, लोकगाथा, गाम-नाम, सामाजिक स्मृति आ कथ्यक धरातल हुनकर रचना-पाठकें गहराइ दैत अछि
- (C) लोक मात्र मनोरंजन अछि
- (D) शहरी पाठे साहित्य अछि

१७. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'लेखक-पहचान' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१८. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'प्रिय रचना चयन' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

१९. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'प्रेमचन्दक उदाहरण' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि

२०. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'फिराकक लोकगीत-दृष्टि' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किऐकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किऐकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(C) किऐकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किऐकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

२१. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'गामक नामकरण' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बूझबैत अछि

२२. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'मिथिलाक भू-सांस्कृतिक स्मृति' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

२३. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'दरभंगा-मधुबनी-नेपाल प्रसंग' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनेत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२४. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'जनकपुर आ धनुषा' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनेत अछि?

- (A) किण्कि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किण्कि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(C) किण्कि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किण्कि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

४१. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'रचना-संपदा' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि

४२. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'संपादकीय तर्कशक्ति' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

४३. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'मिथिला इतिहास' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४४. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'भाषा आ भूगोल' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४५. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'सांस्कृतिक नाम-विज्ञान' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४६. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'समाज-दृष्टि' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

४७. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'पुनर्पाठक आवश्यकता' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनेत अछि?

- (A) किऐकि लेखकक नलत तलरतत अलल
- (B) किऐकि ई केवल अनुक्रमक नलत अलल
- (C) किऐकि पृष्ठ-संख्या तलद करतलक अलल
- (D) किऐकि ई वलषत अशोकक तृहलतलतल रकनलकलर-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधलगत विविधतल आ आलोकनलततक तूलतलंकन तृदुतैत अलल

४८. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'रचना-विधा विविधता' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

४९. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'साहित्यिक प्रमाण' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

५०. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'लोकधुनि' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

५१. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'सामूहिक स्मृति' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) કિઁકિ લેખકક નામ માત્ર પર્યાપ્ત અલિ
- (B) કિઁકિ ઈ વિષય અશોકક બહુઆયામી રચનાકાર-સ્વરૂપ, લોક-સંસ્કૃતિ, વિધાગત વિવિધતા આ આલોચનાત્મક મૂલ્યાંકન બુઝાબૈત અલિ
- (C) કિઁકિ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબાક અલિ
- (D) કિઁકિ ઈ કેવલ અનુક્રમક નામ અલિ

५२. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'विचार-गद्य' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किऐकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(B) किऐकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किऐकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किऐकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

५३. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'विदेहक दस्तावेजी भूमिका' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किऐकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(B) किऐकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(C) किऐकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
(D) किऐकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५४. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'उच्चस्तरीय प्रश्न निर्माण' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि

५५. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'लेखकक बहुआयामी अध्ययन' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनेत अछि?

- (A) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि

५६. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'समीक्षा आ आत्मीयता' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
(C) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
(D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बूझबैत अछि

५७. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'मौलिकता बनाम परम्परा' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
- (B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५८. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'भाषिक अस्मिता' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

५९. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'रचनात्मक मितव्ययिता' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

६०. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'महाकाव्यक लोक रूपान्तरण' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
- (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (D) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

६१. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'मैथिली आलोचना' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
- (B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

६२. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'लेखक-समाज सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि
- (B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि

६३. रचनाकार अशोक विशेषांकमे 'रचनात्मक विरासत' पर प्रश्न किएक अवधारणा-आधारित बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि
- (B) किएकि लेखकक नाम मात्र पर्याप्त अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक नाम अछि

उत्तरमाला — अध्याय २७ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) किएकि विशेषांकमे हुनका कवि, कथाकार आ कथेतर गद्यक लेखक—तीनू रूपमे पढ़बाक आग्रह अछि — अशोकक रचना-व्यक्तित्व बहुविध अछि; चक्रव्यूह, त्रिकोण आ कथेतर लेखन मिलि हुनकर व्यापक छवि बनबैत अछि।

२. (C) महाकाव्यक पात्र आ प्रसंग लोक-संवेदना, लोक-धुनि आ सामूहिक स्मृति मे पुनर्जीवित होइत अछि — एहि पाठमे महाभारत स्थिर पुराण कथा नहि, लोक-स्मृति आ आधुनिक काव्यक बीच संवाद बनैत अछि।

३. (D) लेखन-संख्या, प्रिय रचना, लोकसंगीत आ कथा-मूल्य पर तुलनात्मक मानदंड बनबैत अछि — संपादकीय विवेचना बाहरी साहित्यिक उदाहरण सँ अशोकक रचनात्मक स्थिति स्पष्ट करैत अछि।
४. (D) रचनाकारक पहचान मात्र आत्म-घोषणा नहि, दीर्घ साधना, रचना-संपदा आ पाठकीय परीक्षा सँ बनैत अछि — ई टिप्पणी संख्या-पूजा नहि, बल्कि लेखक-पहचानक गंभीरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५. (A) निबन्ध, प्रबन्ध, समालोचना आ वैचारिक लेखनकेँ कथा-पद्य सँ अलग मुदा रचनात्मक श्रेणीमे राखैत अछि — कथेतर गद्य लेखकक विचार, समाज-दृष्टि आ आलोचनात्मक चेतनाक दर्पण होइत अछि।
६. (C) एहि सँ अशोकक आरम्भिक कथा-उपस्थिति, समकालीन लेखक-संगति आ नव कथा-परिवेशक संकेत भेटैत अछि — सामूहिक प्रकाशन साहित्यिक पीढ़ी आ वातावरणक पहिचान सेहो करबैत अछि।
७. (A) मिथिलाक भू-सांस्कृतिक इतिहास, लोकस्मृति आ नाम-परम्पराक शोधपरक रुचि — नामकरणक अध्ययन भूगोल, इतिहास, समाज आ भाषाक संगठित पाठ होइत अछि।
८. (B) किएकि लोकगीत, लोकगाथा, गाम-नाम, सामाजिक स्मृति आ कथ्यक धरातल हुनकर रचना-पाठकेँ गहराइ दैत अछि — लोक-संसार अशोकक रचना आ आलोचनात्मक दृष्टिक आधार-भूमि रूपमे उभरैत अछि।
९. (B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘कवि अशोक’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१०. (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘कथाकार अशोक’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
११. (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘कथेतर गद्यक लेखक अशोक’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१२. (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘चक्रव्यूह’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१३. (D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘महाभारत-आधारित कविता’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१४. (D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘लोकगीत आ लोकगाथा’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१५. (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘त्रिकोण कथा-संग्रह’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१६. (D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘कम लेखनक आलोचना’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१७. (C) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘लेखक-पहचान’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१८. (B) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘प्रिय रचना चयन’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
१९. (D) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘प्रेमचन्दक उदाहरण’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।
२०. (A) किएकि ई विषय अशोकक बहुआयामी रचनाकार-स्वरूप, लोक-संस्कृति, विधागत विविधता आ आलोचनात्मक मूल्यांकन बुझबैत अछि — ‘फिराकक लोकगीत-दृष्टि’ जेकाँ प्रश्न विद्यार्थीकेँ तथ्य-स्मरणसँ आगू बढ़ा कऽ अशोकक काव्य, कथा, कथेतर गद्य आ लोक-सांस्कृतिक दृष्टिक विश्लेषण करबैत अछि।

अध्याय २८ : राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकक प्रश्न-संख्या सामान्य अंकसँ बेसी किएक होयबाक चाही?

- (A) किएकि सभ अंकमे समान संख्या चाही
- (B) किएकि पृष्ठ बेसी अछि मात्र
- (C) किएकि क्रमांक अधिक अछि
- (D) किएकि ई बहुआयामी लेखकपर केन्द्रित समृद्ध विशेषांक अछि—व्यक्तित्व, साक्षात्कार, उपन्यास, नाटक, गजल, लोकजीवन आ समग्र दृष्टि सभ उपस्थित अछि

२. भ्रमरजीकें 'भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु' कहबाक मुख्य आशय की अछि?

- (A) नेपाल प्रसंग साहित्यसँ अलग अछि
- (B) ओ केवल राजनीतिक नेता छलाह
- (C) हुनकर लेखन मैथिली-मिथिला संस्कृतिक सीमा-पार साझापन, मधेशी अनुभव आ भाषिक एकताक भाव जोड़ैत अछि
- (D) सीमा-पार संस्कृति अप्रासंगिक अछि

३. 'घरमुँहा/घरमुहौं' उपन्यास पर केन्द्रित प्रश्न कोन दिशा मे होएबाक चाही?

- (A) उपन्यासक कथ्य अप्रासंगिक अछि
- (B) केवल शीर्षकक वर्तनी पर
- (C) घर, समाज, मधेशी आन्दोलन, समरसता, विस्थापन आ सामाजिक चेतनाक कथात्मक विश्लेषण पर
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या पर

४. 'एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार' शीर्षकक आलोचनात्मक संकेत की?

- (A) शीर्षकक अर्थ स्थिर अछि
- (B) रोग/संक्रमणक रूपक मार्फत समाजक विकृति, नैतिक संकट आ सुधारक आकांक्षा बुझबाक संभावना
- (C) कथा मे रूपक नहि होइत
- (D) ई केवल कम्प्यूटर-तकनीकक लेख अछि

५. भ्रमरक गजल 'इजोतक आश' जगबैत अछि—एहि कथनक साहित्यिक अर्थ की?

- (A) इजोत केवल भौतिक रोशनी अछि
- (B) गजलमे अँधार समयक बीच आशा, प्रतिरोध, लोक-विश्वास आ संवेदनात्मक प्रकाशक स्वर अछि
- (C) गजल केवल प्रेमगीत अछि
- (D) आशा साहित्यिक विषय नहि

६. 'एकटा आर वसन्त' केँ समय-समाजक प्रतिनिधि नाटक कहबाक अर्थ की?

- (A) वसन्त केवल ऋतु वर्णन अछि
- (B) रंगमंचीयता अप्रासंगिक अछि
- (C) नाटक समाजसँ अलग अछि
- (D) नाटक व्यक्तिगत कथा सँ आगू बढ़ि अपन युगक सामाजिक तनाव, आकांक्षा आ परिवर्तनक रंगमंचीय रूप बनैत अछि

७. भ्रमरजीक 'हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय हो सकैत अछि?

- (A) विधा विविधता मूल्यहीन अछि
- (B) लेखक एके विधामे सीमित होए
- (C) ई बहुविध लेखन, विधागत प्रयोग, पाठक-विस्तार आ लेखकक सांस्कृतिक उत्पादकता बुझबैत अछि
- (D) केवल पुस्तक-संख्या महत्वपूर्ण अछि

८. भ्रमरक व्यक्तित्वपर साक्षात्कार सामग्रीक उपयोग कोना करबाक चाही?

- (A) साक्षात्कार असाहित्यिक अछि
- (B) साक्षात्कारमे लेखकक विचार नहि भेटैत
- (C) आत्म-दृष्टि, रचनात्मक प्रेरणा, सामाजिक अनुभव आ भाषा-प्रतिबद्धता बुझबाक स्रोत रूपमे
- (D) केवल प्रश्नकर्ताक नाम जरूरी

९. 'लोक मैथिली केर विभूति' कहबाक अर्थ की?

- (A) लोक मैथिली गौण अछि
- (B) विभूति शब्द मात्र प्रशंसा अछि
- (C) भ्रमरजीक लेखन लोकजीवन, भाषा, संस्कृति आ सामुदायिक संवेदनाक प्रतिनिधि मूल्य रखैत अछि
- (D) लोकजीवन साहित्यिक नहि

१०. 'बहुसंगी रचनाकार' छवि भ्रमरक मूल्यांकनमे कोन सावधानी माँगैत अछि?

- (A) सभ विधाकेँ एके मापदंड सँ नापब
- (B) बहुसंगी मतलब असंगत
- (C) केवल जीवन-परिचय पर्याप्त
- (D) प्रत्येक विधा—उपन्यास, नाटक, गजल, कथा, विचार—केँ अलग कसौटी सँ, मुदा समग्र दृष्टि सँ पढ़ब

११. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

१२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लोकजीवनपर समेकित आलोक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

१३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'साक्षात्कार परम्परा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

१४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'घरमुँहा उपन्यास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

१५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'घरमुँहाक प्रभाव आ प्रतिक्रिया' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

१६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'मधेशी आन्दोलन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

१७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'सामाजिक समरसता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

१८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

१९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लोक मैथिली केर विभूति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

२०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'विविधवर्णी रचनाकार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

२१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'बहुआयामिक व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

२२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

२३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'विचार-संवेदना-चेतना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

२४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'एकटा आर वसन्त' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

२५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'समय-समाजक प्रतिनिधि नाटक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

२६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'इजोतक आश' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

२७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भ्रमरक गजल' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

२८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'कलंकित चान' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

२९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भैया अएलै अपन सोराज' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'समग्र दृष्टि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

३१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'अपने रङ्गमे रङ्गाएल व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

३२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भाषा-प्रतिबद्धता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लोक-संस्कृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

३४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'उपन्यास आ समाज' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'नाटक आ युग-बोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'गजल आ आशा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

३७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'कथा आ सामाजिक रूपक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'मधेशी अनुभव' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

३९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'सीमा-पार मैथिली' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लेखकक बहुविधता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'पुस्तक-प्रकाशनक विस्तार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'जन-संवेदना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'सांस्कृतिक स्मृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भाषिक सेतु' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'नेपाल-मिथिला सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'समाज-सुधारक दृष्टि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

४७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लेखक आ लोकजीवन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'समीक्षा-साक्षात्कार-संस्मरण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

४९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'आलोचनात्मक समग्रता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

५०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'संवेदना आ प्रतिरोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

५१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'समरसता बनाम संघर्ष' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

५२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लोकभाषा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

५३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'गद्य-पद्य-विविधता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

५४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'रंगमंचीय चेतना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

५५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'उपन्यासक दस्तावेजी मूल्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

५६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'रचनात्मक सामाजिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

५७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लेखकीय विरासत' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

५८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'अँधारमे इजोतक रूपक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

५९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'मिथिला-मधेश संवाद' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

६०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'सामुदायिक अभिलेखन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

६१. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'शोधार्थी उपयोगिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

६२. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'उच्च-स्तरीय प्रश्न निर्माण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

६३. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'साहित्यिक बहुरूपता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि

६४. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'विचारक आ रचनाकार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

६५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'आत्मीय आलोचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

६६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'सांस्कृतिक लोकतंत्र' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

६७. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'भ्रमरक अध्ययनक पद्धति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

६८. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'लोकसाहित्य आ आधुनिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि

६९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'मैथिली अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि
- (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

७०. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे 'जनपक्षधर रचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करब अछि
- (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे अवधारणा नहि अछि

उत्तरमाला — अध्याय २८ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (D) किएकि ई बहुआयामी लेखकपर केन्द्रित समृद्ध विशेषांक अछि—व्यक्तित्व, साक्षात्कार, उपन्यास, नाटक, गजल, लोकजीवन आ समग्र दृष्टि सभ उपस्थित अछि — गतिशील प्रश्न-संख्या सामग्रीक विविधता आ गहराई पर आधारित होयबाक चाही।

२. (C) हुनकर लेखन मैथिली-मिथिला सांस्कृतिक सीमा-पार साझापन, मधेशी अनुभव आ भाषिक एकताक भाव जोड़ैत अछि — मिथिला भारत-नेपालक साझा सांस्कृतिक भूगोल अछि; भ्रमरक साहित्य एहि सेतु-भावकें रूप दैत अछि।

३. (C) घर, समाज, मधेशी आन्दोलन, समरसता, विस्थापन आ सामाजिक चेतनाक कथात्मक विश्लेषण पर — उपन्यासकें सामाजिक दस्तावेज आ कलात्मक संरचना दुनू रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
४. (B) रोग/संक्रमणक रूपक मार्फत समाजक विकृति, नैतिक संकट आ सुधारक आकांक्षा बुझबाक संभावना — एहन शीर्षक सामाजिक बीमारी आ साहित्यिक उपचारक रूपक खोलि सकैत अछि।
५. (B) गजलमे अँधार समयक बीच आशा, प्रतिरोध, लोक-विश्वास आ संवेदनात्मक प्रकाशक स्वर अछि — गजल शिल्पक भीतर सामाजिक आ आध्यात्मिक आशाक स्वर समाहित भऽ सकैत अछि।
६. (D) नाटक व्यक्तिगत कथा सँ आगू बढ़ि अपन युगक सामाजिक तनाव, आकांक्षा आ परिवर्तनक रंगमंचीय रूप बनैत अछि — प्रतिनिधि नाटक समयक धड़कनकें पात्र, संवाद आ संघर्षमे मूर्त करैत अछि।
७. (C) ई बहुविध लेखन, विधागत प्रयोग, पाठक-विस्तार आ लेखकक सांस्कृतिक उत्पादकता बुझबैत अछि — विधा-विस्तार लेखकक रचनात्मक साहस आ सांस्कृतिक पहुँचक संकेत अछि।
८. (C) आत्म-दृष्टि, रचनात्मक प्रेरणा, सामाजिक अनुभव आ भाषा-प्रतिबद्धता बुझबाक स्रोत रूपमे — साक्षात्कार आलोचना लेल लेखकक प्रत्यक्ष वैचारिक आवाज उपलब्ध करबैत अछि।
९. (C) भ्रमरजीक लेखन लोकजीवन, भाषा, संस्कृति आ सामुदायिक संवेदनाक प्रतिनिधि मूल्य रखैत अछि — ई अभिव्यक्ति भ्रमरक साहित्यकें जन-जीवन आ लोक-संस्कारसँ जोड़ि पढ़ैत अछि।
१०. (D) प्रत्येक विधा—उपन्यास, नाटक, गजल, कथा, विचार—कें अलग कसौटी सँ, मुदा समग्र दृष्टि सँ पढ़ब — बहुविध लेखकक सम्यक् मूल्यांकन लेल विधागत विवेक जरूरी अछि।
११. (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क व्यक्तित्व’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१२. (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘लोकजीवनपर समेकित आलोक’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१३. (D) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘साक्षात्कार परम्परा’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१४. (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘घरमुँहा उपन्यास’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१५. (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘घरमुहाँक प्रभाव आ प्रतिक्रिया’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१६. (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘मधेशी आन्दोलन’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१७. (C) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘सामाजिक समरसता’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१८. (A) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
१९. (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘लोक मैथिली केर विभूति’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।
२०. (B) किएकि ई विषय भ्रमरजीक बहुआयामी साहित्य, लोकजीवन-संबद्धता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु-भाव आ सामाजिक चेतनाक विश्लेषण करबैत अछि — ‘विविधवर्णी रचनाकार’ जेकाँ प्रश्न पाठककें लेखकक कृति, समाज, भाषा आ सांस्कृतिक विरासत बीचक सम्बन्ध पर विचार करबैत अछि।

[illegible]

अध्याय २९ : मिथिला स्टूडेंट यूनियन विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. मिथिला स्टूडेंट यूनियन विशेषांकमे 'अभिनन्दन' सँ बेसी 'आलोचनात्मक दस्तावेज'क स्वर किएक प्रमुख अछि?

- (A) किएकि सभ लेख प्रशंसात्मक अछि
- (B) किएकि संस्था पर प्रश्न उठेबाक मनाही अछि
- (C) किएकि संपादकीय स्पष्ट करैत अछि जे विशेषांक संस्था-पूजा नहि, कार्य, आलोचना, सुधार आ मिथिला-हितक परीक्षण अछि
- (D) किएकि विद्यार्थी आन्दोलन साहित्यिक विषय नहि

२. एम.एस.यू. पर विशेषांक निकालबाक संपादकीय औचित्य की अछि?

- (A) केवल नेता-प्रशंसा
- (B) केवल संस्था-नाम प्रचार
- (C) केवल स्मारिका छापब
- (D) किछु काज 'रिकॉर्ड' नहि, वास्तविक सामाजिक-भाषिक काज होइत अछि—एहि भेदकें चिन्हित करब

३. 'पॉकेट संस्था' आ 'संस्था' बीचक भेद विशेषांकमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) दुनू एके अर्थक शब्द अछि
- (B) ई भेद जातिवादी/स्वघोषित समूह आ लोक-उत्तरदायी संगठनक आलोचनात्मक अलगाव करैत अछि
- (C) पॉकेट संस्था सदा श्रेष्ठ होइत अछि
- (D) संस्था-चर्चा अप्रासंगिक अछि

४. एम.एस.यू. पर लागल आक्षेप सभकेँ शामिल करब कोन संपादकीय नैतिकता देखबैत अछि?

- (A) एकतरफा प्रचार
- (B) साहित्यिक तटस्थताक अभाव
- (C) खुलापन, आलोचना-सहनशीलता आ संस्थागत सुधारक उम्मीद
- (D) विरोधक दमन

५. मिथिला आन्दोलनमे विद्यार्थी-संगठनक भूमिका किएक अलग पहचान रखैत अछि?

- (A) युवा ऊर्जा, जनसंपर्क, भाषा-क्षेत्रीय प्रश्न आ संगठनात्मक गतिशीलता एक संग सक्रिय होइत अछि
- (B) भाषा-प्रश्न राजनीतिक नहि
- (C) आन्दोलनमे युवा अप्रासंगिक अछि
- (D) विद्यार्थी समाजसँ अलग रहैत अछि

६. 'मिथिलावादी पार्टी' धरि यात्रा पर प्रश्न कोन विमर्श खोलैत अछि?

- (A) यात्रा पर विचार आवश्यक नहि
- (B) सांस्कृतिक आन्दोलनसँ राजनीतिक रूपान्तरण, नेतृत्व, दिशा आ जन-उत्तरदायित्वक प्रश्न
- (C) राजनीति साहित्यसँ पूर्ण अलग
- (D) नाम-परिवर्तन मात्र

७. 'दशा, दिशा आ नेतृत्व' जेकाँ आलेखक वैचारिक केन्द्र की होयत?

- (A) केवल पृष्ठ-सूची
- (B) केवल जीवन-परिचय
- (C) संगठनक वर्तमान स्थिति, भावी मार्ग आ नेतृत्वक गुणवत्ता पर आलोचनात्मक विचार
- (D) केवल नारा-संग्रह

८. 'जनहित परिप्रेक्ष्य' सँ एम.एस.यू.क मूल्यांकन किएक जरूरी अछि?

- (A) किएकि मिथिला आन्दोलनक सार्थकता जन-सरोकार, सेवा, भाषा-हित आ सामाजिक न्यायसँ मापल जायत
- (B) आन्दोलन केवल छवि लेल होइत अछि
- (C) भाषा आ जनता असंबद्ध अछि
- (D) जनहित अलग विषय अछि

९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला स्टूडेंट यूनियन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

११. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिलावादी पार्टी' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

१३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला राज्यक प्रश्न' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

१४. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'दशा दिशा नेतृत्व' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१५. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'एम एस यू केर हथ्र' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

१६. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'काज एवं अपेक्षा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१७. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'जनहित परिप्रेक्ष्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

१८. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'विद्यार्थी आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

१९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला अस्मिता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'भाषा आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२१. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'जातिवादी संस्थाक आलोचना' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'स्वघोषित नेतृत्व' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'सार्वजनिक जवाबदेही' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

२४. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'संस्था-सुधार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२५. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'युवा शक्ति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

२६. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'संगठन आ अनुशासन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२७. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'नारा बनाम काज' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२८. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'क्षेत्रीय विकास' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

२९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'शिक्षा आ रोजगार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

३०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला राज्य आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

३१. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'राजनीतिक रूपान्तरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'नेतृत्व संकट' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

३३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'लोकतांत्रिक आलोचना' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३४. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'सांस्कृतिक संगठन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

३५. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'विदेहक संपादकीय हस्तक्षेप' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

३६. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'आन्दोलनक दस्तावेजीकरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

३७. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'लोकहितक कसौटी' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३८. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'भाषिक अधिकार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

३९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिलाक अविकास' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'जन-जागरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४१. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'संगठनात्मक पारदर्शिता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

४२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'आलोचना स्वीकार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

४३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'आशा आ संदेह' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

४४. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'संघर्ष आ मर्यादा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४५. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मैथिली-मिथिला सेवा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४६. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'युवा नेतृत्वक सीमा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

४७. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मीडिया आ संगठन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

४८. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'सार्वजनिक विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

४९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'सुधारक सम्भावना' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'आन्दोलनक नैतिकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५१. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'संस्थागत स्मृति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

५२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'अभिनन्दन बनाम मूल्यांकन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

५३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'रिकॉर्ड बनाम काज' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५४. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'साहित्यिक विशेषांकमे सामाजिक आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

५५. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला जनपक्ष' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

५६. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'सामाजिक समावेश' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि

५७. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'आत्मालोचन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

५८. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'भविष्य-दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

५९. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'एम.एस.यू.क उपयोगिता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

६०. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'नागरिक भागीदारी' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

६१. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'विद्यार्थी संगठनक विरासत' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

६२. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मिथिला-हितक प्रमाण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

६३. एम.एस.यू. विशेषांकमे 'मूल्यांकनक पद्धति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय बनैत अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक अर्थ नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय २९ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) किएकि संपादकीय स्पष्ट करैत अछि जे विशेषांक संस्था-पूजा नहि, कार्य, आलोचना, सुधार आ मिथिला-हितक परीक्षण अछि — एहि विशेषांकमे समर्थन आ आक्षेप दुनू उपस्थित अछि; उद्देश्य संगठनक सार्वजनिक भूमिका पर विवेकपूर्ण विमर्श करब अछि।

२. (D) किछु काज 'रिकॉर्ड' नहि, वास्तविक सामाजिक-भाषिक काज होइत अछि—एहि भेदकें चिन्हित करब — संपादकीय 'काज' आ 'रिकॉर्ड बनेबाक' बीच भेद करैत मिथिला-हितक परिणाममूलक मूल्यांकन करैत अछि।

३. (B) ई भेद जातिवादी/स्वघोषित समूह आ लोक-उत्तरदायी संगठनक आलोचनात्मक अलगाव करैत अछि — विदेहक दृष्टिमे संस्था तखन सार्थक होइत अछि जखन ओ सार्वजनिक आलोचना स्वीकारि सुधारक क्षमता रखैत अछि।
४. (C) खुलापन, आलोचना-सहनशीलता आ संस्थागत सुधारक उम्मीद — विशेषांक संगठनक आलोचनात्मक मूल्यांकन करैत अछि, केवल प्रशंसा-संग्रह नहि।
५. (A) युवा ऊर्जा, जनसंपर्क, भाषा-क्षेत्रीय प्रश्न आ संगठनात्मक गतिशीलता एक संग सक्रिय होइत अछि — विद्यार्थी संगठन भाषा, शिक्षा, रोजगार, क्षेत्रीय अस्मिता आ जन-जागरणक वाहक बनि सकैत अछि।
६. (B) सांस्कृतिक आन्दोलनसँ राजनीतिक रूपान्तरण, नेतृत्व, दिशा आ जन-उत्तरदायित्वक प्रश्न — आन्दोलनक संगठनात्मक विकास ओकर लक्ष्य, पद्धति आ सार्वजनिक विश्वसनीयता पर प्रश्न उठबैत अछि।
७. (C) संगठनक वर्तमान स्थिति, भावी मार्ग आ नेतृत्वक गुणवत्ता पर आलोचनात्मक विचार — दशा-दिशा-नेतृत्वक त्रयी संगठनात्मक विवेकक मूल कसौटी अछि।
८. (A) किएकि मिथिला आन्दोलनक सार्थकता जन-सरोकार, सेवा, भाषा-हित आ सामाजिक न्यायसँ मापल जायत — जनहित केन्द्रमे राखलासँ संगठनक काज नारा सँ आगू बढ़ि वास्तविक समाजक संग जुड़ैत अछि।
९. (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१०. (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘मिथिला स्टूडेंट यूनियन’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
११. (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१२. (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘मिथिलावादी पार्टी’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१३. (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘मिथिला राज्यक प्रश्न’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१४. (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘दशा दिशा नेतृत्व’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१५. (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘एम एस यू केर हथ्र’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१६. (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘काज एवं अपेक्षा’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१७. (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘जनहित परिप्रेक्ष्य’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१८. (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘विद्यार्थी आन्दोलन’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
१९. (B) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘मिथिला अस्मिता’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
२०. (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘भाषा आन्दोलन’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
२१. (C) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘जातिवादी संस्थाक आलोचना’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।
२२. (A) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘स्वघोषित नेतृत्व’ विद्यार्थीक संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।

[illegible]

६३. (D) किएकि ई विषय संस्था, आन्दोलन, मिथिला-हित, आलोचना, नेतृत्व आ जन-उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बुझबैत अछि — ‘मूल्यांकनक पद्धति’
विद्यार्थीकेँ संगठनक प्रशंसा/निन्दा सँ आगू बढ़ा कऽ ओकर सामाजिक भूमिका आ आलोचनात्मक कसौटी पर विचार करबैत अछि।

अध्याय ३० : लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकक संपादकीयमे नारीवादी सिद्धान्तक चर्चा किएक आयल अछि?
 - (A) ई केवल विदेशी नाम-स्मरण अछि
 - (B) शैल झा 'सागर'क पाठकीय/रचनात्मक उपस्थिति आ साहित्यिक स्त्री-दृष्टिक प्रसंगसँ लेखकक जीवन-साहित्यक समग्र पाठ बनैत अछि
 - (C) नारीवादक सागरजीसँ कोनो सम्बन्ध नहि
 - (D) साहित्यमे स्त्री-दृष्टि अप्रासंगिक अछि
२. वर्जीनिया वुल्फक आर्थिक स्वतंत्रता आ निजता सम्बन्धी विचारक सन्दर्भ किएक सार्थक अछि?
 - (A) लेखनमे आर्थिकता नहि
 - (B) ओ मैथिली लेखक नहि छलथि तँ अप्रासंगिक
 - (C) नारी लेखन लेल निजी स्थान, साधन आ आत्मनिर्णयक आवश्यकता बुझबैत अछि
 - (D) नारी लेखन केवल प्रेरणा पर निर्भर
३. मेरी वोल्स्टोनक्राफ्टक शिक्षा-विचारक संकेत विशेषांकमे कोन प्रश्न उठबैत अछि?
 - (A) शिक्षा स्त्री-विमर्शक भाग नहि
 - (B) नारी-शिक्षा, तर्कशीलता आ औचित्यक शिक्षा बिना साहित्यिक/सामाजिक समानता अधूरी रहैत अछि
 - (C) केवल घरेलू संस्कार पर्याप्त
 - (D) औचित्यक शिक्षा निरर्थक अछि
४. सिमोन द बोउवारक वर्ग/जाति-सन्दर्भ पर संपादकीय असहमति किएक महत्वपूर्ण अछि?
 - (A) नारीवादकें वर्ग, जाति, धर्म आ सामाजिक विभाजनक जटिलतासँ जोड़ि विचारबाक आग्रह करैत अछि
 - (B) जाति आ वर्गक कोनो भूमिका नहि
 - (C) नारीक प्रश्न एकरूप अछि
 - (D) सिद्धान्त पर प्रश्न नहि उठाओल जा सकैत
५. लक्ष्मण झा 'सागर'क व्यक्तित्व पर 'स्पष्टवादी साहित्यकार' विशेषणक अर्थ की?
 - (A) व्यक्तित्वक साहित्यसँ सम्बन्ध नहि
 - (B) हुनकर साहित्यिक आ सामाजिक व्यवहारमे बेबाक मत, भाषा-निष्ठा आ मूल्यपरक स्पष्टता देखाइत अछि
 - (C) ई केवल प्रशंसा-शब्द अछि
 - (D) स्पष्टवादी मतलब असाहित्यिक
६. 'सागर सँ महासागर धरि' जेकाँ शीर्षकक आलोचनात्मक आशय की?
 - (A) नामक अर्थ महत्वहीन
 - (B) शीर्षक केवल अलंकार अछि
 - (C) रूपक आलोचना नहि
 - (D) व्यक्ति-सागरक साहित्यिक विस्तार, आत्मीयता आ बहुआयामी योगदानकें रूपक रूपमे देखब
७. 'किस्त किस्त जीवन'क उल्लेख सागरजीक विशेषांकमे कोन प्रकारक साहित्यिक सामग्रीक संकेत दैत अछि?
 - (A) केवल आर्थिक किस्त
 - (B) कविता-संग्रहक नाम मात्र
 - (C) केवल पृष्ठ-विभाजन
 - (D) जीवनक क्रमिक अनुभव, पत्रात्मक/आत्मकथात्मक पाठ आ पारिवारिक-पाठकीय साझेदारी
८. शैल झा 'सागर'क रचना/पाठकीय उपस्थितिक उल्लेख किएक महत्वपूर्ण अछि?
 - (A) सफल साहित्यकारक जीवनमे स्त्री-सहभागिता, पाठकीय श्रम आ स्वतंत्र लेखिका-सत्ता कें मान्यता दैत अछि
 - (B) पत्नी-संदर्भ साहित्यिक नहि
 - (C) लेखिका-पहचान गौण अछि
 - (D) स्त्रीक भूमिका केवल घरेलू अछि

९. 'पाथरपर दूभि उपजाबैत राग-भावक अन्वेषक' शीर्षक सागरजीक कोन पक्ष सूचित करैत अछि?

- (A) राग-भाव साहित्यिक नहि
- (B) रूपकक कोनो अर्थ नहि
- (C) ई कृषि-विज्ञानक लेख अछि
- (D) कठोर परिस्थितिमे सेहो संवेदना, रागात्मकता आ रचनात्मकता उगबयबाक क्षमता

१०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे संस्मरणक बहुलता कोन आलोचनात्मक उपयोग रखैत अछि?

- (A) समकालीन साहित्यिक समुदायक स्मृति द्वारा लेखकक व्यक्तित्व, व्यवहार, भाषा-सेवा आ प्रभावकें बहु-दृष्टिसँ देखब
- (B) संस्मरण तथ्यहीन होइत अछि
- (C) केवल जीवनी पर्याप्त अछि
- (D) बहु-दृष्टि भ्रम उत्पन्न करैत अछि

११. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'लक्ष्मण झा 'सागर'क संक्षिप्त परिचय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

१२. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'शैल झा 'सागर'क रचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

१३. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'आत्मकथ्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

१४. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'स्पष्टवादी साहित्यकार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

१५. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सागर सँ महासागर धरि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

१६. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सर्वगुण सम्पन्न सागरजी' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

२५. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'वर्जीनिया वुल्फ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

२६. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

२७. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सिमोन द बोउवार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

२८. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'उत्तर आधुनिकता आ नारीवाद' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

२९. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'जाति-वर्ग-धर्म आ नारी अधिकार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

३०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'मिथिला समाजमे नारी' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

३१. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'उच्च वर्गक नारी-स्थिति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

३२. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'आधुनिकीकरणक प्रभाव' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

४९. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सांस्कृतिक सक्रियता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'संगठनात्मक उपस्थिति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

५१. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'मैथिली कार्यक्रम' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(C) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५२. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'पत्र-संस्कृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(C) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

५३. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'समीक्षा आ आत्मीयता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्याक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

५४. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'व्यक्तिगत जीवनक साहित्यिक अर्थ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

५५. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'निजता आ लेखन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किण्कि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किण्कि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किण्कि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किण्कि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

५६. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'स्त्री-सहयोगक मान्यता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

५७. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'साहित्यिक इतिहासक स्मृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किऐकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(B) किऐकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किऐकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किऐकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५८. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'जीवन-लेखन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) कि एक अवधारणात्मक मूल्य नहि
(B) कि एक ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) कि एक पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) कि एक ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

५९. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सामाजिक व्याख्या' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

६०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'विचारधारा आ साहित्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

६१. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'नारीवादी पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

६२. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'पुरुष-दृष्टि आ महिला-साहित्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

६३. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'मिथिला-सन्दर्भक स्त्री-विमर्श' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्याक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

६४. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सागरजीक विरासत' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्याक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

६५. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'सहभागी साहित्यिक जीवन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किऐकल अवधारणात्मक मूल्य नहल
(B) किऐकल ई वलषय सागरजीक वलकतलत्व-कृतलत्व, साहलतलक समुदाय, नारलवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी ढाठ करबैत अछल
(C) किऐकल ढृष्ठ-सूची याद करबाक अछल
(D) किऐकल ई केवल अनुक्रमक शब्द अछल

६६. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'संस्मरणक विश्वसनीयता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

६७. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'आलोचना आ श्रद्धा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि

६८. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'उच्चस्तरीय प्रश्न निर्माण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

६९. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'लेखकक सामुदायिक छवि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किऐकि अवधारणात्मक मूल्य नहि
(B) किऐकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किऐकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किऐकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि

७०. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'भाषिक अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

७१. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'अनुभवक क्रमिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(D) किएकि अवधारणात्मक मूल्य नहि

७२. लक्ष्मण झा 'सागर' विशेषांकमे 'साहित्य-साधना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किण्णक पृष्ठ-सूची याद करबाक अछि
(B) किण्णक ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किण्णक ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि
(D) किण्णक अवधारणात्मक मूल्य नहि

१. (B) शैल झा 'सागर'क पाठकीय/रचनात्मक उपस्थिति आ साहित्यिक स्त्री-दृष्टिक प्रसंगसँ लेखकक जीवन-साहित्यिक समग्र पाठ बनैत अछि — संपादकीय सागरजीक व्यक्तित्वकेँ पारिवारिक-साहित्यिक साझेदारी आ नारीवादी सिद्धान्तक व्यापक सन्दर्भमे पढ़ैत अछि।
२. (C) नारी लेखन लेल निजी स्थान, साधन आ आत्मनिर्णयक आवश्यकता बुझबैत अछि — वुल्फक विचार स्त्री-लेखनक भौतिक शर्त पर जोर दैत अछि, जे संपादकीय विमर्शमे उपयोगी बनैत अछि।
३. (B) नारी-शिक्षा, तर्कशीलता आ औचित्यक शिक्षा बिना साहित्यिक/सामाजिक समानता अधूरी रहैत अछि — ई सन्दर्भ स्त्री-अधिकारक बौद्धिक आधार खोलैत अछि।
४. (A) नारीवादकेँ वर्ग, जाति, धर्म आ सामाजिक विभाजनक जटिलतासँ जोड़ि विचारबाक आग्रह करैत अछि — संपादकीय सार्वभौमिक नारीवादक सीमा पर विचार करैत स्थानीय मिथिला-सन्दर्भ जोड़ैत अछि।
५. (B) हुनकर साहित्यिक आ सामाजिक व्यवहारमे बेबाक मत, भाषा-निष्ठा आ मूल्यपरक स्पष्टता देखाइत अछि — स्पष्टवादिता लेखकक वैचारिक ईमानदारी आ सार्वजनिक साहित्यिक चरित्रक संकेत अछि।
६. (D) व्यक्ति-सागरक साहित्यिक विस्तार, आत्मीयता आ बहुआयामी योगदानकेँ रूपक रूपमे देखब — एहन शीर्षक जीवनी, कृति आ व्यक्तित्वक विस्तारक प्रतीकात्मक पठन करबैत अछि।
७. (D) जीवनक क्रमिक अनुभव, पत्रात्मक/आत्मकथात्मक पाठ आ पारिवारिक-पाठकीय साझेदारी — ई प्रसंग जीवन-लेखन, पाठकीयता आ परिवारक साहित्यिक सहभागिता पर प्रकाश दैत अछि।
८. (A) सफल साहित्यकारक जीवनमे स्त्री-सहभागिता, पाठकीय श्रम आ स्वतंत्र लेखिका-सत्ता केँ मान्यता दैत अछि — विशेषांक सागरजीक व्यक्तित्वकेँ दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारीक संग पढ़ैत अछि।
९. (D) कठोर परिस्थितिमे सेहो संवेदना, रागात्मकता आ रचनात्मकता उगबयबाक क्षमता — शीर्षक सागरजीक जीवन-संघर्ष आ संवेदनात्मक साधनाक रूपक अछि।
१०. (A) समकालीन साहित्यिक समुदायक स्मृति द्वारा लेखकक व्यक्तित्व, व्यवहार, भाषा-सेवा आ प्रभावकेँ बहु-दृष्टिसँ देखब — संस्मरण सामुदायिक साहित्यिक इतिहासक जीवित स्रोत बनैत अछि।
११. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'लक्ष्मण झा 'सागर'क संक्षिप्त परिचय' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१२. (B) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'शैल झा 'सागर'क रचना' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१३. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'आत्मकथ्य' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१४. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'स्पष्टवादी साहित्यकार' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१५. (C) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'सागर सँ महासागर धरि' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१६. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'सर्वगुण सम्पन्न सागरजी' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१७. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'जेना ओ कहलनि' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।
१८. (D) किएकि ई विषय सागरजीक व्यक्तित्व-कृतित्व, साहित्यिक समुदाय, नारीवादी संदर्भ, संस्मरण आ भाषा-सेवाक बहुआयामी पाठ करबैत अछि — 'पाथरपर दूबि उपजाबैत राग-भाव' जेकाँ प्रश्न सागरजीक जीवन, लेखन, दाम्पत्य-सांस्कृतिक साझेदारी आ मैथिली साहित्यिक इतिहासक सम्बन्ध खोलैत अछि।

[illegible]

अध्याय ३१ : नरेन्द्र झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'चपल चरन चित चंचल भान'क उद्धरणक प्रयोजन की अछि?

- (A) केवल शृंगार-वर्णनक पुनरावृत्ति
- (B) आत्मकथ्यक शीर्षककेँ विद्यापतिक सांस्कृतिक-साहित्यिक परंपरासँ जोड़ि लेखकक आत्म-संवेदनाक आरम्भ करब
- (C) केवल कविताक पंक्ति याद करब
- (D) नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रसँ पूर्ण असंबद्ध सजावट

२. नरेन्द्र झाक जन्म-प्रसंगमे १९३४क भूकम्पक उल्लेख कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) लेखकक जीवनमे स्थानक भूमिका नहि
- (B) भूकम्पक साहित्यसँ कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) ई केवल तारीख-स्मरण अछि
- (D) व्यक्तिगत जीवनक आरम्भकेँ मिथिलाक सामाजिक-भौगोलिक संकट आ पुनर्निर्माणक अनुभवसँ जोड़ैत अछि

३. नरेन्द्र झाक लेखनमे मिथिलाक अर्थतंत्र किएक केन्द्रीय विषय बनैत अछि?

- (A) किएकि मिथिला विकास पर चर्चा अनावश्यक अछि
- (B) किएकि अर्थतंत्र मैथिली विषय नहि
- (C) ओ साहित्यिक भावुकतासँ आगू बढ़ि विकास, जल-संसाधन, भ्रष्टाचार आ आर्थिक संरचना पर मिथिला-केंद्रित विश्लेषण करैत छथि
- (D) किएकि ओ केवल कविता लिखैत छथि

४. नरेन्द्र झाक सी.ए. पृष्ठभूमि हुनकर मैथिली लेखनमे कोन विशेषता जोड़ैत अछि?

- (A) लोकभाषाक अवमूल्यन
- (B) साहित्यसँ पूर्ण विच्छेद
- (C) केवल पदवीक चमक
- (D) आर्थिक विश्लेषण, आँकड़ा-बोध, संरचनात्मक सोच आ विकास-चिन्तनक व्यावहारिक दृष्टि

५. 'मिथिलाक आर्थिक पक्ष रखनिहार किन्तु ऐतिहासिक विभ्रम उत्पन्न केनिहार लेखक' जेकाँ आलोचना विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) लेखकक सभ कथन स्वतः प्रमाणित
- (B) ई केवल निन्दा अछि
- (C) ई लेखकक योगदानकेँ स्वीकार करैत ऐतिहासिक दावाक परीक्षण करबाक आलोचनात्मक संतुलन देखबैत अछि
- (D) आलोचना विशेषांकमे नहि होयबाक चाही

६. नरेन्द्र झा आ पन्ना झाक संयुक्त उल्लेख 'दंपति लेखक' अवधारणाकेँ कोना समृद्ध करैत अछि?

- (A) दंपति लेखक अवधारणा अर्थहीन अछि
- (B) पत्नी-संदर्भ गौण अछि
- (C) ई साहित्यिक जीवनमे दाम्पत्य-सहभागिता, पाठकीयता, मनोविज्ञान आ लघुकथा/निबन्धक समानान्तर योगदान देखबैत अछि
- (D) स्त्री लेखनकेँ अलग नहि देखबाक चाही

७. कलकत्ता केँ 'मिथिला-मैथिलीक कर्मभूमि' कहबाक अर्थ की?

- (A) प्रवासी नगर सेहो भाषा-संस्कृतिक सक्रिय केन्द्र बनि सकैत अछि
- (B) केवल भौगोलिक nostalgia
- (C) प्रवासमे भाषा-संरक्षण असंभव अछि
- (D) मिथिला केवल भौगोलिक सीमा अछि

८. नरेन्द्र झाक 'चेतना समिति' प्रति व्यंग्यात्मक दृष्टि कोन व्यापक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) व्यक्ति-आक्षेप मात्र
- (B) मैथिली संस्था सभक वास्तविक काज, निष्क्रियता, आत्मालोचना आ सार्वजनिक जवाबदेहीक प्रश्न
- (C) संस्था पर आलोचना अनुचित
- (D) व्यंग्यक कोनो सामाजिक अर्थ नहि

९. 'मिथिला राइजिंग' जेकाँ शीर्षक नरेन्द्र झाक विचारमे कोन आकांक्षा व्यक्त करैत अछि?

- (A) केवल स्मरण-लेखन
- (B) मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक पुनरुत्थान, आत्मविश्वास आ विकासक समग्र दृष्टि
- (C) केवल अंग्रेजी शीर्षकक आकर्षण
- (D) केवल पर्यटन-वर्णन

१०. नरेन्द्र झा विशेषांकमे विरोधी/भिन्न मतक लोकसँ लेख मांगबाक संपादकीय नीति कोन मूल्य देखबैत अछि?

- (A) विरोधक उपेक्षा
- (B) केवल प्रशंसा-संग्रह
- (C) संपादकीय एकरूपता
- (D) समावेशी आलोचना, बहुदृष्टि आ सार्वजनिक साहित्यिक लोकतंत्र

११. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'नरेन्द्र झाजीक संक्षिप्त परिचय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (D) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि

१२. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'अनुशीलनक अनुशीलन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि

१३. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'मिथिला-मैथिल केर चहुविकास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि

१४. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'डा. प्रो. पन्ना झा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि

१५. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'मिथिलाक अर्थशास्त्री' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (D) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि

१६. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'ऐतिहासिक विभ्रम' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि

६५. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'मिथिला-मैथिली सेवा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (B) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

६६. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'समीक्षा आ संस्मरण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि

६७. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'लेखक आत्मविश्वास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि
- (D) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि

६८. नरेन्द्र झा विशेषांकमे 'क्षेत्रीय विकास विमर्श' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय नरेन्द्र झाक अर्थशास्त्रीय दृष्टि, मिथिला-सेवा, प्रवासी अनुभव, पन्ना झाक सहभागिता आ आलोचनात्मक पुनर्पाठकें जोड़ैत अछि
- (D) किएकि अवधारणात्मक महत्त्व नहि

उत्तरमाला — अध्याय ३१ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) आत्मकथ्यक शीर्षककें विद्यापतिक सांस्कृतिक-साहित्यिक परंपरासँ जोड़ि लेखकक आत्म-संवेदनाक आरम्भ करब — विद्यापति उद्घरण आत्मकथ्यक सांस्कृतिक आधार बनैत अछि; ई लेखकक आत्मवृत्तकें मैथिली परंपराक भीतर राखैत अछि।

२. (D) व्यक्तिगत जीवनक आरम्भकें मिथिलाक सामाजिक-भौगोलिक संकट आ पुनर्निर्माणक अनुभवसँ जोड़ैत अछि — भूकम्पक प्रसंग लेखकक जीवनकें मिथिलाक आपदा-स्मृति, घर-घराड़ी आ पुनर्निर्माणक सामाजिक पृष्ठभूमिसँ जोड़ैत अछि।

३. (C) ओ साहित्यिक भावुकतासँ आगू बढ़ि विकास, जल-संसाधन, भ्रष्टाचार आ आर्थिक संरचना पर मिथिला-केंद्रित विश्लेषण करैत छथि — हुनकर पोथी सभ मिथिलाक आर्थिक, सामाजिक आ संसाधन-संबंधी पक्षकें विचारक केन्द्रमे राखैत अछि।

४. (D) आर्थिक विश्लेषण, आँकड़ा-बोध, संरचनात्मक सोच आ विकास-चिन्तनक व्यावहारिक दृष्टि — चार्टर्ड अकाउण्टेण्टक प्रशिक्षण हुनकर आर्थिक-सामाजिक लेखनकें विश्लेषणात्मक आधार दैत अछि।

५. (C) ई लेखकक योगदानकें स्वीकार करैत ऐतिहासिक दावाक परीक्षण करबाक आलोचनात्मक संतुलन देखबैत अछि — विशेषांकक परिपक्वता एहि बातमे अछि जे प्रशंसा संग आलोचनात्मक परीक्षण सेहो अछि।

६. (C) ई साहित्यिक जीवनमे दाम्पत्य-सहभागिता, पाठकीयता, मनोविज्ञान आ लघुकथा/निबन्धक समानान्तर योगदान देखबैत अछि — पन्ना झाक लेखनक चर्चा नरेन्द्र झा विशेषांककें पारिवारिक-साहित्यिक साझेदारीक रूपमे विस्तार दैत अछि।

७. (A) प्रवासी नगर सेहो भाषा-सांस्कृतिक सक्रिय केन्द्र बनि सकैत अछि — कलकत्ता प्रसंग बतबैत अछि जे मैथिली काज गाम-घर सँ बाहर प्रवासी नेटवर्कमे सेहो विकसित भेल।

८. (B) मैथिली संस्था सभक वास्तविक काज, निष्क्रियता, आत्मालोचना आ सार्वजनिक जवाबदेहीक प्रश्न — संस्था-आलोचना भाषा-आन्दोलनमे संगठनक निष्क्रियता आ जवाबदेही पर विचार खोलैत अछि।

९. (B) मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक पुनरुत्थान, आत्मविश्वास आ विकासक समग्र दृष्टि — ई शीर्षक मिथिलाक उत्थानक वैचारिक-आर्थिक परियोजनाक संकेत दैत अछि।

अध्याय ३२ : रामावतार यादव विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. रामावतार यादव विशेषांकक संपादकीयमे 'शब्द-ब्रह्म' चर्चा किएक केन्द्रीय अछि?

- (A) केवल धार्मिक प्रसंग अछि
- (B) भाषाविज्ञानसँ असंबद्ध अछि
- (C) ई भाषाविज्ञानकेँ भारतीय ज्ञानमीमांसा, व्याकरण दर्शन आ शब्द-अर्थ सम्बन्धक गहीर परम्परासँ जोड़ैत अछि
- (D) केवल ध्वनि-विज्ञानक तकनीकी शब्द

२. परा, पश्यन्ति, मध्यमा आ वैखारीक क्रम भाषाक कोन रूपान्तरण बुझबैत अछि?

- (A) केवल छन्द-विभाग
- (B) अविभक्त अन्तःशक्ति सँ बाह्य उच्चरित ध्वनि धरि शब्दक दार्शनिक-मानसिक यात्रा
- (C) चारि व्याकरणकारक नाम
- (D) चारि लिपिक नाम

३. मीमांसक, नैयायिक आ वैयाकरणाचार्यक भाषाक इकाई सम्बन्धी मतमे मुख्य भेद की?

- (A) तीनू ध्वनिविज्ञान मात्र करैत छथि
- (B) तीनू वाक्यकेँ मूल मानैत छथि
- (C) मीमांसक वर्ण, नैयायिक पद आ वैयाकरणाचार्य वाक्यकेँ मूल इकाई मानैत छथि
- (D) तीनू अर्थकेँ अस्वीकार करैत छथि

४. गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिमे शब्द प्रमाणक महत्त्व की?

- (A) व्याकरणकेँ साहित्य मात्र मानब
- (B) उपमानकेँ नकारब
- (C) शब्दकेँ भ्रम कहब
- (D) वैध ज्ञान प्राप्त करबाक साधनमे मौखिक गवाही/शब्दकेँ एक स्वतंत्र प्रमाणक रूपमे चिन्हित करब

५. पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक तुलना विशेषांकमे किएक आवश्यक अछि?

- (A) दुनू पूर्ण समान अछि
- (B) पारम्परिक व्याकरण निरर्थक अछि
- (C) आधुनिक भाषाविज्ञान इतिहासविहीन अछि
- (D) ई नियमाधारित/अर्थाधारित परम्परा आ वैज्ञानिक-वर्णनात्मक भाषा-अध्ययनक बीच अन्तर बुझबैत अछि

६. आधुनिक भाषाविज्ञानमे सॉसरक भूमिका कोना बुझायल गेल अछि?

- (A) केवल अनुवादकक रूपमे
- (B) ध्वनि-निषेधक रूपमे
- (C) पारम्परिक पण्डितक रूपमे
- (D) भाषाकेँ प्रणालीक रूपमे वैज्ञानिक अध्ययनक अनुशासन बनबयबला आधुनिक भाषाविज्ञानक मूल प्रवर्तकक रूपमे

७. वर्णनात्मक व्याकरणक मुख्य आग्रह की अछि?

- (A) केवल शुद्ध-अशुद्धक आदेश
- (B) मौखिक भाषाक उपेक्षा
- (C) व्याकरणमे प्रयोगक स्थान नहि
- (D) भाषा वास्तवमे कोना बाजल-लिखल जाइत अछि, तकर वर्णन; कोना बाजब चाही तकर आदेश नहि

८. संरचनात्मक व्याकरण व्यक्तिगत शब्दसँ बेसी कोन बात पर जोर दैत अछि?

- (A) केवल पौराणिक व्याख्या
- (B) ध्वनि, रूप, शब्द-समूह आ वाक्यांशक संरचनात्मक सम्बन्ध आ पैटर्न
- (C) केवल शब्दकोश
- (D) केवल अर्थक भावुकता

९. टी.जी. व्याकरणक भाषाविज्ञानमे क्रान्तिकारी पक्ष की अछि?

- (A) केवल अनुवाद नियम
- (B) केवल वर्तनी-सुधार
- (C) सीमित नियमसँ अनंत व्याकरणिक वाक्य निर्माणक क्षमता आ गहिर/सतह संरचनाक विचार
- (D) केवल छन्दशास्त्र

१०. रामावतार यादवक भाषावैज्ञानिक व्यक्तित्वकेँ भारतीय आ आधुनिक परम्पराक बीच सेतु किएक कहल जा सकैत अछि?

- (A) ओ केवल साहित्यकार छथि
- (B) भाषाविज्ञानक परम्परा असंबद्ध अछि
- (C) सेतु अवधारणा अनुचित अछि
- (D) विशेषांकमे शब्द-दर्शन, न्याय-मीमांसा, पारम्परिक व्याकरण, आधुनिक भाषाविज्ञान आ मैथिली/नेपाली भाषिक अध्ययनक संवाद उपस्थित अछि

११. रामावतार यादव विशेषांकमे 'वैयाकरणाचार्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

१२. रामावतार यादव विशेषांकमे 'शब्द प्रमाण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

१३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'ज्ञान आ तत्त्व मीमांसा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

१४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषाविद् रामावतार यादव' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (B) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

१५. रामावतार यादव विशेषांकमे 'शब्द-ब्रह्मण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

१६. रामावतार यादव विशेषांकमे 'स्फोट सिद्धान्त' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

१७. रामावतार यादव विशेषांकमे 'परा-पश्यन्ति-मध्यमा-वैखारी' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएिकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएिकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएिकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएिकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

१८. रामावतार यादव विशेषांकमे 'प्रतिभा आ अर्थ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धके अवधारणात्मक ढंगसँ बुझाबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

१९. रामावतार यादव विशेषांकमे 'वाक्यक भाषिक इकाई' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(B) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पृष्ठबाक अछि

२०. रामावतार यादव विशेषांकमे 'मीमांसक दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

२१. रामावतार यादव विशेषांकमे 'नैय्यायिक दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

२२. रामावतार यादव विशेषांकमे 'वैयाकरणाचार्यक वाक्य-द्रष्टि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किऐकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किऐकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

२३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'तत्त्वचिन्तामणि' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

२४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

४१. रामावतार यादव विशेषांकमे 'ध्वनिविज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकल ढलषलक सलदुधलनतसँ सढुढनूढ नहल
(B) किऐकल ई वलषड ढलषल-दरूशन, गूणनढीढलंसल, डलरढुडरलक वुडलकरण आ आधुनलक ढलषलवलगूणनक सढुढनूढकँ अवधलरणलतुडक दंगसँ डुडलडैत अछल
(C) किऐकल डृषुठ-संखुडल डूछडलक अछल
(D) किऐकल ई केवल नलड-सूची अछल

४२. रामावतार यादव विशेषांकमे 'शब्दार्थ विज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

४३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'मौखिक आ लिखित भाषा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएिक पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएिक भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएिक ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएिक ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

४४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषा-शिक्षण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

४५. रामावतार यादव विशेषांकमे 'व्याकरणक वर्णनात्मकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकि ई केवल नाम-सूची अछि
(B) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किऐकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किऐकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बूझबैत अछि

४६. रामावतार यादव विशेषांकमे 'व्याकरणक नियमनात्मकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किऐकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किऐकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बूझबैत अछि

४७. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि पष्ठ-संख्या पछबाक अछि

४८. रामावतार यादव विशेषांकमे 'स्कूल व्याकरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

४९. रामावतार यादव विशेषांकमे 'लेक्सिस आ ध्वनिविज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

५०. रामावतार यादव विशेषांकमे 'फ्राइज' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

५१. रामावतार यादव विशेषांकमे 'सामग्री शब्द आ कार्यात्मक शब्द' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

५२. रामावतार यादव विशेषांकमे 'तत्काल घटक विश्लेषण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएिकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएिकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझाबैत अछि
(C) किएिकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएिकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

५३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'टेस्ट फ्रेम' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझाबैत अछि

५४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'वाक्य सूत्र' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(B) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि

५५. रामावतार यादव विशेषांकमे 'चोम्स्की' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(B) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

५६. रामावतार यादव विशेषांकमे 'Syntactic Structures' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

५७. रामावतार यादव विशेषांकमे 'Aspects of the Theory of Syntax' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धके अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

५८. रामावतार यादव विशेषांकमे 'सार्वभौमिक व्याकरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धके अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि

५९. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषा-क्षमता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएिक भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएिक पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएिक ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएिक ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

६०. रामावतार यादव विशेषांकमे 'नियम-प्रणाली' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किऐकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किऐकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

६१. रामावतार यादव विशेषांकमे 'मैथिली भाषाविज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धक अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

६२. रामावतार यादव विशेषांकमे ‘नेपाली भाषिक सन्दर्भ’ पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किऐकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किऐकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किऐकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

६३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषा आ ज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएिकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएिकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
(C) किएिकि ई केवल नाम-सूची अछि
(D) किएिकि पष्ठ-संख्या पछबाक अछि

६४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'व्याकरण दर्शन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकें अवधारणात्मक ढंगसँ बूझबैत अछि

७३. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भारतीय परम्परा आ पश्चिमी सिद्धान्त' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि

७४. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषिक आधुनिकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

७५. रामावतार यादव विशेषांकमे 'भाषाविद्क बौद्धिक विरासत' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल नाम-सूची अछि
- (C) किएकि भाषिक सिद्धान्तसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३२ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (C) ई भाषाविज्ञानकेँ भारतीय ज्ञानमीमांसा, व्याकरण दर्शन आ शब्द-अर्थ सम्बन्धक गहिँर परम्परासँ जोड़ैत अछि — शब्द-ब्रह्मक चर्चा भाषा-विचारकेँ तत्त्वमीमांसा आ व्याकरण-दर्शनक स्तर पर लऽ जाइत अछि।
२. (B) अविभक्त अन्तःशक्ति सँ बाह्य उच्चरित ध्वनि धरि शब्दक दार्शनिक-मानसिक यात्रा — ई चारि स्तर शब्दक सूक्ष्म अवस्थासँ व्यक्त भाषा धरि रूपान्तरणक सिद्धान्त बुझबैत अछि।
३. (C) मीमांसक वर्ण, नैयायिक पद आ वैयाकरणाचार्य वाक्यकेँ मूल इकाई मानैत छथि — ई भेद भारतीय भाषादर्शनमे अर्थ-निर्माणक आधार पर भिन्न दृष्टि देखबैत अछि।
४. (D) वैध ज्ञान प्राप्त करबाक साधनमे मौखिक गवाही/शब्दकेँ एक स्वतंत्र प्रमाणक रूपमे चिन्हित करब — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—ई चारि प्रमाण ज्ञानमीमांसाक ढाँचा बनबैत अछि।
५. (D) ई नियमाधारित/अर्थाधारित परम्परा आ वैज्ञानिक-वर्णनात्मक भाषा-अध्ययनक बीच अन्तर बुझबैत अछि — तुलना सँ भाषा शिक्षण, वर्णन, मौखिक/लिखित भेद आ संरचना-सिद्धान्त स्पष्ट होइत अछि।
६. (D) भाषाकेँ प्रणालीक रूपमे वैज्ञानिक अध्ययनक अनुशासन बनबयबला आधुनिक भाषाविज्ञानक मूल प्रवर्तकक रूपमे — सॉसरक योगदान भाषा-प्रणाली, संरचना आ आधुनिक भाषिक अनुशासनक आधार बनल।
७. (D) भाषा वास्तवमे कोना बाजल-लिखल जाइत अछि, तकर वर्णन; कोना बाजब चाही तकर आदेश नहि — वर्णनात्मक दृष्टि भाषा-प्रयोगकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।
८. (B) ध्वनि, रूप, शब्द-समूह आ वाक्यांशक संरचनात्मक सम्बन्ध आ पैटर्न — संरचनात्मक व्याकरण भाषा इकाइ सभक परस्पर सम्बन्ध आ वितरण पर ध्यान दैत अछि।
९. (C) सीमित नियमसँ अनंत व्याकरणिक वाक्य निर्माणक क्षमता आ गहिर/सतह संरचनाक विचार — चोम्स्कीपर आधारित टी.जी. व्याकरण भाषा-क्षमता आ नियम-प्रणालीक वैज्ञानिक मॉडल दैत अछि।
१०. (D) विशेषांकमे शब्द-दर्शन, न्याय-मीमांसा, पारम्परिक व्याकरण, आधुनिक भाषाविज्ञान आ मैथिली/नेपाली भाषिक अध्ययनक संवाद उपस्थित अछि — हुनकर प्रसंग भारतीय भाषा-दर्शन आ आधुनिक भाषाविज्ञानक बहुपरतीय सम्बन्ध खोलैत अछि।
११. (D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि — 'वैयाकरणाचार्य' विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
१२. (D) किएकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि — 'शब्द प्रमाण' विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।

[illegible]

७०. (B) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘अर्थनिर्माण’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
७१. (D) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘व्याकरण आ दर्शन’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
७२. (C) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘तुलनात्मक अध्ययन’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
७३. (D) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘भारतीय परम्परा आ पश्चिमी सिद्धान्त’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
७४. (C) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘भाषिक आधुनिकता’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।
७५. (A) कि॑एकि ई विषय भाषा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा, पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक सम्बन्धकेँ अवधारणात्मक ढंगसँ बुझबैत अछि —
‘भाषाविद्क बौद्धिक विरासत’ विद्यार्थीकेँ शब्द, अर्थ, व्याकरण, प्रमाण, संरचना आ आधुनिक भाषिक विज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध पर सोचय लेल प्रेरित करैत अछि।

अध्याय ३३ : अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'अन्तरराष्ट्रीय' शब्दक मुख्य अर्थ की अछि?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या बढ़ायब
- (B) केवल विदेशी नाम जोड़ब
- (C) मैथिलीक स्थानीय सीमा मे बाँधब
- (D) मैथिली भाषा-सांस्कृतिक सरोकारक भारत-नेपाल आ प्रवासी विश्व धरि जोड़ि वैश्विक संस्थागत मंच बनायब

२. एहन परिषदक आवश्यकता किएक अनुभव होइत अछि?

- (A) केवल गोष्ठी-सूची बनयबाक लेल
- (B) भाषिक नीति सँ दूर रहबाक लेल
- (C) केवल सम्मान बाँटबाक लेल
- (D) भाषा-आन्दोलन, साहित्य, शिक्षा, तकनीक, सांस्कृतिक अधिकार आ नीति-स्तरक प्रतिनिधित्वक एकीकृत करबाक लेल

३. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद जेकाँ संस्था लेल भाषा आ संस्कृति अलग-अलग किएक नहि मानल जा सकैत?

- (A) किएकि संस्कृति भाषा-विरोधी अछि
- (B) किएकि भाषा केवल व्याकरण अछि
- (C) किएकि मैथिली भाषा लोकाचार, साहित्य, संगीत, पाबनि, इतिहास आ सामुदायिक स्मृतिसँ अभिन्न रूपे जुड़ल अछि
- (D) किएकि साहित्यक भूमिका गौण अछि

४. मैथिली आन्दोलनमे संस्था-निर्माणक सबसँ पैघ चुनौती की रहैत अछि?

- (A) केवल स्मारिका निकालब
- (B) केवल मंच सजायब
- (C) भावनात्मक नारा सँ आगू बढ़ि दीर्घकालिक कार्ययोजना, दस्तावेजीकरण, पारदर्शिता आ पीढ़ीगत भागीदारी सुनिश्चित करब
- (D) केवल नामकरण करब

५. भारत-नेपाल सन्दर्भमे मैथिली परिषदक भूमिका किएक विशेष अछि?

- (A) मैथिली दुनू देशक साझा सांस्कृतिक विरासत थिक; परिषद सीमापार संवाद, पाठ्यक्रम, प्रकाशन आ सांस्कृतिक सहयोग बढ़ा सकैत अछि
- (B) नेपालक मैथिली अलग विषय नहि
- (C) सीमा-पार संवाद अनावश्यक
- (D) मैथिली केवल एक देशक भाषा अछि

६. प्रवासी मैथिल समुदाय परिषदक कार्यमे कोन योगदान दऽ सकैत अछि?

- (A) भाषा सँ दूरी बनायब
- (B) स्थानीय आयोजनक विरोध करब
- (C) केवल दर्शक रहब
- (D) संसाधन, डिजिटल नेटवर्क, भाषा-शिक्षण, सांस्कृतिक आयोजन, पुस्तकालय/आर्काइव आ नयी पीढ़ीक जोड़िआब

७. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक शैक्षिक एजेंडा मे कोन बात केन्द्रीय होयबाक चाही?

- (A) केवल पुरस्कार
- (B) मातृभाषा-शिक्षा, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक-प्रशिक्षण, बाल-साहित्य, परीक्षा-सहायता आ डिजिटल शिक्षण-सामग्री
- (C) केवल भाषण
- (D) केवल स्मृति-लेख

८. मैथिलीक डिजिटल युगमे मजबूत करबाक लेल परिषद की कऽ सकैत अछि?

- (A) रोमन लिपिकेँ अनिवार्य करब
- (B) डिजिटल माध्यमक उपेक्षा
- (C) केवल मुद्रित पोस्टर
- (D) यूनिकोड, ई-पुस्तक, ऑडियो-वीडियो, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल आर्काइव आ खोजयोग्य पाठ-संग्रह विकसित करब

९. संस्था विशेषांकमे आलोचनात्मक प्रश्न पूछब किएक आवश्यक अछि?

- (A) जाहि सँ संस्था-भक्ति नहि, बल्कि कार्यक गुणवत्ता, पारदर्शिता, जनसरोकार आ भविष्य-दृष्टिक परीक्षण हो
- (B) आलोचना संस्था-विरोध अछि
- (C) सभ निर्णय स्वतः सही
- (D) प्रश्न पूछब अनुचित

१०. मैथिली परिषदक साहित्यिक कार्य केवल कवि-सम्मेलन धरि सीमित नहि रहबाक कारण की?

- (A) समीक्षा भाषा-विरोधी
- (B) कविता छोड़ि आन काज निरर्थक
- (C) भाषाक समृद्धि लेल शोध, संपादन, अनुवाद, समीक्षा, प्रकाशन, बाल-साहित्य, शब्दकोश आ अभिलेखागार सेहो जरूरी अछि
- (D) शोधक सामाजिक महत्त्व नहि

११. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'भाषा-आन्दोलन' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

१२. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'संस्था-निर्माण' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

१३. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'वैश्विक मैथिली मंच' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि

१४. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

१५. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'प्रवासी मैथिल' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
- (B) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

१६. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'मातृभाषा-शिक्षा' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

३३. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'समानान्तर साहित्यिक परम्परा' पर प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

३४. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'मैथिली सम्मान-संस्कृति' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

३५. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् विशेषांकमे 'लोककला आ लोकसंगीत' पर प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

३६. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'मिथिला चित्रकला' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका के अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

३७. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'पाबनि-तिहार' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बझबैत अछि

३८. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'सीताक सांस्कृतिक प्रतीक' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएिकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएिकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(C) किएिकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
(D) किएिकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

३९. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'मानुषीमिह संस्कृताम्' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका के अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

४०. अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद विशेषांकमे 'भाषा आ जनअधिकार' पर प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका केँ अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि
(D) किएकि मैथिली आन्दोलनसँ एकर सम्बन्ध नहि

१. (D) मैथिली भाषा-सांस्कृतिक सरोकारकें भारत-नेपाल आ प्रवासी विश्व धरि जोड़ि वैश्विक संस्थागत मंच बनायब — अन्तरराष्ट्रीय दृष्टि मैथिलीकें केवल एक क्षेत्रीय बोली नहि, बल्कि सीमापार सांस्कृतिक समुदायक भाषा मानैत अछि।
२. (D) भाषा-आन्दोलन, साहित्य, शिक्षा, तकनीक, सांस्कृतिक अधिकार आ नीति-स्तरक प्रतिनिधित्वकें एकीकृत करबाक लेल — परिषदक सार्थकता संगठनात्मक ऊर्जा, नीति-हस्तक्षेप आ जन-सम्पर्कक संयोगमे अछि।
३. (C) किएकि मैथिली भाषा लोकाचार, साहित्य, संगीत, पाबनि, इतिहास आ सामुदायिक स्मृतिसँ अभिन्न रूपे जुड़ल अछि — मैथिली अस्मिता भाषिक आ सांस्कृतिक दुनू आधार पर बनैत अछि; संस्था एहि समग्रताकें सम्बोधित करैत अछि।
४. (C) भावनात्मक नारा सँ आगू बढ़ि दीर्घकालिक कार्ययोजना, दस्तावेजीकरण, पारदर्शिता आ पीढ़ीगत भागीदारी सुनिश्चित करब — संस्था तखने प्रभावी होइत अछि जखन ओ निरंतर कार्य, जनभागीदारी आ जवाबदेहीक ढाँचा बनबैत अछि।
५. (A) मैथिली दुनू देशक साझा सांस्कृतिक विरासत थिक; परिषद सीमापार संवाद, पाठ्यक्रम, प्रकाशन आ सांस्कृतिक सहयोग बढ़ा सकैत अछि — मैथिली भाषिक भूगोल राजनीतिक सीमा सँ पैघ अछि, तँ भारत-नेपाल संवाद संस्था लेल मूल कार्यक्षेत्र बनैत अछि।
६. (D) संसाधन, डिजिटल नेटवर्क, भाषा-शिक्षण, सांस्कृतिक आयोजन, पुस्तकालय/आर्काइव आ नयी पीढ़ीक जोड़िआब — प्रवास मैथिली संरक्षणक चुनौती सेहो अछि आ अवसर सेहो; संस्था एहि ऊर्जाकें दिशा दऽ सकैत अछि।
७. (B) मातृभाषा-शिक्षा, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक-प्रशिक्षण, बाल-साहित्य, परीक्षा-सहायता आ डिजिटल शिक्षण-सामग्री — भाषा-आन्दोलन शिक्षण-संरचना बनबैत नहि तऽ पीढ़ीगत हस्तांतरण कमजोर भऽ जाइत अछि।
८. (D) यूनिकोड, ई-पुस्तक, ऑडियो-वीडियो, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, डिजिटल आर्काइव आ खोजयोग्य पाठ-संग्रह विकसित करब — डिजिटल ढाँचा मैथिलीकें विश्व-पाठक, शोधकर्ता आ नवपीढ़ी धरि पहुँचाबैत अछि।
९. (A) जाहि सँ संस्था-भक्ति नहि, बल्कि कार्यक गुणवत्ता, पारदर्शिता, जनसरोकार आ भविष्य-दृष्टिक परीक्षण हो — उच्चस्तरीय क्विज संस्था पर अंध-प्रशंसा नहि, विवेकपूर्ण मूल्यांकन सिखबैत अछि।
१०. (C) भाषाक समृद्धि लेल शोध, संपादन, अनुवाद, समीक्षा, प्रकाशन, बाल-साहित्य, शब्दकोश आ अभिलेखागार सेहो जरूरी अछि — साहित्यिक संस्था बहु-विध कार्यसँ भाषा-सांस्कृतिक आधार मजबूत करैत अछि।
११. (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘भाषा-आन्दोलन’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१२. (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘संस्था-निर्माण’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१३. (D) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘वैश्विक मैथिली मंच’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१४. (C) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘भारत-नेपाल सांस्कृतिक सेतु’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१५. (A) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘प्रवासी मैथिल’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१६. (B) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘मातृभाषा-शिक्षा’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१७. (D) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘मैथिली पाठ्यक्रम’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१८. (D) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘डिजिटल आर्काइव’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।
१९. (C) किएकि ई विषय परिषदक भाषिक-सांस्कृतिक, संस्थागत, शैक्षिक, डिजिटल आ वैश्विक भूमिका कें अवधारणात्मक रूपे बुझबैत अछि — ‘यूनिकोड आ तकनीक’ परिषदक काजकें नारा सँ आगू बढ़ा कऽ नीति, संगठन, शिक्षा, डिजिटल भविष्य आ सामुदायिक अस्मिताक स्तर पर रखैत अछि।

- [illegible]

अध्याय ३४ : हितनाथ झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. हितनाथ झा विशेषांकमे वंशावलीक उल्लेखक साहित्यिक-सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यसँ असंबद्ध तथ्य
- (B) व्यक्ति-परिचयकें पारिवारिक स्मृति, सामाजिक जड़ि आ मिथिलाक दस्तावेजी परम्परासँ जोड़ब
- (C) वंशावलीक कोनो सांस्कृतिक अर्थ नहि
- (D) केवल नाम-सूची याद करब

२. कुनो लेखक-विशेषांकमे 'परिचय' खण्ड केवल जीवनी नहि किएक?

- (A) परिचय केवल जन्मतिथि अछि
- (B) परिचयक पाठकीय उपयोग नहि
- (C) जीवनी आ साहित्य पूर्ण अलग अछि
- (D) किएकि परिचय लेखकक सामाजिक परिवेश, संस्कार, कर्मक्षेत्र, मूल्यबोध आ साहित्यिक दिशाकें खोलैत अछि

३. हितनाथ झा विशेषांकक श्रद्धा आ आलोचना बीच संतुलन किएक जरूरी अछि?

- (A) विशेषांकमे आलोचना नहि चाही
- (B) लेखकक पुनर्पाठ अनावश्यक
- (C) जाहि सँ लेखकक स्मृति केवल प्रशंसा नहि, बल्कि कृतित्वक विवेकपूर्ण मूल्यांकन बनय
- (D) प्रशंसा मात्र पर्याप्त

४. लेखकक व्यक्तित्व आ कृतित्वकें एक संग पढ़बाक लाभ की?

- (A) साहित्यक सामाजिक सन्दर्भ नहि
- (B) रचना-पद्धति, भाषा, विषय, नैतिकता आ सार्वजनिक जीवनक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि
- (C) कृतित्व मात्र शीर्षक-सूची अछि
- (D) व्यक्तित्वक कोनो भूमिका नहि

५. हितनाथ झा जेकाँ लेखक पर विशेषांक मैथिली साहित्यक इतिहासमे कोन काज करैत अछि?

- (A) नवपीढ़ीक लेल अप्रासंगिक
- (B) इतिहासकें भुला दैत अछि
- (C) केवल औपचारिक आयोजन
- (D) विरासतकें संग्रहित, मूल्यांकित आ नव-पाठक लेल सुलभ बनबैत अछि

६. संस्मरण-प्रधान सामग्रीक अध्ययनमे विद्यार्थी कें कोन सावधानी राखबाक चाही?

- (A) तथ्य-जांच अनावश्यक
- (B) संस्मरण सदैव पूर्ण इतिहास अछि
- (C) भावुकता अस्वीकार्य
- (D) भावुक स्मृति आ प्रमाणित साहित्यिक तथ्यक बीच भेद करैत आलोचनात्मक सहानुभूति राखब

७. लेखक-विशेषांकमे 'सामुदायिक स्मृति'क अर्थ की?

- (A) साहित्य स्मृति-विरोधी अछि
- (B) एक लेखकक माध्यमे समाज अपन साहित्यिक मूल्य, सम्बन्ध, संस्था आ पीढ़ीगत अनुभवकें याद करैत अछि
- (C) समुदायक भूमिका नहि
- (D) केवल व्यक्तिगत स्मृति

८. हितनाथ झाक कृतित्व पर प्रश्न बनबैत समय पृष्ठ-सूची सँ बचबाक कारण की?

- (A) विचारक जरूरत नहि
- (B) केवल अनुक्रम परीक्षा लेल पर्याप्त
- (C) मुख्य उद्देश्य लेखकक विचार, शिल्प, भाषा, सामाजिक योगदान आ साहित्यिक अर्थकें बुझब अछि
- (D) पृष्ठ-संख्या उच्चस्तरीय प्रश्न अछि

९. लेखक भाषा-शैली पर प्रश्न किएक आवश्यक होइत अछि?

- (A) शैली लेखक दृष्टि, लोकसंपर्क, भाव-संरचना आ पाठक-संबोधनक संकेत दैत अछि
- (B) शैली केवल अलंकार-सूची अछि
- (C) शैली पर प्रश्न गौण
- (D) भाषा लेखकसँ असंबद्ध

१०. हितनाथ झा विशेषांकमे पारिवारिक, सामाजिक आ साहित्यिक स्रोत एक संग आबय तँ ओकर अर्थ की?

- (A) समाजक चर्चा अप्रासंगिक
- (B) परिवारक उल्लेख सदा असाहित्यिक
- (C) लेखक जीवनकेँ निजी वृत्तान्त नहि, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यक रूपमे देखब
- (D) स्रोतक मिश्रण भ्रम अछि

११. हितनाथ झा विशेषांकमे 'हितनाथ झाक वंशावली' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

१२. हितनाथ झा विशेषांकमे 'लेखक परिचय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

१३. हितनाथ झा विशेषांकमे 'व्यक्तित्व-कृतित्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

१४. हितनाथ झा विशेषांकमे 'संस्मरण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि

१५. हितनाथ झा विशेषांकमे 'श्रद्धांजलि आ आलोचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि

१६. हितनाथ झा विशेषांकमे 'साहित्यिक विरासत' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

२५. हितनाथ झा विशेषांकमे 'संपादकीय टिप्पणी' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि

२६. हितनाथ झा विशेषांकमे 'विशेषांकक दस्तावेजी महत्त्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

२७. हितनाथ झा विशेषांकमे 'लेखक-पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

२८. हितनाथ झा विशेषांकमे 'जीवनी आ साहित्य सम्बन्ध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

२९. हितनाथ झा विशेषांकमे 'साहित्येतिहास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि

३०. हितनाथ झा विशेषांकमे 'गाम आ परिवारक सन्दर्भ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

३१. हितनाथ झा विशेषांकमे 'मैथिली अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि

३२. हितनाथ झा विशेषांकमे 'साहित्यिक साधना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

३३. हितनाथ झा विशेषांकमे 'रचनाक सामाजिक आधार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बूझबैत अछि

३४. हितनाथ झा विशेषांकमे 'मूल्यबोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

३५. हितनाथ झा विशेषांकमे 'सहकर्मि-संस्मरण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

३६. हितनाथ झा विशेषांकमे 'आलोचनात्मक सहानुभूति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

३७. हितनाथ झा विशेषांकमे 'विरासत संरक्षण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

३८. हितनाथ झा विशेषांकमे 'नवपीढी पाठक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

३९. हितनाथ झा विशेषांकमे 'मौखिक स्रोत' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि

४०. हितनाथ झा विशेषांकमे 'लेखकक सार्वजनिक छवि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किऐकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किऐकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किऐकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किऐकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बड़ाबैत अछि

४१. हितनाथ झा विशेषांकमे 'रचना-संसार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि

४२. हितनाथ झा विशेषांकमे 'सांस्कृतिक जडि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

४३. हितनाथ झा विशेषांकमे 'मैथिली भाषिक समुदाय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बूझबैत अछि

४४. हितनाथ झा विशेषांकमे 'साहित्यिक अनुशासन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) कि एक पृष्ठ-संख्या पूछाक अछि
(B) कि एक ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) कि एक ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि
(D) कि एक लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि

४५. हितनाथ झा विशेषांकमे 'संस्कार आ संवेदना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बढाबैत अछि

४६. हितनाथ झा विशेषांकमे 'गद्य-पठन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बझबैत अछि

४७. हितनाथ झा विशेषांकमे 'काव्य-पठन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) कि एक लेखक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) कि एक ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) कि एक पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) कि एक ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बढ़ाबैत अछि

४८. हितनाथ झा विशेषांकमे 'संपादनक भूमिका' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बझबैत अछि

४९. हितनाथ झा विशेषांकमे 'विदेह विशेषांक परम्परा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

५०. हितनाथ झा विशेषांकमे 'मिथिला समाजक साहित्यिक स्मृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

५१. हितनाथ झा विशेषांकमे 'लेखकक योगदानक सीमा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बूझबैत अछि

५२. हितनाथ झा विशेषांकमे 'प्रशंसा-समीक्षा संतुलन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) किएकि पृष्ठ-संख्या पृष्ठबाक अछि
(C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बुझबैत अछि

५३. हितनाथ झा विशेषांकमे 'तथ्य आ स्मृति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(C) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

५४. हितनाथ झा विशेषांकमे 'उच्चस्तरीय क्विज पद्धति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

५५. हितनाथ झा विशेषांकमे 'परिवारक साहित्यिक उपयोग' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) कि एक लेखक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(B) कि एक ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(C) कि एक पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
(D) कि एक ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकें बढ़ाबैत अछि

५६. हितनाथ झा विशेषांकमे 'वंशावलीक सांस्कृतिक अर्थ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
(D) किएकि पृष्ठ-संख्या पछबाक अछि

५७. हितनाथ झा विशेषांकमे 'हितनाथ झा विशेषांकक पाठकीयता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (D) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि

५८. हितनाथ झा विशेषांकमे 'लेखकक नैतिक छवि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (D) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि

५९. हितनाथ झा विशेषांकमे 'रचनात्मक व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

६०. हितनाथ झा विशेषांकमे 'साहित्यिक संदर्भ-निर्माण' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि

६१. हितनाथ झा विशेषांकमे 'समाज आ साहित्य' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक जीवन, रचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, स्मृति-परम्परा आ साहित्यिक मूल्यांकनक सम्बन्धकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल शीर्षक-सूची अछि
- (C) किएकि लेखकक कृतित्वसँ सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि पृष्ठ-संख्या पूछबाक अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) व्यक्ति-परिचयकेँ पारिवारिक स्मृति, सामाजिक जड़ि आ मिथिलाक दस्तावेजी परम्परासँ जोड़ब — वंशावली मिथिलाक स्मृति-संरक्षणक महत्वपूर्ण पद्धति अछि; हितनाथ झाक परिचय एहि परम्परासँ जुड़ैत अछि।

२. (D) किएकि परिचय लेखकक सामाजिक परिवेश, संस्कार, कर्मक्षेत्र, मूल्यबोध आ साहित्यिक दिशाकेँ खोलैत अछि — लेखक-विशेषांकमे परिचय रचनाक पृष्ठभूमि बुझबाक कुंजी बनैत अछि।

३. (C) जाहि सँ लेखकक स्मृति केवल प्रशंसा नहि, बल्कि कृतित्वक विवेकपूर्ण मूल्यांकन बनय — उच्चस्तरीय अध्ययन लेखकक योगदान, सीमा, सन्दर्भ आ प्रभाव चारू पक्ष देखैत अछि।

४. (B) रचना-पद्धति, भाषा, विषय, नैतिकता आ सार्वजनिक जीवनक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि — व्यक्तित्व-कृतित्वक संयुक्त अध्ययन लेखकक रचनात्मक ऊर्जा आ सामाजिक आधार बुझबैत अछि।

५. (D) विरासतकेँ संग्रहित, मूल्यांकित आ नव-पाठक लेल सुलभ बनबैत अछि — विशेषांक लेखकक काजकेँ बिखरल स्मृतिसँ निकालि व्यवस्थित साहित्यिक दस्तावेज बनबैत अछि।

६. (D) भावुक स्मृति आ प्रमाणित साहित्यिक तथ्यक बीच भेद करैत आलोचनात्मक सहानुभूति राखब — संस्मरण मूल्यवान स्रोत अछि, मुदा ओकरा आलोचनात्मक पठनक आवश्यकता रहैत अछि।

७. (B) एक लेखकक माध्यमे समाज अपन साहित्यिक मूल्य, सम्बन्ध, संस्था आ पीढ़ीगत अनुभवकेँ याद करैत अछि — विशेषांक सामूहिक स्मृति-निर्माणक साहित्यिक रूप होइत अछि।

[illegible]

अध्याय ३५ : मिथिला विकास परिषद् विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'विकास' शब्दक केन्द्रीय अर्थ की अछि?
 - (A) केवल भवन-निर्माण
 - (B) केवल आर्थिक आँकड़ा
 - (C) केवल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा
 - (D) मिथिलाक भाषा, संस्कृति, शिक्षा, संस्था, जनसरोकार आ क्षेत्रीय अस्मिताक समग्र उन्नयन
२. मिथिला विकास परिषद्, कोलकाताक प्रसंग मैथिली इतिहासमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?
 - (A) प्रवासी मैथिल समाज द्वारा मातृभूमि, भाषा आ सांस्कृतिक दायित्वकें संस्थागत रूप देबाक कारण
 - (B) किएकि संस्था केवल नाम मात्र अछि
 - (C) किएकि प्रवासक कोनो भूमिका नहि
 - (D) किएकि कोलकाता मिथिलासँ असंबद्ध अछि
३. एहन संस्था-विशेषांकक प्रश्न केवल 'काजक सूची' पर सीमित नहि रहबाक कारण की?
 - (A) विचारक कोनो स्थान नहि
 - (B) सूची सँ आगू संस्था-दृष्टि, कार्य-संस्कृति, आलोचना, निरंतरता आ सामाजिक प्रभाव बुझब जरूरी अछि
 - (C) संस्था पर आलोचना अनुचित
 - (D) सूचीए सभसँ उच्चस्तरीय सामग्री अछि
४. 'समानान्तर परम्परा'क संकेत मिथिला विकास परिषद् जेकाँ संस्थाक संदर्भमे की बुझबैत अछि?
 - (A) पुरान संस्था समाप्त करब
 - (B) मुख्यधारा संस्था सँ बाहर जन-आधारित, स्वावलंबी आ सांस्कृतिक वैकल्पिक मंचक निर्माण
 - (C) केवल विरोधक राजनीति
 - (D) साहित्य-विरोधी प्रवृत्ति
५. मिथिला विकास परिषदक मूल्यांकनमे संस्मरणात्मक लेख किएक उपयोगी अछि?
 - (A) केवल आँकड़ा उपयोगी
 - (B) संस्मरण सदैव निरर्थक
 - (C) ओ संस्था सँ जुड़ल जीवंत अनुभव, कार्यकर्ता-संस्कार, संघर्ष आ सामुदायिक अपनत्व देखबैत अछि
 - (D) व्यक्तिगत अनुभव संस्था-विरोधी
६. अजय कुमार झा तिरहुतिया, लक्ष्मण झा 'सागर', डॉ. धनाकर ठाकुर आदि लेखकीय आवाज सभक उपस्थिति की संकेत करैत अछि?
 - (A) विचार-विविधताक अभाव
 - (B) संस्थाक बहुस्वरीय मूल्यांकन आ अलग-अलग अनुभव-क्षेत्रक संग संवाद
 - (C) एकरूप प्रचार
 - (D) लेखक-सूची मात्र
७. मिथिला विकास परिषद् पर प्रश्न बनबैत समय 'कोलकाता'क उल्लेखक अवधारणात्मक महत्त्व की?
 - (A) भाषा-सेवा सँ असंबद्ध तथ्य
 - (B) केवल भौगोलिक पता
 - (C) प्रवासमे रहैत मैथिल समुदायक सांस्कृतिक संगठन आ मातृभूमि-संबंधक निरंतरता
 - (D) मिथिलासँ दूरीक प्रमाण
८. क्षेत्रीय विकासक विमर्शमे भाषा-संरक्षण किएक केन्द्रीय अछि?
 - (A) भाषा केवल घरक विषय अछि
 - (B) भाषा बिना समाजक ज्ञान, इतिहास, स्मृति, शिक्षा आ सांस्कृतिक आत्मविश्वास कमजोर पड़ैत अछि
 - (C) संस्कृति सँ विकासक सम्बन्ध नहि
 - (D) विकासमे भाषा बाधा अछि

९. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकक उच्चस्तरीय अध्ययन कोन बात पर बल देबाक चाही?

- (A) संस्था-निर्माण, लोकभागीदारी, प्रवासी चेतना, भाषा-सेवा, पारदर्शिता आ दीर्घकालिक दृष्टि
- (B) केवल उद्घाटन समारोह
- (C) केवल अनुक्रम
- (D) केवल पृष्ठ संख्या

१०. संस्था-आलोचना आ संस्था-समर्थन एक संग किएक आवश्यक अछि?

- (A) संस्था पर प्रश्न नहिये पूछबाक चाही
- (B) समर्थनमे विवेक नहि चाही
- (C) समर्थन ऊर्जा दैत अछि आ आलोचना गुणवत्ता, जवाबदेही आ सुधारक दिशा दैत अछि
- (D) आलोचना सदा विरोध अछि

११. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'मिथिला विकास परिषद्' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

१२. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'कोलकाता प्रवासी मैथिल' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

१३. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'संस्था-निर्माण' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

१४. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'भाषा-संरक्षण' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि

१५. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'मिथिला विकास' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि

१६. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'सांस्कृतिक संगठन' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
- (C) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

४९. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'संवैधानिक चेतना' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि

५०. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'मैथिली पाठक निर्माण' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५१. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'भाषिक स्वाभिमान' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएिकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएिकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(C) किएिकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएिकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि

५२. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'सामुदायिक सेवा' पर प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि

५३. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'ऐतिहासिक दस्तावेज' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५४. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'संगठनक उत्तरदायित्व' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि
(B) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५५. मिथिला विकास परिषद विशेषांकमे 'आर्थिक संसाधन आ मूल्यबोध' पर प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) किएिक ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएिक क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएिक ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि
(D) किएिक समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि

५६. मिथिला विकास परिषद् विशेषांकमे 'अभियान संस्कृति' पर प्रश्न किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकेँ बुझबैत अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि समाज-संस्था सँ एकर सम्बन्ध नहि

१. (D) मिथिलाक भाषा, संस्कृति, शिक्षा, संस्था, जनसरोकार आ क्षेत्रीय अस्मिताक समग्र उन्नयन — एहि विशेषांकमे विकासकें क्षेत्रीय समाजक बहुआयामी जागरण रूपमे बुझबाक चाही, केवल धन-संसाधनक वृद्धि रूपमे नहि।
२. (A) प्रवासी मैथिल समाज द्वारा मातृभूमि, भाषा आ सांस्कृतिक दायित्वकें संस्थागत रूप देबाक कारण — प्रवासी संस्था मातृभाषा-संरक्षण, सामुदायिक संगठन आ सांस्कृतिक स्मृतिक सेतु बनैत अछि।
३. (B) सूची सँ आगू संस्था-दृष्टि, कार्य-संस्कृति, आलोचना, निरंतरता आ सामाजिक प्रभाव बुझब जरूरी अछि — उच्चस्तरीय क्विज संस्था कें कामकाजक विवरणसँ आगू ओकर विचारधारा आ सामाजिक उपयोगिताक स्तर पर परखैत अछि।
४. (B) मुख्यधारा संस्था सँ बाहर जन-आधारित, स्वावलंबी आ सांस्कृतिक वैकल्पिक मंचक निर्माण — समानान्तर परम्परा वैकल्पिक जन-ऊर्जा आ सांस्कृतिक स्वाधीनता कें महत्व दैत अछि।
५. (C) ओ संस्था सँ जुड़ल जीवंत अनुभव, कार्यकर्ता-संस्कार, संघर्ष आ सामुदायिक अपनत्व देखबैत अछि — संस्मरण संगठनक मानवीय इतिहासकें सामने आनैत अछि, मुदा ओकर आलोचनात्मक पठन जरूरी अछि।
६. (B) संस्थाक बहुस्वरीय मूल्यांकन आ अलग-अलग अनुभव-क्षेत्रक संग संवाद — अनेक लेखक संस्था कें अलग-अलग दृष्टि सँ देखैत छथि, एहि सँ विशेषांकक दस्तावेजी शक्ति बढ़ैत अछि।
७. (C) प्रवासमे रहैत मैथिल समुदायक सांस्कृतिक संगठन आ मातृभूमि-संबंधक निरंतरता — कोलकाता प्रसंग प्रवासी मैथिल समाजक सांस्कृतिक सक्रियता आ संस्था-निर्माणक उदाहरण अछि।
८. (B) भाषा बिना समाजक ज्ञान, इतिहास, स्मृति, शिक्षा आ सांस्कृतिक आत्मविश्वास कमजोर पड़ैत अछि — मातृभाषा समाजक आत्मपरिचय आ ज्ञान-वितरणक आधार होइत अछि।
९. (A) संस्था-निर्माण, लोकभागीदारी, प्रवासी चेतना, भाषा-सेवा, पारदर्शिता आ दीर्घकालिक दृष्टि — एहि विषयक वास्तविक प्रश्न संस्था केना समाजक भाषा-सांस्कृतिक भविष्य बनबैत अछि, से पूछैत अछि।
१०. (C) समर्थन ऊर्जा दैत अछि आ आलोचना गुणवत्ता, जवाबदेही आ सुधारक दिशा दैत अछि — विवेकपूर्ण समर्थन संस्था कें टिकाऊ बनबैत अछि।
११. (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘मिथिला विकास परिषद्’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१२. (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘कोलकाता प्रवासी मैथिल’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१३. (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘संस्था-निर्माण’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१४. (D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘भाषा-संरक्षण’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१५. (D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘मिथिला विकास’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१६. (C) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘सांस्कृतिक संगठन’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१७. (D) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘समानान्तर परम्परा’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१८. (A) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘विदेह सम्मान’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।
१९. (C) किएकि ई विषय संस्था, प्रवासी चेतना, भाषा-संरक्षण, सांस्कृतिक संगठन आ मिथिला विकासक समग्र दृष्टिकें बुझबैत अछि — ‘कार्यकर्ता-संस्कार’ विषयक माध्यमे परिषद् कें नारा वा स्मारिका सँ आगू, सक्रिय सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

अध्याय ३६ : नारायणजी चौधरी विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. नारायणजी चौधरी विशेषांकक मूल केन्द्रीय सरोकार की अछि?

- (A) केवल नगर-योजना सँ असंबद्ध चर्चा
- (B) मिथिलाक पोखरि, जलकर, जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहर बचाउ आन्दोलन
- (C) केवल जीवनीक औपचारिक परिचय
- (D) केवल साहित्यिक छंदशास्त्र

२. 'तालाब बचाओ / Save Pond' अभियान मैथिल समाज लेल किएक सांस्कृतिक प्रश्न अछि?

- (A) तालाब बचाउ केवल तकनीकी विषय अछि
- (B) किएकि पोखरि केवल जल-स्रोत नहि, बल्कि पूजा, लोकाचार, कृषि, जैव-विविधता आ सामुदायिक स्मृतिक केन्द्र अछि
- (C) जल-स्रोतक संस्कृति सँ सम्बन्ध नहि
- (D) पोखरि केवल सजावट अछि

३. नारायणजी चौधरी केँ 'मिथिलाक धरोहर अभियानी' कहबाक आधार की?

- (A) केवल वंशावली
- (B) केवल प्रशस्ति-पत्र
- (C) केवल पदवी
- (D) हुनक पोखरि बचाउ, जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक सम्पदा रक्षाक सक्रिय अभियान

४. 'Water Rich Mithila then, Water Scarce Mithila now' शीर्षकक अवधारणात्मक संकेत की अछि?

- (A) पूर्वक जलसमृद्ध मिथिला आ वर्तमान जलसंकट बीच ऐतिहासिक-पारिस्थितिक गिरावट पर चेतावनी
- (B) जलसमृद्धि अप्रासंगिक अछि
- (C) जल-संकट केवल कल्पना अछि
- (D) मिथिला सदैव जलहीन छल

५. पोखरि अतिक्रमणक समस्या केवल भूमि-विवाद नहि किएक?

- (A) पोखरि भरलासँ समाजक लाभ मात्र
- (B) जलचक्रक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) ओ जलचक्र, भूजल, बाढ़ि-निकासी, जैव-विविधता, लोकजीवन आ सांस्कृतिक अधिकारकेँ प्रभावित करैत अछि
- (D) अतिक्रमण सदा विकास अछि

६. जल-संरक्षण आ नारायणजी चौधरीक कार्यमे नागरिक नेतृत्वक महत्त्व की?

- (A) नागरिकक भूमिका शून्य
- (B) केवल अधिकारी सभ करब
- (C) समाजक भागीदारी बाधा अछि
- (D) सरकारी योजना सँ आगू समाज स्वयं अपन जल-स्रोत आ धरोहरक रक्षा लेल संगठित होइत अछि

७. मिथिलाक पोखरि सभक संरक्षणमे लोक-संस्कृति किएक उपयोगी आधार अछि?

- (A) लोकसंस्कृति जल-विरोधी अछि
- (B) पोखरि केवल इंजीनियरिंग ढाँचा
- (C) आस्था संरक्षणमे बाधक
- (D) लोक-आस्था आ पाबनि पोखरि केँ जीवित सामुदायिक स्थल बनाबैत अछि, जे संरक्षणक सामाजिक समर्थन दैत अछि

८. आशीष अनचिन्हारक 'पोखरिक वक्तव्य' जेकाँ रचनात्मक लेखनक भूमिका की?

- (A) पोखरि केँ निर्जीव वस्तु नहि, बोलैत सांस्कृतिक-पर्यावरणीय साक्षी रूपमे प्रस्तुत करब
- (B) पोखरि पर साहित्य असंभव
- (C) पर्यावरणमे संवेदना नहि चाही
- (D) रचनात्मकता समस्या छिपबैत अछि

९. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे अनेक लेखकक लेख सभ मिलि कोन प्रभाव बनबैत अछि?

- (A) विचार-विविधता नहि
- (B) एक अभियानी व्यक्तित्वकेँ पर्यावरण, संस्कृति, समाज, जलनीति आ लोकस्मृति अनेक कोणसँ देखब
- (C) विषयक संकीर्णता
- (D) एकरूप प्रचार मात्र

१०. जलकर संरक्षणक प्रश्न मैथिली भाषा-क्विजमे किएक उचित अछि?

- (A) किएकि मैथिली साहित्य आ संस्कृति अपन भूगोल, जल-संसाधन, लोकजीवन आ धरोहरसँ अलग नहि अछि
- (B) भाषा आ जलक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) क्विज केवल व्याकरण पर होयबाक चाही
- (D) पर्यावरण साहित्य-विरोधी विषय अछि

११. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'नारायणजी चौधरी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

१२. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'पोखरि बचाउ अभियान' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

१३. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'तालाब बचाओ' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

१४. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'Save Pond' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

१५. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'जल-संरक्षण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

१६. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'जलकर संरक्षण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

२५. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'जलसमृद्ध मिथिला' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएिकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएिकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(C) किएिकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(D) किएिकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

૨૬. નારાયણજી ચૌધરી વિશેષાંકમે ‘જલસંકટ’ પર પ્રશ્ન કિાક ઉચ્ચસ્તરીય અછિ?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

२७. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'नागरिक नेतृत्व' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

२८. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'पर्यावरणीय चेतना' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

२९. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'लोक-संस्कृति' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

३०. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'सामुदायिक स्मृति' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकें मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

३९. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'धरोहर अभियानी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

३२. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'सांस्कृतिक पारिस्थितिकी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

४१. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'अतिक्रमण विरोध' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

४२. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'शहरीकरणक दबाव' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

४३. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'गामक संरचना' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकें मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

४४. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'जल-स्रोतक अभिलेखन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पष्ठ-सूची अछि

४५. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'रन्धीर झाक जल-विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

४६. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'हितनाथ झाक जलसंरक्षण दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोडि बद्गबैत अछि

४७. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'डॉ. धनाकर ठाकुरक मूल्यांकन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

४८. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'अजीत कुमार झाक धरोहर दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
(B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

४९. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक जलकर विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

५०. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'प्रणव झाक अतिक्रमण-विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

५१. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'डॉ. शिव कुमार मिश्रक धरोहर-अभियानी दृष्टि' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

५२. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'समुदाय आ सरकार' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

५३. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'कानूनी-सामाजिक संरक्षण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

५४. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'जल आ अस्मिता' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

५५. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'मिथिला विकासक पर्यावरणीय आधार' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

५६. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'पोखरि बनाम पक्का निर्माण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (D) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि

६५. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'विशेषांकक दस्तावेजी महत्त्व' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

६६. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'मातृभूमि आ जलस्रोत' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

६७. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'सामाजिक आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (D) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि

६८. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'पानी आ संस्कृति' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

६९. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'लोकधरोहर' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि

७०. नारायणजी चौधरी विशेषांकमे 'सतत विकास' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि क्रमांक याद करबाक अछि
- (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि
- (C) किएकि जल-संरक्षण मैथिली समाजसँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३६ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) मिथिलाक पोखरि, जलकर, जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहर बचाउ आन्दोलन — विशेषांक नारायणजी चौधरीकेँ जल-संरक्षण आ पोखरि बचाउ अभियानी रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

२. (B) किएकि पोखरि केवल जल-स्रोत नहि, बल्कि पूजा, लोकाचार, कृषि, जैव-विविधता आ सामुदायिक स्मृतिक केन्द्र अछि — मिथिलामे पोखरि जीवन-पद्धति, धर्म-संस्कार, पर्यावरण आ ग्राम-संस्कृतिक अभिन्न अंग अछि।

३. (D) हुनक पोखरि बचाउ, जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक सम्पदा रक्षाक सक्रिय अभियान — धरोहर अभियानी ओहि व्यक्तिकेँ कहल जा सकैत अछि जे स्मृति आ संसाधन दुनूकेँ बचाबय लेल जनचेतना जगबैत अछि।

४. (A) पूर्वक जलसमृद्ध मिथिला आ वर्तमान जलसंकट बीच ऐतिहासिक-पारिस्थितिक गिरावट पर चेतावनी — शीर्षक मिथिलाक जल-संस्कृति सँ जल-संकट धरि के संक्रमण पर विचार करबैत अछि।

५. (C) ओ जलचक्र, भूजल, बाढ़ि-निकासी, जैव-विविधता, लोकजीवन आ सांस्कृतिक अधिकारकेँ प्रभावित करैत अछि — पोखरि नष्ट भेलासँ पूरा पारिस्थितिकी आ सामाजिक जीवन प्रभावित होइत अछि।

६४. (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘पर्यावरण शिक्षा’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
६५. (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘विशेषांकक दस्तावेजी महत्त्व’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
६६. (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘मातृभूमि आ जलस्रोत’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
६७. (C) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘सामाजिक आन्दोलन’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
६८. (A) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘पानी आ संस्कृति’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
६९. (D) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘लोकधरोहर’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।
७०. (B) किएकि ई विषय पोखरि-जलकर संरक्षणकेँ मिथिलाक संस्कृति, पर्यावरण, समाज, इतिहास आ नागरिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ि बुझबैत अछि —
‘सतत विकास’ नारायणजी चौधरीक कार्यकेँ व्यक्तिपूजा नहि, बल्कि जल-संरक्षण आ सांस्कृतिक धरोहरक व्यापक आन्दोलन रूपमे देखबैत अछि।

अध्याय ३७ : शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांक केन्द्रीय अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) केवल पुरस्कार-विवरण
- (B) केवल पृष्ठ-सूची
- (C) केवल व्याकरणक नियम
- (D) शिवशंकर श्रीनिवासक कथा-संसार, कथाशिल्प, गामघरक जीवन, स्त्री-अनुभव आ मैथिली कथालोचनक पुनर्पाठ

२. 'सिनुरहार' कथा पर अनेक लेख किएक केन्द्रित अछि?

- (A) किएकि कथा मे कथ्य नहि अछि
- (B) किएकि ई केवल हास्य कथा अछि
- (C) किएकि ई कथा विधवा/पुनर्विवाह, स्त्रीक आत्मसम्मान, संस्कार आ पारिवारिक-सामाजिक दबावक जटिल प्रश्न उठबैत अछि
- (D) किएकि केवल शीर्षक रोचक अछि

३. शिवशंकर श्रीनिवासक कथामे गामक लोक आ माटि-पानिक उपस्थिति ककर संकेत करैत अछि?

- (A) विश्व-विमुखता मात्र
- (B) स्थानीय जीवन, बोली, संस्कार, जातीय-सामाजिक सम्बन्ध आ ग्रामीण यथार्थक गाढ़ अनुभव
- (C) कथ्यहीन वर्णन
- (D) नगर-विरोधी नारा

४. सम्पादकीय टिप्पणीमे चरित्र-विकासक अपूर्णता पर जोर देबाक आलोचनात्मक अर्थ की?

- (A) कथा-विधाक विरोध
- (B) कथा-पात्रक मनोविज्ञान, अंतर्द्वंद्व आ सामाजिक क्रान्तिक गहिराई पूर्ण रूपेँ विकसित नहि भेल, से संकेत
- (C) लेखकक पूर्ण अस्वीकार
- (D) भाषा पर आरोप मात्र

५. 'असमंजसी मध्यममार्गी कथाशिल्पी' पदबंध शिवशंकर श्रीनिवासक कथा-दृष्टि केँ कोना संकेत करैत अछि?

- (A) ओ परम्परा आ परिवर्तनक बीच फँसल समाजकेँ देखबैत छथि, मुदा तीक्ष्ण क्रान्तिकारी निष्कर्ष धरि सदा नहि पहुँचैत
- (B) ओ केवल हास्यकार छथि
- (C) ओ केवल अतिवादी लेखक छथि
- (D) ओ कथाशिल्पसँ असंबद्ध छथि

६. 'जमुनिया धार' जेकाँ कथा पाठककेँ कोन प्रश्न दिस लऽ जाइत अछि?

- (A) केवल नदी-वर्णन
- (B) केवल यात्रा-संस्मरण
- (C) केवल बालकथा
- (D) स्त्री-पीड़ा, दाम्पत्य, सामाजिक व्याख्या आ पुरुष-दृष्टिक सीमित संवेदनशीलता

७. शिवशंकर श्रीनिवासक कथा पर आलोचना करैत समय भाषा-प्रयोग किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) संवादक कोनो भूमिका नहि
- (B) स्थानीय शब्द, कहबी, संवाद आ ग्रामीण भाषिक बनावट कथा के यथार्थ आ चरित्र-संरचना सँ जोड़ैत अछि
- (C) स्थानीय शब्द सदा दोष अछि
- (D) भाषा कथामे अप्रासंगिक अछि

८. कथालोचनमे 'छोट-छोट क्रान्ति'क अवधारणा सँ की बुझल जा सकैत अछि?

- (A) कोनो परिवर्तन नहि
- (B) पूर्ण राजनीतिक क्रान्ति
- (C) केवल धार्मिक अनुष्ठान
- (D) परिवार वा लोक-स्तर पर सीमित प्रतिरोध, जे व्यापक सामाजिक संरचना तक पूर्ण रूपेँ नहि फैलैत

९. विशेषांकक बहु-लेखकीय स्वर शिवशंकर श्रीनिवासक मूल्यांकनमे की योगदान दैत अछि?

- (A) एकरूप प्रचार
- (B) कथा-संसार केँ स्त्री-दृष्टि, गाम-दृष्टि, कथाशिल्प, संस्मरण आ आलोचना अनेक कोणसँ देखब
- (C) विचार-विविधता समाप्त करब
- (D) लेखक-सूची मात्र

१०. 'मिथिलाक माटि-पानिक कथाकार' कहबामे मुख्य साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) लेखक केवल कृषि-विज्ञानी छथि
- (B) कथा मे मनुष्य अनुपस्थित अछि
- (C) लेखकक कथा मिथिलाक भूगोल, लोक-संस्कार, ग्राम्य सम्बन्ध आ सामाजिक यथार्थसँ गहीर रूपेँ जुड़ल अछि
- (D) ई केवल उपाधि मात्र अछि

११. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'शिवशंकर श्रीनिवास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

१२. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'सिनुरहार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (C) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

१३. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'जमुनिया धार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (B) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि

१४. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'ग्राम्य कथाशिल्प' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (C) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

१५. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'स्त्रीक आत्मसम्मान' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

१६. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'विधवा-पुनर्विवाह' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (D) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि

१७. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'संस्कार आ बहिष्कार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
(B) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि

१८. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'कथानकक अस्पष्टता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
(B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
(C) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

१९. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'चरित्र-विकास' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
(D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ कें जोड़ैत अछि

२०. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'एक-आयामी पात्र' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
(C) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि

२१. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'स्थानीय शब्दावली' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
(B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
(C) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

२२. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'कहबीक प्रयोग' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
(D) किएकि ई विषय लेखक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

२३. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'गामघरक प्लॉट' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) कि एक विशोषांकमे विचारक स्थान नहि
(B) कि एक ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(C) कि एक ई विषय लेखक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ कें जोड़ैत अछि
(D) कि एक ई केवल पष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

२४. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'सूत्रधारक दृष्टि' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
(B) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

६५. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'कथाक अन्त' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि

६६. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'मौन आ प्रतिरोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (D) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि

६७. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'संवेदनात्मक यथार्थ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (D) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि

६८. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'लोकक जीवन-दर्शन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (C) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

६९. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'व्यक्ति आ परिवार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि
- (B) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि

७०. शिवशंकर श्रीनिवास विशेषांकमे 'समीक्षा आ पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई विषय कथासँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि विशेषांकमे विचारक स्थान नहि
- (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३७ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (D) शिवशंकर श्रीनिवासक कथा-संसार, कथाशिल्प, गामघरक जीवन, स्त्री-अनुभव आ मैथिली कथालोचनक पुनर्पाठ — ई विशेषांक लेखकक व्यक्तित्व मात्र नहि, हुनक कथा-दृष्टि आ आलोचनात्मक ग्रहणकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।
२. (C) किएकि ई कथा विधवा/पुनर्विवाह, स्त्रीक आत्मसम्मान, संस्कार आ पारिवारिक-सामाजिक दबावक जटिल प्रश्न उठबैत अछि — 'सिनुरहार'क माध्यमे स्त्रीक सामाजिक मान्यता आ अनुष्ठानिक बहिष्कारक प्रश्न सामने अबैत अछि।
३. (B) स्थानीय जीवन, बोली, संस्कार, जातीय-सामाजिक सम्बन्ध आ ग्रामीण यथार्थक गाढ़ अनुभव — गाम हुनक कथा-संसारक पृष्ठभूमि मात्र नहि, बल्कि पात्रक मानस आ संघर्षक सक्रिय आधार अछि।
४. (B) कथा-पात्रक मनोविज्ञान, अंतर्द्वंद्व आ सामाजिक क्रान्तिक गहिराई पूर्ण रूपेँ विकसित नहि भेल, से संकेत — उच्चस्तरीय आलोचना लेखकक उपलब्धि संग सीमा सेहो देखैत अछि।
५. (A) ओ परम्परा आ परिवर्तनक बीच फँसल समाजकेँ देखबैत छथि, मुदा तीक्ष्ण क्रान्तिकारी निष्कर्ष धरि सदा नहि पहुँचैत — मध्यममार्गी असमंजस हुनक कथाक सामाजिक संघर्ष आ सीमित समाधान दुनूक संकेत करैत अछि।

६. (D) स्त्री-पीड़ा, दाम्पत्य, सामाजिक व्याख्या आ पुरुष-दृष्टिक सीमित संवेदनशीलता — एहि कथा मे स्त्रीक दुःख केँ पुरुष सूत्रधार ठीकसँ नहि बुझि पबैत, से संवेदना आ दृष्टि पर प्रश्न अछि।

9. (B) स्थानीय शब्द, कहबी, संवाद आ ग्रामीण भाषिक बनावट कथा के यथार्थ आ चरित्र-संरचना सँ जोड़ैत अछि — भाषा कथा मे वातावरण, पात्र आ सामाजिक सम्बन्धक संकेतक बनैत अछि।

८. (D) परिवार वा लोक-स्तर पर सीमित प्रतिरोध, जे व्यापक सामाजिक संरचना तक पूर्ण रूपेँ नहि फैलैत — श्रीनिवासक कथामे परिवर्तनक बीज अछि, मुदा ओ सभ बेर बड़का धारक रूप नहि लैत।

१. (B) कथा-संसार के स्त्री-दृष्टि, गाम-दृष्टि, कथाशिल्प, संस्मरण आ आलोचना अनेक कोणसँ देखब — अनेक लेखकक लेख विशेषांककेँ एकल प्रशस्ति नहि, बहुआयामी आलोचनात्मक दस्तावेज बनबैत अछि।

૧૦. (C) લેખકક કથા મિથિલાક ભૂગોલ, લોક-સંસ્કાર, ગ્રામ્ય સમ્બન્ધ આ સામાજિક યથાર્થસં ગહીર રૂપેં જુડલ અછિ — માટિ-પાનિ શબ્દ લેખકક સ્થાનીય જડ આ સાંસ્કૃતિક સંવેદનાકેં રેખાંકિત કરૈત અછિ।

११. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘शिवशंकर श्रीनिवास’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बूझल जा सकैत अछि।

१२. (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘सिनुरहार’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बढ़ल जा सकैत अछि।

१३. (A) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘जमुनिया धार’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

१४. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘ग्राम्य कथाशिल्प’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बढ़ल जा सकैत अछि।

१५. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘स्त्रीक आत्मसम्मान’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बूझल जा सकैत अछि।

१६. (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘विधवा-पुनर्विवाह’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बढ़ल जा सकैत अछि।

१७. (A) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘संस्कार आ बहिष्कार’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

१८. (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘कथानकक अस्पष्टता’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

१९. (D) किएिकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘चरित्र-विकास’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

२०. (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘एक-आयामी पात्र’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

२१. (B) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘स्थानीय शब्दावली’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बढ़ल जा सकैत अछि।

२२. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘कहबीक प्रयोग’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

२३. (C) किएकि ई विषय लेखक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘गामघरक प्लॉट’ क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगु साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

२४. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘सूत्रधारक दृष्टि’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

२५. (D) किएकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘स्त्री-पीड़ा’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

[illegible]

६६. (C) कि॑एकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘मौन आ प्रतिरोध’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।
६७. (B) कि॑एकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘संवेदनात्मक यथार्थ’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।
६८. (C) कि॑एकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘लोकक जीवन-दर्शन’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।
६९. (A) कि॑एकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘व्यक्ति आ परिवार’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।
७०. (D) कि॑एकि ई विषय लेखकक कथा-दृष्टि, ग्रामीण समाज, स्त्री-अनुभव, भाषिक शिल्प आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ केँ जोड़ैत अछि — ‘समीक्षा आ पुनर्पाठ’क माध्यमे श्रीनिवासक कथा-संसारकेँ व्यक्ति-प्रशंसा सँ आगू साहित्यिक, सामाजिक आ आलोचनात्मक स्तर पर बुझल जा सकैत अछि।

अध्याय ३८ : भवनाथ झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. भवनाथ झा विशेषांकक केन्द्रीय महत्त्व की अछि?

- (A) केवल मनोरंजन सामग्री
- (B) मिथिलाक पाण्डुलिपि-विज्ञान, शिलालेख, संस्कृत-मैथिली ज्ञानपरम्परा आ जीवित विद्वत्ता केँ दस्तावेज रूपमे सामने आनब
- (C) केवल समारोह-विवरण
- (D) केवल क्रमांक-सूची

२. 'Pandit with MacBook and Manuscripts' शीर्षकक प्रतीकात्मक अर्थ की अछि?

- (A) पाण्डित्य आ तकनीकक विरोध
- (B) हस्तलिपि-विरोधी दृष्टि
- (C) केवल कम्प्यूटर परिचय
- (D) पारम्परिक पाण्डित्य आ आधुनिक डिजिटल तकनीकक सृजनात्मक संगम

३. भवनाथ झा केँ 'जीवित मानवीय धरोहर' कहबाक आधार की?

- (A) केवल पारिवारिक परिचय
- (B) केवल भाषणक कारण
- (C) पाण्डुलिपि-पठन, सम्पादन, शास्त्रीय ज्ञान, मिथिला-इतिहास आ स्थानीय ज्ञान-संरक्षणमे हुनक असाधारण योगदान
- (D) केवल पदवी

४. पाण्डुलिपि-विज्ञानक अध्ययन मैथिली भाषा-साहित्य लेल किएक आवश्यक अछि?

- (A) किएकि भाषा केवल वर्तमानक विषय अछि
- (B) किएकि पुरान ग्रन्थ बेकार अछि
- (C) किएकि सम्पादनक कोनो महत्व नहि
- (D) किएकि ओ पुरान ग्रन्थ, वंश, शास्त्र, लोकज्ञान, लिपि, पाठभेद आ इतिहासक प्रमाण बचबैत अछि

५. शिलालेख-पठन भवनाथ झाक शोधदृष्टिमे किएक विशेष अछि?

- (A) शिलालेख केवल सजावट अछि
- (B) एहिमे प्रमाणक भूमिका नहि
- (C) ओ लिखित प्रमाणक आधार पर इतिहास, तिथि, स्थान, व्यक्ति आ सांस्कृतिक साक्ष्य केँ पढ़बाक विधि दैत अछि
- (D) ई कथा-लेखनक विकल्प मात्र अछि

६. कल्पना झाक साक्षात्कारक अध्ययन उच्चस्तरीय विविधतामे किएक उपयोगी अछि?

- (A) एहिमे ज्ञान नहि होइत
- (B) साक्षात्कार सदा हलुक विधा अछि
- (C) साक्षात्कार केवल निजी गप अछि
- (D) एहि सँ भवनाथ झाक जीवन-यात्रा, शोध-पद्धति, पाण्डुलिपि अनुभव, संस्थागत समस्या आ भविष्य-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि

७. 'अगस्त्य संहिता—तीस वर्षक प्रतीक्षा' प्रसंग कोन शोध-संस्कार देखबैत अछि?

- (A) लोकप्रिय प्रचार मात्र
- (B) दीर्घ धैर्य, स्रोत-संग्रह, पाठ-समीक्षा आ शास्त्रीय सम्पादनक कठिन साधना
- (C) जल्दबाजी
- (D) स्रोत-विहीन लेखन

८. भवनाथ झा विशेषांकमे अंग्रेजी लेखक उपस्थिति किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) विशेषांकक असंगति
- (B) मैथिली विषयक क्षति
- (C) स्थानीयता समाप्त
- (D) एहि सँ मिथिलाक ज्ञानपरम्परा वैश्विक पाठक धरि पहुँचैत आ पारम्परिक विद्वत्ता अंतरराष्ट्रीय संवादमे प्रवेश करैत अछि

९. 'बीहनि कथाक शास्त्रीय पक्ष निर्धारक' कहबामे भवनाथ झाक कोन भूमिका सूचित अछि?

- (A) बीहनि कथा-विरोध
- (B) शास्त्रसँ असंबद्धता
- (C) आधुनिक साहित्यिक विधा केँ शास्त्रीय मानदण्ड, संरचना आ आलोचनात्मक आधारसँ जोड़बाक क्षमता
- (D) केवल कथा-पाठक भूमिका

१०. विशेषांक केँ 'डिजिटल दस्तावेज' कहबाक कारण की?

- (A) डिजिटल माध्यम दस्तावेज नहि बनि सकैत
- (B) केवल छापल पुस्तक दस्तावेज अछि
- (C) ऑनलाइन प्रकाशन क्षणिक मात्र अछि
- (D) विदेह ऑनलाइन माध्यमे विद्वानक जीवन, लेख, साक्षात्कार, सूची, समीक्षा आ शोध-सामग्रीकेँ संरक्षित आ प्रसारित करैत अछि

११. भवनाथ झा विशेषांकमे 'भवनाथ झा' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

१२. भवनाथ झा विशेषांकमे 'पाण्डुलिपि-विज्ञान' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

१३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'शिलालेख-पठन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

१४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संस्कृत-मैथिली ज्ञानपरम्परा' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

१५. भवनाथ झा विशेषांकमे 'जीवित मानवीय धरोहर' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

१६. भवनाथ झा विशेषांकमे 'MacBook and manuscripts' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

३३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'उसरन डीह' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएक़ि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएक़ि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएक़ि ई विषय भवनाथ झाक़ विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक़ व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किएक़ि ई केवल अनुक्रमक़ शब्द अछि

३४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'घुरि आउ कमला' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

३५. भवनाथ झा विशेषांकमे 'गहबरक बाट' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

३६. भवनाथ झा विशेषांकमे 'सरिताक आवरण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

३७. भवनाथ झा विशेषांकमे 'हितनाथ झा पर लेख' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

३८. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संग्रहणीय व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

३९. भवनाथ झा विशेषांकमे 'नेपथ्यक सेवी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

४०. भवनाथ झा विशेषांकमे 'भारतीय ज्ञानपरम्परा' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

४१. भवनाथ झा विशेषांकमे 'सांस्कृतिक अभिलेखन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

४२. भवनाथ झा विशेषांकमे 'शोधकर्मी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) કાંઈકેઈ વિષય ભવનાથ ઝાક વિદ્વતા, પાણ્ડુલિપિ-સાધના, શિલાલેખ-અધ્યયન, જ્ઞાન-ધરોહર આ ડિજિટલ અભિલેખનક વ્યાપક અર્થ ધોલૈત અછિ
(B) કાંઈકેઈ કેવલ અનુક્રમક શબ્દ અછિ
(C) કાંઈકેઈ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબૈત અછિ
(D) કાંઈકેઈ શોધ-સંસ્કૃતિ સૈં અસંબદ્ધ અછિ

४३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'सम्पादक' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

४४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संस्कृतज्ञ' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

४५. भवनाथ झा विशेषांकमे 'लोक-समर्थक विद्वान' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

४६. भवनाथ झा विशेषांकमे 'पाण्डुलिपि संरक्षण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

४७. भवनाथ झा विशेषांकमे 'शिलालेखक प्रतिलिपि' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

४८. भवनाथ झा विशेषांकमे 'इंक-स्टम्पेज' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएक शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएक ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएक ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएक ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

४९. भवनाथ झा विशेषांकमे 'फोटोग्राफी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५०. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संग्रहक क्षय' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५१. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संस्थानक संकट' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

५२. भवनाथ झा विशेषांकमे 'युवा शोधकर्ता' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

५३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'वैश्विक पाठक' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

५४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'अंग्रेजी लेखक सेतु' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

५५. भवनाथ झा विशेषांकमे 'मिथिलाक्षर/देवनागरी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किण्कि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किण्कि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किण्कि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(D) किण्कि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

५६. भवनाथ झा विशेषांकमे 'शास्त्र आ लोक' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
(B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
(C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

५७. भवनाथ झा विशेषांकमे 'ज्ञानक लोकतंत्रीकरण' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

५८. भवनाथ झा विशेषांकमे 'मैथिली अकादमिक परम्परा' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

५९. भवनाथ झा विशेषांकमे 'प्रमाण-आधारित इतिहास' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

६०. भवनाथ झा विशेषांकमे 'साक्षात्कारक महत्त्व' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

६१. भवनाथ झा विशेषांकमे 'सम्पादकीय संतुलन' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

६२. भवनाथ झा विशेषांकमे 'बहुआयामी व्यक्तित्व' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

६३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'आलोचनात्मक एकरूपता' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

६४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'संस्मरण-आलोचना' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

७३. भवनाथ झा विशेषांकमे 'विद्यापति गोष्ठी' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि

७४. भवनाथ झा विशेषांकमे 'मिथिला लेल नीति-ढाँचा' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

७५. भवनाथ झा विशेषांकमे 'ज्ञान-संरक्षणक नैतिकता' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (B) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (C) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७६. भवनाथ झा विशेषांकमे 'पाठकीय प्रतिक्रिया' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (C) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (D) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७७. भवनाथ झा विशेषांकमे 'परम्परा आ नवाचार' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि
- (B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि

७८. भवनाथ झा विशेषांकमे 'शोध आ समाज' पर प्रश्न किएक उच्चस्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि
- (B) किएकि शोध-संस्कृति सँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई केवल अनुक्रमक शब्द अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३८ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) मिथिलाक पाण्डुलिपि-विज्ञान, शिलालेख, संस्कृत-मैथिली ज्ञानपरम्परा आ जीवित विद्वत्ता केँ दस्तावेज रूपमे सामने आनब — विशेषांक भवनाथ झा केँ विद्वान, शोधकर्मी, सम्पादक आ ज्ञान-धरोहरक प्रहरी रूपमे देखबैत अछि।
२. (D) पारम्परिक पाण्डित्य आ आधुनिक डिजिटल तकनीकक सृजनात्मक संगम — भवनाथ झाक व्यक्तित्वमे शास्त्रीय ज्ञान आ आधुनिक साधन दुनू साथ चलैत अछि।
३. (C) पाण्डुलिपि-पठन, सम्पादन, शास्त्रीय ज्ञान, मिथिला-इतिहास आ स्थानीय ज्ञान-संरक्षणमे हुनक असाधारण योगदान — जीवित धरोहर ओ विद्वान छथि जे परम्परागत ज्ञानकेँ जीवित अभ्यास आ शोधमे बदलैत छथि।
४. (D) किएकि ओ पुरान ग्रन्थ, वंश, शास्त्र, लोकज्ञान, लिपि, पाठभेद आ इतिहासक प्रमाण बचबैत अछि — पाण्डुलिपि बिना अतीत अस्पष्ट रहि जाइत; सम्पादन ओकरा पाठक आ शोधकर्ता धरि पहुँचबैत अछि।
५. (C) ओ लिखित प्रमाणक आधार पर इतिहास, तिथि, स्थान, व्यक्ति आ सांस्कृतिक साक्ष्य केँ पढ़बाक विधि दैत अछि — शिलालेख स्थानीय इतिहासक कठोर साक्ष्य होइत अछि, जकर पठन विशेष प्रशिक्षण चाहैत अछि।

६. (D) एहि सँ भवनाथ झाक जीवन-यात्रा, शोध-पद्धति, पाण्डुलिपि अनुभव, संस्थागत समस्या आ भविष्य-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि — साक्षात्कार विद्वानक आत्मदृष्टि आ कार्य-पद्धति बुझबाक मूल्यवान स्रोत अछि।

9. (B) दीर्घ धैर्य, स्रोत-संग्रह, पाठ-समीक्षा आ शास्त्रीय सम्पादनक कठिन साधना — शोधमे समय, धैर्य आ प्रमाणक प्रतीक्षा आवश्यक अछि; ई प्रसंग से देखबैत अछि।

८. (D) एहि सँ मिथिलाक ज्ञानपरम्परा वैश्विक पाठक धरि पहुँचैत आ पारम्परिक विद्वत्ता अंतरराष्ट्रीय संवादमे प्रवेश करैत अछि — बहुभाषिक प्रस्तुति परम्परा केँ सीमित नहि करैत, बल्कि व्यापक अकादमिक जगतसँ जोड़ैत अछि।

१. (C) आधुनिक साहित्यिक विधा कें शास्त्रीय मानदण्ड, संरचना आ आलोचनात्मक आधारसँ जोड़बाक क्षमता — भवनाथ झा परम्परा आ आधुनिक विधा बीच शास्त्रीय संवाद बनबैत छथि।

१०. (D) विदेह ऑनलाइन माध्यमे विद्वानक जीवन, लेख, साक्षात्कार, सूची, समीक्षा आ शोध-सामग्रीकेँ संरक्षित आ प्रसारित करैत अछि — डिजिटल अभिलेखन वर्तमान विद्वत्ता केँ भविष्यक शोध लेल सुरक्षित करबाक साधन अछि।

११. (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'भवनाथ झा' भवनाथ झाक योगदानकें व्यक्तिगत परिचय सँ आगू, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१२. (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘पाण्डुलिपि-विज्ञान’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१३. (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'शिलालेख-पठन' भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आग, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१४. (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘संस्कृत-मैथिली ज्ञानपरम्परा’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगू, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१५. (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'जीवित मानवीय धरोहर' भवनाथ झाक योगदानकें व्यक्तिगत परिचय सँ आग, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१६. (B) किएिक ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘MacBook and manuscripts’ भवनाथ झाक योगदानकें व्यक्तिगत परिचय सँ आगू, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१७. (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘आधुनिक तकनीक’ भवनाथ झाक योगदानकें व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१८. (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘पारम्परिक पाण्डित्य’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगू, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

१९. (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘अगस्त्य संहिता’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आग, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

२०. (D) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'तीस वर्षक प्रतीक्षा' भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

२१. (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘पाण्डुलिपि सम्पादन’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

२२. (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — ‘पाठभेद’ भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

२३. (A) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'स्रोत-समीक्षा' भवनाथ झाक योगदानकेँ व्यक्तिगत परिचय सँ आग, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोडैत अछि।

२४. (C) किएकि ई विषय भवनाथ झाक विद्वत्ता, पाण्डुलिपि-साधना, शिलालेख-अध्ययन, ज्ञान-धरोहर आ डिजिटल अभिलेखनक व्यापक अर्थ खोलैत अछि — 'डिजिटल दस्तावेज' भवनाथ झाक योगदानकें व्यक्तिगत परिचय सँ आगु, मिथिलाक ज्ञान-संरक्षण आ अकादमिक भविष्यक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

[illegible]

[illegible]

अध्याय ३९ : सुभाष चन्द्र यादव विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकक केन्द्रीय वैचारिक धुरी की अछि?

- (A) केवल औपचारिक श्रद्धांजलि
- (B) मैथिली भाषा-सांस्कृतिक समानान्तर परम्परा, वेद-पुराणक पुनर्पाठ, जाति-विमर्श आ प्रमाण-आधारित सांस्कृतिक प्रतिवाद
- (C) केवल पृष्ठ-क्रम
- (D) केवल जीवनी-सूची

२. 'ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति' प्रसंग किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि ई पृष्ठ-संख्या पर निर्भर अछि
- (B) मैथिली साहित्यक आरम्भ, पदावली-परम्परा आ आदिकवि प्रश्न केँ पुनः प्रमाण सहित जाँचबाक लेल
- (C) केवल नाम-स्मरण लेल
- (D) किएकि ई आधुनिक कविता अछि

३. शुक्ल यजुर्वेद २६.२ के उल्लेखक सामाजिक अर्थ की अछि?

- (A) ई केवल अनुष्ठानिक मंत्र अछि
- (B) एहिमे सामाजिक अर्थ नहि
- (C) वेद केवल एक जातिक लेल अछि
- (D) वेद-वाणी सभ समुदाय धरि पहुँचय योग्य अछि, से तर्क द्वारा जाति-आधारित निषेधक प्रतिवाद

४. 'मानुषीमिह संस्कृताम्' सूत्रक प्रयोग मैथिली प्रसंगमे की सुझावैत अछि?

- (A) संस्कृत-विरोध
- (B) केवल पौराणिक कथा
- (C) भाषा-हीनता
- (D) सीता-जनकपुर-मिथिला सँ जुड़ल लोकभाषिक गौरव आ मानवीय भाषा-परम्पराक प्रतिष्ठा

५. 'अक्खर खम्भा' रूपकक भाषिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल चित्रकला
- (B) केवल ध्वनि-साधना
- (C) केवल स्थापत्य-वर्णन
- (D) अक्षर आ लेखनकेँ कीर्ति, गद्य-पद्य आ सांस्कृतिक स्मृति सँ जोड़बाक रूपक

६. मनुस्मृति बनाम वेद-वाक्यक तर्कमे लेखकक पद्धति की अछि?

- (A) भावुक नारा लगेनाय
- (B) केवल परम्पराक पुनरावृत्ति
- (C) निचला/बादक ग्रन्थक दावाकेँ मूल प्रमाणग्रन्थक आलोकमे जाँचना
- (D) ग्रन्थ-पठन छोड़ि देनाय

७. सोशल मीडिया आ नवकीपीडिया-विमर्शक उल्लेख किएक अछि?

- (A) डिजिटल माध्यम असंगत अछि
- (B) ऑनलाइन स्रोत सदा प्रमाणित अछि
- (C) विमर्श केवल मनोरंजन अछि
- (D) डिजिटल युगमे मिथ्या सूचना, जाति-आधारित कुप्रचार आ पाठ-संशोधनक प्रश्न उठबैत अछि

८. शूद्र-प्रसंगक वैदिक पुनर्पाठक मूल उद्देश्य की अछि?

- (A) समुदायक अवमूल्यन
- (B) जाति-हिंसा बढ़ेनाय
- (C) अपमानजनक व्याख्याक विरुद्ध मूल मंत्र, सादृश्य, पृथ्वी-उत्पत्ति आ सामाजिक संरक्षकत्वक सकारात्मक अर्थ देखेनाय
- (D) मूल पाठक उपेक्षा

९. 'भालसरिक गाछ' आ 'विदेह' ई-पत्रिका प्रसंग सुभाष विशेषांकमे किएक जुड़ैत अछि?

- (A) किएकि ई विशेषांकसँ असंबद्ध अछि
- (B) मैथिली इंटरनेट-उपस्थिति, डिजिटल आरम्भ, ई-पत्रिका आ भाषिक सार्वजनिकता केँ ऐतिहासिक क्रममे देखबाक लेल
- (C) केवल वेबसाइट-सूची
- (D) केवल विज्ञापन

१०. समानान्तर परम्पराक उल्लेख साहित्य-इतिहासमे की करैत अछि?

- (A) लोकपरम्पराक अस्वीकार
- (B) केवल राजकीय इतिहास
- (C) मुख्यधारा सँ बाहर चलैत लोक-नाच, पदावली, स्मृति आ भाषिक अभ्यासकेँ वैध साहित्यिक स्रोत मानैत अछि
- (D) मौखिक परम्पराक नकार

११. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'सुभाष चन्द्र यादव' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

१२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि

१३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मैथिलीक आदिकवि प्रश्न' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

१४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'शुक्ल यजुर्वेद' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

१५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मानुषीमिह संस्कृताम्' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

१६. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'वेद-वाणीक सार्वजनीनता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

१७. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मनुस्मृति-विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

१८. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'शब्द प्रमाण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि

१९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'शूद्रक वैदिक पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરઁત અછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય ઢાષા-ઇતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ડોલૈત અછિ
(C) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અછિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબદ્ધ અછિ

२०. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'पुरुषसूक्तक सामाजिक अर्थ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

२१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'पएर आ पृथ्वीक सादृश्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

२२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'जाति-विरोधी सांस्कृतिक प्रतिवाद' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

२३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'सोशल मीडिया कुप्रचार' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અલિ
(B) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબૈત અલિ
(C) કિઁકિ ઈ વિષય ભાષા-ઈતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁલૈત અલિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબદ્ધ અલિ

२४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'नवकीपीडिया संशोधन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

२५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'अंतरजालपर मिथ्या उद्घरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

२६. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'भालसरिक गाछ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

२७. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'विदेह ई-पत्रिका' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

२८. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मैथिली इंटरनेट इतिहास' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

२९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'अक्खर खम्भा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરઢૈત અહિ
- (B) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અહિ
- (C) કિઁકિ ઈ વિષય ઢાષા-ઈતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁોલૈત અહિ
- (D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંઢ્ઢ અહિ

३०. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'कीर्ति आ अक्षर' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

३१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'गद्य-पद्यक मंच' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અલિ
(B) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબૈત અલિ
(C) કિઁકિ ઈ વિષય ભાષા-ઈતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁલૈત અલિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબદ્ધ અલિ

३२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'समानान्तर परम्परा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

४१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'जनकपुरक भाषिक स्मृति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

४२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मानवीय भाषा गौरव' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

४३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'पुराण-वेद पुनर्पाठ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

४४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'ग्रन्थ-समीक्षा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃથ્થ-સંખ્યા યાદ કરઁત અલિ
- (B) કિઁકિ ઈ વિષય ઢાષા-ઙ્ઙિતહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ઙ્ઙિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁલૈત અલિ
- (C) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અલિ
- (D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબઙ્ઙ અલિ

४५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'प्रमाण आ परम्परा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબૈત અછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય ભાષા-ઙ્ઁતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ઢિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁોલૈત અછિ
(C) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અછિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસું અસંબદ્ધ અછિ

४६. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'कुप्रचारक निवारण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

४७. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'कुरुक्षेत्रम लेख' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) कि एक अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) कि एक ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) कि एक ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) कि एक ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

४८. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'अथर्ववेद सम्बन्धी भ्रान्ति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ ંનુક્રમક શબ્દ માત્ર અલિ
- (B) કિઁકિ ઈ વિષય ભાષા-ઙ્તિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ઢિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁલૈત અલિ
- (C) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબઢ્ધ અલિ
- (D) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાઢ કરૈત અલિ

४९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'स्त्री आ शूद्र सम्बन्धी मिथ्या दावा' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

५०. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'भाषा-आन्दोलन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

५१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'डिजिटल अभिलेखन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

५२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'संपादकीय भूमिका' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ ંનુક્રમક શબ્દ મારૂ ંછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય ંષાઁ-ઙિતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, ઙાતિ-વિમર્શ, ઙિઙિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક ઙટિલ સમ્બન્ધ ઁોલૈત ંછિ
(C) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંઙ્યા યાદ કરંૈત ંછિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંંઙ્ઙ ંછિ

५३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'कॉपीराइट आ वेब-आर्काइव' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

५४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'भाषा-संरक्षण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

५५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'लोक-परम्परा आ शास्त्र' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

५६. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मिथिलाक सांस्कृतिक आत्मविश्वास' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

५७. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'सामाजिक समरसता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કાંઈકેઈ વિષય ભાષા-ઇતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ધોલૈત અછિ
(B) કાંઈકેઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરબૈત અછિ
(C) કાંઈકેઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અછિ
(D) કાંઈકેઈ અવધારણાસં અસંબદ્ધ અછિ

५८. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'ज्ञानक लोकतंत्रीकरण' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

५९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'वेदक लोकाभिमुख अर्थ' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

६०. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'स्मृति बनाम श्रुति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

६१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'भाषिक इतिहासक पुनर्लेखन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

६२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मैथिली सार्वजनिकता' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि

६३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'आदिकालीन साहित्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

६४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'ज्योतिरीश्वरक पूर्वपीठिका' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि

७३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'लोक आ शास्त्रक सेतु' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'सांस्कृतिक न्याय' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

७५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'ग्रन्थ-साक्ष्य' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७६. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'पाठकक आलोचनात्मक विवेक' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७७. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'भाषा-साहित्यक जनपक्ष' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

७८. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'मिथिला-चेतना' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સંખ્યા યાદ કરલૈત અલિ
(B) કિઁકિ ઈ અનુક્રમક શબ્દ માત્ર અલિ
(C) કિઁકિ ઈ વિષય ભાષા-ઈતિહાસ, શાસ્ત્રીય પ્રમાણ, જાતિ-વિમર્શ, ડિજિટલ મૈથિલી આ સમાનાન્તર સાંસ્કૃતિક પરમ્પરાક જટિલ સમ્બન્ધ ઁલૈત અલિ
(D) કિઁકિ અવધારણાસં અસંબદ્ધ અલિ

७९. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'डिजिटल युगक भाषा-धर्म' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
(D) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि

८०. सृभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'संरक्षकत्व बनाम प्रभुत्व' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
(B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
(C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

८१. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'सांस्कृतिक पुनर्व्याख्या' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि

८२. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'प्रतिरोधी लेखन' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि
- (C) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (D) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि

८३. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'वर्ण-विमर्श' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

८४. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'प्राचीन स्रोत आ आधुनिक प्रश्न' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (B) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

८५. सुभाष चन्द्र यादव विशेषांकमे 'शोध-पद्धति' पर प्रश्न किएक उच्च-स्तरीय अछि?

- (A) किएकि ई अनुक्रमक शब्द मात्र अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-संख्या याद करबैत अछि
- (C) किएकि अवधारणासँ असंबद्ध अछि
- (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि

उत्तरमाला — अध्याय ३९ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) मैथिली भाषा-सांस्कृतिक समानान्तर परम्परा, वेद-पुराणक पुनर्पाठ, जाति-विमर्श आ प्रमाण-आधारित सांस्कृतिक प्रतिवाद — ई विशेषांक व्यक्ति-केंद्रित रहितहुँ मिथिला, भाषा, धर्मग्रन्थ, जाति-चेतना आ सांस्कृतिक इतिहासक आलोचनात्मक पुनर्पाठ करैत अछि।

२. (B) मैथिली साहित्यक आरम्भ, पदावली-परम्परा आ आदिकवि प्रश्न केँ पुनः प्रमाण सहित जाँचबाक लेल — ई प्रसंग विद्यापति-परम्पराक जटिलता आ मिथिलाक पुरान साहित्यिक स्रोतक पुनर्परीक्षणक संकेत दैत अछि।

३. (D) वेद-वाणी सभ समुदाय धरि पहुँचय योग्य अछि, से तर्क द्वारा जाति-आधारित निषेधक प्रतिवाद — शब्द-प्रमाणक आधार पर लेखक वर्ण-वर्जना आ मिथ्या प्रचारक आलोचना करैत छथि।

४. (D) सीता-जनकपुर-मिथिला सँ जुड़ल लोकभाषिक गौरव आ मानवीय भाषा-परम्पराक प्रतिष्ठा — एहि सूत्रसँ मैथिलीकेँ केवल बोली नहि, सांस्कृतिक-स्मृति सँ जुड़ल मानवीय भाषा मानल जाइत अछि।

५. (D) अक्षर आ लेखनकेँ कीर्ति, गद्य-पद्य आ सांस्कृतिक स्मृति सँ जोड़बाक रूपक — अक्षर खम्भा बनलापर गद्य-पद्यक मंच टिकैत अछि; भाषा स्मृतिक वास्तु बनैत अछि।

६. (C) निचला/बादक ग्रन्थक दावाकेँ मूल प्रमाणग्रन्थक आलोकमे जाँचना — लेखक स्मृति-वाक्यक वैधता वेद-संगति पर निर्भर मानैत छथि, एहि सँ प्रमाण-आधारित प्रतिवाद बनैत अछि।

७. (D) डिजिटल युगमे मिथ्या सूचना, जाति-आधारित कुप्रचार आ पाठ-संशोधनक प्रश्न उठबैत अछि — लेखक डिजिटल प्रसारक लाभ मानैत छथि, मुदा गलत उद्धरण आ कुप्रचारक आलोचना सेहो करैत छथि।

अछि।

८०. (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘संरक्षकत्व बनाम प्रभुत्व’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

८१. (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘सांस्कृतिक पुनर्व्याख्या’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

८२. (B) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘प्रतिरोधी लेखन’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

८३. (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘वर्ण-विमर्श’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

८४. (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘प्राचीन स्रोत आ आधुनिक प्रश्न’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

८५. (D) किएकि ई विषय भाषा-इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण, जाति-विमर्श, डिजिटल मैथिली आ समानान्तर सांस्कृतिक परम्पराक जटिल सम्बन्ध खोलैत अछि — ‘शोध-पद्धति’ विद्यार्थीकेँ केवल तथ्य नहि, बल्कि स्रोत, प्रमाण, परम्परा आ आधुनिक सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध बुझए लेल प्रेरित करैत अछि।

अध्याय ४० : सुशील चन्द्र झा विशेषांक — मैथिली भाषा प्रश्नोत्तरी

१. सुशील विशेषांकक केन्द्रीय साहित्यिक प्रश्न की अछि?

- (A) केवल पृष्ठ-सूची
- (B) केवल पुरस्कार-सूचना
- (C) केवल जन्म-विवरण
- (D) सुशील चन्द्र झाक उपन्यास, नाटक, लघुकथा आ समीक्षा-छद्मताक विरुद्ध आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन

२. 'मैथिलीमे छद्म समीक्षा' अध्याय किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) किएकि आलोचना केवल प्रशंसा अछि
- (B) किएकि पाठकक भूमिका नहि
- (C) किएकि समीक्षा अनावश्यक अछि
- (D) किएकि ई साहित्यिक मूल्यांकनमे जाति-अहंकार, अध्ययन-अभाव, पक्षपात आ प्रतिष्ठान-निर्मित भ्रमक आलोचना करैत अछि

३. 'घराड़ी' उपन्यासक अध्ययनमे कोन सामाजिक प्रश्न प्रमुख बनैत अछि?

- (A) केवल यात्रा-वर्णन
- (B) केवल हास्य प्रसंग
- (C) मैथिल अंतरजातीय विवाह, विधवा-विवाह, जाति-संघर्ष, दाह-संस्कार आ सामाजिक विडम्बना
- (D) केवल घरक नक्शा

४. 'गामबाली' उपन्यासक मूल वैचारिक तनाव की अछि?

- (A) केवल आत्मकथा
- (B) विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थन तथा ब्राह्मण-जादव सामाजिक सम्बन्धक टकराव
- (C) केवल नगर-जीवन
- (D) केवल कृषि-विवरण

५. कमलानन्द झा पर छद्म समीक्षकक आरोपक आलोचनात्मक अर्थ की अछि?

- (A) व्यक्ति-आक्षेप मात्र
- (B) साहित्यिक मूल्यांकन असंभव अछि
- (C) साहित्यिक श्रेय-निर्धारणमे अध्ययन, ईमानदारी आ सामाजिक पूर्वग्रहक जाँच आवश्यक अछि
- (D) समीक्षा-विरोध

६. 'भामती' नाटकक उल्लेख सुशीलक रचना-संसारमे की जोड़ैत अछि?

- (A) नाटकक अभाव
- (B) केवल बाल-साहित्य
- (C) केवल गीत-संग्रह
- (D) उपन्यासक संग नाट्य-विधा, स्त्री-प्रज्ञा, दार्शनिक परम्परा आ मंचीय संवादक आयाम

७. 'अस्मिता' लघुकथा-संग्रहक शीर्षकक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) कथ्यहीन संकलन
- (B) केवल हास्य
- (C) केवल नामावली
- (D) व्यक्ति, जाति, भाषा, स्त्री, समाज आ आत्मसम्मानक संक्षिप्त कथ्यक चेतना

८. सुशीलक रचना-संसारमे कोलकाता/बजबज प्रसंगक भूमिका की?

- (A) केवल पता-सूचना
- (B) प्रवासी मैथिली जीवन, श्रमिक/नोकरी अनुभव, भाषा-संरक्षण आ महानगरीय मिथिला-चेतनाक संदर्भ
- (C) प्रवास साहित्यसँ असंबद्ध अछि
- (D) भाषा केवल गाममे रहैत अछि

९. सिद्धान्त आ सिद्धान्तोत्तर अध्यायक स्थान विशेषांकमे किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई सुशीलक पाठक केवल जीवनी नहि, आलोचना-सिद्धान्त आ पोस्ट-थ्योरी विमर्शसँ जोड़ैत अछि
- (B) सिद्धान्त साहित्यसँ असंबद्ध अछि
- (C) पोस्ट-थ्योरी केवल फैशन अछि
- (D) विशेषांकमे विचार नहि चाही

१०. सुशील विशेषांकमे 'नित नवल' पदबंधक अर्थ की?

- (A) केवल सजावटी उपाधि
- (B) केवल पुरान स्मृति
- (C) सुशीलक रचना-ऊर्जा केँ निरन्तर नवीन, विवाद-सक्षम, सामाजिक प्रश्नोन्मुख आ पुनर्पाठ योग्य मानब
- (D) लेखनक स्थिरता

११. सुशील विशेषांकमे 'सुशील चन्द्र झा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

१२. सुशील विशेषांकमे 'नित नवल सुशील' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

१३. सुशील विशेषांकमे 'घराड़ी' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

१४. सुशील विशेषांकमे 'गामबाली' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

१५. सुशील विशेषांकमे 'भामती' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

१६. सुशील विशेषांकमे 'अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

२५. सुशील विशेषांकमे 'प्रवासी मैथिली जीवन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

२६. सुशील विशेषांकमे 'बजबज कोलकाता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

२७. सुशील विशेषांकमे 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

२८. सुशील विशेषांकमे 'उर्दू द्वितीय राजभाषा विरोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

२९. सुशील विशेषांकमे 'भाषा-आन्दोलन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

३०. सुशील विशेषांकमे 'साहित्यिक श्रेय विवाद' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
- (D) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

३१. सुशील विशेषांकमे 'उपन्यासक सामाजिक आधार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

३२. सुशील विशेषांकमे 'गामबालीक मृत्यु प्रसंग' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
- (B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
- (C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
- (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

३३. सुशील विशेषांकमे 'प्रेम आ जाति' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकिए ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकिए ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकिए ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकिए साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

३४. सुशील विशेषांकमे 'लोक-संस्कार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

३५. सुशील विशेषांकमे 'छल-छद्म समीक्षा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) ਕਿਏਕਿ ਈ ਅਵਧਾਰਣਾਸੌਂ ਦੂਰ ਅਛਿ
(B) ਕਿਏਕਿ ਸਾਹਿਤਿਕ ਮੂਲ੍ਯਾਂਕਨਮੇ ਏਕਰ ਉਪਯੋਗ ਨਹਿ
(C) ਕਿਏਕਿ ਈ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰਥ-ਸੂਚੀ ਅਛਿ
(D) ਕਿਏਕਿ ਈ ਵਿਥਯ ਸੁਸ਼ੀਲਕ ਰਚਨਾ-ਸੰਸਾਰ, ਛਦ੍ਯ-ਸਮੀਕ੍ਸ਼ਾ-ਵਿਰੋਧ, ਸਾਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰ, ਜਾਤਿ-ਵਿਮਰਸ਼ ਆ ਮੈਥਿਲੀ ਆਲੋਚਨਾਕ ਨੈਤਿਕਤਾ ਸੌਂ ਜੁਡੈਤ ਅਛਿ

३६. सुशील विशेषांकमे 'अध्ययन-अभाव' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

३७. सुशील विशेषांकमे 'आलोचक अहंकार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

३८. सुशील विशेषांकमे 'साहित्यिक निश्चलता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकिए साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकिए ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकिए ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकिए ई अवधारणासँ दूर अछि

३९. सुशील विशेषांकमे 'पोथी-पेटार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकिए साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकिए ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकिए ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकिए ई अवधारणासँ दूर अछि

४०. सुशील विशेषांकमे 'सिद्धान्त' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि ई विषय सशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

४९. सुशील विशेषांकमे 'जातीय पहिचान' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

५०. सुशील विशेषांकमे 'भाषा अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

५१. सुशील विशेषांकमे 'स्त्री अस्मिता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि साहित्यिक मल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

५२. सुशील विशेषांकमे 'श्रमिक/नौकरी अनुभव' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

५३. सुशील विशेषांकमे 'कोलकाता मैथिली संस्कार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

५४. सुशील विशेषांकमे 'भाषिक सार्वजनिकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकिए साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकिए ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकिए ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकिए ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

५५. सुशील विशेषांकमे 'जीवनी आ आलोचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि साहित्यिक मल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

५६. सुशील विशेषांकमे 'लेखकक संघर्ष' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

(A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

(A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

(A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

(A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

(A) કિંકિ ઈ અવધરણાસં દૂર અહિ
(B) કિંકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સૂચી અહિ
(C) કિંકિ સાહિત્યિક મૂલ્યાંકનમે ંકર ંપયોગ નહિ
(D) કિંકિ ઈ વિષય સુશીલક રચના-સંસાર, હ્રદય-સમીક્ષા-વિરોધ, સામાજિક સુધાર, જાતિ-વિમર્શ આ મૈથિલી આલોચનાક નૈતિકતા સં જુડૈત અહિ

(A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

(A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

(A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

६५. सुशील विशेषांकमे 'सच्चिदानन्द झा' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

६६. सुशील विशेषांकमे 'मैथिली साहित्यिक समाज' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃષ્ઠ-સૂચી અછિ
(B) કિઁકિ ઈ અવધારણાસં દૂર અછિ
(C) કિઁકિ સાહિત્યિક મૂલ્યાંકનમે ઁકર ઉપયોગ નહિ
(D) કિઁકિ ઈ વિષય સુશીલક રચના-સંસાર, હ્રદય-સમીક્ષા-વિરોધ, સામાજિક સુધાર, જાતિ-વિમર્શ આ મૈથિલી આલોચનાક નૈતિકતા સં જુડૈત અછિ

६७. सुशील विशेषांकमे 'छद्म समीक्षकत्व' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

६८. सुशील विशेषांकमे 'प्रमाणाधारित आलोचना' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि साहित्यिक मल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

६९. सुशील विशेषांकमे 'रचनाकारक अवमूल्यन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

७०. सुशील विशेषांकमे 'साहित्यिक न्याय' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

७१. सुशील विशेषांकमे 'विवाद आ विवेक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

७२. सुशील विशेषांकमे 'सामाजिक सुधार' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकिए साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकिए ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकिए ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकिए ई अवधारणासँ दूर अछि

७३. सुशील विशेषांकमे 'रूढ़ि-प्रतिरोध' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

७४. सुशील विशेषांकमे 'नाटक आ दर्शन' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(C) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि

७५. सुशील विशेषांकमे 'भामती पात्र' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

७६. सुशील विशेषांकमे 'अल्पकथा शिल्प' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) કિઁકિ ઈ ઁવધારણાસઁ ઢૂર ઁછિ
(B) કિઁકિ ઈ વિષય સૂશિલક રચના-સંસાર, છદ્ધ-સમીક્ષા-વિરોધ, સામાજિક સુધાર, જાતિ-વિમર્શ ઁા મૈથિલી ઁાલોચનાક નૈતિકતા સઁ જુઢૈત ઁછિ
(C) કિઁકિ ઈ કેવલ પૃથ્ઠ-સૂચી ઁછિ
(D) કિઁકિ સાહિત્યિક મલ્યાંકનમે ઁકર ઉપયોગ નહિ

७७. सुशील विशेषांकमे 'अस्मिता शीर्षक' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(B) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

७८. सुशील विशेषांकमे 'पाठकक आलोचनात्मकता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(D) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि

७९. सुशील विशेषांकमे 'लेखकक बहुविधा योगदान' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि साहित्यिक मूल्यांकनमे एकर उपयोग नहि
(B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि

८०. सुशील विशेषांकमे 'रचनाक डिजिटल उपलब्धता' पर प्रश्न किएक सार्थक अछि?

- (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि
(B) किएकि ई केवल पृष्ठ-सूची अछि
(C) किएकि ई अवधारणासँ दूर अछि
(D) किएकि साहित्यिक मल्यांकनमे एकर उपयोग नहि

१. (D) सुशील चन्द्र झाक उपन्यास, नाटक, लघुकथा आ समीक्षा-छद्मताक विरुद्ध आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन — ई विशेषांक सुशीलक रचना-संसारकें आलोचना, छद्म-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ सिद्धान्तक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे पढ़ैत अछि।
२. (D) किएकि ई साहित्यिक मूल्यांकनमे जाति-अहंकार, अध्ययन-अभाव, पक्षपात आ प्रतिष्ठान-निर्मित भ्रमक आलोचना करैत अछि — लेखक छद्म समीक्षकत्वक प्रश्न द्वारा मैथिली आलोचनाक नैतिकता पर बहस खोलैत छथि।
३. (C) मैथिल अंतरजातीय विवाह, विधवा-विवाह, जाति-संघर्ष, दाह-संस्कार आ सामाजिक विडम्बना — घराड़ी व्यक्तिगत प्रेम/विवाहक कथा मात्र नहि, समाजक जातिगत संरचना आ नैतिक दुविधाक उपन्यास अछि।
४. (B) विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थन तथा ब्राह्मण-जादव सामाजिक सम्बन्धक टकराव — गामबाली सामाजिक-सुधार, प्रेम, जाति-संघर्ष आ मृत्यु-बादक संस्कार धरि प्रश्न उठबैत अछि।
५. (C) साहित्यिक श्रेय-निर्धारणमे अध्ययन, ईमानदारी आ सामाजिक पूर्वग्रहक जाँच आवश्यक अछि — लेखक असहमति कें अध्ययन-साक्ष्य पर आधारित करैत छथि, जे आलोचना-नैतिकताक प्रश्न बनैत अछि।
६. (D) उपन्यासक संग नाट्य-विधा, स्त्री-प्रज्ञा, दार्शनिक परम्परा आ मंचीय संवादक आयाम — भामती सुशीलक बहुविधा लेखन आ दार्शनिक-सांस्कृतिक पात्रक पुनर्पाठक संकेत दैत अछि।
७. (D) व्यक्ति, जाति, भाषा, स्त्री, समाज आ आत्मसम्मानक संक्षिप्त कथक चेतना — अस्मिता लघुकथामे पहिचान आ स्वत्वक प्रश्न कें सघन बनबैत अछि।
८. (B) प्रवासी मैथिली जीवन, श्रमिक/नोकरी अनुभव, भाषा-संरक्षण आ महानगरीय मिथिला-चेतनाक संदर्भ — प्रवासी जीवन सुशीलक साहित्यिक आ सामाजिक अनुभवक महत्वपूर्ण आधार अछि।
९. (A) ई सुशीलक पाठकें केवल जीवनी नहि, आलोचना-सिद्धान्त आ पोस्ट-थ्योरी विमर्शसँ जोड़ैत अछि — सिद्धान्त पाठककें रचना-मूल्यांकनक वैचारिक औजार दैत अछि।
१०. (C) सुशीलक रचना-ऊर्जा कें निरन्तर नवीन, विवाद-सक्षम, सामाजिक प्रश्नोन्मुख आ पुनर्पाठ योग्य मानब — नित नवल लेखकक जीवित आलोचनात्मक प्रासंगिकता आ नयका पाठक लेल खुलापनक संकेत अछि।
११. (D) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘सुशील चन्द्र झा’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१२. (B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘नित नवल सुशील’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१३. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘घराड़ी’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१४. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘गामबाली’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१५. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘भामती’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१६. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘अस्मिता’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१७. (C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘मैथिलीमे छद्म समीक्षा’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१८. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘कमलानन्द झा विवाद’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
१९. (C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘समीक्षा-नैतिकता’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।

[illegible]

७६. (B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘अल्पकथा शिल्प’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
७७. (C) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘अस्मिता शीर्षक’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
७८. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘पाठकक आलोचनात्मकता’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
७९. (B) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘लेखकक बहुविधा योगदान’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।
८०. (A) किएकि ई विषय सुशीलक रचना-संसार, छद्म-समीक्षा-विरोध, सामाजिक सुधार, जाति-विमर्श आ मैथिली आलोचनाक नैतिकता सँ जुड़ैत अछि — ‘रचनाक डिजिटल उपलब्धता’क माध्यमे सुशीलक लेखनकें जीवनी-सूचना सँ आगू सामाजिक, आलोचनात्मक आ सिद्धान्तगत धरातल पर पढ़ल जा सकैत अछि।